वार्षिक प्रतिवेदन

ANNUAL REPORT
2017 – 2018

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
	प्राक्कथन	5
	निदेशक की टिप्पणी	7
	पृष्ठभूमि	8
1	प्रशासन	9
2	शोधरत अध्येता	9
3	अकादमिक गतिविधियां	11
	क. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृश्णन स्मृति व्याख्यान	11
	ख. संगोष्ठियां, सम्मेलन तथा कार्यशालाएं	11
	ग. अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत साप्ताहिक संगोष्ठियां	56
	घ. अध्येताओं से प्राप्त पाण्डुलिपियां	57
	ङ. आगंतुक प्राध्यापक	58
	च. अतिथि विद्वान	59
	छ. अतिथि अध्येता	59
	ज. मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के लिए अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र	60
4	पुस्तकालय	64
5	प्रकाशन	65
6	सेल्ज़ एवं जनसंपर्क	67
7	औषधालय	68
8	आंतरिक शिकायत समिति	68
9	सूचना का अधिकार	68
10	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	68
11	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	69
12	सफाई अभियान	69
13	सम्पदा	69
14	उद्यान	70
15	राजभाषा	71
16	लेखा एवं बजट	72
17	संस्थान के परीक्षित लेखे	73
18	अंतर–विश्वविद्यालय (आईयूसी) केन्द्र योजना के परीक्षित लेखे	110
19	भा.उ.अ.सं. की सोसाइटी, शासी निकाय तथा वित्त समिति की सूची	115

प्राक्कथन

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के वार्षिक प्रतिवेदन 2017–18 का प्राक्कथन लिखना मेरे लिए हर्ष और सौभाग्य का विषय है। यह स्पष्ट है कि इस दौरान संस्थान में कई अकादमिक गतिविधियां आयोजित की गईं और विभिन्न प्रशासनिक कार्यों का निष्पादन किया गया। संस्थान के अकादमिक समुदाय में कई प्रख्यात अध्येता शामिल हुए और पहले से शोधरत अन्य अध्येताओं की भाँति वे भी अपने शोधकार्यों में जुट गए। वर्ष के दौरान विविध विषयों पर अनेक संगोष्ठियों और कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। मेरा मानना है कि इससे संस्थान की उच्च प्रतिष्ठा की पुष्टि होती है।

हम केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत उच्च शिक्षा विभाग के सचिव तथा अधीनस्थ अन्य अधिकारियों की उदार सहायता के लिए उनके अभारी हैं।

मैं तत्कालीन निदेशक, प्रोफेसर अजीत कुमार चतुर्वेदी, वर्तमान निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे और संस्थान के अन्य अधिकारियों, विशेष रूप से कार्यवाहक सचिव, श्री प्रेम चंद जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी कर्तव्यनिष्ठा एवं समर्पण से संस्थान ने परीवीक्षा अवधि के दौरान आदरणीय शिक्षाविद एवं भारत के पूर्व राष्ट्रपति, प्रोफेसर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के स्वपन को पूरा करने की दिशा में प्रयास किया। यह श्रेष्ठ कार्य सतत् जारी रहे।

मुझे प्रसन्नता है कि अपने 'संगम–ज्ञापन' में निहित उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर संस्थान अग्रसर हो रहा है। 22 जनवरी, 2019 को आयोजित संस्थान की 'शासी निकाय' की बैठक में 'भारतीय सभ्यता केंद्र' स्थापित किए जाने का निर्णय लिया गया है। इसके अतिरिक्त, भारतीय सभ्यता और भारतीय ज्ञान प्रणाली से संबद्ध विषयों पर भी विशिष्ट व्याख्यानों तथा संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि आगामी वर्षों में संस्थान और अधिक प्रगति करे।

कपिल कपूर
अध्यक्ष, शासी निकाय
एवं
प्रधान, सोसाइटी

निदेशक की टिप्पणी

20 अक्तूबर 1965 को संस्थान के उद्घाटन अवसर पर प्रोफेसर एस. राधाकृष्णन ने अपने उद्बोधन में कहा था कि वह सब, जो सत्य के रूप में हमारे सामने आया है, क्या वह वास्तव में सत्य है या उसमें किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता है'; इस संदर्भ में उन्होंने स्पष्ट किया था कि हमें यथास्थिति का दास नहीं बने रहना चाहिए। गौरतलब है कि मानवता को गहनता से प्रभावित करने वाली उन मौलिक अवधारणाओं तथा महत्त्वपूर्ण मुद्दों के अन्वेषण के प्रति श्रेष्ठ विद्वानों को समर्थ बनाने के अपने मूल उद्देश्य के प्रति भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला सदैव प्रतिबद्ध रहा है।

संस्थान अपने प्रतिष्ठित विद्वानों को सभी क्षेत्रों में ज्ञान के क्षितिज का अन्वेषण करने तथा उत्कृष्ट विलक्षणता के साथ परिमार्जन करने के लिए सबसे कीमती बौद्धिक रत्नों को निकालने के लिए प्रोत्साहित करता है। संस्थान में पूर्ण बौद्धिक स्वच्छंदता है जहां विविध विषयों से संबंधित देश–विदेश से आए रिहायशी विद्वान विचारों के अन्वेषण, विमर्श एवं परिचर्चाओं में सम्मिलित होते हैं जोकि हमारे लिए काफी हद तक या पूर्ण रूपेण प्रेरक सिद्ध होते हैं।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला संस्कृति एव सौंदर्य की प्राचीन विरासत का संवाहक है और वर्ष 2017–18 के दौरान इसकी उपलब्धियों और विफलताओं का मूल्यांकन करने पर हमें संगठनात्मक व्यवस्था की सभी विधाओं में आयोजित गतिविधियों के पहलुओं का समीप से अवलोकन करने का अवसर मिलता है। अध्येतावृति कार्यक्रम संस्थान के लिए विशेष महत्त्व रखता है। प्रख्यात और उत्कृष्ट विद्वान अपनी परियोजनाओं पर कार्य करते हैं और अपने शोधकार्यों को प्रकाशित करने के लिए संस्थान में जमा कर देते हैं। मुझे बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान ने बाईस पुस्तकें और तीन पत्रिकाएँ प्रकाशित की हैं। इस दौरान संस्थान ने संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और अध्ययन सप्ताहों के रूप में बड़ी संख्या में अकादमिक विमर्श और अनुसंधान कार्यक्रम आयोजित किए। इन्फिनिटी फाउंडेशन, संयुक्त राज्य अमेरिका के अध्यक्ष, श्री राजीव मल्होत्रा द्वारा *'वीविंग इंण्डियाज महाकथा (ग्रैंड नैरेटिव) फॉर द 21स्ट सेन्चरी'* विषय पर प्रस्तुत 22वाँ डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्मृति व्याख्यान एक बहुत बड़ी सफलता थी। संस्थान में अपने प्रवास के दौरान विभिन्न शैक्षणिक विषयों से संबद्ध अतिथि प्राध्यापकों, अतिथि विद्वानों एवं अतिथि अध्येताओं ने भी विविध विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

संस्थान एक प्रभावशाली धरोहर भवन में चलायमान है जिसे पहले वाइसरीगल लॉज के नाम से जाना जाता था, इसके रखरखाव की विशेष आवश्यकता है। अतः शैलीगत विशेषता को ध्यान में रखते हुए इसके रखरखाव के प्रयास किए जा रहे हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग को यह जिम्मा सौंपा गया है। स्मारकीय भवन के रखरखाव और जीर्णोद्धार के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। उद्यान अनुभाग द्वारा संस्थान के सुन्दर बगीचों में विभिन्न प्रकार के फूल–पौधे उगाए जाते हैं जिनकी देखभाल और पर्यवेक्षण की सतत आवश्यकता होती है। इस धरोहर की गौथिक सुन्दरता के साथ–साथ यहां लगे पेड़–पौधे दुनिया भर से आने वाले पर्यटकों के लिए विशेष रूप से अनुकूल मेजबानी का काम करते हैं। संस्थान का सुन्दर परिवेश विद्वानों को प्रकृति की ओर आकर्षित करता है जिससे दुनिया के बारे में उनकी यांत्रिक अवधारणा को विसामान्यकृत हो जाती है और नई मानवतावादी संवेदनाओं का उद्भव होता है।

अनुसंधान एवं ज्ञान को वैश्विक स्तर पर सांझा करने में जो संस्थान को सफलता मिली है, वह शासी निकाय के अध्यक्ष और सोसाइटी के प्रधान प्रोफेसर कपिल कपूर के सहयोग के बिना संभव नहीं थी। मैं उनके बहुमूल्य सुझावों और सहयोग के लिए उन्हें धन्यवाद देता हूँ। संस्थान के अकादमिक तथा प्रशासनिक विकास में यहां के अध्येता व अधिकारी/कर्मचारी मुख्य स्त्रोत के रूप में काम करते हैं। संस्थान को सफल और सकुशल ढंग से गति प्रदान के लिए केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने जो हमें संसाधन और प्रशासनिक सुझाव मुहैया किए हैं उसके लिए मैं मंत्रालय का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

मकरंद आर. परांजपे
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास शिमला-171005

वर्ष 2017–2018 का प्रतिवेदन

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की स्थापना वर्ष 1860 के समिति पंजीकरण अधिनियम–21 (पंजाब संशोधित अधिनियम 1957) के अन्तर्गत 6 अक्तूबर 1964 को की गई थी। शिमला स्थित राष्ट्रपति निवास में यह संस्थान मूलतः मानवीय महत्व और सामाजिक विज्ञानों के गहन सैद्धान्तिक शोध के लिए समर्पित है। संस्थान के अकादमिक समुदाय में मुख्यतः रिहायशी अध्येता, अतिथि प्राध्यापक, अतिथि विद्वान तथा सह–अध्येता होते हैं जो अपना शोध–कार्य करने के अतिरिक्त परस्पर औपचारिक व अनौपचारिक विचार–विनिमय भी करते हैं। राष्ट्रपति निवास तथा इसकी परिसम्पदा प्रकृति के सुरम्य वातावरण में चिन्तनशील उच्च अध्ययन तथा मानवीय दशा के विभिन्न पहलुओं के अन्वेषण हेतु प्रेरक है।

संस्थान का संगम-ज्ञापन विभिन्न क्षेत्रों में शोध का मार्ग प्रशस्त करता है, जो इस प्रकार है-

(क) शोध के क्षेत्र ऐसे होने चाहिए जो अंतर्विधात्मक अनुसंधान का उन्नयन करें।

(ख) अनुसंधान की विषय–वस्तु गहन मानवीय महत्त्व की होनी चाहिए।

संगम-ज्ञापन में अध्ययन के विभिन्न क्षेत्र भी दर्शाए गए हैं जो इस प्रकार हैं-

(क) सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक दर्शन;

(ख) तुलनात्मक भारतीय साहित्य (जिसमें प्राचीन मध्यकालीन, आधुनिक, लोक और आदिवासी–साहित्य भी हो);

(ग) दर्शन और धर्म का तुलनात्मक अध्ययन;

(घ) शिक्षा, संस्कृति और कला, जिसमें निष्पादन कलाएँ और हस्तशिल्प भी हों;

(ड) तर्क और गणित की मौलिक अवधारणाएँ एवं समस्याएँ;

(च) प्राकृतिक और जीवन विज्ञानों की मौलिक अवधारणाएँ और समस्याएँ,

(छ) प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण का अध्ययन,

(ज) एशियाई पड़ोसी देशों तथा विश्व के संदर्भ में भारतीय सभ्यता, और

(झ) राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में समसामायिक भारत की समस्याएँ।

ज्ञापन के अनुसार निम्न विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए-

(क) विविधता में भारतीय एकता का विषय;

(ख) भारतीय चेतना का एकीकरण;

(ग) भारतीय प्ररिप्रेक्ष्य में शिक्षा का दर्शन;

(घ) प्राकृतिक विज्ञानों में उच्च अवधारणाएँ तथा उनके दार्शनिक पहलु;

(ड) विज्ञान और अध्यात्म के संश्लेषण में भारत और एशिया का योगदान;

(च) भारतीय तथा मानव एकता;

(छ) भारतीय साहित्य का सहचर;

(ज) भारतीय महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन; तथा

(झ) मानव पर्यावरण।

1. प्रशासन

समीक्षा वर्ष के दौरान प्रोफेसर कपिल कपूर ने संस्थान की शासी निकाय के अध्यक्ष तथा सोसाइटी की प्रधान का कार्यभार संभाला। भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की सोसाइटी के प्रधान लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों से चयनित किया जाता है। संस्थान की एक वित्त समिति है जिसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सदस्यों के अतिरिक्त संस्थान की प्रबन्ध समिति के सदस्य भी होते हैं जो प्रबन्ध समिति को वित्तीय मामलों में परामर्श देते हैं।

संस्थान का नेतृत्व निदेशक करते हैं जिन्हें सचिव तथा अन्य अधिकारी अपना सहयोग देते हैं। समीक्षा अवधि के दौरान प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी संस्थान के निदेशक थे।

2. शोधरत अध्येता

संस्थान के आधार इसके अध्येता हैं। राष्ट्रीय अध्येता, अध्येता तथा टैगोर अध्येता यहाँ रहकर अपनी शोध परियोजनाओं पर कार्य करते हैं। उनके अध्येतावृति की अधिकतम अवधि दो वर्ष तक होती है। इस अवधि के समाप्त होने पर अध्येता पाण्डुलिपि के रूप में अपने शोधकार्यों को संस्थान में जमा करते हैं, यदि वह प्रकाशन के लिए उपयुक्त पाई जाती है तो संस्थान उसे प्रकाशित करता है। इन अध्येताओं को संस्थान में आयोजित संगोष्ठियों में सहभागिता, विचार–विमर्श तथा व्याख्यानों में सहभागिता करनी होती है। वर्ष 2017–2018 के दौरान निम्नलिखित राष्ट्रीय अध्येता, अध्येता तथा टैगोर अध्येता शोधरत थे–

क्रमांक	अध्येता का नाम	शोध परियोजना
1.	प्रोफेसर निर्मल सेनगुप्ता राष्ट्रीय अध्येता	*द ट्रांजिशन पैराडाइम ऑफ ट्रैडिशनल नॉलेज मैनेजमेंट एण्ड गवर्नेंस सिस्टम।*
2.	प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा राष्ट्रीय अध्येता	*ट्रांसलेशन ऑफ मैन्युस्क्रिप्ट इन द खुदा बक्श लाइब्रेरी इन पटना ऑन द ''रेज ऑफ लाइट'' बाई द अरब फिलॉस्फर एण्ड साइंटिस्ट अल–किन्दी।*
3.	डॉ. मार्टिन कैप्चन टैगोर अध्येता	*रबीन्द्रनाथ टैगोर एण्ड पॉल गेहीब : देयर परसनल रिलेशनशिप एण्ड कन्वर्जेंस ऑफ एजूकेशन आइडियास।*
4.	डॉ. बी. रविचन्द्रन अध्येता	*लैंग्वेज, कास्ट एण्ड टैरिटरी : लैंग्वेज स्पोकन बाई द स्कैवैंजिंग कम्युनिटीस इन साउथ इण्डिया।*
5.	डॉ. ज्योति सिन्हा अध्येता	*चैलेंजिस एण्ड अटेन्मेंटस ऑफ 'ठुमरी सिंगरस' इन द कस्टम ऑफ बनारस।*
6.	डॉ. अर्पिता मित्रा अध्येता	*वेदांता इन मॉडरन टाइम्स : रि–इंटरप्रेटिंग स्वामी विवेकानंद।*

7.	डॉ. अम्बा कुलकर्णी अध्येता	*संस्कृत परसर बेसड ऑन द थीअरीज ऑफ शब्दबोध।*
8.	डॉ. गोहार याकूब अध्येता	*शेपिंग ए लिट्रेरी स्पेस : द डिस्कोर्स ऑफ आइडेंटिटी एण्ड यूज ऑफ कश्मीरियत एज कैटगरी इन अर्ली लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ कश्मीरी।*
9.	श्री समीर बैनर्जी अध्येता	*रिइंटरप्रेटिंग गाँधीयन थॉट बाइ कंटेम्परेरी सिविल सोसाइटी इनिशिएटिवस।*
10.	डॉ. प्रदीप कुमार नायक अध्येता	*टूवर्डस गारंटींग लैण्ड टाइटलिंग (सिक्योर प्रॉपर्टी राइटस) इन इण्डिया : ए स्टडी*
11.	प्रोफेसर जगदीश लाल डाबर अध्येता	*हिस्ट्री ऑफ फूड इन नॉर्थ इण्डिया : मिजोरम सिन्स प्री–कलोनिअल टाइम्स*
12.	डॉ. रत्नाकर त्रिपाठी अध्येता	*ए कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ द रीजनल म्यूजिक इन्डस्ट्रीस इन हिन्दी–स्पीकिंग इण्डिया : विद स्पेशल फोक्स ऑन हिमाचल प्रदेश, बिहार एण्ड हरियाणा*
13.	सुश्री प्राची दुबले अध्येता	*टूवर्डस ए थीअरिटकल फ्रेमवर्क ऑफ आदिवासी म्यूजिक : स्डींग दी म्यूजिकल ट्रेडिशन ऑफ रथवा आदिवासी, ए रिप्रेजेंटेटिव ट्राइब लिविंग ऑन बॉर्डरस ऑफ महाराष्ट्र*
14.	डॉ. सुमन्यु सतपति अध्येता	*इन प्रिंट : दी रोल ऑफ दी अर्ली पीरियडिकल प्रैस इन शेपिंग मॉडरन ओड़िया लिटरेरी कल्चर*
15.	डॉ. आर. ललिता राजा अध्येता	*सिग्निफिकेंस ऑफ ऑप्टिलिटी थीअरी इन फोनोलोजिकल एक्यूजिशन एण्ड इन असैस्समेंट एण्ड इंटरवेन्शन ऑफ फोनोजिकल डिस्ऑर्डरस*
16.	डॉ. बिन्दु मैनन एम. अध्येता	*मॉरेलिटी टेल्स इन ट्रांस्नेशनल मीडिया स्केपस : सोशल रिफॉर्म एण्ड माइग्रेशन इन मालबार होम फिल्म्स।*
17.	डॉ. आदित्य प्रताप देव अध्येता	*राइटिंग ट्रांस–टैम्परेलिटी इनटू हिस्ट्री : टाइम एण्ड पॉलिटिक्स इन द ऑरल ट्रैडिशनस ऑफ द मिक्स्ड ट्राइब–कास्ट कम्युनिटीज ऑफ द प्रिसली स्टेट ऑफ कांकर, सदरन छत्तीसगढ़।*
18.	डॉ. लियोन मोरेनस अध्येता	*मोहल्लास एण्ड स्मार्ट सिटीज : पोस्ट कलोनिअल डिवेलप्मेंट इन दिल्ली।*
19.	प्रोफेसर त्रिलोकी सिंह अध्येता	*बाउंसिंग एण्ड साइक्लिक मॉडलस ऑफ द यूनिवर्स।*
20.	डॉ. आनंद कुमार अध्येता	*इण्डिया : बिटवीन डेमोक्रेटिक नेशन–बिल्डिंग एण्ड डोमिनेंट कास्टस' डेमोक्रेसी।*
21.	प्रोफेसर के.एम. बहरूल इस्लाम	*माइग्रेंट म्यूज : द थर्ड स्पेस इन आसामीज लिट्रेचर।*
22.	प्रोफेसर माधवन पी. अध्येता	*डिकैननाइज़िंग भर्तहरि : एन एक्सप्लोरेशन इन टू संस्कृत ग्रामैटिकल ट्रैडिशन।*

23.	डॉ. जे. रंगास्वामी अध्येता	*ए ट्रांसलेशन एण्ड कमेंटरी अपान तिरूविमोइल ऑफ नाम्मीवर विद इट्स ±×U 36,000 PA×I कमेंटरी ऑफ वाxअक्कुतिरूव ± तिपाआई इन्टू इंग्लिश।*
24.	डॉ. गिरिजा के.पी. अध्येता	*नॉलेज एण्ड सब्जैक्टस : सिचुएटिंग आयुर्वेदा थ्रू लाइफ स्टोरीज ऑफ प्रैक्टीशनर्स।*
25.	डॉ. अजय कुमार अध्येता	*दलित अस्मितावादी इतिहास लेखन : वैकल्पिक अधीनस्थ समाजशास्त्र की तलाश में (एक समीक्षात्मक मूल्यांकन)।*
26.	डॉ. मैथ्यू अक्कांद वर्गीस अध्येता	*ग्लोबलाइज़िग स्टेट्स : द मैटफोरस फ्रॉम इकॉलजीस इन द मेकिंग।*
27.	श्री आशुतोष भारद्वाज अध्येता	*नॉवेल रिसर्च ऑन क्लासिकल एण्ड कंटेम्परेरी लिटरेरी थीअरीस एण्ड डिवाइसिस।*
28.	डॉ. डम्बरूधर नाथ अध्येता	*निर्गुण भक्ति इन ईस्टर्न इण्डिया : आइडीआलजी, प्रोटैस्ट एण्ड आइडैंटिटी–स्टडी ऑफ मायामारा सब–सैक्ट ऑफ आसाम।*
29.	डॉ. मनीषा चौधरी अध्येता	*द हिस्ट्री ऑफ थार : इन्वायरन्मेंट कल्चरल एण्ड सोसाइटी।*
30.	डॉ. रेखा चौधरी अध्येता	*सोशल डाइवर्सिटी एण्ड पॉलिटिकल डाइवर्जेंश इन जम्मू एण्ड कश्मीर आइडैंटिफाइंग द कम्प्लैग्जिटी ऑफ कन्फ्लिक्ट सिचुएशन एण्ड द फार्मेट फॉर इट्स रेस्टोरेशन।*
31.	डॉ. संघमित्रा साधू अध्येता	*स्पीकिंग सब्जैक्टस : लाइफ– राइटिंग फ्रॉम बिलो।*
32.	डॉ. रमाशंकर सिंह अध्येता	*नेचुरल रिसोर्सिस एण्ड मार्जिनल कम्यूनिटीज : सोशल एण्ड कल्चर सिम्बोसिस ऑफ रीवरस एण्ड निशादास इन प्री–कलोनिअल इण्डिया*

3. अकादमिक गतिविधियां

(क) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् स्मृति व्याख्यान

संस्थान की अकादमिक गतिविधियों में राधाकृष्णन् स्मृति व्याख्यान एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम है। 20 मार्च 2018 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में 22वां डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् स्मृति व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमें अमेरिका स्थित इन्फिनिटी फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री राजीव मल्होत्रा द्वारा *'वीविंग इण्डियाज महाकथा (ग्रैंड नेरेटिव) फॉर द 21स्ट सेन्चरी'* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी ने मुख्य वक्ता तथा सभागार में उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया। संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर कपिल कपूर ने अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत किया तथा संस्थान के पुस्तकालयाध्यक्ष तथा कार्यकारी सचिव श्री प्रेम चंद ने उपस्थित सभी सभासदों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

(ख) संगोष्ठियां, सम्मेलन, परिसंवाद तथा गोलमेज

समीक्षा अवधि के दौरान संस्थान में अनेक संगोष्ठियां तथा सम्मेलन आयोजित किये गए। जिन्हें संबंधित संयोजकों/सह–संयोजकों द्वारा तैयार अवधारणा नोट में व्याख्यायित शैक्षिक औचित्य सहित सूचीबद्ध किया गया है। इन संगोष्ठियों

की रिपोर्ट में प्रत्येक संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों तथा प्रतिभागियों के नाम दर्शाए गए हैं।

प्रत्येक संगोष्ठी का अवधारणा नोट संस्थान की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया जाता है तथा वेबसाइट पर ही शोध–पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। आमंत्रित प्रख्यात विद्वानों जो विद्वान पहले भी प्रस्तावित संगोष्ठी की विषय–वस्तु पर अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे चुके होते हैं उनके अलावा भी संबंधित विषय में रूचि रखने वाले अन्य विद्वानों को भी आमंत्रित किया जाता है। इस आमंत्रण के प्रत्युत्तर में कई युवा शोधार्थी अपने शोध–पत्र प्रस्तुत करने के लिए अपनी इच्छा जाहिर कर चुके हैं जोकि एक अच्छा संकेत है। इस व्यापक प्रचार के फलस्वरूप अत्याधिक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हो रही हैं।

1. 'इण्डियन लिटरेचर एण्ड सोशल डेवल्पमेंट : थीअरी, प्रैक्टिस एण्ड कम्यूनिटी इम्पैक्ट' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (05-07 अप्रैल 2017)

मूलाधार– साहित्य एक समय और स्थान पर प्रचलित सामाजिक परिस्थितियों का दर्पण माना जाता है। लेखक की कला किसी विशेष संदर्भ और इतिहास की अनेक कड़ियों से जुड़ी हुई होती है, जिसमें विभिन्न समुदायों के आख्यान, महापुरुषों की वीरता, मानवीय संबंध, घटनाओं, जीवनियों और विचारधाराओं आदि का समावेश होता है। जबकि भारतीय साहित्य की समीक्षा करने पर हम देखते हैं इसमें श्रेणी, जाति, लिंग, गरीबी, सामाजिक–आर्थिक मजबूरियों, परिवार, रोमांस और समुदायों जैसे कई विषयों का प्रचुरता से अध्ययन किया गया है मगर समय और भाषाओं में रचनात्मक साहित्य का व्यापक और एकीकृत विश्लेषण नहीं किया है। इसका कारण है कि इस तरह के मैट्रिक्स के आलेखन में बहुत जटिलता है।

यह संगोष्ठी भारतीय सामाजिक इतिहास और सामुदायिक जीवन और रचनात्मक लेखन के बीच विमर्श को बढ़ावा देने वाले भारतीय साहित्य पर केंद्रित रही। संगोष्ठी में न केवल जाने–माने लेखकों के मुख्य धारा और चुनिंदा ग्रंथों को अपितु भारतीय भाषाओं और अनुवादों की तुलना में अधिक सामान्य प्रतिनिधित्व के साथ एक अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि साहित्य और सामाजिक परिवर्तन पर बौद्धिक चर्चा के लिए एक मंच का निर्माण करना ही इस संगोष्ठी का उद्देश्य था। संगोष्ठी में ऐतिहासिक काल, भाषाओं, मुक्ति क्षणों, राष्ट्रीय आंदोलन, दलित उत्थान, वैकल्पिक लिंगानुपात और ऐसे कई अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों का पता लगाने का प्रयास किया गया। साहित्य के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव पर ही संगोष्ठी केन्द्रित रही।

सैद्धांतिक ढांचा

समकालीन सिद्धांत में समाज और साहित्य के बीच के संबंध को कुछ महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोणों के माध्यम से अन्वेषित गया है जो परस्पर विमर्श का विषय रहते हैं। लुकास जॉर्ज लुकाक्स ने अपनी रचना 'द थीअरी ऑफ द नोवेल' (1914–1915) में 'लोकोत्तर और आवासहीनता' मुहावरे को गढ़ा, और इसे 'सभी आत्माओं की लालसा' के रूप में परिभाषित किया, जिसमें वे एक बार संबंधित थे, और पूर्ण आशावादिता के लिए खिन्न। 'वर्गीय चेतना और द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के बारे में उसके तर्कों ने पूर्व की अवधारणा को संशोधित किया और विकासवादी विचारों को ऐतिहासिक यथार्थवाद' (1938) पर स्थापित किया। रेमंड विलियम्स (संस्कृति और समाज, 1958) ने सांस्कृतिक भौतिकवादी दृष्टिकोण के लिए एक अपरिवर्तनीय रास्ता सुझाया है, जिसमें समाज, साहित्य और संस्कृति अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। समानांतर में, फ्रांस में मिशेल फौकॉल्ट का रचनाकर्म, विशेष रूप से *मैडनैस एण्ड सिविलिजेशन* (1961) अध्याय ने मनोविज्ञान को संस्कृति और भाषा के सामाजिक निर्माण पर चर्चा के दायरे में लाकर खड़ा किया जिससे 'साधारण अवस्था, बहिष्करण और समावेशन की धारणाओं को चुनौती देने का एक दार्शनिक आधार बना।

यूरोपीय विचारकों के प्रभाव से भारत में सामाजिक वास्तविकता की खोज जागृत हुई जोकि पश्चिम से अलग

थी। जाति सत्ता के विमर्श का एक प्रमुख कारक थी। उदाहरण के लिए, आशीष नंदी ने प्रारंभ में उन औपनिवेशिक अनिवार्यताओं की आलोचना करना शुरू कर दी थी जिन्हें भारतीय राजनीति का कारक माना जाता था और उन्होंने इस विचार को आगे बढ़ाया। परंपरा के ये प्रतिरूप सामाजिक निर्माण में हस्तक्षेप करते हैं जोकि औपनिवेशिक प्रशासन के निर्णयों के अनुरूप स्थापित किए गए थे। नंदी ने अपने 'इंटिमेट एनमी' (1983) सिद्धांत के साथ, भारतीय साहित्य और संस्कृति की जटिलताओं में एक सामूहिक रूप से चित्रण के साथ–साथ भारत में हित समूहों में व्यक्तिगत मानस स्थापित करने का प्रयास जारी रखा। सिनेमा के क्षेत्र में उनका योगदान एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

यहां सुधीर कक्कड़ के कार्य का उल्लेख करना भी बहुत आवश्यक है जो औपनिवेशिक इतिहास के प्रभाव को भी परखता है और 'द इनर वर्ल्ड : ए साइको–एनालिटिकल स्टडी ऑफ चाइल्डहुड एंड सोसाइटी इन इंडिया (1978) का भांति आकांक्षाओं और उपलब्धियों के बीच विरोधाभासी रूप में आगे बढ़ता है। तत्पश्चात 'द इंडियन साइक (1996)' नामक संग्रह में विश्लेषण का कैनवास बहुस्तरीय भारतीय समाज और विकास लक्ष्यों और संप्रेषित, सांस्कृतिक रूप से निर्धारित परिस्थितियों के बीच रुचि का संघर्ष मौजूद है।

दूसरे शब्दों में 'साहित्य और सामाजिक विकास' के विषय के बारे में सोच के इतिहास ने मार्क्सवादी विचारधारा के कुछ सामान्य सैद्धांतिक ढांचे को दिखाया, लेकिन सामाजिक प्रगति के भारतीय पहलू ने विचारोत्तेजक संशोधनों और क्षेत्रीय विरोधाभासों का निर्माण किया।

पश्चिमी और पूर्वी तर्क

1980 के दशक तक, अंग्रेजी साहित्य में उत्तर–आधुनिकतावादी भारतीय लेखन के उद्भव, विशेष रूप से सलमान रुश्दी की 'मिडनाइट्स चिल्ड्रन' (1981) ने एक विश्वसनीय साहित्यिक और सामाजिक पहचान का संकेत दिया, जिसने औपनिवेशिक अतीत को बुरी तरह प्रश्नों के घेरे में खड़ा कर दिया। भारत में अन्य भाषाओं की आवाज भी उतनी ही मजबूत थी जितनी कि हिंदी लेखक नामवर सिंह और मराठी लेखक भालचंद्र नेमाड़े की थी। मार्क्सवाद के ढ़ांचे को परिवर्तन के साथ स्वीकार करते हुए दोनों ने नई शब्दावलियां और अवधारणाएं बनाईं जो उनके पीढ़ी के पाठकों के लिए सही थीं। भालचन्द्र नेमाड़े का देशवाद/सहजज्ञानवाद (2009) का सिद्धांत एक ऐसा शब्द है जो अंग्रेजी भाषा सीखने की अपेक्षा करता है। कुछ स्तरों पर भारतीय अंग्रेजी आलोचकों के साथ समानता पर विचार किया जा सकता है। फ्रेडरिक जेम्सन के नियंत्रण के खिलाफ एजाज अहमद के जोरदार दावे से हम भली भांति परिचित हैं, लेकिन हमें भूलना नहीं चाहिए कि उनकी पुस्तक 'इन थीअरी : क्लासेस, नेशंस, लिटरेचर' (1992) एक निश्चित प्रकार की अमेरिकी छात्रवृत्ति की शब्दावली और पूंजीवादी प्रक्रिया को अग्रसर करती है और दक्षिण एशियाई दृष्टिकोण से साम्राज्यवाद की व्याख्या भी करती है।

स्थानीय एवं वैश्विक मुद्दे

आघात और आतंक की राजनीति से आहत दुनिया में, जलवायु परिवर्तन से असहाय होकर, निष्पक्ष सिद्धांतों में असंतुलन के साथ, 'पश्चिम और पूर्व' में विद्वानों को वैचारिक दृष्टि से पृथक नहीं किया जाता है। साहित्य सामाजिक विश्लेषण का एक शक्तिशाली उपकरण माना जाता है। जिजेक के मत 'वैचारिक कोरी कल्पना' की धारणा ने कई व्याख्याओं को प्रभावित किया है जोकि राजनीतिक समुदाय को तटस्थ रखती है। सरहदों और सीमाओं का अस्थिर अस्तित्व हैं जब प्रवास, विस्थापन, युद्ध और शरणार्थी आदि स्थितियां मानव विषयों को अधिक मात्रा में इतिहास की ओर धकेलती हैं। इस तरह के संक्रमणों पर सहवर्ती संस्कृति और साहित्यिक कलाकृतियों में परिवर्तन होते हैं। इसके अलावा, इससे अधिक सवालों से परेशान दुनिया के लिए इसके जवाब हैं। दार्शनिक जैक्स रानीसियर में रुचि का पुनरुद्धार बोधगम्य है। उनकी पुस्तक 'द इग्नोरेंट स्कूलमास्टर : फाइव लेसन इन इंटेलेक्चुअल इमैन्शन' (1991) शिक्षकों और शिक्षकों के लिए लिखी गई थी। इसमें पारंपरिक शिक्षण की अपेक्षा स्व–शिक्षण पद्धति की जोरदार वकालत की गई है क्योंकि

अप्रवासी या पीड़ित जनमानस के लिए कोई संस्थानों की कोई सार्थकता नहीं है।

क्या हमें भाषा कार्यकता गणेश नारायणदास देवी का समर्थन नहीं करना चाहिए जिन्होंने बहादुरी से देशव्यापी भारतीय भाषा सर्वेक्षण को अंजाम दिया है? संस्कृत के बाद के युग में कई भाषाओं की जड़ों को याद करते हुए, उन्होंने हमें न सिर्फ भारतीय बोलियों की शृंखला में खोई हुई कड़ियों का स्मरण करवाया है अपितु देश की अनिर्दिष्ट मौखिक परम्पराओं में गरिमा लाने का भी प्रयास किया है। देवी के निबंध 'द बीइंग ऑफ भाषा 'एण्ड काउंटरिंग वायलेंस' ने खोई हुई भाषाओं और वैश्वीकरण के प्रभाव (जी.एन. देवी पाठक, 2009) के बीच एक कड़ी का निर्माण किया है। यदि भारत की सांस्कृतिक विविधता को नजरअंदाज कर दिया जाता है, तो उन्हें सामाजिक सामंजस्य और शांति की संभावना की बहुत कम उम्मीद दिखाई देती है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्देश्य

- सैद्धांतिक रूपरेखा प्रस्तुत करना जिससे भारतीय साहित्य और सामाजिक विकास के बारे में वर्तमान विमर्श का अन्वेषण करेगा।
- भारतीय भाषाओं के विशिष्ट साहित्यिक इतिहास और क्षेत्रीय इतिहास के बीच संबंधों का पता लगाना।
- साहित्यिक/सांस्कृतिक सामग्री के साथ गहन अध्ययन या क्षेत्र के काम के आधार पर इस क्षेत्र में विशिष्ट शोध को साझा करना।
- भारतीय भाषाओं से अनुवादित सामग्री की अग्रभूमि तैयार करना।
- ऐसे अन्वेषणों के लिए अंतः विषयक पद्धतियों पर विचार करना जो मानविकी के साथ–साथ सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान के उपकरणों का संयोजन करे।
- इस विषय में छात्रवृत्ति और बौद्धिक अन्वेषण की वर्तमान गुणवत्ता स्थापित करना।
- प्रस्तुत पत्रों के आधार पर पुस्तक प्रकाशन की परिकल्पना करना।

इस संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत करन के लिए निम्नलिखित विषय सुझाए गए थे लेकिन उन्हें बिल्कुल सीमित भी नहीं किया गया था–

1. भारतीय भाषाओं और क्षेत्रीय इतिहास के विशिष्ट साहित्यिक इतिहास के बीच संबंध
2. भक्ति साहित्य
3. सूफी साहित्य और उसके सामाजिक संदर्भ
4. प्रगतिशील आंदोलन
5. राष्ट्र और कथन
6. लैंगिक पुनर्विचार
7. सामाजिक विकास और सौंदर्य के प्रतिमानों को बदलना
8. उनके सामाजिक प्रभाव के साथ विशिष्ट साहित्यिक आंदोलनों का अध्ययन
9. साहित्यिक ग्रंथ/लेखक जिनके प्रभाव से सामाजिक मनोवृत्ति में परिवर्तन हुआ है।
10. साहित्य और कक्षा

11. सांस्कृतिक विविधता
12. भारतीय साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव
13. आघात, आतंक और संघर्ष क्षेत्रों का साहित्य
14. साहित्य और इको–सौंदर्यशास्त्र
15. आदिवासी/आदिवासी जागृति
16. दलित साहित्य और परिवर्तन की राजनीति
17. क्षेत्र और राष्ट्र
18. सामाजिक प्रभाव के लिए अनुवाद
19. भाषाई बहुलता
20. साहित्य और दृश्य और प्रदर्शन कला का सामाजिक प्रभाव।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से *'इण्डियन लिटरेचर एण्ड सोशल डेवलप्मेंटः थीअरी, प्रैक्टिस एण्ड कम्यूनिटी इम्पैक्ट'* विषय पर 05–07 अप्रैल 2017 के दौरान राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रोफेसर मालाश्री लाल, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के अंग्रेजी सलाहकार बोर्ड की संयोजक तथा संस्थान के अध्येता प्रोफेसर, सुमन्यु सत्पति, इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा तथा श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत किया। संगोष्ठी की संयोजक प्रोफेसर मालाश्री लाल ने इस अवसर पर प्रारंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की। बेनौलिम, गोवा से आए मनोविश्लेषक, उपन्यासकार, विद्वान डॉ. सुधीर कक्कड़ ने उद्घाटन उद्बोधन प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर अक्षय कुमार, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
- श्री संतनु गंगोपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
- प्रोफेसर ज्योतिर्मय त्रिपाठी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास
- डॉ. हिमाद्री रॉय, स्कूल ऑफ जेंडर एण्ड डिवेलप्मैंट स्टडीज, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती, साउथफील्ड कॉलेज, दार्जिलिंग
- सुश्री अरुणाभ बोस, विवेकानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. सिमरन चड्ढा, अंग्रेजी विभाग, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर मून मून मजूमदार, अंग्रेजी के प्रोफेसर, नॉर्थ–ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग, मेघालय
- सुश्री आनंदिता पान, अंग्रेजी शोधार्थी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर, उत्तर प्रदेश
- सुश्री रागिनी कपूर, एम.फिल शोधार्थी, आधुनिक भारतीय भाषाएं एवं साहित्य अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर शैल मायाराम, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डिवेलपिंग सोसाइटीज, दिल्ली

- डॉ. रीबा सोम, वरिष्ठ अध्येता, आईसीएसएसआर
- प्रोफेसर सतीश सी. ऐकांत, बसंत वाटिका, कुलरी, मसूरी
- सुश्री नमिता गोखले, सी 5/15 एसडीए, हौज खास, नई दिल्ली
- प्रोफेसर विनीता ढौंडियाल भटनागर, अंग्रेजी विभाग, विश्वविद्यालय प्रौद्योगिकी संस्थान आरजीपीवी, भोपाल, मध्य प्रदेश
- डॉ. वी. दीपा, अंग्रेजी विभाग, शहीद भगत सिंह कॉलेज, शेख सराय, नई दिल्ली
- डॉ. मार्टिन केम्पचेन, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. निरबान मन्ना, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (भारतीय खान विद्यालय), धनबाद
- डॉ. आर उमामहेश्वरी, पूर्व अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर बेटिना शारदा बूमर, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. प्रेम कुमारी श्रीवास्तव, महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- सुश्री प्रिया सुरुकई चबरिया, 6, बेलाविस्टा, 40/9 एरन लॉन, पुणे
- प्रोफेसर अनीता बालकृष्णन, अंग्रेजी विभाग, क्वीन मैरी कॉलेज, चेन्नई
- श्री रामशंकर सिंह, जी. बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद
- डॉ. रोहित फुतेला, अंग्रेजी विभाग, डीएवी कॉलेज, सेक्टर–10डी, चंडीगढ़
- डॉ. पांडुरंग काशीराम भोय, राजनीति एवं लोक प्रशासन विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
- प्रोफेसर चेतन सिंह, पूर्व निदेशक, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियां दीं-

सत्र - 1

नमिता गोखले : *रिमेंबरिंग कुमाऊँ, रिकॉर्डिंग कुमाऊँ।*

प्रिया सरुकाई चबेरिया : *इवॉल्विंग एन एस्थेटिक ऑफ रैप्च्यूर एण्ड रैप्चर।*

सत्र - 2

रेबा सोम : *सिस्टर निवेदिताज वेब ऑफ इण्डियन लाइफ (1903) –ए नैरेटिव फॉर नेशन बिल्डिंग।*

रागिनी कपूर : *द इंडियन विजुअल आर्टिस्ट एण्ड सोशल कल्चरल कन्टेक्स्टस ऑफ द इंडियन आर्ट।*

विनीता ढौंडियाल भटनागर : *राइटर्स फॉर चेंज : ए हिस्ट्री एंड अकाउंट ऑफ प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन।*

सत्र - 3

मून मून मजूमदार : *द पॉलिटिक्स ऑफ रिप्रेजेंटेशन इन सलेक्ट वर्क्स ऑफ फिक्शन फरॉम इण्डियाज नॉर्थ–ईस्ट।*

निरबान मन्ना : *इंटैरोगेटिंग एप्लाइड थिएटर एज ए टूल फॉर कपैसिटी बिल्डिंग इन कंटेपरेरी बंगाल : केस स्टडी।*

सत्र - 4

मार्टिन केम्पचेन : *रबींद्रनाथ टैगोरज वर्ल्डवाइड रिसेप्शन–ए क्रिटिकल ओवरव्यू।*

शैल मायाराम : *ए लिटरेरी जेनिआलजी ऑफ राइट–विंग नेशनलिज्म।*

ज्योतिर्मय त्रिपाठी : *द प्रोडक्शन ऑफ लिटरेरी वैल्यूस इन कंटैम्परेरी इण्डिया।*

सत्र - 5

सतीश ऐकांत : *इण्डिया एण्ड यूरोपः निर्मल वर्मा एज ए क्रिटिकल इन्साइडर।*

आनंदिता पान : *राइटिंग द सेल्फ : ऑटोबायोग्राफी एंड द पॉलिटिक्स ऑफ चेंज।*

अरुणाभ बोस : *द एनजेंडरिंग ऑफ सबाल्टर्न हिस्टोरियोग्राफी इन द पलामाउ फिक्शन ऑफ महाश्वेता देवी।*

सत्र - 6

अक्षय कुमार : *प्रोग्रेसिव पंजाबी पोइट्री : फ्रॉम लोक युद्ध टू धर्मयुद्ध।*

हिमाद्रि रॉय : *टॉर्न बिटवीन इमोशनस : ए क्रिटिकल अनैलिसिस ऑफ बाइसैक्सुअलिटी इन रावोज लेडी लोलिताज लवर।*

रमाशंकर सिंह : *लाइफ, लैंग्वेज एण्ड पॉलिटिक्स ऑफ नोमेडस ऑफ उत्तर प्रदेश : एन एम्पाइरिकल स्टडी।*

सत्र - 7

सिमरन चड्ढा : *रिफ्रेक्टिड विटनेसिंग : नेरेटिवस फ्रॉम वैली।*

रोहित फुलेता : *फाइंडिंग एजेंसी, कम्बैटिंग द कुलैक्टिव ट्राउमा : बलबीर माधोपुरीज अगेन्स्ट द नाइट।*

सत्र - 8

प्रेम कुमारी श्रीवास्तव : *आन्टालजीकल आर्टिकुलेशनस ऑफ द फोक : देशीवाद एण्ड बारहामासा ऑफ नॉर्थ इण्डिया।*

पाण्डुरंग काशीराम भोय : *लिटरेचर ऑन आदिवासी अवेकनिंग इन महाराष्ट्र*

अनीता बालकृष्णन् : *रैक्वींम फॉर ए ट्राइब : एन्वाइरन्मेंटल एथिक्स एण्ड एथनोग्राफी – रि–रीडिंग राजम कृष्णनज व्हेन द कुरिन्जी ब्लूमस।*

समापन सत्र

कौस्तव चक्रवर्ती : *इन सर्च ऑफ एन इन्डोजीनियस इको–मैस्क्यूलिनिटी : ए जर्नी थ्रू सलेक्ट ट्राइबल टेलस एण्ड द ग्रीन पोइमस ऑफ गुलज़ार।*

वी. दीपा : *द पोइटिक्स एण्ड पॉलिटिक्स ऑफ 'जल्लीकट्टू' इन सी.एस. चैल्लप्पाज वादिवासल/एरिना।*

2. 'रीजनल कल्चरस एण्ड न्यू मीडिया टैक्नॉलजी' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (26-28 अप्रैल 2017)

मूलाधार– 'रीजनल कल्चरस एण्ड न्यू मीडिया टैक्नॉलजी' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में सांस्कृतिक निरंतरता को व्याख्यायित करने का एक प्रयास किया गया जो स्थानीय/तत्काल, राष्ट्रीय राजधानी या सांस्कृतिक उत्पादन केंद्र तथा व्यापक वेब के कई संबंधों के बीच स्थित है और जो उन्हें परस्पर जोड़ता है। यदि कोई मुख्यधारा बनाम सीमांत चर्चा का पालन करता है तो ऐसे में 'क्षेत्रीय' शब्द का प्रयोग गौण नहीं है। यहाँ समुदायों के भीतर तथा समुदायों से बाहर विभिन्न सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का वर्णन कहानी तथा संवाद के माध्यम से करने का प्रयास किया गया। हम किसी 'क्षेत्र' को सहज, अनियमित, असंगठित रूप में मान लेते हैं तथा उसमें भाषाई, सांस्कृतिक और भू–राजनीतिक समुदायों द्वारा निरंतर सुधार किया जाता है।

स्पष्टतः कहा जा सकता है कि पिछले चार दशकों में नई प्रौद्योगिकियों के उदय के बाद इस संगोष्ठी का आयोजन सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के क्षेत्रीय या स्थानीय रूपों के लिए उल्लेखनीय संवृद्धि है। यह न केवल रेखीय प्रारूप से डिजिटल में बदलाव का प्रतीक है, बल्कि इंटरनेट के माध्यम से वैश्विक वेब का उदय भी है। उदाहरण के लिए, हिंदी और लद्दाख, मणिपुर, मिजोरम या केरल कें मलप्पुरम जैसे क्षेत्रों में कई अन्य भाषाओं और बोलियों के बीच भोजपुरी सिनेमा और संगीत का विकास निश्चित रूप से सशक्तिकरण का एक प्रमाण है जोकि डिजिटल मीडिया की देन है। यह केवल सेल फोन, पैन ड्राइव – लैपटॉप /नोटबुक, और यहां तक कि लाइव संगीत कार्यक्रमों के माध्यम से हासिल किया जा सकता था। यहां तक कि सीधे बड़े–बड़े वीडियो प्रसारणों के माध्यम से दर्शक छोटे और बड़े सांस्कृतिक समारोहों को देखकर कलाकारों की समीपता का आनंद लेते हैं।

क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृतियों के चलते विकास की कहानी हालांकि सीधी नहीं है – बहुत कुछ खो दिया जाता है जितना कि प्राप्त किया जाता है। क्षेत्रीय अनुभवजन्य साक्ष्य से पता चलता है कि क्षेत्रीय भाषाएं और संस्कृतियां भी पुनर्संरचना और संशोधन की प्रक्रिया से गुजर रही हैं या पूरी तरह से पुराने रूपों और पद्धतियों को ढांप रही हैं। क्षेत्रीय भाषाएं और संस्कृतियां मुख्यधारा 'के साथ–साथ समीपवर्ती संस्कृतियों के प्रभावों को भी अवशोषित कर रही हैं, लेकिन वे इंटरनेट के माध्यम से आसानी से उपलब्ध कराए गए काल्पनिक सरल स्रोतों से ली गई हैं। यह प्रक्रिया और इसके परिणाम अपने आप में पेचीदा और व्यापक शोध और विश्लेषण के योग्य हैं। लेकिन एक अनिवार्य प्रश्न बना हुआ है कि व्यापक सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ में इस तरह की वृद्धि का वास्तव में क्या अर्थ है?

ये ऐसे प्रश्न हैं, जो अनुभवजन्य तथा सैद्धांतिक/दार्शनिक दोनों स्तरों पर समर्थन करते हैं। ये उद्योग/बाजार/प्रथाएं किस तरह से अस्तित्व में आती हैं तथा संघर्ष और सहयोग की उन्नत भौगोलिक स्थितियों के बारे में बहुमूल्य उदाहरण जुटाए जाते हैं, जो हमारे लोकतंत्र को आकार प्रदान करते हैं। इस प्रकार सम्मेलन में देश के विभिन्न हिस्सों से दृष्टिकोण, अवधारणाओं तथा तथ्यात्मक रिपोर्टों को लाने और एक व्यापक व तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास किया गया। ये डिजिटल संस्कृतियाँ स्थानीय और क्षेत्रीय, और वैश्विक शक्तियों को आकार देने तथा भाषाई रूपों और उप–समुदायों को बनाए रखने के लिए मूल्यवान तथा पहले से अगम्य परख प्रदान करती हैं।

इस सम्मेलन के माध्यम से नए सांस्कृतिक उद्योगों और बाजारों की संरचना में बौद्धिक योगदान देने के लिए एक मंच प्रदान किया गया। संस्कृतियों का समाजशास्त्र–नृविज्ञान उत्पादन तथा दर्शकों के समुदायों, प्रौद्योगिकी–संस्कृति से जुड़ाव, निहित या स्पष्ट राजनीति के माध्यस से देखा गया। साथ ही नई शैलियों और उद्योगों, सौंदर्य आकलन और हाल ही में जनता की रूचियों में बदलाव के साथ–साथ इन संस्कृतियों के योगदान के रूप में लोकतांत्रिककरण की व्यापक प्रक्रियाओं के बारे में भी विचार–विमर्श किया गया।

संस्थान में 26–28 अप्रैल 2017 के दौरान 'रीजनल कल्चर एण्ड न्यू मीडिया टैक्नॉलजीस' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येता डॉ. बिंदू मेनन तथा डॉ. रत्नाकर त्रिपाठी इस संगोष्ठी

के संयोजक थे। संस्थान के राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा ने इस अवसर पर स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया जबकि संगोष्ठी के संयोजक डॉ. रत्नाकर त्रिपाठी तथा डॉ. बिंदू मेनन, ने परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की।

प्रतिभागी

- डॉ. जो क्रिस्टोफर, यूएस कॉन्सुलेट जनरल, 1–8–323, पैगा पैलेस, चिरन फोर्ट लेन, बेगमपेट, सिकंदराबाद, तेलंगाना
- डॉ. एलिस सैमसन, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- डॉ. रविकांत, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डिवेलपिंग सोसाइटी, दिल्ली
- प्रोफेसर अन्ना मोरकॉम, संगीत विभाग, रॉयल होलोवे, लंदन विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर टी. टी. श्रीकुमार, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- डॉ. विभूति दुग्गल, सराय–सीएसडीएस, राजपुर रोड़, दिल्ली
- सुश्री शिल्पा मुखर्जी, डॉक्टरेट अभ्यर्थी, कला एवं सौंदर्यशास्त्र संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. शिखा झिंगन, सिनेमा अध्ययन, कला एवं सौंदर्यशास्त्र संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. वसुधा पांडे, इतिहास विभाग, लेडी श्री राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- श्री कूनल दुग्गल, फ्लैट नं. 1102, गंगा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
- सुश्री रश्मि एम., पीएचडी शोधछात्रा, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिज, राष्ट्रीय उच्च अध्ययन संस्थान, बैंगलोर, कर्नाटक
- डॉ. गौरव राजखोवा, फ्लैट नंबर 1 सी, पहली मंजिल, 65, सोनिया एनक्लेव, गीतानगर, चिड़ियाघर–नरेंगी रोड़, गुवाहाटी
- डॉ. मधुजा मुखर्जी, फिल्म अध्ययन विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल
- श्री आलम श्रीनिवास, वरिष्ठ पत्रकार, संस्कृति मीडिया और प्रशासन केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. कैथरीन हार्डी, वाशिंगटन विश्वविद्यालय सेंट लुइस, अमेरिका
- श्री नीकोली कुओत्सु, पीएचडी शोधार्थी, सिनेमा अध्ययन, कला एवं सौंदर्यशास्त्र संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री रोहित प्रकाश, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डिवेलपिंग सोसाइटीज, दिल्ली
- डॉ. अक्षय कुमार, स्कूल ऑफ कल्चर एंड क्रिएटिव एक्सप्रेशंस, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली
- सुश्री संप्रति, अनुसंधान विद्वान, नृत्य विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, तेलंगाना
- श्री ससी किरण, डॉक्टरेट अभ्यर्थी, संचार विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, तेलंगाना
- सुश्री सी.यामिनी कृष्णा, अंग्रेजी और विदेशी भाषा विश्वविद्यालय (ईएफएलयू), हैदराबाद, तेलंगाना
- प्रोफेसर लक्ष्मी सुब्रमण्यन, इतिहास विभाग, सेंटर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंसेज, कलकत्ता

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर अपनी प्रस्तुतियां दीं–

सत्र - 1

अक्षय कुमार : *गोविंदा एट द कस्प : रिलेयिंग प्रोविंशियलिटी एट एक्रॉस टेरिटरीस।*

रविकांत : *मीडिया, मेमोरी और इंटरमीडिया : द 'रीजनल' इन हिंदी सिनेमा।*

शिखा झिंगन : *साउंडिंग द रीजन : साउंड ट्रैक्स ऑफ न्यू बॉलीवुड सिनेमा।*

सत्र - 2, राजनीतिक अर्थव्यवस्था और डिजिटल संस्कृति

आलम श्रीनिवास : *रीजनल इम्प्रिंटस ऑन नेशनल एंटरप्राइजेज द केस ऑफ बिजनेस मॉडल ऑफ केबल कम्पनीस।*

विबोध पार्थसारथी : *रीजनल इम्प्रिंटस ऑन नेशनल एंटरप्राइजेज द केस ऑफ बिजनेस मॉडल ऑफ केबल कम्पनीस।*

रोहित प्रकाश : *'स्मार्ट' मीडिया : अंडरस्टैण्डिंग न्यू डिजिटल प्रैक्टिसिस थ्रू ए केस स्टडी ऑफ गो न्यूज।*

रश्मि एम : *कॉलर ट्यून्स, रिंग टोन एण्ड यूट्यूब चैनल : द राइज ऑफ कन्नड़ कंटेंट इंडस्ट्री।*

सत्र - 3, कुलैक्टिवस मीडिया एण्ड मीडिया कल्चर

टी. टी. श्रीकुमार : *कुलैक्टिवस एण्ड स्पाटिअल इमैजिनरीस इन रीजनल डिजिटल कल्चरस।*

अन्ना मोरकॉम : *इन्डस्ट्री कम्यूनिटी एण्ड एक्सचेंज इन तिबेतिअन एक्जाइल पॉप म्यूजिक एण्ड तिबेतिअन चांटिंग एल्बमस।*

मधु मुखर्जी : *स्पीकिंग थ्रू मनभूम फिल्म्स : इन्क्वैरीस इन्टू लैंग्वेज स्पीच एण्ड डब्बिंग।*

सत्र - 4, ऑडिटरी जियोग्राफीस

लक्ष्मी सुब्रमण्यम : *टैक्नॉलजीस एण्ड न्यू म्यूजिकल जियोग्राफीस : अंडरस्टैण्डिग नेशनल, रीजनल एण्ड ग्लोकल फ्लोस ऑफ कार्नेटिक म्यूजिक।*

विभूति दुग्गल : *इमेजनिंग साउंड थ्रू द फरमाईश : रेडियो एण्ड रिक्वेस्टपोस्ट कार्डस इन नॉर्थ इण्डिया 1955–75 ।*

शिल्पा मुखर्जी : *अरियल स्लेज इन अर्बन मोहल्ला : द न्यू डिजिटल सोनोटोफ ऑफ द आइटम नंबर एण्ड फीडबैक लूप।*

सत्र - 5, स्पाटियल इमेजिनरीस एण्ड रीजनल कल्चरस -१

कैथरीन हार्डी : *हाउ टू डू थिंग्स विंग्स विद वायरल वीडियो स्पैक्टैकुलर परफॉर्मेंटिविटी, ग्लोबल नेटवर्क एण्ड द रीजन।*

नियिकोली कोट्सु : *ऑडियो विजुअल कल्चर ऑफ नॉर्थ ईस्ट इंडिया।*

ससी किरण एम एंड सी यामिनी कृष्णा : *तेलुगु डिजिटल वीडियो कल्चर।*

सत्र - 6, स्पाटियल इमेजिनरीस एण्ड रीजनल कल्चरस -२

गौरव राजखोवा : *कन्ज्यूमिंग द एक्सडाकांथा : भूपेन हजारिका, द म्यूजिक मार्केट एण्ड असमीज नेशनलिज्म इन द 1990 डिकेट।*

जो क्रिस्टोफर : *एक्सपोटिंग द एक्सेसएण्ड इम्पोर्टिंग द सोल्यूशन्स : द रियल पोलिटिक इन द न्यू मीडिया तेलुगु स्टेट्स इन द ऐज ऑफ न्यू मीडिया।*

संगीत सत्र व्याख्यान प्रदर्शन

ज्योति सिन्हा : *भोजपुरी लोकगीतों का सौन्दर्य।*

प्रवीण जारेत : *पारंपरिक हिमाचली संगीत पर एक प्रस्तुति।*

सत्र - 7, प्रदर्शन और डिजिटल विवरण

वसुधा पाण्डे : *द मैनी लाइवस ऑफ कुमाउनी एपिक : राजुला मालुशाही फ्रॉम ओरल टू डिजिटल।*

ऐलिस सैमसन : *ए फिल्टर फॉर द सेल्फ : न्यू मीडिया इमरजिंग यूथ कल्चर।*

संप्रति मल्लदी : *डिजिटल कल्चरस एण्ड रीजनल परफॉर्मिंग ट्रेडिशनस।*

गोलमेज

रीजनल मीडिया : *एस्थेटिक्स एण्ड पॉलिटिक्स*

लक्ष्मी सुब्रह्मण्यम

टी टी श्रीकुमार

रविकांत

मधु मुखर्जी

अन्ना मोरकॉम

कथरीं हार्डी

अक्षय कुमार

3. 'प्योरिफाइंग द डायलैक्ट ऑफ द ट्राइब : क्रॉस-कल्चरल कन्सर्नस इन कलोनिअल एण्ड पोस्ट-कलोनिअल इण्डिया' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (17-19 मई 2017)

मूलाधार – इसमें काई शक नहीं कि आधुनिक भारत के विभिन्न क्षेत्र ब्रिटिश शासन के अधीन थे, मगर वे या तो दूसरी परस्पर संस्कृतियों के आधिपत्य में थे या उनके प्रति उनका विशेष झुकाव था। औपनिवेशिक आधुनिकता के आगमन से भाषाई (आधुनिक भारतीय भाषाएँ) राष्ट्रवाद, यूरोपीय (आधुनिक यूरोपीय भाषा) राष्ट्रवाद की प्रमुख नई विचारधाराओं में से एक रूप बन गया। ऐसा नहीं है कि, लगभग चार शताब्दियों में इन भाषाओं और उनकी संस्कृतियों (पाली, बौद्ध धर्म; फारस–अरबी, मुगल/इस्लाम) ने विविध सामाजिक और राजनीतिक दबावों के तहत उन्नयन नहीं किया था। लेकिन बदलते राज्यों और सल्तनतों में रहने वाले समुदायों को उनकी भाषाई पहचान के बारे में अधिक जानकारी नहीं थी, और वे कुछ हद तक बहुभाषी थे। यूरोपीय उपनिवेशवाद के प्रभाव में भाषाई पहचान, दूसरे कारकों के साथ और दृढ़ हो गई। भारत में भाषाई राष्ट्रवाद के नवजात रूपों को स्थानीय चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन,

समय के साथ, वे नए, अखिल भारतीय उपनिवेशवाद–विरोधी संघर्षों के विरोध में पहचान के तौर–तरीकों में तबदील हो गए। फिर भी, यूरोपीय बंधनों से कभी छुटकारा नहीं मिला, एक राष्ट्रीय साहित्य में बंगला, कश्मीरी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, ओड़िया आदि विचार का अविर्भाव हुआ। इसके साथ ही स्वच्छंद पुनरीक्षण, अन्वेषण तथा अंग्रेजी शिक्षा के कारण प्रत्येक भारतीय भाषा की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की नई पद्धतियों की एक शृंखला समाने आई। अतीत ओतप्रोत भी था और पुनः सृजित भी। आधुनिक और विदेशी संस्कृति का स्वागत किया गया उसे अपनाया गया।

जहां परंपरा, सामूहिक स्मृतियां तथा पहचान एक सामूहिक बहुभाषी की भावना के संदर्भ में विभिन्न भारतीय भाषाओं का रूप ग्रहण कर लेते हैं वहां इस पृष्ठभूमि के विरुद्ध, प्राथमिक और शायद मूल सवालों को प्राथमिक तौर पर साहित्य और साहित्यिक परंपराओं से संबंधित होना चाहिए। भारतीय होने का क्या मतलब है? साहित्य, और साहित्यिक, सांस्कृतिक परंपरा का इससे क्या लेना–देना है? भारतवासी विभिन्न भाषाएं बोलते और लिखते हैं, और फिर भी एक ही भाषा में विविध संस्कृतियां मौजूद रहती हैं जोकि एक बहुपार्श्व में समाहित होकर विशेष पहचान का निर्माण करती हैं। क्या उन्नीसवीं शताब्दी के बाद उन सभी प्रक्रियाओं की खोज करना संभव है?

सम्पूर्ण राष्ट्र, भाषिक, सांस्कृतिक विविधता के संदर्भ में भारतीय राजनैतिक एकता के ये बहुत गंभीर प्रश्न हैं जोकि इन महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाओं में शामिल हैं या फिर सम्मिलित होंगे। राष्ट्रीय परंपराओं और अस्मिताओं के बीच सीमा रेखा के रूप में चिह्नित भाषाई और सांस्कृतिक असमानताएं हैं, फिर भी वे सीमा रेखाएं अक्सर धुंधली दिखाई देती हैं, ताकि अंतर हमेशा आसानी से न हो। दूसरी ओर, ऐतिहासिक रूप से स्तरीकृत भारतीय साहित्यिक निर्माण की परंपरा से पता चलता है कि सामान्य प्रतीक, विधा, लेखन की पद्धतियां आदि वे विषय हैं, जिन्हें समग्र रूप से एक साहित्यिक परंपरा में अलग–अलग भाषाओं में अभिव्यक्त माना जाना चाहिए।

विषय वस्तु और प्रश्न

- नए विषय, यूरोपीय शिक्षा और पाठ्य पुस्तकें।
- समाचार पत्र और आवधिक प्रेस, साहित्यिक आवधिक।
- पुरानी, स्वदेशी संज्ञानात्मक श्रेणी, साहित्य 'पदक साहित्यिक' की यूरोपीय धारणाएँ ।
- पारस्परिक रूप से सहजीवी भाषाई क्षेत्रों में 'साहित्यिक क्षेत्र,' और 'सांस्कृतिक राजधानी' का उदय।
- पुनर्वित्त और अतीत को समझना : क्षेत्रीय इतिहास से साहित्यिक इतिहास के अतीत को समझना और पुनः खोजना।
- भाषा–बोली विवाद
- परस्पर भाषाई अंतराफलक की नई शैली और परंपराएं
- गद्यात्मक भाषाई संस्कृतियों में गद्य और इसके उपयोग
- लोकप्रिय, लोक और मनोरंजन के अन्य रूप
- जाति, जनजाति और लिंग
- देशज/विदेशिया और जातीय और बेजतीय भास आदि।

17–19 मई 2017 के दौरान संस्थान में 'प्योरिफाइंग द डायलैक्ट ऑफ द ट्राइब : क्रॉस–कल्चरल कन्सर्नस इन कलोनिअल एण्ड पोस्टक्लोनिअल इण्डिया' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येता प्रोफेसर सुमन्यु सत्पति, संगोष्ठी के संयोजक थे। स्वागत भाषण संस्थान के अध्येता प्रोफेसर आनंद कुमार द्वारा

दिया गया। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर सुमन्यु सतपति ने परिचयात्मक टिप्पणी दी। अंग्रेजी के तुलनात्मक साहित्य, किंग्स कॉलेज लंदन के प्रोफेसर जावेद मजीद द्वारा इस अवसर पर मुख्य भाषण प्रस्तुत गया था।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर ई.वी. रामकृष्णन, प्रोफेसर एमेरिटस, केंद्रीय विश्वविद्यालय गुजरात
- डॉ. रक्षंदा जलील, 46 नई मोती बाग, नई दिल्ली
- प्रोफेसर रेगेनिया गगनियर, अंग्रेजी विभाग, एक्सेटर विश्वविद्यालय, एक्सेटर
- श्री शस्वत पांडा, अंग्रेजी विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- श्री उमाशंकर पात्रा, पीएचडी शोधार्थी, अंग्रेजी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. ललित कुमार, अंग्रेजी विभाग, दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर मो. असदुद्दीन, अंग्रेजी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
- प्रोफेसर जतिंद्र कुमार नायक, डेपा
- डॉ. आयशा मुखर्जी, अंग्रेजी विभाग, एक्सेटर विश्वविद्यालय, एक्सेटर
- डॉ. रनिता चटर्जी, अंग्रेजी और फिल्म विभाग, मानविकी महाविद्यालय, एक्सेटर विश्वविद्यालय
- डॉ. अनिमेष महापात्र, अंग्रेजी विभाग, दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स, नई दिल्ली
- प्रोफेसर वेंडी सिंगर, इतिहास विभाग, केनियन कॉलेज, गैम्बियर
- डॉ. जागृति उपाध्याय, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, पुलिस, सुरक्षा और आपराधिक न्याय, जोधपुर
- प्रोफेसर तनुतृष्णा पाणिग्रही, मानविकी विभाग, अंतर्राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान
- सुश्री मधुरा दामले, राजनीति विज्ञान विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता
- प्रोफेसर एच.एस. शिव प्रकाश, संकायाध्यक्ष, कला एवं सौंदर्यशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू, विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. सोमा मुखर्जी, अंग्रेजी एवं अन्य आधुनिक यूरोपीय विभाग, विश्व भारती, शांति निकेतन
- डॉ. सबिहा हाशमी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर एम. श्रीधर, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- प्रोफेसर अक्षय कुमार, अंग्रेजी और सांस्कृतिक अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
- प्रोफेसर डेसमंड एल. खरमाव्फलंग, सांस्कृतिक और रचनात्मक अध्ययन विभाग, पूर्वोत्तर हिल विश्वविद्यालय, शिलांग
- प्रोफेसर चेतन सिंह, पूर्व निदेशक, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर के एम. बहरुल इस्लाम, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर पी. माधवन, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित शोधपत्र प्रस्तुत किए-

सत्र - 1

वेंडी सिंगर : *द री/इमर्जेंस ऑफ रीजनल लैंग्वेजिस : फ्रॉम कल्चर टू कोर्ट टू बिहार एंड तमिलनाडु।*

सत्र - 2

एम. श्रीधर : *रिफ्लैक्शन ऑन दी मॉडरन तेलुगु मूवमेंट।*

तनुत्रुष्णा पाणिग्रही : *मिशनरी इंटरफेस : असामीज एण्ड ओडिया लिटरेचर इन 19थ सेंचरी।*

शास्वत पांडा : *साँग ऑफ द जेल्ड बार्ड : ए स्टडी ऑफ टू इन्कारस्रेशन नैरेटिवस इन कलोनिअल इण्डिया।*

सत्र - 3

पुन्नप्पुरथ माधवन : *द लैंग्वेज ऑफ नॉलेज ऑन द पोस्टकलोनिअल क्वाल्मस।*

मधुरा दामले : *'कंटेमिनेंट फॉरेन लैंग्वेजिस' एण्ड द मराठी सेल्फ : लैंग्वेज पॉलिटिक्स इन कलोनिअल महाराष्ट्र।*

जागृति उपाध्याय : *लैंग्वेज पालिम्पेस्ट इन द दरोगा दशतारी बहि ऑफ द मारवाड़ रीजन।*

सत्र - 4

रेगेनिया गगनियर : *ट्रांसकल्चरल पॉलिटिकल लैंग्वेजेस।*

सोमा मुखर्जी : *कंपेरिटिव लिटरेचर एण्ड इट्स रेलेवेंस इन इण्डियन लिटरेचर।*

सत्र - 5

ई.वी. रामकृष्णन : *इंपीरियल इमेजिनरी एंड द आइडिया ऑफ द लिटरेरी।*

आयशा मुखर्जी : *अगरेरियन रिफॉर्म एण्ड मल्टी–लिंगुअल नॉलेज इन अर्ली कलोनिअल इण्डिया।*

सत्र - 6

जतिंद्र के नायक : *आइडैंटिटी, लैंग्वेज एण्ड प्रिंट कल्चर : द मूमेंट ऑफ उत्कल साहित्य।*

अक्षय कुमार : *इण्डियन लिटरेचर : कंफिगरेशनस ऑफ कॉस्मोपोलिटन वर्नाक्युलर।*

सबिहा हस्मी : *हिन्दी इन बिहार : कलोनिअल लैगेसी टू पीपलस लैंग्वेज।*

सत्र - 7

एच. एस. शिवप्रकाश : *ट्रेसिंग द ऑरिजन ऑफ नैरेटिव मॉडरनिटी इन कन्नड़ा लिटरेचर एण्ड थियेटर।*

रनिता चटर्जी : *कल्चरल नैशनलिज्म एण्ड द फॉरमेशन ऑफ ए ''बंगाली'' सिनेमा इन कलोनिअल कलकत्ता।*

सत्र - 8

मोहम्मद असदुद्दीन : *द प्लेस ऑफ ट्रांसलेटिड लिटरेचर इन लिटरेरी हिस्टोरिग्राफी।*

अनिमेश महापात्र : *इंटरकल्चरल जेनालजीस : ए स्टडी ऑफ एन अर्ली मल्टीलिंगुअल कम्पेरेटिस्ट।*

सत्र - 9

बहरुल इस्लाम : *सोसिआ–पॉलिटिकल एप्परोपरिएशन ऑफ ए डॉइलैक्ट : द केस ऑफ सिलहेती डाइलैक्ट एण्ड आइडैंटिटी क्वेश्चन इन असाम।*

डेसमंड खर्माफलंग : *रेजिमेन ऑफ रेसिस्टेंस : कोडीजिंग खासी ओरल लिटरेचर।*

ललित कुमार : *बैटल ऑफ स्क्रिप्टस : इमरजेंस ऑफ मॉडरनमैथिली।*

सत्र - 10

रक्षंदा जलील : *इन द साइज ऑफ द साइलेंट : डिडक्टिक राइटिंग फॉर वीमेन इन अर्ली उर्दू लिटरेरी जर्नल्स।*

उमाशंकर पात्र : *पॉयटस एण्ड आर्बिटरस : मॉडरनिटी एण्ड लिटरेचर मार्केटप्लेस इन ओड़िशा एण्ड बंगाल।*

समापन सत्र

आरुणि महापात्रा : *नॉवेलिस्ट, नैशनलिस्ट्स एण्ड रीडरस : बंकिमचंद्र चटर्जी एण्ड फकीर मोहन सेनापति* (स्काइप)

4. चम्पारण शताब्दी के अवसर पर 'गाँधी एण्ड द चम्पारण सत्याग्रह : एन एन्डिवर, ए लैगेसी एण्ड कंटेम्परेरी इण्डिया' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (29-31 मई 2017)

मूलाधार – अहिंसा के माध्यम सत्य को जानने के लिए सत्याग्रह एक व्यक्तिगत और सामूहिक खोज है। 20वीं सदी के पहले दशक में गाँधीजी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में पहली बार सत्याग्रह प्रयोग किया गया और बाद में जातिवाद, नस्लवाद, लिंगवाद, औपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, पारिस्थितिक अवमूल्यन तथा सरकारी दमन के शिकार हुए लोगों द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में न्याय तथा आत्म–सम्मान पाने के लिए विश्व भर में इसका प्रयोग किया गया।

आधुनिक समय में भारतवासियों तथा भारतीय राजनीति ने सत्याग्रह से स्वयं को सब से पहले तब जोड़ा जब गाँधीजी ने माह अप्रैल तथा नवंबर, 1917 के दौरान बिहार की ग्रामीण जनता की शिकायतों के अनुरूप बिहार के चंपारण में इसका प्रयोग किया। गाँधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, चंपारण में वह दिन मेरे जीवन में एक अविस्मरणीय घटना है। किसानों और मेरे लिए तो यह एक लाल–पत्र दिवस है। एकीकृत पहल के रूप में यहां उन्होंने एक सामान्य मंच पर स्थानीय अभिजात वर्ग, वकीलों, राष्ट्रीय नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और पीड़ित किसानों को इकट्ठा कर अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ लड़ाई। उन्होंने पीड़ित पुरुषों और महिलाओं के जीवन की स्थितियों को सुधारने के लिए कई तरह के रचनात्मक कार्यक्रमों की शुरुआत की।

आगामी दशकों में, ब्रिटिश राज से स्वतंत्रता के लिए भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के हिस्से के रूप में, गाँधीजी ने राष्ट्रीय प्रतिरोध आंदोलन के लिए रचनात्मक कार्यक्रमों के संयोजन में सत्याग्रह के प्रयोग का विस्तार और प्रसार किया। इस प्रक्रिया में उन्होंने मिल–मजदूर सत्याग्रह (अहमदाबाद, 1918), असहयोग आंदोलन (1921), वैकोम सत्याग्रह

(1924), बारडोली सत्याग्रह (1928), नमक सत्याग्रह (1930), और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) जैसे चालीस से अधिक आंदोलनों की शुरूआत कर उनका नेतृत्व और मार्गदर्शन किया। भारत को लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में उभरने में मदद करने वाले विभिन्न कारकों में, सत्याग्रह निश्चित रूप से महत्त्वपूर्ण और लाभदायक कारक है।

स्वतंत्रता के पश्चात, विभिन्न मुद्दों और समस्याओं को हल करने के लिए राजनीतिक समुदायों और नागरिक समाज के भीतर विभिन्न संगठनों और समूहों द्वारा सत्याग्रह की प्रथा जारी रही है। हालाँकि कहीं न कहीं प्रयासों की अधिकता में, ऐसा लगता है, कि सत्याग्रह की मुख्य संवेदनशीलता या तो विफल गई है, जलमग्न गई है, या फिर दिशाहीन हो गई है। इसलिए समय आ गया है कि गाँधीजी और उनकी सत्याग्रह की राह के बारे में पुनर्विचार करें क्योंकि गाँधी और सत्याग्रह दोनों से प्रेरणा लेने की निरंतरता अक्षीण रहती है।

चंपारण शताब्दी का अवसर हमें सत्याग्रह के व्यापक और जटिल कैनवास और कथानक का अवलोकन करने का अवसर प्रदान करता है। हम विभिन्न विषयों और क्षेत्रों के जानकार व्यक्तियों को समग्र रूप से सत्याग्रह के भूत, वर्तमान और भविष्य के निम्नलिखित पहलुओं पर एक साथ देखने का प्रस्ताव करते हैं–

क) 1917 के चंपारण सत्याग्रह के संदर्भ, सामग्री तथा प्रभाव को समझना

ख) सत्याग्रह शताब्दी भारत में सत्याग्रह (1917–2017) के उपरांत सामूहिक गतिविधियों का एक रूप।

ग) सत्याग्रह एवं सर्वोदय – गाँधीजी के बाद भारत में प्रमुख अवधारणाएं, प्रथाएं तथा पेशेवर।

घ) चंपारण में गाँधीजी के बाद से सत्याग्रह और लोकतांत्रिक राष्ट्र–निर्माण के बारे में विमर्श।

ङ) सत्याग्रह की नैतिकता, दर्शन और राजनीति : पिछला कल, आज और अगला कल।

च) अर्थव्यवस्था से पारिस्थितिकी तक वर्तमान सत्याग्रह के विषय

छ) वैश्वीकरण के युग में सत्याग्रह और हिंसा की राजनीति।

संस्थान में 29–31 मई 2017 के दौरान 'गाँधी एण्ड द चम्पारण सत्याग्रह : एन एन्डिवर, ए लैगेसी एण्ड कंटेम्परेरी इण्डिया' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येता प्रोफेसर आनंद कुमार तथा श्री समीर बनर्जी, संगोष्ठी के संयोजक थे। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर आनंद कुमार ने परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की। संस्थान की अध्यक्ष प्रोफेसर चन्द्रकला पाडिया ने इस अवसर पर स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। मुख्य संबोधन प्रोफेसर सब्यसाची भट्टाचार्य, 18 अश्विनी दत्त रोड, कोलकाता द्वारा प्रस्तुत किया गया। संस्थान की अध्यक्ष प्रोफेसर चन्द्रकला पाडिया द्वारा अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत किया गया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर सुधीर कुमार, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
- प्रोफेसर गोपाल गुरू, प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर चेतन सिंह, पूर्व निदेशक, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री सुरेन्द्र कुमार, राष्ट्रीय सचिव, ग्रामीण विकास स्वयंसेवी संगठन संघ (एवीएआरडी), नई दिल्ली
- श्री अरविंद मोहन, ए–504, जनसत्ता अपार्टमेंट, सैक्टर–9, वसुंधरा, गाजियाबाद

- डॉ. उपेन्द्र कुमार, व्यावसायिक अध्ययन महाविद्यालय, उच्च अध्ययन राष्ट्रीय संस्थान, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलोर
- श्री गिरिराज किशोर, 11/210, सूटरगंज, कानपुर
- डॉ. मिराई चटर्जी, सेवा, चन्द्रा निवास, कर्णावती अस्पताल के पीछे, टाउन हाल के समीप, एलिसब्रिज, अहमदाबाद
- श्री बिनोय आचार्य, 12 अशोकवाटी, अपार्टमेंटस, पंचवटी मार्ग, एलिसब्रिज, अहमदाबाद
- सुश्री मेघा टोडी, शोध सहायक, संग्रहालय एवं शोध केन्द्र, गाँधी स्मारक संग्रहालय, साबरमती आश्रम, आश्रम रोड़, अहमदाबाद
- डॉ. निशिकांत कोल्गे, इतिहास विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, त्रिपुरा पश्चिम, अग्रतला, त्रिपुरा
- डॉ. चैत्रा रैडकर, राजनीति विज्ञान विभाग, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई
- प्रोफेसर सुदर्शन आयेन्गा, पूर्व कुलपति, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
- डॉ. वी. कृष्णा आनंद, इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संस्थान, सिक्किम विश्वविद्यालय गंगटोक
- सुश्री दीपाली यादव, अंग्रेजी विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
- सुश्री मणिमाला, भूतपूर्व निदेशक, गाँधी स्मृति दर्शन समिति, 18 पंचमहल आवास, प्लॉट नं. 47, इंद्रप्रस्थ एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली
- डॉ. रंजना कुमारी, सामाजिक शोध केन्द्र, 2 नेल्शन मण्डेला मार्ग, वसंत कुंज, नई दिल्ली
- सुश्री लीला चित्रा अश्विनी कुमार, 1117, शनिवार पैठ, सतरा महाराष्ट्र
- सुश्री प्रिया शर्मा, राजनीति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री श्रीजीत सुगुनन, राजनीति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री प्रफुल्ला समन्त्रा, लोकशक्ति अभियान, लोहिया अकादमी, भुवनेश्वर
- सुश्री राधा बेन भट्ट, कस्तूरबा महिला उत्थान मण्डल, लक्ष्मी आश्रम, उत्तराखण्ड

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित शोधपत्र प्रस्तुत किए गए-

सत्र - 1 लिविंग विद द प्रॉमिसिस ऑफ चम्पारण सत्याग्रह

राधा बेन भट्ट : *चम्पारण सत्याग्रह की विशेषताएं : एक संवाद।*

अरविंद मोहन : *भइले/गइले निलहवा के राज।*

मिराई चटर्जी : *रिविजिटिंग द चम्पारण सत्याग्रह : टेकिंग फॉरवर्ड लेशनस फॉर ऑर्गेनाइजिंग इन्फार्मल वर्कर्रस एट सेवा।*

सत्र - 2 सत्याग्रह इन डिमाक्रेसी

मणिमाला : *वैश्वीकरण, हिंसा और सत्याग्रह।*

रंजना कुमारी : *फ्रॉम चम्पारण टू निर्भया : हाउ गाँधीयन फिलॉसफीस हैव इन्फ्ल्यूएंस वूमेनस मूवमेंट इन इण्डिया।*

प्राफुल्ला सामंत्रा : *द प्रेजेंट डिमॉक्रेटिक स्ट्रगलस हैव रूट्स ऑफ चम्पारण सत्याग्रह।*

सत्र - 3 सत्याग्रह : लर्निंग फ्रॉम हिस्ट्री

सुरेन्द्र कुमार : *चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष में सत्याग्रह की महत्ता।*

विनोय आचार्य : *अंडरस्टैण्डिग द रेलवेंस ऑफ टैस्टीमोनीस : टेकिंग ए लीफ फ्रॉम गाँधीज स्टडी ऑफ कंडीशनस ऑफ इण्डिगो फार्मरस इन चम्पारण।*

प्रिया शर्मा : *सत्याग्रह : रिकांसिलिंग द मॉरल एण्ड द प्रैग्मैटिक।*

सत्र - 4 सत्याग्रह : सम कॉन्सेप्चुअलस

गोपाल गुरू : *गाँधीज सत्याग्रह : ए कन्सेप्शन ऑफ मॉरल हैगेमोनी।*

सुन्दर सरूकाई : *थीअरी ऑफ ट्रुथ इन गाँधी।*

सत्र - 5 गाँधी ए सत्याग्रही

सुदर्शन आयेंगर : *चम्पारण सत्याग्रह : गाँधीज इंटरवेन्शन इन अग्रेरियन सिचुएशन।*

गिरिराज किशोर : *गाँधी, सत्याग्रह और चम्पारण।*

सत्र - 6 लिविंग विद द प्रॉमिसिस ऑफ चम्पारण सत्याग्रह

वी. कृष्णन आनंद : *वन हंडरड ईयरस आफ्टर चम्पारण एण्ड द आइडिया ऑफ इण्डिया।*

निशिकांत कोल्गे : *व्हाट इन ए प्लेस ऑफ सत्याग्रह इन डिमॉक्रेसी?*

लेले चित्रा : *प्रेमा कंटकज 'सत्याग्रह महाराष्ट्र' : ए वूमेनज परस्पैक्टिव ऑन सत्याग्रह।*

सत्र - 7 पोस्ट-गाँधी ट्रैजैक्ट्रीस ऑफ सत्याग्रह

चैत्रा रेडकर : *द इश्यू ऑफ टैम्पल एन्ट्री एण्ड एफिकेसी ऑफ सत्याग्रह : दी केस ऑफ पंधापुर टैम्पल एन्ट्री सत्याग्रह।*

दीपाली यादव : *गाँधी एण्ड हजारे : द स्टोरी ऑफ सक्सेस एण्ड फेल्यर ऑफ सत्याग्रह।*

श्रीजीठ सुगुनन : *दी पॉलिटिकल एण्ड मॉरल फाउंडेशनस ऑफ गाँधियन सत्याग्रह।*

उपेन्द्र कुमार : *हिन्दी उपन्यासों में सत्याग्रह का विचार।*

सत्र - 8 सत्याग्रह- व्हाट नैक्स्ट?

मेघा टोडी : *पीजेंट टैस्टीमोनीस फ्रॉम चम्पारण अगेन्स्ट द कल्टीवेशन ऑफ इण्डिगो एण्ड अदर लैण्ड बेस्ड राइट्स, 1917।*

समीर बनर्जी : *चम्पारण : ए गाँधीयन एण्ड गाँधीज सत्याग्रह*

आनंद कुमार : *ग्रोइंग रेलेवेंस ऑफ सिविल डिसोबडिएंस एण्ड ट्रांस्फॉर्मेशनल कन्स्ट्रक्टिव वर्क सिन्स गाँधीज चम्पारण सत्याग्रह (1917)*

गोलमेज : इतिहास का पुर्नोपयुक्तता तथा स्मृतियां

राधा बेन भट्ट

सब्यासाची भट्टाचार्य

गोपाल गुरू

सुंदर सरूकाई

गिरिराज किशोर

मणिमाला

सुरेन्द्र कुमार

5. 'इण्डियन मीडिया स्टडीज : कंटेम्परेरी परस्पैक्टिवस' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (25-26 जुलाई 2017)

मूलाधार – पिछले तीन दशकों में उस बृहद् प्रकाशित सामग्री का अवकलोकन किया गया जिससे भारतीय मीडिया के विभिन्न पहलुओं को सिद्ध करने का प्रयास हुआ है। हम मानवशास्त्र, इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, सांस्कृतिक अध्ययन, मीडिया अध्ययन और संचार अध्ययन सहित विभिन्न अकादमिक विषयों के अध्ययन के आधार पर मीडिया अनुसंधान के एक समृद्ध क्षेत्र के साक्षी हैं। इस संगोष्ठी के माध्यम से इस समृद्ध और विस्तृत हो रहे क्षेत्र का जायजा लेने और नए ढांचे का निर्माण करने के लिए एक उपयुक्त अवसर था। इससे हमें समकालीन भारत के निर्माण में मीडिया की भूमिका को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिलेगी। इस संगोष्ठी में मीडिया अध्ययन को 'टेलीविजन, रेडियो, प्रिंट, वेब और सोशल मीडिया के साथ–साथ मोबाइल टेलीफोनी, विज्ञापन, जनसंपर्क और सूचना विज्ञान जैसे अधिक ज्ञानात्मक क्षेत्रों के माध्यम से जानने का प्रयास किया गया। इस सम्मेलन में मीडिया के इन रूपों तथा संचार प्रथाओं पर पृथक विचार करने की बजाय उन व्यापक संदर्भों को जानने का प्रयास किया गया जो प्रौद्योगिकियों, विशेषज्ञता, उद्यमशीलता के प्रयासों, बाजारों एवं एक मध्यस्थ सामाजिक रूपरेखा का निर्माण करते हैं। हमारे समय में साइबर संस्कृति और डिजिटल प्रौद्योगिकी का जो एक विशेष रूप है मीडिया के रूप में उसकी अंतर–अनुशासनात्मक तथा समीक्षात्मक संबद्धतता की आवश्यकता है। 8 एकल–सत्रों में विभक्त सम्मेलन में मीडिया इतिहास; मीडिया शिक्षाशास्त्र; मीडिया उद्योग; श्रोता एवं जनता; क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय मीडिया; वैकल्पिक मीडिया; मीडिया कानून; नया/डिजिटल मीडिया, और ग्लोबल मीडिया में भारत आदि विषयों पर गहन मंथन किया गया।

संस्थान में 25–26 जुलाई 2017 के दौरान 'इण्डियन मीडिया स्टडीज : कंटैम्परेरी परस्पैक्टिवस' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। डॉ. बिश्वरुप सेन, सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं संचार केन्द्र, ओरेगन विश्वविद्यालय, प्रोफेसर अभिजीत रॉय, फिल्म अध्ययन विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय तथा संस्थान की अध्येता डॉ. बिन्दु मेनन, इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के अध्येता प्रोफेसर आनंद कुमार ने स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत किया जबकि संगोष्ठी के संयोजक डॉ. बिश्वरूप सेन ने परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की।

प्रतिभागी

- सुश्री नमिता नागपाल, ए–3, एमसीडी फ्लैट्स, सोमी नगर, नई दिल्ली
- डॉ. ब्रिटा ओम, सामाजिक नृविज्ञान संस्थान, बर्न विश्वविद्यालय, स्विट्जरलैंड
- डॉ. पाण्डे, नेहरू स्मृति संग्रहालय एवं पुस्तकालय, तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली
- डॉ. रविंदर कौर, सेंटर ऑफ ग्लोबल साउथ एशियन स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ कोपेनहेगन
- श्री श्रीराम मोहन, संचार अध्ययन विभाग, मिशिगन विश्वविद्यालय
- सुश्री सिल्पा मुखर्जी, कला एवं सौंदर्य संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री रितिका पोपली, सिस्पाल विहार, सोहना रोड़, गुड़गांव, हरियाणा
- प्रोफेसर दया किशन थूसू, संचार और मीडिया अनुसंधान संस्थान, वेस्टमिंस्टर विश्वविद्यालय, लंदन
- श्री विबोध पार्थासारथी, मीडिया और शासन केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रोफेसर मोहन ज्योति दत्ता, संचार विभाग और न्यू मीडिया, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर
- डॉ. रत्नाकर त्रिपाठी, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित शोधपत्र प्रस्तुत किए -

सत्र - 1

दया किशन थूसू : *इण्डिया इंटरनेशलाइजिंग मीडिया स्टडीज ?*

विबोध पार्था सारथी : *'एन इन्डलजैंस ऑफ 'मार्केटस' : कन्सीडरेशनस ऑन द मीडिया एज एन इकनॉमी मार्केट।*

शैली पाण्डे : *नेगोसिएटिंग फॉर्मस ऑफ कैपिटल ऑन सोशल मीडिया : अंडरस्टैण्डिंग लाइफ स्टाइलस ऑफ कंटैम्परेरी मिडल क्लासिस इन इण्डिया।*

सत्र - 2

ब्रिटा ओम : *द लिमिटस एण्ड लिमिटेशनस ऑफ मीडिया : (फाल्स इन्फॉर्मेशन), (रियल) क्रिटिक, (नॉन) यूज।*

श्रीराम मोहन : *द फोटोशॉप स्टेट : इमेज मैनिपुलेशन, विजुअल कल्चर एंड इलेक्टोरल पॉलिटिक्स इन डिजिटल इंडिया।*

सत्र - 3

बिंदू मेनन : *होम एंड द वर्ल्ड : साउथ एशियन वुमन माइग्रेंट्स एंड डिजिटल बेलोंगिंग इन द गल्फ काउंसिल कंट्रीज।*

रितिका पोपली : *द 1947 पार्टीशन आर्काइव स्कल्प्टिंग द 1947 पार्टीशन : नेगोसिएटिंग मेमोरी एण्ड ट्राउम थ्रू 'डिजिटल आर्काइवस'।*

सत्र - 4

नमिता नागपाल : *वर्चुअल इन द डोमेस्टिक : सोशल चेंज एण्ड स्ट्रक्चरल इंटेग्रेशन ऑफ न्यू मीडिया।*

सिल्पा मुखर्जी : *यूट्यूब स्लीज : वायरल म्यूटेशन ऑफ आइटम नंबरस।*

सत्र - 5

रितुपर्णा पतगिरी : *जेण्डर इन 'न्यूज' : ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ असामीज इलैक्ट्रॉनिक मीडिया।*

अभिजीत रॉय : *इंडियन मीडिया, पब्लिक एण्ड मोबिलाइजेशन।*

सत्र - 6

रविन्दर कौर : *न्यू इण्डिया : ऑन नॉवेल्टी, स्पैक्टैकल, कैपिटल।*

रत्नाकर त्रिपाठी : *ड्राइविंग कल्चर : ए कम्पैरिजन बिटवीन द ऑर्गेनिक एंड पॉलिसी ड्राइवन कल्चरल ग्रोथ।*

मोहन ज्योति दत्ता : *डिजिटल मीडिया एण्ड रिजिस्टंस।*

सत्र - 7

बिस्वरुप सेन : *न्यू डायरेक्शनस इन मीडिया स्टडीज*

6. 'रिट्राइविंग द वायसिस फ्रॉम द मार्जिनस : थिंकरस ऑफ मॉडरन इण्डिया' विषय पर बनारस में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (11-13 अगस्त 2017)

मूलाधार– समकालीन भारत में अत्यधिक विषमता और हठधर्मिता के कारण उपेक्षित रहे उन सभी आयामों की समीक्षात्मक जांच करना तथा उन आधुनिक भारतीय विचारकों की दृष्टि और मतों की प्रासंगिकता को जारी रखना ही इस संगोष्ठी का उद्देश्य था। उच्च शिक्षा, प्रिंट तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में ये विमर्श अपना औपनिवेशिक प्रभुत्व बनाए रखते हैं। भारतीय ज्ञान–परंपराओं में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले कुछ जाने–माने विचारकों/व्यावसायिकों की अभिव्यक्तियों तथा दर्शन के समकालीन संदर्भ संग्रह का समानुक्रमित तथा समीक्षात्मक विश्लेषण किया जाना है। राजनीति, सामाजिक कार्य, राष्ट्रवाद/राष्ट्र निर्माण, राष्ट्रीय एकीकरण, महिला–सशक्तीकरण, दलित–चेतना, जाति/वर्ग/लिंग/धर्म–उन्मुख कट्टरपंथी सक्रियता और सुधार, परिवर्तनकारी काव्य, सांस्कृतिक अध्ययन, रचनात्मक लेखन, निर्माण, संघर्ष और पहचान–जातीय के सह–अस्तित्व से संबंधित मुद्दे भाषाई, राष्ट्रीय/पारलौकिक, पारिस्थितिक/पर्यावरणीय जागरूकता, आध्यात्मिक विश्व–विचार और व्यवहार, भक्ति के नए रूप तथा जनता के बीच उनके प्रसार आदि विविध क्षेत्र इसके अंतर्गत आते हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि इस प्रक्रिया के लिए गंभीर चिंतन, मनन और विश्लेषण की आवश्यकता होती है जो इस संगोष्ठी की परियोजना के मूल की विशेषता थी जिसे बाद में संस्करणों की एक श्रृंखला में प्रकाशित करने का विचार है। गौरतलब है कि रवींद्रनाथ टैगोर, गाँधी, श्री अरबिंदो, स्वामी विवेकानंद, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे प्रख्यात आधुनिक भारतीय विचारकों की ओर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्त्वपूर्ण ध्यान रहा है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह संगोष्ठी में उन भारतीय विचारकों की अभिव्यक्ति और विश्व–विचारों के महत्त्वपूर्ण विश्लेषण पर केंद्रित थी, जो विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र–निर्माण के प्रति अपने निः स्वार्थ समर्पण के बावजूद भारतीय शैक्षिक समुदाय के अपकर्श के कारण हाशिये पर है।

उल्लेखनीय है कि स्वतंत्रता के बाद भारत के बहु–केन्द्रित और बहु–परम्परागत विभिन्न परस्पर संबद्ध महत्त्वपूर्ण कथनों/विमर्शों का प्रचार–प्रसार नहीं किया गया है। लेकिन इसे पारस्परिक युद्ध या यूरो–आमेरिको–केंद्रित प्रभावों के कारण वर्गीकृत किया गया। अतः वर्तमान में सामाजिक–सांस्कृतिक विमर्शों के प्रमुख मॉडल का विकेन्द्रीकरण करने की आवश्यकता है, ताकि भारतीय चिंतकों की उपेक्षित अभिव्यक्तियों और मतों का पुनः अवलोकन किया जा सके। संगोष्ठी में बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, ब्रह्मबांधव उपाध्याय, पंडिता रमाबाई, जोतिबा फुले, एम.जी. रानाडे, बाल गंगाधर तिलक, पंडित मदन मोहन मालवीय, लाला लाजपत राय, सरदार पटेल, अबुल कलाम आजाद, नारायण गुरु, वी.डी. सावरकर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, दीन दयाल उपाध्याय, यू.आर. अनंतमूर्ति, आनंद कुमारस्वामी, गोपीनाथ कविराज, विद्यानिवास मिश्र, यशदेव शल्य, जी.सी. पाण्डे, जैसे महान विचारकों के शोधकार्यों पर गहन चर्चा की गई।

गौरतलब है कि इन विचारकों की निरंतर प्रासंगिकता पर गहन मंथन और अन्वेषण करने के लिए, इस संगोष्ठी के कम से कम दो अध्यायों में आयोजित किए जाने पर विचार किया गया। पहला अध्याय बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी और दूसरा भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला में आयोजित किया जाना प्रस्तावित था।

संस्थान द्वारा 11–13 अगस्त 2017 के दौरान बनारस में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के सहयोग से 'द रिवाइजिंग द वायस फ्रॉम द मॉडर्न इंडियाज थिंकर' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। संस्थान की अध्यक्ष प्रोफेसर चन्द्रकला पाडिया तथा पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, डेस–बहु–विषयक अनुसंधान केंद्र से अंग्रेजी के प्राध्यापक, इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान की अध्यक्ष प्रोफेसर चन्द्रकला पाडिया ने इस अवसर पर स्वागत उद्‌बोधन प्रस्तुत किया। प्रोफेसर सुधीर कुमार ने परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की। प्रोफेसर कपिल कपूर, चांसलर, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा–महाराष्ट्र और पूर्व रेक्टर और अंग्रेजी और संस्कृत के प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने उद्‌घाटन भाषण दिया। श्री जफर सरेशवाला, कुलपति, मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय ने समापन भाषण दिया। प्रोफेसर ग्रीश चंद्र त्रिपाठी, कुलपति, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने अध्यक्षीय टिप्पणी प्रस्तुत की। भा.उ.अ.सं., शिमला की अध्यक्ष प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर बद्री नारायण, सामाजिक इतिहास/सांस्कृतिक नृविज्ञान, गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, झांसी, इलाहाबाद (उ.प्र.)
- प्रोफेसर आर.के. मिश्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
- प्रोफेसर अंबिकादत्त शर्मा, दर्शनशास्त्र विभाग, एच.एस. गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र)
- डॉ. आर. सुब्रमनी, अंग्रेजी विभाग, मदुरई स्वायत्त महाविद्यालय, मदुरई
- प्रोफेसर श्रवण कुमार शर्मा, अंग्रेजी विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखंड)
- प्रोफेसर अशोक मोदक, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई
- प्रोफेसर शंकर शरण, राजनीति विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय भौक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
- प्रोफेसर श्रीकला एम. नायर, प्रोफेसर एवं प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलदी, केरल
- डॉ. अनिंदिता बाल्स्लेव, 1–1667 दूसरी मंजिल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली
- डॉ. जावेद जमील, अध्यक्ष, इस्लामिक स्टडीज एण्ड रिसर्च, येनेपोया विश्वविद्यालय, मैंगलोर

- श्री श्यो दयाल, प्रख्यात लेखक और विचारक, पटना
- प्रोफेसर एम. सतीश कुमार, प्राकृतिक एवं निर्मित पर्यावरण संस्थान, क्वीन्स विश्वविद्यालय, बेलफास्ट, यूके
- प्रोफेसर डी.आर. पुरोहित, समन्वयक संस्थापक विलुप्त प्रायः भाषा केंद्र, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- डॉ. रवि सक्सेना, केपीएम–स्कूल ऑफ लॉ, एनएमआईएमएस, मुंबई
- प्रोफेसर मंजीत चतुर्वेदी, सामाजिक विज्ञान संकाय एवं समाजशास्त्र के प्रोफेसर, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर सदाशिव के. द्विवेदी, संस्कृत विभाग, कला संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर जे.एस. झा, अंग्रेजी विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
- डॉ. विश्वनाथ मिश्र, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. आरती निर्मल, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. बनबृता महंत, अंग्रेजी विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. विनीता चंद्रा, सामाजिक विज्ञान संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. प्रीति सिंह, राजनीति विज्ञान विभाग, वसंत कॉलेज फॉर वुमन, वाराणसी
- श्री के. चंद्रमौली, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय शताब्दी समारोह, वाराणसी
- प्रोफेसर अवधेश प्रधान, हिंदी विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर रेवा प्रसाद द्विवेदी, संस्कृत के संकाय, विद्या धर्म विज्ञान संकाय, बनारस विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. राकेश कुमार उपाध्याय, भारत अभियान केंद्र, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर पी.वी. राजीव, प्रबंधन अध्ययन संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. आलोक कुमार पाण्डे, एकीकृत ग्रामीण विकास केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. अशोक कुमार सोनकर, इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर ए.एन. त्रिपाठी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. रमेश चंद्र सिंह, अंग्रेजी विभाग, जीएसपीजी कॉलेज, समोधपुर, जौनपुर
- प्रोफेसर राकेश पाण्डे, मनोविज्ञान विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर रोयाना सिंह, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर हीरालाल प्रजापति, दृश्य कला संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर बीरेंद्र नाथ मिश्रा, प्रदर्शन कला संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. अनुराग दवे, पत्रकारिता विभाग, कला संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

पूर्ण सत्र - 1

अनिन्दिता एन. बाल्सलेव : *द इंडियन कॉन्सेप्चुअल वर्ल्ड : इट्स रेलेवेंस फॉर द वर्ल्ड टुडे।*

एम. सतीश कुमार : *मारग्रेट नोबल (सिस्टर निवेदिता), फरॉम डुंगनन टू इण्डिया : फॉरेस इंटू इण्डियन नेशनलिस्ट डिस्कोर्स।*

सत्र - 1, एक्सपेंडिंग द फ्रंटियर्स ऑफ इंडियन थॉट्स

अवधेश प्रधान : *आधुनिक भारत का सांस्कृतिक अरुणोदय : सनातन परम्परा का नवोन्मेष।*

श्रीकला एम. नायर : *ए रिविजनरी अप्रोच टू वेदाधिकारत्व : टूवर्डस एक्सपेंडिंग दफ्रंटियर्स ऑफ इंडियन फिलॉस्फी।*

सत्र - 2, सेमिनल थिंकर और फिलॉस्फर्स ऑफ मॉडरन इण्डिया : कंटैम्परेरी परस्पैक्टिवस

जावेद जामिल : *अलामा इक्बाल, न्यू वर्ल्ड ऑर्डर एण्ड द अर्जेंट नीड ऑफ रेलिजनस।*

श्रवण कुमार शर्मा : *हिन्दू नेशनलिज़म एज धर्मा : नेटिव मॉडरनिटी इन लाला लाजपत रॉय।*

के. चन्द्रमौली : *महामना मालवीय एज कर्मयोगी : विज़न, ऐम एण्ड एक्शन।*

सत्र - 3, वुमेन इन कलोनिअल इण्डिया : सोसाइटी, आइडैंटिटी, रेलिजन

प्रीति सिंह : *थीअराइजिंग इण्डियन फैमिनिज़म : ए स्टडी ऑफ ताराबाईस स्त्री पुरूष तुलना।*

आरती निर्मल : *फैमिनिस्ट रेजिस्टेंस एण्ड सोशल रिफॉर्म इन इण्डिया : ए डिस्क्वेश्चन ऑन रसुन्दरी देवीज अमर जीवन (माई लाइफ) एण्ड बेगम रोकेयाज सुल्तनास ड्रीम।*

पूर्ण सत्र - 2

चन्द्रकला पाडिया : *वुमेन इन इण्डियाज इंटलैक्चुअल ट्रैडिशन : कंटैस्टिंग यूरोसेंट्रिक रिप्रेजंटेशनस।*

सत्र - 4 डिकालनाइजिंग द माइंड

अंबिका दत्त शर्मा : *डिकालनाइजिंग इण्डियन माइंड : ए प्रोजैक्ट ऑफ रिगेनिंग अथेंटिक कल्चरल सैल्फ।*

विश्वनाथ मिश्रा : *भारतीय इतिहास लेखन का विउपनिवेशीकरण और असमामयिक महिषासुर विमर्श।*

विनीता चन्द्रा : *डिकालनाइजिंग द माइंड : इनसाइट्स फरॉम धर्मपालज द ब्यूटफुल ट्री।*

सत्र - 5, दलित कान्शिसनेसस एण्ड सोसीओ-कल्चरल ट्रांस्फॉर्मेशन

बद्री नारायण : *दलित पॉपुलर सैक्ट्स एण्ड द मेकिंग ऑफ दलित कांन्शिसनेस।*

रवि सक्सैना : *ट्रैडिशन, कास्ट एण्ड एजूकेशन इन जोतिबा फुलेज थॉट : सम रिफ्लैक्शनस।*

डी.आर. पुरोहित : *जयानंद भारती : ए फ्रीडम फाइटर एण्ड गाँधीयन क्रूसेडर ऑफ दलित एजिमलेशन इन्टू द मेनस्ट्रीम कल्चरं।*

सत्र - 6, अल्टरनेटिव नेरेटिवस ऑफ द नेशन/नेशनलिज़म/ट्रांसनेशलिज़म

अशोक मोदक : *इंटैगरल ह्यूमनिज़म एण्ड सस्टेनेबल डिवेलप्मंटगोलस।*

शियो दयाल : *राष्ट्रवाद और भारतीय परम्परा।*

सत्र - 7, सैमिनल थिंकरस एण्ड फिलासफरस ऑफ मॉडरन इण्डिया : कंटैम्परेरी परस्पैक्टिवस (2)

शंकर शरण : *बकिमचन्द्र और राष्ट्रवाद पर वर्तमान बहस।*

राकेश मिश्रा : *तिलक एण्ड पोस्टकलोनिअल डिस्कोर्स।*

सुधीर कुमार : *रि–सेंटरिंग द मार्जिनस : ए क्रिटिकल रीडिंग ऑफ हिन्दुत्व विद स्पेशल रेफ्रेन्स टू वी.डी. सावरकर एण्ड पण्डित दीनदयाल उपाध्याय।*

सत्र - 8, सैमिनल थिंकरस एण्ड फिलासफरस ऑफ मॉडरन इण्डिया : कंटैम्परेरी परस्पैक्टिवस (3)

ए.एन. त्रिपाठी : *महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय : नेशन बिल्डिंग थ्रू एजूकेशन।*

राकेश उपाध्याय : *स्वराज्य : लोकमान्य तिलक की स्वराज्य विषयक अवधारणा एवं वर्तमान भारतीय राजनीति।*

आर. सुब्रामणि : *श्री अरबिंदो, द मदर एण्ड रमण महर्षि : देयर विज़न ऑफ इण्डिया।*

7. 'नीड फॉर इन्क्लूसिव रिफॉर्म्स : वेरिंग परस्पैक्टिवस' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (21-23 अगस्त 2017)

मूलाधार – भारत ने आर्थिक मामलों में गंभीर आंतरिक और बाहरी संकटों के बीच 1991 में आर्थिक सुधारों का एक ढांचा पेश किया। आर्थिक सुधारों के कारण एक बहुत बड़ा आर्थिक बुनियादी ढांचा खड़ा हुआ है तथा अर्थव्यवस्था के दीर्घकालीन लाभ के लिए विकास प्रक्रिया में तेजी भी आई है। समाजवादी पैतृक कानूनों के निरस्तीकरण और राजकीय क्षमता के निर्माण के बारे में तर्क है कि ये बाजार की विफलताओं को दूर करने तथा अच्छी और विकासशील बाजार अर्थव्यवस्था की रूपरेखा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। एक श्रेष्ठ कार्यशील बाजार अर्थव्यवस्था की वैधानिक एवं नियामक रूपरेखा तैयार करने के लिए विनियामक और प्रशासनिक परिवर्तन शामिल हैं। पिछले 25 वर्षों में इस प्रकार की सुधार प्रक्रियाओं ओर रूख किया गया है और पुरानी वस्तुओं के स्थान पर नए पदार्थों का स्थानापन किए जाने का गहन प्रयास किया जा रहा है। हर अवस्था में आधिकारिक और नियंत्रक अर्थव्यवस्था (समाजवादी अर्थव्यवस्था) तथा उभरती हुई बाजार अर्थव्यवस्था की वैधानिक और नियामक रूपरेखा के बीच मूलभूत अंतर हैं। इन सुधारों के कारण आर्थिक विकास की दर को गति मिली और पिछले दस वर्षों के दौरान सरकार ने गरीबों के पक्ष में कुछ अधिकार आधारित कानून बनाए। पिछले सुधारों के फलस्वरूप हुए लाभ को प्राप्त करने और विभिन्न नियामक निकायों और संस्थानों को मजबूत करने के लिए और अधिक सुधारों की आवश्यकता का तर्क दिया जाता है। इसलिए हमारी अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाज के बड़े हित को ध्यान में रखते हुए आगामी सुधारों के लिए सरकार के एजेंडे को तय किया जाना चाहिए।

भारतीय बाजार अर्थव्यवस्था अग्रसर हो रही है लेकिन फिर भी हम आर्थिक और राजनीतिक संस्थानों के संचालन के लिए पुराने समाजवादी और औपनिवेशिक पद्धतियों का अनुपालन कर रहे हैं। ग्रंथों और संदर्भों के बीच विसंगतियां हैं। कुछ आर्थिक सिद्धांतों को औपनिवेशिक काल के ढांचे और कुछ दूसरे सिद्धांतों को समाजवादी सोच की पराकाष्ठा में गढ़ा गया है। लगभग सभी श्रम कानूनों का निर्माण 1990 से पहले किया गया था तो फिर समाजवादी और औपनिवेशिक विरासत श्रम कानून विकसित बाजार अर्थव्यवस्था के अनुरूप कैसे हो सकते हैं? 1950, 1960 और 1970 के दशक में हमने जिन संस्थानों, शासी और नियामक प्रणालियों का गठन किया था, बदलती परिस्थितियों में उनका फिर से अवलोकन करने की जरूरत है।

लेकिन 1991 की नई आर्थिक नीति के बाद आर्थिक, राजनीतिक और शासकीय चुनौतियों और अधिक बढ़ी हैं। वाबजूद इसके कि हमारी हमारी संस्थाएं और प्रणालियां समाज के विभिन्न समूहों के हितों के रक्षण में सक्षम हैं भारत की कई आर्थिक और सामाजिक समस्याएं अनसुलझी हैं। यहां से सुधारों की शुरूआत होनी चाहिए और सरकारों

की प्राथमिकताओं में भी बदलाव की आवश्यकता है। यह माना जाता है कि लोकतांत्रिक प्रणाली में हमारे देश का बहुत बड़ी आबादी के विविध हितों का ध्यान रखा जाता है और यह भी माना जाता है कि पिछले 25 वर्षों में आर्थिक सुधारों को लेकर लगभग सभी राजनीतिक दलों की समान दृष्टि है।

सुधारों पर सर्वसम्मति के बावजूद, यह भी मानना है कि कृषि और संबद्ध गतिविधियों, लघु एवं पारंपरिक उद्योगों, खुदरा व्यापारियों की समस्याएं, पर्यावरणीय क्षरण, गरीबी, असमानता, भुखमरी, कुपोषण तथा स्वस्थ्य संबंधी अन्य महत्त्वपूर्ण मुद्दे सुधारों की प्रक्रिया में पीछे रह गए हैं। आर्थिक व राजनीतिक एजेंडे तथा नीतिगत निर्णयों ने राज्य के हस्तक्षेप की महत्त्वपूर्ण प्रासंगिकता को कम कर दिया है। इससे खाद्य सुरक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और शिक्षा, अपशिष्ट प्रबंधन जैसी बुनियादी सुविधाओं को सुनिश्चित करने से सरकार पीछे हट रही है।

आर्थिक सुधारों की आर्थिक और राजनीतिक विचारधारा इंगित करती है कि सार्वजनिक क्षेत्र की बजाय निजी क्षेत्र अच्छा है। बाजार की शक्तियां ठीक हैं मगर राज्य का नियंत्रण ठीक नहीं है। इस संदर्भ में देश और मीडिया जगत में निम्नलिखित मुख्य विषय ज्वलंत रहते हैं–

- बाजार हमेशा उन संसाधनों को आवंटित करता है जहां उनकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है;
- निजी स्वामित्व में हमेशा अधिकतम दक्षता को प्रोत्साहन दिया जाता है;
- आंतरिक रूप से निजी प्रबंधन सार्वजनिक प्रबंधन की तुलना में अधिक कुशल होता है;
- सार्वजनिक निवेश निजी निवेश को बाहर कर देता है;
- लोग अपनी जरूरत के लिए भुगतान करेंगे और जिस चीज की आवश्यकता न हो उसके लिए भुगतान नहीं कर सकते;
- सरकार को असमानता के प्रभावों को नियंत्रित करना चाहिए, लेकिन इसके कारणों को नहीं;
- सामूहिक प्रावधान और कार्रवाई व्यक्तिगत स्वतंत्रता के दुश्मन हैं;
- प्रतिस्पर्धा स्व–हित के खिलाफ एक पर्याप्त बचाव है।

थोड़ा यह भी लगता है कि उपर्युक्त उदार आर्थिक नीति विकल्प अपने प्रतिफलों, लागतों और निहितार्थों से बहुत दूर हैं। भारतीय लोगों के जीवन की गुणवत्ता और उसके साथ–साथ देश के दीर्घकालिक भविष्य के लिए दोनों को केवल त्वरित विकास के संदर्भ में उचित ठहराया जा सकता है।

लेकिन लगता है कि सकल घरेलु उत्पाद के विकास की उच्च दर का उपयोग गरीबी, बेरोजगारी, बढ़ती असमानताओं, किसानों की आत्महत्या, पारिस्थितिक असंतुलन तथा मानव और सामाजिक कल्याण के स्तर में बदलाव जैसी प्रमुख समस्याओं को दूर करने के लिए किया जाता है। सुधारों का मुख्य उद्देश्य मुख्य रूप से अमीर लोगों के हितों और एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसलिए आर्थिक और राजनीतिक शासन की व्यवस्था के समक्ष कई चुनौतियां हैं और आर्थिक सुधारों और विकास प्रक्रिया को बहुत समावेशी बनाने की आकांक्षाएं बढ़ रही हैं।

यह मुद्दा राज्य सरकारों की स्वायत्ता के साथ विशेष रूप से शासन के संघीय रूप (वर्तमान में व्यापक रूप से सहकारी संघवाद और प्रतिस्पर्धी संघवाद प्रयुक्त) में विशेष गहमाया रहता है। आर्थिक सुधारों के इस दौर में सबसे दिलचस्प है कि चुनावों में परस्पर विरोधी राजनीतिक दल उत्पादन और उसके कारकों के अनियमित और अज्ञात एजेंडे पर सहमत हो जाते हैं। यह अपेक्षा की गई थी कि संसदीय लोकतंत्र में दलितों, आदिवासियों, गरीब किसानों, ग्रामीणों की बुनियादी आजीविका, असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों, पारंपरिक आर्थिक गतिविधियों में लगे समुदायों और

मछुआरों की समस्याएं कम होंगी मगर ये समस्याएं अनदेखी रह गईं और बढ़ती गईं।

उपरोक्त मुद्दे निम्नलिखित प्रश्नों को उजागर करते हैं–

- सर्वांगीण विकास और गरीब–गरीब सामाजिक इंजीनियरिंग सुनिश्चित करने में आर्थिक सुधारों की ताकत और कमजोरियां क्या हैं?
- क्या संसदीय लोकतंत्र आर्थिक सुधारों के युग में अवांछनीय सामाजिक और आर्थिक विकास को प्राप्त करने में विफल हो रहा है?
- क्या हम आर्थिक सुधारों के माध्यम से एक समावेशी विकास सुनिश्चित करने में सक्षम हैं?
- क्या वर्तमान में बढ़े हुए आर्थिक विकास से जनसांख्यिकीय लाभांश में वृद्धि होगी?
- क्या न्यायपालिका को सरकार की आर्थिक नीतियों को नीतिगत मामलों के रूप में वर्णित करने से रोकना चाहिए?
- क्या हमारा संसदीय लोकतंत्र आर्थिक सुधारों के कारण होने वाले नकारात्मक सामाजिक विकास को कम करने में सफल रहा है ?.
- आर्थिक सुधारों के संदर्भ में आज कानूनों की प्रासंगिकता क्या है?
- इस संबंध में नागरिक समाज की प्रतिक्रिया क्या है?

संस्थान में 21–23 अगस्त 2017 के दौरान 'नीड फॉर इन्कलूसिव रिफॉर्म्स : वैरिंग पर्सपेक्टिव्स विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। फिरोज गाँधी महाविद्यालय, रायबरेली से वाणिज्य विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. अरुण कुमार, संगोश्ठी के संयोजक थे। संस्थान के राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर निर्मल सेनगुप्ता ने स्वागत उद्‌बोधन प्रस्तुत किया। संयोजक डॉ. अरुण कुमार ने परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की। मुख्य भाषण उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के कुलपति प्रोफेसर नागेश्वर राव ने प्रस्तुत किया। मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद से प्रबंधन अध्ययन संस्थान के प्रोफसर पीयूष रंजन अग्रवाल, ने अध्यक्षीय भाषण दिया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर एस.के. श्रीवास्तव, वाणिज्य संस्थान, हेमवती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय, गढ़वाल, उत्तराखंड
- प्रोफेसर रवि एस. श्रीवास्तव, क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर प्रशांत कुमार, वाणिज्य संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर फराह नाज गौरी, डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर निशा श्रीवास्तव, अर्थशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- श्री ओ.एन. भार्गव, फिरोज गाँधी कॉलेज, रायबरेली
- डॉ. प्रदीप कुमार खत्री, राष्ट्रीय स्नातोकत्तर महाविद्यालय, लखनऊ
- डॉ. शीला श्रीवास्तव, रसायन विज्ञान विभाग, फिरोज गाँधी महाविद्यालय, रायबरेली, उ.प्र.

- डॉ. यामिनी शर्मा, भौतिकी विभाग, फिरोज गाँधी महाविद्यालय, रायबरेली
- डॉ. सुधांशु पांडिया, यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, सीएसजेएम यूनिवर्सिटी, कानपुर
- डॉ. सेबेस्टियन टीजे, जोसेफ, स्कूल ऑफ बिजनेस स्टडीज, सैम हिगिनबॉटम इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर, टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज, डीम्ड यूनिवर्सिटी
- डॉ. पी.पी. विपिन चंद्रन, अर्थशास्त्र विभाग, ई. के. नयनार मेमोरियल गवर्नमेंट कॉलेज, केरल
- डॉ. जोमन मैथ्यू, रिसर्च डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक्स, यूनिवर्सिटी कॉलेज, केरल
- अभिभाषक अंजू राधाकृष्णन, अधिवक्ता, जिला न्यायालय, त्रिवेंद्रम, केरल
- डॉ. प्रियेश सी.ए., अर्थशास्त्र विभाग, विश्वविद्यालय कॉलेज, केरल सरकार, तिरुवनंतपुरम
- सुश्री वासवी आदर्श जावा, फार्मेसी विभाग, महर्षि मार्केंडेश्वर विश्वविद्यालय, अंबाला
- सुश्री शुभ लक्ष्मी श्रीवास्तव, वाणिज्य विभाग, फिरोज गाँधी महाविद्यालय, रायबरेली
- श्री संदीप कुमार सोनकर, वाणिज्य विभाग, फिरोज गाँधी महाविद्यालय, रायबरेली
- डॉ. सुनीता जाखड़, अंग्रेजी विभाग, कला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान, भारत सरकार
- श्री प्रदेश कुमार, पीएचडी शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, केरल विश्वविद्यालय, केरल
- डॉ. मीना यादव, वाणिज्य विभाग, फिरोज गाँधी महाविद्यालय, रायबरेली
- प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. प्रदीप कुमार नायक, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियां दी-

सत्र - 1

रवि श्रीवास्तव : *ग्रोथ, इकानमिक रिफॉर्म्स एण्ड एम्प्लायमेंट इन इण्डिया।*

सुधांशु पांडिया : *ए स्टडी ऑफ इन्क्लूसिव ग्रोथ ऑफ इण्डियन इकानमी प्रोपैल्लड वाई वुमेन एन्ट्रप्रेनियूर।*

पी.के. खत्री : *इम्पॉरटेंस ऑफ ह्यूमन बिहेवियर फॉर पॉलिसी मेकरस : ए क्रिएटिव वे टू डिवेलप्मेंट।*

सत्र - 2

ओ.एन. भार्गव : *विह्दर इकानमी इन इण्डिया?*

सेबस्टियन टी. जोसेफ : *एन एक्स्पलोरेटरी रिसर्च इन्टू द होटल इन्डस्ट्री एज ए वाइब्रेंट कन्ट्रीब्यूटर टू इण्डियाज इकानमी रिफॉर्म्स।*

के.पी. विपिन चंद्रन : *ह्यूमन डेप्रिवेशन एण्ड इन्क्लूसिव डिवेलप्मेंट इन इण्डिया : प्राइरिटीज फॉर फ्यूचर।*

सत्र - 3

प्रियेश सी.ए. : *ट्रांसफॉर्मिंग इकोनॉमिक गवर्नेंस इन इण्डिया।*

जोमन मैथ्यू : *रिफॉर्मस, डिवेलप्मेंट एण्ड इन्वायरन्मेंट : मिसिंग लिंकस इन केरला एक्सपीरियंस।*

सुनीता झाकड़ : *एग्रीकल्चर इन राजस्थान : रिफॉर्मिंग रिफॉर्मस एण्ड राइजिंग इश्यूज।*

सत्र - 4

पीयूष रंजन अग्रवाल : *अशरिंग ए न्यू इरा ऑफ वेज्टेबल रेव्यूलेशन : ए 03 प्राँगड स्ट्रेटजी।*

फराह नाज गौरी : *इकानमिक रिफॉर्म्स इन लैगिंग एरियास इन इण्डिया एण्ड द नीड फॉर ऐक्सेलरैटिंग रिफॉर्म्स।*

अंजू राधाकृष्णन : *आर कोर्ट्स द फोरम टू डिटरमाइन पॉलिसी मैटरस ?*

सत्र - 5

शीला श्रीवास्तव : *अनफिनिशड रिफॉर्म्स इन इण्डियन फर्टिलाइजर सैक्टर : एन एनैलिसिस*

मीना यादव : *रोल ऑफ फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट इन इण्डियन इकानमिक रिफॉर्म्स।*

संदीप कुमार सोनकर : *इकानमिक रिफॉर्म्स एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन द इन्श्योरेंस इन्डस्ट्री इन इण्डिया*

सत्र - 6

प्रशांत कुमार : *कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉंस्बिलिटी– ए प्रॉमिस टू वर्क फॉर द डिवेलप्मेंट ऑफ सोसाइटी।*

यामिनी शर्मा : *इन्साइट्स इन्टू रिलैशन्शिप बिटवीन रैपिड इकानमिक ग्रोथ एण्ड इन्वायरन्मेंटल डिग्रेडेशन।*

रंजीत सिंह : *इन्क्लूसिविटी इन एजूकेशन* (डॉ. के.पी. विपिन चंद्रन द्वारा पठित)।

सत्र - 7

प्रदीश कुमार : *डज ग्लोबलाइजेशन एक्सीलिरेट रोड़ एक्सीडेंटस इन इण्डिया? ए स्टडी फ्रॉम केरल।*

वासवी आदर्श जावा : *ड्रग्स प्राइस कंट्रोल ऑर्डर (डीपीसीओ) इन द इरा ऑफ इकॉनमिक रिफॉर्म्स : इण्डियन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री।*

सत्र - 8

निशा श्रीवास्तव : *हाउ इन्क्लूसिव इज एम्प्लायमेंट? एन अनैलिसिस ऑफ पैटरनस इन द पोस्ट रिफॉर्म पीरियड।*

शुभ लक्ष्मी श्रीवास्तव : *रोल ऑफ इकॉनमिक रिफॉर्म ऑन सोशल वैल्फेयर।*

समापन सत्र

एस.के. श्रीवास्तव : *व्हेदर डिमोनेटाइजेशन इज ए सक्सेस और फेल्यर टूवर्डस डिजिटलाइजेशन और कैशलेस इकॉनमी?*

8. 'इण्डियन म्यूजिक एण्ड डांस : द ऐब्सेंस ऑफ क्रिटिकल अटैन्शन एण्ड अनैलिसिस' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (04-06 सितंबर 2017)

मूलाधार – हमारे शास्त्रीय संगीत तथा नृत्य भारतीय कल्पना की बहुत समृद्ध, गतिशील और निरंतर रचनात्मक को दर्शाते हैं। उनकी पहुंच व्यापक है, वे भारत के सभी क्षेत्रों में मौजूद हैं और हाल ही में, भारत से बाहर भी उनका प्रचार–प्रसार हुआ है। उनके ससिकों के सभी पीढ़ियों विशेषकर युवा पीढ़ी के अनुयायी हैं। पश्चिमी संगीत और नृत्य की प्रभावशीलता एवं उसकी सर्वव्यपकता के बावजूद भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य अपना अस्तित्व बरकार रखे हुए हैं। तर्क है कि पाश्चात्य जगत के अलावा वे ही शास्त्रीय संगीत और नृत्य की मात्र की विधाएं हैं।

सौभाग्य से, भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य में एक गतिशीलता है जिसमें परंपरा और व्यक्तिगत नवाचारों का

संरक्षण बिना किसी मतभेद के एक साथ हुआ। स्वतंत्रता के तुरंत बाद शाही और सामंती संरक्षण में विभाजित, इन दोनों रूपों ने कई अलग–अलग तरीकों से लोकतांत्रिक रूप धारण कर व्यापक दर्शकों का दिल जीता और लोकप्रियता हासिल की। हालांकि मोटे तौर पर रूढ़िवादी रूप में माना जाता है कि शास्त्रीय कलाओं ने कई परिवर्तनों और नवाचारों को अपनाया है। पारम्परिक ढंग से हुए निर्णायक बदलाव की भव्य इवारत अभी लिखी जानी है और उसका समीक्षात्मक विश्लेषण भी किया जाना है।

यह वास्तव में आश्चर्यजनक है कि शास्त्रीय कलाएं विशेष ध्यान और विश्लेषण के अभाव में बची रहीं और पनपती रही। यह भारत जैसे देश में ही संभव हो पाया जहां 18वीं –19वीं शताब्दी तक संगीत और नृत्य के बारे में व्यापक ध्यान दिया गया। शास्त्रीय परम्पराओं की नई अवधारणाओं के अन्वेषण तथा व्यक्त करने की दिशा में कम अथवा ज्यादा, परित्यक्त अथवा कम से कम, प्रबलता से अुनशीलन नहीं किया है।

शास्त्रीय परंपरा में कई बदलाव, क्षय, प्रस्थान, विचलन, नवाचार आदि हुए हैं, लेकिन उन पर समीक्षात्मक रूप से लगभग किसी का ध्यान नहीं गया है या बड़े पैमाने पर उन्हें नजर अंदाज़ कर दिया गया है। प्रसार और प्रशिक्षण दोनों प्रकार के संस्थानों ने इस दिशा में बहुत कम काम किया है। संगीत और नृत्य के व्यापक प्रदर्शनों के आलोचनात्मक लेखन की तुलना में बहुत कम और काफी हद तक असंगत लिखा गया है। शास्त्रीय अवधारणाओं का सार्थक रूप से कायाकल्प नहीं किया गया है और न ही हुए अनेक बदलावों के बारे में प्रकाश डाला गया है।

आधुनिक समय में दुनिया भर में साहित्य और कला के क्षेत्र में व्यापक और महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक ध्यान, प्रशंसा और पोषण प्राप्त हुआ है। संपन्न शास्त्रीय कलाओं के सामने भारत में उनकी अनुपस्थिति असामान्य, अनिश्चित और आश्चर्यजनक लगती है।

संस्थान में 4–6 सितंबर 2017 के दौरान 'इंडियन म्यूजिक एंड डांस : द एब्सेंस ऑफ क्रिटिकल अटेंशन एंड एनालिसिस' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। रजा फाउंडेशन, नई दिल्ली के अध्यक्ष श्री अशोक वाजपेयी तथा संस्थान की अध्येता डॉ. ज्योति सिन्हा इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा ने इस अवसर पर स्वागत भाषण दिया जबकि संगोष्ठी के संयोजक श्री अशोक वाजपेयी ने मुख्य भाषण प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- डॉ. अविषेक रे, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सिलचर, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सिलचर, कछार, सिलचर, असम
- प्रोफेसर समीर दुबले, बी–4/11 सरितानगरी फेस–2, सिंहगढ़ रोड़, दीपक नाइट्राइट पुणे के सामने
- सुश्री रोज मेरिन, रंगमंच एवं प्रदर्शन अध्ययन विभाग, कला एवं सौंदर्यशास्त्र संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. मैथिली मारुत अनूप, हाउस नंबर 302, शिवाहन रेजीडेंसी, इब्राहिम नगर, रोड नंबर 14, बंजारा हिल्स, हैदराबाद
- श्री कानव गुप्ता, कला एवं सौंदर्यशास्त्र संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री जे. शशि किरण रेड्डी, शोध छात्र, बैंगलोर
- सुश्री सोनलनिम्बकर, सीईएच, आईआईआईटी–एच, गचीबोवली, हैदराबाद

- सुश्री सना खान, शिप्रा छात्रावास, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री शाहवर किबरिया, शोध छात्रा, एसएए, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री नवतेज जोहर, एफ–27, द्वितीय तल, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली
- श्री सदानंद मेनन, # 1 इलियट्स बीच रोड, चेन्नई
- प्रोफेसर नवज्योति सिंह, सटीक मानविकी केंद्र, अंतर्राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, गाची बोवली, हैदराबाद
- सुश्री लीला वेंकटरमन, 102, टॉवर 4, विपुल बेलमॉट, गोल्फ कोर्स रोड, गुड़गांव
- डॉ. सुनील कोठारी, 94, बख्तावर सिंह ब्लॉक, एशियाड गांव, नई दिल्ली
- श्रीमती मंजरी सिन्हा, ई –181, रिचमंड पार्क, डीएलएफ सिटी फेज IV, गुड़गांव
- डॉ. मुकेश गर्ग, हिंदी विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- पं. सत्यशील देशपांडे, 68, चंपावती मित्र मंडल कॉलोनी, पुणे
- उस्ताद बहाउद्दीन डागर, 6ध्20, रुक्मिणी, आर.सी. मार्ग, चेंबर, मुंबई
- श्री दीपक एस राजा, 201, मेफेयर रेजीडेंसी, 9 रोड़ खार पश्चिम मुंबई
- प्रोफेसर लावण्य कृति सिंह, संगीत एवं नाटक संकाय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए-

सत्र - 1

सदानंद मेनन : *अल्टरनेटिव क्रिटिक्स – फ्रॉम द मोविंग फ्रॉम द मूव्स टू द फ्रेम।*

मुकेश गर्ग : *संगीत और आलोचनात्मक।*

सत्र - 2

नवज्योति सिंह : *रिटर्निंग टू द फाउंडेशनस ऑफ म्यूजिक एण्ड डांस : टू एक्सपेरिमेंटस इन रागध्यान एण्ड इन सृष्टिनाट्य।*

सुनील कोठारी : *इण्डियन क्लासिकल डांस : कंटेक्स्ट एण्ड कंटीन्यूटी : रिफ्लैक्शनस ऑन एब्सेंस ऑफ क्रिटिकल अटैंशन एण्ड अनैलिसिस।*

जे. शशि रेड्डी : *वज्र नृत्यम 'डांस एज ए मूवमेंट ऑफ मेडिटेशन इन स्पेस एण्ड टाइम'।*

सत्र - 3

दीपक राजा : *द क्रिटिकल एनवायरनमेंट एंड द म्यूजिकल कल्चर।*

सत्यशील देशपांडे : *द लैक ऑफ क्रिटिकल अनैलिसिस इन द कल्चर ऑफ दीलंस– इट्स नेचर, रीजनस एण्ड पॉसिबल सॉल्यूशनस।*

लीला वेंकटरमण : *रैप्पड इन गिल्डिड केज ऑफ नेशनलिज़म एण्ड स्प्रिचुअलिटी एज कल्चरल ऐम्बैसडर।*

बहाउद्दीन डागर : *आब्ज़रवेशन एण्ड सॉल्यूशनस फॉर लैक ऑफ क्रिटिकल अटैंशन इन म्यूजिक एण्ड आर्टस।*

अविषेक रे : *ट्रैवरजिंग बिटवीन द क्लासिकल एंड द फोक : क्वेश्चनिंग द डाइकाटमी।*

नवतेज जौहर : *टू शो और टू रिफ्लैक्ट : द इम्पॉसिबिलिटी ऑफ इण्डियन डांस।*

सत्र - 4

समीर दुबले : *डॉ. अशोक द रानाडे, द ट्रैंडसैटर इन म्यूजिकल अनैलिसिस।*

ज्योति सिन्हा : *आलोचना की अनुपस्थिति–चिंतन प्रश्न संगीत समीक्षा–नियायानक और विस्तार की दिशा।*

सना खान : *अंडरस्टैंडिंग कल्चरल पॉलिटिक्स : एन इंटरप्रिटेटिव स्टडी ऑफ संभाजी भगत का प्रोटेस्ट म्यूजिक।*

सत्र - 5

मंजरी सिन्हा : *ट्रैडिशन एण्ड चेंज*।

रोज मेरिन : *परफॉर्मिंग द ट्रैडिशन : हाउ उशा नांगियर एण्ड कल्पना वेणु रि–कन्स्ट्रक्टस एण्ड रि–इंटरप्रेटस ट्रैडिशन इन नंगेयरकुथु।*

कानव गुप्ता : *द इवॉल्यूएशन ऑफ इंग्लिश एज ए म्यूज़कालजिकल लैंग्वेज इन पोस्ट–इंडिपेंडेंस इण्डिया।*

सत्र - 6

मैथिली अनूप : *द स्क्रिप्टेड एंड द स्पॉन्टेनियस : एक्सप्लोसिंग द डायनामिक इन क्लासिकल इंडियन परफॉरमेंस।*

शाहवर किबरिया : *साउंड ऑफ द चिश्तिया खानकाहस : सूफी कव्वाली इन कोक स्टूडियो पाकिस्तान।*

अशोक वाजपेयी द्वारा कविता पाठ तथा शास्त्रीय गायक सत्येश देशपांडे द्वारा शास्त्रीय गायन की प्रस्तुति

सत्र - 7

लवण्या कृति सिंह : *इण्डियन म्यूज़िक एजूकेशन : क्रिटिकल अटैंशन एण्ड अनैलिसिस।*

सोनल निम्बालकर : *आंटॉलजिकल स्टडी ऑफ डांस मूवमेंटस।*

9. 'लैण्ड क्वेश्चनस इन नियोलिबरल इंडिया' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (09-11 अक्तूबर 2017)

मूलाधार – हाल ही के वर्षों में, भारत में भूमि से संबंधित प्रश्न नीति नियोजकों, नौकरशाहों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और शिक्षाविदों के लिए पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण बन गए हैं। पहले भू–राजस्व ब्रिटिश साम्राज्य के समेकन के लिए एक महत्त्वपूर्ण कारक था। औपनिवेशिक काल के बाद, राष्ट्रीय राजस्व में भू– राजस्व के योगदान ने अपना मूल स्थान खो दिया है। फिर भी, भारत की न्यायसंगत और लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था के दृष्टिकोण के आधार पर भूमि के स्वामित्व/भूमि के कार्यकाल/भूमि अधिकारों का महत्व एक बहुत चिंता का विषय है। कहा जा सकता है कि भारत में भूमि प्रश्न/मुद्दे 1990 के दशक के बाद से भारत के नीतिगत एजेंडे के रूप में उभरे, लुप्त हुए और पुनः सामने आए जिसके लिए नव उदारवादी आर्थिक सुधारों की अहम् भूमिका रही है। जनसांख्यिकी दबाव, भूमि प्रयोग में भारी और अनियंत्रित परिवर्तन, कृषि तथा सिंचित भूमि का गैर–कृषि कार्यों के लिए परिवर्तन तथा संबंधित दीर्घकालिक मुद्दे, सामान्य संपत्ति संसाधनों का लुप्त हो जाना, बदलते कृशि संबंध, भूमिहीन कृषि श्रमिकों और काश्तकारों का हाशिए पर होना, समाज के सभी वर्गों में बढ़ती भूमिहीनता, प्रति व्यक्ति भू–स्वामित्व में गिरावट, समृद्ध कृषि वर्गों का उदय, काश्तकारी में निरंतरता और बदलाव, भूमि संबंधी मामलों में लैंगिक मुद्दे, आदिवासियों तथा दूसरे वनवासियों के वन अधिकार आदि भारत में भूमि संबंधी पुनर्विलय के कुछ महत्त्वपूर्ण संकेतक हैं। समकालीन राजनीतिक अर्थव्यवस्था

में भारत ने भूमि सुधार के अपने पुनर्वितरण के एजेंडे को लगभग छोड़ दिया है और बजाय इसके भू–स्वामित्व 'गुप्त रूप से सुधार' दृष्टिकोण की ओर अग्रसर हो रहा। भू–प्रबंधन के मुद्दों ने भूमि सुधार एजेंडे की जगह ले ली है।

भारत का ग्रामीण–कृषि परिदृश्य बड़े पैमाने पर बदलाव के दौर से गुजर रहा है। शहरीकरण और परिशहरी विकास, तथाकथित शहरी परिदृश्य और शहरी गांवों का उदय, महत्त्वपूर्ण अल्पकालिक और दीर्घकालिक नीति निहितार्थ की ओर इशारा करते हैं। शहरी क्षेत्रों में, तथाकथित 'स्मार्ट सिटी' को विकसित करने के लिए भारत में बड़े पैमाने पर निवेश शुरू किए गए हैं ताकि उनका विकास किया जा सके। इस प्रकार शहरी संपत्ति अधिकारों और अभिलेखों के अस्पष्टीकृत विषय उभर कर हमारे सामने आए हैं। शहरी भूमि का वस्तुकरण और भारतीय शहरों में तेजी से बन रहे रियल एस्टेट के कारण शहरीजनों, शहर के अधिकार और समावेशी शहर की समस्याएं पैदा हुई हैं। इन सभी उभरते हुए परस्पर संबंधित भूमि प्रश्नों जिनका आज हम सामना कर रहे हैं उन पर महत्त्वपूर्ण नीतिगत सोच की शुरुआत करना और विद्वानों, नीति नियोजकों और भूमि मामलों से जुड़े सामाजिक कार्यकर्ताओं के बीच एक संवाद को प्रोत्साहित कर आगे का रास्ता सुझाना ही इस तीन दिवसीय संगोष्ठी का उद्देश्य था।

संस्थान में 09–11 अक्तूबर 2017 के दौरान 'लैण्ड क्वेश्चनन इन नियोलिबरल इंडिया, विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येता डॉ. प्रदीप नायक, संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा, द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर निर्मल सेनगुप्ता ने इस अवसर पर बीजभाषण प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर जगपाल सिंह, सामाजिक विज्ञान संस्थान, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली
- प्रोफेसर सुखपाल सिंह, सेंटर फॉर मैनेजमेंट इन एग्रीकल्चर (सीएमए), भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद (आईआईएमए), डब्ल्यू–6, आईआईएम हेरिटेज (ओल्ड) कैम्पस, वस्त्रपुर, अहमदाबाद
- प्रोफेसर धनमनजिरी साठे, अर्थशास्त्र विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
- प्रोफेसर दीपक के मिश्रा, क्षेत्रीय विकास अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर निकिता सूद, ऑक्सफोर्ड विभाग, अंतर्राष्ट्रीय विकास विश्वविद्यालय, ऑक्सफोर्ड ओएक्स1 3टीबी
- प्रोफेसर वंदना उपाध्याय, अर्थशास्त्र विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स, अरुणाचल प्रदेश
- प्रोफेसर सत्यकाम जोशी, सामाजिक अध्ययन केंद्र, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय परिसर, उधना–मगदल्ला रोड़, सूरत, गुजरात, भारत
- डॉ. शीतल पाटिल, रिसोर्स पर्सन, बेंगलुरु अजीम प्रेमजी शोध संस्थान, बेंगलुरू विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर अमिता साहा, 63, मोनालिसा अपार्ट्समेंट, अंबावाड़ी अहमदाबाद, गुजरात (भारत)
- डॉ. नमिता वाही, नीति अनुसंधान संस्थापक निदेशक, भूमि अधिकार पहल धर्म मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली
- डॉ. वाल्टर फर्नांडिस, उत्तर पूर्वी सामाजिक अनुसंधान केंद्र गुवाहाटी, असम, भारत
- डॉ. अनिमेष रॉय, गिरि इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, लखनऊ
- सुश्री रंजिनी बसु, स्कूल ऑफ डिवेलपमेंट स्टडीज, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई

- डॉ. दयाबती रॉय, सेंटर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंसेज, कलकत्ता, आर 1 बीपी टाउनशिप, कोलकाता
- डॉ. जयसीलन राज, विकास अध्ययन केंद्र, तिरुवनंतपुरम
- डॉ. प्रशांत के त्रिवेदी, गिरि इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, लखनऊ
- डॉ. अनीश गुप्ता, 33 डी, तीसरी मंजिल, गुरुद्वारा के पास, मुनिरका, नई दिल्ली
- सुश्री मन्दिता टैगोर, एच –1/5, प्रथम तल, महावीर एन्क्लेव, द्वारका, नई दिल्ली
- सुश्री एन मैरी चाको, आर्थिक अध्ययन और योजना विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय
- सुश्री सिल्ली राउत, नृविज्ञान विभाग, उड़ीसा के केंद्रीय विश्वविद्यालय उड़ीसा
- डॉ मानसी, सेंटर फॉर रिसर्च इन अर्बन अफेयर्स, इंस्टीट्यूट फॉर सोशल एंड इकोनॉमिक चेंज, बैंगलोर
- वीरेंद्र सिंह ढिल्लों, इतिहास विभाग, महाराजा अग्रसेन महाविद्या, जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा
- श्री कुमार संभ, 37–एच, शेख सराय फेज–2, नई दिल्ली
- डॉ. बुधादित्य दास, 2 बी पॉकेट 4, मयूर विहार, फेज–1, दिल्ली
- सुश्री कहकशां कमाल, # 303, गंगा छात्रावास, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. मृदुला शारदा, राजनीति विज्ञान विभाग, हि.प्र. विश्वविद्यालय, शिमला
- डॉ. फरहत नाज, दूसरी लेन, जोहरी फार्म, जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली
- प्रोफेसर नवदीप माथुर, भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद, गुजरात

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए-

सत्र - 1

निकिता सूद : *सम अंडर–एक्प्लोरड क्वेश्चनस अराउंड लैण्ड इन कंटैम्परेरी इण्डिया : सब–नेशनल एण्ड इन्फॉर्मल रेगुलेशन।*

जगपाल सिंह : *कंटैक्स्चुअलाइजिंग लैण्ड क्वेश्चनइ न ए ग्रीन रेव्युलेशन एरिया : अग्रेरियन ट्रांस्फॉर्मेशन एण्ड पॉलिटिक्स इन वेस्टरन उत्तर प्रदेश (नियोलिबरल पीरियड)।*

प्रदीप नायक : *लैण्ड रिफॉर्म्स और लैण्ड टाइटलिंग : इण्डियाज क्वेस्ट फॉर सिक्योर प्रॉपट्री राइटस इन इण्डिया।*

एस. मानसी : *ई–गवर्नेंस इन लैंड एडमिनिस्ट्रेशन : एक्स्पीरियंस इन अर्बन एण्ड रूरल सैटिंग ऑफ कर्नाटक।*

सत्र - 2

सुखपाल सिंह : *ओनरशिप वर्सेस कंट्रोल : द चेंजिंग डायनामिक्स ऑफ लैण्ड यूज इन लिबरलाइज़ड एग्रीकल्चरल कांटैक्स्ट ऑफ इण्डिया।*

शीतल पाटिल : *लैण्ड ओनरस एज नॉन–फॉर्म वर्कर्स– केस ऑफ स्माल फार्मर माइग्रेंटस इन कर्नाटका।*

रंजिनी बसु : *टेनेंसी रिफॉर्म्स इन वेस्ट बंगाल : एन इवैलुएशन ऑफ इट्स इम्प्लीमेंटेशन एंड चेलेंजिस।*

सत्र - 3

वीरेंद्र सिंह ढिल्लों : *ऑनरिंग द लैण्डलैस : इश्यूज एण्ड चैलेंजिस इन लीगलाइज़िंग/रिकॉर्डिंग ऑफ टैनेसी इन हरियाणा।*

अनीश गुप्ता : *इमर्जिंग एग्रेरियन इश्यूज इन पोस्ट रिफॉर्म पीरियड : एन एम्पायरिकल स्टडी ऑफ ए विलेज इन राजस्थान।*

दयाबती रॉय : *लैण्ड, कास्ट एण्ड क्लास इन रूरल वेस्ट बंगाल।*

सत्र - 4

अनिमेष रॉय : *रिथिंकिंग द लैण्ड क्वेश्चन : नियोलिबरल अर्बनिज़म, डिस्पोजेशन एण्ड सोसाइट ट्रांस्फॉर्मेशन इन राजस्थान।*

अमिता साहा : *चेंजिंग लैंड यूज एण्ड रुर्बन पुअर इन ए एसईजेड : ए केस स्टडी ऑफ रिलायंस एसईजेड का एक केस स्टडी इन गुजरात।*

नवदीप माथुर : *नियोलिबरल गवर्नेंस इन इण्डियाज अर्बन पॉलिसी : कंटैम्परेरी ट्रांस्फॉर्मेशनस इन गुजरातस लैण्डस्केप।*

सत्र - 5

वाल्टर फर्नांडिस : *लैण्ड यूजिस एण्ड लिबरलाइजेशन इन नॉर्थईस्ट इण्डिया।*

वंदना उपाध्याय : *द ट्रांस्फॉर्मेशन ऑफ लैण्ड राइट्स एण्ड फैमिनाइजेशन हिल एग्रीकल्चर इन अरूणाचल प्रदेश : इनसाइट्स फ्रॉम फील्ड सर्वे।*

दीपक के मिश्रा : *द पॉलिटिकल इकॉनमी ऑफ द कम्युनिटी लैण्ड राइट्स इन अरूणाचल प्रदेश, इण्डिया।*

सत्र - 6

कुमार सम्भव : *मैपिंग लैण्ड कन्फिलिक्टस इन इण्डिया।*

फरहत नाज : *लैण्ड ग्रैब्बिंग इन कॉमन प्रॉपर्टी रिसोर्सेज : ए केस स्टडी ऑफ ए गुजरात विलेज।*

मृदुला शारदा : *लोकेटिंग द रूरल एण्ड ट्राइबल इन द इरा ऑफ नियो लिबरल इकॉनमी : एक केस स्टडी ऑफ हिमाचल प्रदेश।*

सत्र - 7

नमिता वाही : *अंडरस्टैण्डिग डिस्प्यूट्स ओवर लैण्ड एक्विजिशन इन इण्डिया।*

प्रशांत के. त्रिवेदी : *द एक्सप्रेसवे टू आगरा : टू रोड्स, सेम डेस्टिनेशन : लैण्ड एक्विजिशन अंडर ओल्ड एण्ड न्यू लैण्ड एक्विजिशन रिजीमस।*

धनमनजिरी साठे : *एलएआरआर 2013... व्हाट डज इट डिलीवर? (ऑन द न्यू लैण्ड एक्विजिशन एक्ट, 2013)।*

सत्र - 8

जयसीलन राज : *कॉलोनीज टू गेटोस : आदिवासी–दलित लैण्ड स्ट्रगलस एण्ड द स्टेट इन केरल।*

बुधादित्य दास : *फॉर्मरस ऑफ फॉरेस्ट ड्वैलरस : द डिलेम ऑफ इम्पलिमेंटिंग द फॉरेस्ट राइट्स एक्ट इन अपलैण्ड सेंट्रल इण्डिया।*

सिल्ली राउत : *ट्राइबल लैण्ड एलिनेशन एण्ड कम्युनिटी कन्फ्लिक्ट एण्ड द रोल ऑफ द स्टेट इन शड्यूल्ड एरियास : फील्ड नोट्स फ्रॉम हाईलैंड ओडिशा।*

सत्र - 9

कहकशां कमाल : *ट्राइबल लैण्ड : आइडैंटिटी ऑर कमोडिटी?*

आनंदिता टैगोर : *अर्बन वुमेन एण्ड मैटरस ऑफ लैण्ड : एन अनैलिसिस ऑफ लैण्ड पॉलिटिक्स इन दिल्ली थ्रू जैण्डरड लैन्स।*

एन. मैरी चाको : *लैण्ड रिलेशनस एण्ड वुमेन ऑटानमी : ए कम्पेरजिन एक्रॉस डिफरेंट कास्ट्स इन ए विपेज इन केरल।*

10. 'पैरडाइम शिफ्ट इन इण्डियन लिंग्विस्टिक्स एण्ड इट्स इम्प्लीकेशनस फॉर एप्लाइड डिस्पिलिनस' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (30 अक्तूबर-01 नवंबर 2017)

मूलाधार– भाषा विज्ञान और भाषा से संबंधित ज्ञान प्रणालियों की अपनी समृद्ध विरासत पर भारत पूर्ण रूप से गर्व कर सकता है। भाषा अध्ययन में अंतः विषय अनुसंधान पूरी दुनिया में विभिन्न दिशाओं में फैल रहा है और विविध क्षेत्रों के बीच उल्लेखनीय संबंध बना रहा है। हालाँकि, भारत में हम शायद ही कभी अंतः विषयक क्षेत्रों में काम करने वाले पारंपरिक भाषाविदों के पास आते हैं विशेषकर अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान आदि कुछ क्षेत्रों को छोड़कर। इस पृष्ठभूमि के विपरीत 'पैरडाइम शिफ्ट इन इण्डियन लिंग्विस्टिक्स एण्ड इट्स इम्प्लीकेशनस फॉर एप्लाइड डिस्पिलिनस' विषय पर आयोजित इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में परम्परागत भाषाविज्ञान, मनोवैज्ञानिकों के क्षेत्रों में पारंपरिक व्याकरणविदों, सैद्धांतिक भाषाविदों, शिक्षाविदों को एक सामान्य मंच प्रदान करने का प्रयास किया गया। साथ ही संज्ञानात्मक भाषाविज्ञान और नैदानिक भाषाविज्ञान, और भाषा शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में चिकित्सकों के लिए एक सार्थक संवाद शुरू करने का प्रयास किया गया। संगोष्ठी में न केवल भारतीय व्याकरणिक सिद्धांतों में तल्लीन करने की तत्काल आवश्यकता के बारे में चेतना का निर्माण किया गया और समाज के लिए उनके संबंध को व्यापक अर्थों में उनकी प्रयोज्यता के बारे में समझा गया, बल्कि ठोस प्रक्रियाओं का भी एक संग्रह प्रस्तुत किया गया और साथ ही साथ उसे पूर्ण करने के लिए एक प्रायोगिक उपकरण का भी निर्माण किया गया।

भाषा का ज्ञान और उसका प्रयोग सदियों से भारतीय चिंतन का केंद्र रहा है। इस संबंध में हुए अन्वेषण ने कई मुद्दों को गहमाया है और इस तरफ शिक्षाविदों का ध्यान आकर्षित हुआ है। भाषा एक विषय, भाषा और मस्तिष्क, भाषा और वास्तविकता, भाषा और ज्ञान के बीच संबंध, भाषा का विकास और भाषा की सार्वभौमिक विशेषताएं आदि प्रमुख मुद्दे हैं। व्याकरणशास्त्री और ज्ञानी इस महान बहु–सांस्कृतिक, साहित्यिक परंपरा के मानक वाहक थे। न केवल संस्कृत व तमिल बल्कि बंगला, उड़िया, कन्नड़, मलयालम, तेलुगु और गुजराती में भी ग्रंथों में इस व्यापक–छात्रवृत्ति की सीमा को समझा जा सकता है। पुनर्सुधार के लिए पाली और प्राकृत में रचित ग्रंथ भी ज्ञान के मूल्यवान स्रोत हैं। गौरतलब है कि प्राचीन भारतीय व्याकरण, विशेष रूप से संस्कृत और तमिल, ठोस सैद्धांतिक रूपरेखाओं से ओतप्रोत हैं और वे सत्ता मीमांसा और ज्ञानमीमांसा के स्थायी प्रश्नों पर प्रकाश डालते हैं। बाद में, जब पश्चिमी सिद्धांत सामने आए, स्वाभाविक रूप से, उन्होंने विद्वानों की सोच को प्रभावित किया, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय भाषाई परंपरा के केंद्रीय सिद्धांतों को फिर से अवधारणा मिली।

अतीत की भाषाई अंतर्दृष्टि आधुनिक युग में संभावित अनुप्रयोग के लिए भाषा के संज्ञानात्मक, अभिकलनात्मक तथा नैदानिक पहलू काफी महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। इन प्रयासों को भारतीय भाषाई विचार, विशेष रूप से व्यावहारिक क्षेत्रों में एक आदर्श बदलाव की शुरुआत के रूप में देखा जा सकता है। औपनिवेशिक काल में स्वदेशी ज्ञान के प्रतिस्थापन

के कारण ज्ञान के आधार और इसके संभावित अनुप्रयोगों के फलस्वरूप एक खाई उत्पन्न हो सकती थी। स्वतंत्रता के बाद यह समस्या एक अलग रूप में प्रकट हुई जबकि पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के मूल्यों का एक सकारात्मक पुनर्मूल्यांकन होता है, पुनर्सुधार की परियोजना विशेषज्ञता की कमी से ग्रस्त है।

हाल ही में, अभिकलनात्मक भाषा विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय व्याकरणिक सिद्धांतों को सफलतापूर्वक लागू किया गया है। सैद्धातिंक रूप में इसे संज्ञानात्मक भाषा विज्ञान, नैदानिक भाषा विज्ञान और मनोचिकित्सा, और भाषा शिक्षाशास्त्र जैसे अन्य अंतर–अनुशासनात्मक क्षेत्रों में दोहराया जा सकता है। वर्तमान पीढ़ी के पारंपरिक विद्वानों में अपने सिद्धांतों की प्रासंगिकता को आधुनिक संदर्भ में दिखाने का उत्साह दिखाई दे रहा है।

संस्थान में 30 अक्तूबर –01 नवंबर 2017 के दौरान 'पैरडाइम शिफ्ट इन इण्डियन लिंग्विस्टिक्स एण्ड इट्स इम्प्लीकेशनस फॉर एप्लाइड डिसप्लिनस' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 'का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येता डॉ. अंबा कुलकर्णी एवं डॉ. पी. माधवन इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा ने इस अवसर पर स्वागत भाषण दिया जबकि मुख्य भाषण प्रोफेसर कपिल कपूर द्वारा प्रस्तुत किया गया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर पीटर शर्फ, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान बॉम्बे, मुंबई, महाराष्ट्र
- प्रोफेसर जेरार्ड ह्यूट, एमेरिटस प्रोफेसर, इन्रिया, पेरिस, फ्रांस
- प्रोफेसर जी. उमा महेश्वर राव, एमेरिटस प्रोफेसर, सेंटर फॉर एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स एण्ड ट्रांसलेशन स्टडीज यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद, हैदराबाद
- प्रोफेसर श्रीनिवास वरखेड़ी, कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बैंगलोर, कर्नाटक
- प्रोफेसर एस.वी. शन्मुगम, निदेशक (सेवानिवृत्त), सीएएस इन लिंग्विस्टिक्स, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामालानगर, तमिलनाडु
- प्रोफेसर वी. रेणुगा देवी, भाषाविज्ञान विभाग, मदुरई कामराज विश्वविद्यालय, पलकलाई नगर मदुरई, तमिलनाडु–भारत
- प्रोफेसर एल. राम मूर्ति, भारतीय भाषाओं के लिए भाषाई डेटा कंसोर्टियम (एलडीसी–आइएल), भारतीय भाषा केंद्रीय संस्थान, मैसूर
- प्रोफेसर कपिल कपूर, बी –2/332, एकता गार्डन, 9. आई.पी. एक्सटेंशन, मदर डेयरी मार्ग, दिल्ली
- प्रोफेसर रमेश मिश्रा, सेंटर फॉर न्यूरल एंड कॉग्निटिव साइंसेज यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद, हैदराबाद
- डॉ. के. बालासुब्रमण्यम, प्रोफेसर और निदेशक (सेवानिवृत्त), सेंटर ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन लिंग्विस्टिक्स, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामालीनगर, तमिलनाडु
- प्रोफेसर अरुलमोजी सेल्वराज, सेंटर फॉर एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स एंड ट्रांसलेशन स्टडीज, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- प्रोफेसर वी.एन. झा, पूर्व निदेशक, संस्कृत उच्च अध्ययन केन्द्र, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
- प्रोफेसर उषा दलवी, श्रवण विज्ञान एवं वाक तथा भाषा रोग निदान विभाग, एसआरएम विश्वविद्यालय, चेन्नई
- डॉ. अमृत कृष्ण, कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर

- सुश्री अनुपमा रियाली, संस्कृत अध्ययन विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- सुश्री दिशारी चतरराज, कमरा नंबर 126, चंद्रभागा छात्रावास, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
- डॉ. जॉबिन एम. कंजीराकाट, पोस्ट–डॉक्टरल अध्येता, कॉस्मोपॉलिटनिज्म एंड द लोकल इन साइंस एंड नेचर, डलहौजी यूनिवर्सिटी एवं यूनिवर्सिटी ऑफ किंग्स कॉलेज, हैलिफैक्स, एनएस, कनाडा
- डॉ. नरेश कीर्ति, चिन्मय ईश्वर गुरुकल, चिन्मय विश्ववेद्यापीठ, वेलियानद, एर्नाकुलम, केरल
- डॉ. राकेश दास, नवीन नगर, असविनिपल्ली, पीओ–बारासात, परगना, कोलकाता
- डॉ रंगन कृष्णसामी, तमिल विश्वविद्यालय, थंजौर, तमिलनाडु
- डॉ. सोइबाम रेबिका देवी, राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर
- डॉ. सत्यम द्विवेदी, मंडी बाजार, तिर्वा गंज, कन्नौज, उत्तर प्रदेश, भारत

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर अपनी प्रस्तुतियां दीं-

सत्र - 1

प्रोफेसर एस.वी. शनमुगम : *लिंग्विस्टिक्स ऑफ सिमली (विद स्पेशल रेफरेंस टू तमिल व्याकरण, टोल्कपियाम)।*

प्रोफेसर रंगन कृष्णसामी : *एक्स्प्लोरिंग द पैरडाइम ऑफ टोल्कपियारज लैंग्वेज अनैलिसिस।*

सत्र - 2

प्रोफेसर बी.एन. पटनायक : *एक्स्प्लोरिंग द पॉसबिलिटीस ऑफ ए थीअरी ऑफ मीनिंग फॉर थीअरी ऑफ डिस्कोर्स स्ट्रक्चर।*

प्रोफेसर एल. राममूर्ति : *टोल्कपियारज कांसेप्चुअलाइज़ेशन ऑफ ग्रामर एण्ड इट्स एप्लीकेबिलटी फॉर नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग।*

सत्र - 3

डॉ. नरेश कीर्थी : *आइडैंटिफाइंग मैटफोर इन लैंग्वेज–फ्रॉम सीएमटी टू काव्यशास्त्र।*

डॉ. सत्यम द्विवेदी : *आभा : काग्निजिंग प्रेजेंस थ्रू ऐब्सेंस।*

डॉ.जोबिन एम. कांजीराकट : *फाउंडेशनल क्वेश्चनस ऑफ द स्टडी ऑफ लैंग्वेज एण्ड इन्डिजनस ट्रैडिशनस।*

सत्र - 4

डॉ. के. बालसुब्रमण्यम : *टोल्कप्पियम : एन इंटैगरेटिड मॉडल फॉर लिंग्विस्टिक डिस्क्रिप्शन।*

प्रोफेसर वी. रेणुगा देवी : *द कॉन्सेप्ट ऑफ वर्ड फॉर्मेशन ट्रेडिशनल टू मॉडर्न।*

सत्र - 5

प्रोफेसर वी. एन. झा : *लैंग्वेज कंपरिहैंशन : सम क्लासिकल इण्डियन मॉडल।*

प्रोफेसर पीटर शर्फ : *जेनरेटिंग लिंग्विस्टिक डिपेंडेंसी स्ट्रक्चरस इन एकॉरडैंस विद पाणिनी ग्रामर एण्ड थीअरी ऑफ वरबल कग्निशन।*

सत्र - 6

प्रोफेसर श्रीनिवास वरखेड़ी : *ग्रामर ऑफ वर्नाकूलर लैंग्वेजिस एण्ड पाणिनीस सिस्टम : सम मिसिंग लिंक्स।*

प्रोफेसर जेरार्ड ह्यूट : कम्युटेशनल ट्रीटमेंट ऑफ इण्डियन लैंग्वेजिस प्रॉब्लमेटिक।

सत्र - 7

प्रोफेसर रमेश मिश्रा : *साइकोलिंग्विस्टिक स्टडीज ऑफ लैंग्वेज एण्ड कग्निशन इन इण्डियन लैंग्वेजिस।*

प्रोफेसर उषा दलवी : *एप्लीकेशन ऑफ संस्कृत ग्रामर इन कम्युनिकेशन डिसॉर्डरस।*

डॉ. ललिता राजा : *इण्डियन थीअरीस एण्ड क्लिनिकल लिंग्विस्टिक्स।*

सत्र - 8

प्रोफेसर अरुल मोजी सेल्वाराज : *रिविजिटिंग तमिल वर्ड नेट : पैरडाइम शिफ्टिंग इन लेक्सोग्राफी।*

सुश्री अनुपमा रायली : *पेडगोजिकल टूलस फॉर लर्निंन एण्ड टीचिंग द संस्कृत लैंग्वेज– ए पैरडाइम शिफ्ट (विद स्पेशल रेफरेंस टू–रीडर ऑफ शिशुपालवध ऑफ माघ)।*

डॉ. अमृत कृष्ण : *सिंथेसिसिंग ग्रामरस एण्ड प्रोग्रामस फॉर नेचुरल लैंग्वेज फ्रॉम डेटा।*

सत्र - 9

सुश्री दिशारी चटराज : *इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग मेथडालजी : एन एनसिएंट परस्पैक्टिव।*

डॉ. राकेश दास : *ए स्टडी ऑफ द वर्नादोसस डिटेल्ड इन प्रातिशाख्य : एन अप्रोच टू स्टैण्डरडाइज़ द प्रनन्सीएशन ऑफ संस्कृत।*

11. 'द स्कर्ज ऑफ स्कैवेंजिंग : रिविजिटिंग द क्वेश्चन ऑफ सेनिटेशन/स्कैवेंजिंग/स्केवेंजर्स विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (08-10 नवंबर 2017)

मूलाधार – मानवीय मल को हाथों से साफ करने या मैला ढोने की प्रथा से प्रचलित अमानवीय प्रथा पर प्रतिबंध लगाने में असमर्थता के लिए भारत स्थानीय और विश्व स्तर पर लगातार आलोचना होती रही है। स्वच्छता को लेकर विभिन्न पणधारियों ने स्वच्छता मानवीय विसर्जन के निपटान को लेकर तथा इसके लिए सुरक्षित तरीकों को अपनाने के लिए लगातार अपना तर्क दिया है। इस उद्देश्य से भारत सरकार ने 1949 बर्वे समिति और केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता जैसे कार्यक्रमों को समकालीन स्वच्छ भारत अभियान के लिए गठित किया है। ये समितियां मुख्य रूप इस नतीजे पर पहुंची हैं कि भारत में मैला ढोने की एक पुरानी प्रथा है, जोकि एक सामाजिक कलंक है और यह प्रथा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती जाती है। इस संदर्भ में सफाई कर्मियों की काम करने की स्थिति में सुधार लाने और इस इस सामाजिक कलंक को दूर करने का प्रयास किया गया। फलतः सफाई कर्मियों के पुनर्वास के लिए राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग का गठन हुआ। समितियों और कार्यक्रमों ने हाथ से मैला ढ़ोने की प्रथा को समाप्त करने की दिशा में अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया। परिणामस्वरूप, विभिन्न नागरिक समाज समूहों ने सफाई श्रमिकों के प्रति उदासीनता बरतनी शुरू कर दी और पुस्तकों, वृत्तचित्रों, कानूनी मामलों के माध्यम से बेहतर काम के माहौल के लिए अभियान चलाया। यदि एक स्वयं सेवी संस्थान ने हाथ से मैला उठाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की वकालत की तो दूसरी संस्था ने मंहगे शौचालय बनाए जाने पर बल दिया। भारत में वित्तीय उदारीकरण के चलते पहले से मौजूद समस्या ने मैला ढ़ोने वालों के लिए नौकरी की सुरक्षा खतरा पैदा कर दिया। यदि पूर्व में श्रम की गरिमा मैला ढोने वालों की लड़ाई थी, तो उदारीकरण

के बाद भी उनका बुनियादी अस्तित्व सवालों के घेरे में रहा है। दलित आंदोलनों के समकालीन पुनरुत्थान के साथ, जाति का पूर्ण रूप से विनाश एक बार फिर मुख्य मुद्दा बन गया, जोकि हाथ से मैला ढोने वाली प्रथा को समाप्त तथा मैला ढ़ोने वालों की स्थिति में सुधार किए बिना हासिल नहीं किया जा सकता।

उप विषय

1. मानवीय मैला ढ़ोने की प्रथा का इतिहास, समाजशास्त्र और मानवशास्त्र
2. भारतीय राज्य और मैला ढ़ोने की प्रथा
3. मैला ढ़ोना तथा मीडिया : फोटोग्राफी एवं सिनेमा
4. प्रसिद्ध स्थानों पर भौचालय तथा स्मारकीय वास्तुकला
5. अर्थव्यवस्था और सफाई की पारिस्थितिकी
6. साहित्य में मैला ढ़ोन के प्रतिनिधि
7. मैला ढ़ोने की प्रथा को लेकर आम संघर्ष
8. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर तथा मानवीय मैला ढ़ोने का प्रश्न
9. मैला ढोने के लिए गाँधीवादी प्रतिक्रिया की आलोचना करना
10. कानून और मैला ढ़ोने की प्रथा
11. स्वंय सेवी संस्थाओं की भूमिका
12. मैला ढ़ोने की प्रथा और अनुसूचित जाति

संस्थान में 08–10 नवंबर 2017 के दौरान 'द स्कर्ज ऑफ स्कैवेंजिंग : रिविजिटिंग द क्वेश्चन ऑफ सेनिटेशन/स्कैवेंजिंग/स्केवेंजर्स 'विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संस्थान के अध्येता डॉ. रवि चंद्रन इस संगोष्ठी के संयोजक थे। राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया जबकि मुख्य भाषण प्रोफेसर बेजवाड़ा विल्सन द्वारा दिया गया।

प्रतिभागी

- श्री सैमुअल सत्य सीलन, कमरा नंबर 102, नर्मदा छात्रावास, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई महरौली रोड, नई दिल्ली
- श्री अचुथ ए. पूरमकुलम, एमजीआरए 29 सी, मरप्पलम गार्डन, पेटोम पी.ओ., तिरुवनंतपुरम, त्रिपुरा
- श्री भारती दासन के., शोधार्थी, मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज (एमआईडीएस), 79, दूसरा मुख्य मार्ग, गाँधी नगर अडयार चेन्नई, तमिलनाडु
- सुश्री रचना, शोधार्थी सामाजिक विज्ञान संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली
- सुश्री तीना अनिल, 356 गंगा छात्रावास, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. रंजीथ थप्पन, सहायकप्रोफेसर, संचार विभाग, अंतः विषय अध्ययन स्कूल, ईएफएल विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना

- सुश्री मनीषा सूर्यभान मेश्राम, पीएच.डी. शोधार्थी, सेंटर फॉर सोशल मेडिसिन एंड कम्युनिटी हेल्थ, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
- श्री बिबेकानंद सुना, कमरा नं .34 (ओ), बीएचपी हॉस्टल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
- श्री सुनील लक्ष्मण यादव, समावेशी विकास और न्याय विषय में पीएच.डी., टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, मुंबई, महाराष्ट्र
- सुश्री रेणु चौहान, वार्ड नंबर 14, तहसील–चरखी दादरी, जिला, चरखी दादरी, हरियाणा
- श्री परीक्षित ठाकुर, 42/3, कैखली चिरिया मोर, दम दम हवाई अड्डा, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत।
- सुश्री जोपका शुभद्रा, 13–6–462/ए/27 भगवानदास बाग, तेलगुड़ा, हैदराबाद
- श्री कांति स्वरूप गुणी, पीएचडी, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, पवई, मुंबई–400076, महाराष्ट्र
- श्री नारायणन, निदेशक, चेंज इंडिया, नंबर 2/628,, रैपिड नगर, गरुगंबक्कम, चेन्नई –602101
- प्रोफेसर एस. कन्नन, आईसीएफएआई लॉ स्कूल, आईएफएचई विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- श्री हशीर कुन्नुमल, कुन्नुमल हाउस मत्तथुर पीओ, ओथुकुंगल पंचायत, केरल
- सुश्री मसरूर राथर, हाउस 26–बी, पहली मंजिल, लेन 7, जोहरी फार्म, जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली
- सुश्री भावना सिंह, 55–सी पॉकेट 4, मयूर विहार फेज –1, दिल्ली
- श्री बेजवाड़ा विल्सन, सफाई कर्मचारी अन्दोलन, 36/13 ग्राउंड फ्लोर, ईस्ट पटेल, नई दिल्ली
- डॉ. शर्मिला छोटारे, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यनगरी, त्रिपुरा
- प्रोफेसर एस.आर. मज्टा, सामुदायिक चिकित्सा विभाग, डीवाईएसपी राजकीय स्वास्थ्य महाविद्यालय, नाहन

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित शोधपत्र प्रस्तुत किए-

सत्र - 1

भाषा सिंह : (लेखक : अप्रत्यक्ष) *इण्डियन स्टेट एण्ड स्कैवेंजिंग।*

जोपाक शुभ्रा : *इफ स्कैवेंजिंग एज ए प्रोफेशन इज सैक्रेड व्हाई अदर कास्ट डू नॉट टेक अप इट।*

बी. रविचंद्रन : *पैट्रीऑर्की, पाल्युशन, आर्किटैक्चर : ए स्टडी ऑफ टॉयलेट विहेवियर इन इण्डिया।*

सत्र - 2

सुनील लक्ष्मण यादव : *लाइव्स ऑफ वीमेन स्कैवेंजर्स, जर्नी एंड एस्पिरेशन्सरू एविडेंस फ्रॉम म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन ऑफ ग्रेटर मुंबई।*

रंजीथ थप्पन : *कास्ट एज पब्लिक स्पैक्टैकल : स्कैवेंजिंग/स्केवेंजर्स इन न्यूज फोटोग्राफी।*

अचुथ ए : *ए रिमेन ऑफ द मील : फूड एंड वेस्ट इन हिंदू फिलॉसफी।*

सत्र - 3

नारायणन : *लॉ एण्ड स्कैवेंजिंग : तमिलनाडु एक्स्पीरियंस।*

शर्मिला छोटारे : *सुलभ : डिस्कोर्स ऑफ सेनिटाइजिंग अनटचेबिलिटी।*

सत्र - 4

रेणु चौहान : *मैनुअल स्कैवेंजिंगएण्ड माइग्रेशन ऑफ मैनुअल स्कैवेंजरस : ए केस स्टडी ऑफ दिल्ली बेस्ड मैनुअल स्केवेंजर्स।*

टीना अनिल : *रिविजिटिंग कास्ट एण्ड कंजम्शन ऑफ क्लिीनलीनेस : एन्थ्रोपॉलजी ऑफ मैनुअल स्कैवेंजिंग।*

मसरूर राठर : *स्कैवेंजिंग और श्ड्यूल्ड कास्ट।*

सत्र - 5

परीक्षित ठाकुर : *द मैथरस इन द मैट्रोपोलीस : द स्टोरी ऑफ द मैनुअल स्कैवेंजर्स इन द अर्ली कलोनिअल कलकत्ता।*

हशीर कुन्नुमल : *लॉ एण्ड स्कैवेंजिंग : ए केस स्टडी ऑफथोटिस इन केरल।*

भारती दासन : *फ्रॉम एग्रीकल्चरल लेबरस टू मैनुअल स्कैवेंजिंग अरुंधथियार इन द कार्पोरेशन ऑफ मद्रास* (1850 –1947)।

सत्र - 6

बिबेकानंद सुना : *इकॉनमिक ऑफ लेबर : ए केस स्टडी ऑफ मैनुअल स्केवेंजर्स।*

एस. कन्नन : *मैनहोल डैथस : रियलाइजिंग द अनरियलिस्टिक।*

एस. आर. माज्टा : *हैल्थ सेफ्टी ऑफ वकर्स डिस्पोजिंग हॉस्पीटल वेस्ट।*

कांति स्वरूप गुनति : *एवरीबॉडी लवस शिट।*

सत्र - 7

शम्युल सत्य सीलन : *इंटरफेस बिटवीन द ह्यूमन राइट्स इन्स्टिट्यूशनस इन प्रोटैक्टिंग द राइट्स ऑफ द मैनुअल स्कैवैंजर्स एण्ड सफाई कर्मचारी : चैलेंजिस एण्ड अप्रोचुनिटीज।*

मनीषा सूर्यभान मेश्राम : *वुमेन मैनुअल स्कैवेंजर्स : ए स्टडी ऑफ इंटरसैक्शनलटी ऑफ कास्ट एण्ड जैण्डर इन महाराष्ट्र।*

रचना : *जेण्डर एण्ड कास्ट डिस्क्रिमिनेशन इन अर्बन इनफॉर्मल सैक्टर : ए स्टडी ऑफ वुमेन टॉयलेट क्लीनरस इन दिल्ली एनसीआर।*

सत्र - 8

गोलमेज चर्चा

12. 'रिट्राइविंग द वायसिस फ्रॉम द मार्जिनस : थिंकरस ऑफ मॉडर्न इण्डिया' (द्वितीय अध्याय) विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (24-26 मार्च 2018)

मूलाधार – 'रिट्राइविंग द वायसिस फ्रॉम द मार्जिनस : थिंकरस ऑफ मॉडर्न इण्डिया' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे अध्याय का उद्देश्य उन आधुनिक भारतीय विचारकों/लेखकों/कलाकारों की दृष्टि की प्रासंगिकता की गंभीरता से समीक्षा करना था जिनके धर्म–केंद्रित विश्व–विचार, शोधकार्य/ग्रंथ आदि अभी तक समकालीन भारत में सांस्कृतिक/साहित्यिक अध्ययन के क्षेत्र में उपेक्षित रहे हैं। संस्थान के सहयोग से बनारस हिंदू विश्वविद्यालय,

वाराणसी में 11–13 अगस्त 2017 को आयोजित सम्मेलन के पहले अध्याय में आधुनिक भारत के उन विचारकों की विश्व दृष्टि को लेकर समीक्षात्मक अध्ययन पर बल दिया गया था जिनके सांस्कृतिक और सामाजिक महत्त्वपूर्ण नज़रिये को हमारे देश में अक्सर प्रमुख शैक्षिक विमर्शों में उपेक्षित किया गया था। शिमला स्थित भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में आयोजित सम्मेलन के दूसरे अध्याय में समकालीन सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों में आधुनिक भारत के उपेक्षित लेखकों/विचारकों के परस्पर साहित्यिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक विश्व–साक्षात्कार के महत्व पर बल दिया गया।

सम्मेलन का उद्देश्य और महत्व

क. उपेक्षित भारतीय लेखकों/विचारकों के गहन विचारों तथा उनकी विश्वदृष्टि की समीक्षा करना। विशेषकर वर्तमान में साहित्य/सांस्कृतिक अध्ययन की पहचान, राष्ट्र/राष्ट्रवाद, वर्ग, जाति, लिंग, पारिस्थितिकी, साहित्य, भाषा, संस्कृति और समाज आदि मुद्दों पर गहन मंथन करना। इतना ही नहीं उपरोक्त प्रमुख विषयों को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख आधुनिक लेखकों/विचारकों के कार्यों के कम या अस्पष्टीकृत पहलुओं का भी विश्लेषण करना भी संगोष्ठी का उद्देश्य था।

ख. आधुनिक लेखकों की नज़रअंदाज की गई रचनाओं में किस तरह आधुनिकता को फिर से अंकित किया जा सकता है और बहुकेन्द्रित भारतीय ज्ञान परंपराओं के अनुसार पुनर्निर्माण किया जा सकता है।

ग. समकालीन साहित्यिक/सांस्कृतिक/सामाजिक/राजनीतिक/पारिस्थितिक संदर्भों में आधुनिक भारतीय लेखकों के उपेक्षित मिथकों के विश्व–विचारों के महत्व का गंभीर रूप से विश्लेषण करना।

संस्थान में 24–26 मार्च 2018 के दौरान बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सहयोग से 'रिट्राइविंग द वायसिस फ्रॉम द मार्जिनस : थिंकरस ऑफ मॉडर्न' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का दूसरा अध्याय आयोजित किया गया। संस्थान की पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया एवं बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी (उ.प्र.) में राजनीति विज्ञान की प्राध्यापक तथा पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से अंग्रेजी के प्राध्यापक प्रोफेसर सुधीर कुमार इस सम्मेलन के संयोजक थे। सम्मेलन की संयोजक प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। सम्मेलन के सह–संयोजक प्रोफेसर सुधीर कुमार ने परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की। संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर कपिल कपूर ने इस अवसर पर प्रारंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की तथा इन्फिनिटी फाउंडेशन, अमेरिका के अध्यक्ष श्री राजीव मल्होत्रा द्वारा मुख्य भाषण प्रस्तुत किया गया। प्रोफेसर कपिल कपूर ने इस अवसर पर अध्यक्षीय अभिभाषण प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर अशोक मोदक, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई
- प्रोफेसर अंबिकादत्त शर्मा, दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. एच.एस.गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर, (म.प्र.)
- प्रोफेसर शंकर शरण, राजनीति विज्ञान विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- प्रोफेसर अरविंद शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, धार्मिक अध्ययन संकाय, मैकगिल विश्वविद्यालय, कनाडा
- प्रोफेसर सदानंद शाही, हिंदी विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, (उ.प्र.)
- प्रोफेसर आनंद कुमार, पूर्व प्रोफेसर एवं प्रमुख, प्रजनन जीवविज्ञान विभाग, एम्स, नई दिल्ली
- डॉ. विश्वनाथ मिश्र, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चेतगंज, वाराणसी
- प्रोफेसर गिरिजा शर्मा, अंग्रेजी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

- डॉ. आशुतोष जावड़ेकर, 101, गौरीशंकर, मयूर कॉलोनी, पुणे
- प्रोफेसर कृष्ण मोहन पाण्डे, अंग्रेजी विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)
- डॉ. अनुराधा बनर्जी, पूर्व–संकाय, अंग्रेजी विभाग, बसंत कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी
- प्रोफेसर अवधेश प्रधान, हिंदी विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- सुश्री शिल्पी दास, पीएचडी शोधार्थी, अंग्रेजी विभाग, काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल, पश्चिम बंगाल
- श्री आशुतोष भारद्वाज, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. आर. सुब्रमनी, अंग्रेजी विभाग, द मदुरा कॉलेज (स्वायत्त), मदुरई, तमिलनाडु
- डॉ. आलोक ओक, लेडेन इंस्टीट्यूट ऑफ एरिया स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ लीडेन, नीदरलैंड
- सुश्री मयूरी पाटनकर, एम.फिल शोधार्थी, अंग्रेजी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रोफेसर एस. चेल्लपांडियन, द मदुरा कॉलेज (स्वायत्त), मदुरई, तमिलनाडु
- डॉ. मोहम्मद शहीर सिद्दीकी, शिक्षा विभाग, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल
- सुश्री मेनका सिंह, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. सुदेश बलिराम भौवटे, डॉ. मधुकरराव वासनिक पी.डब्ल्यू.एस कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कैम्पटी रोड़, नागपुर
- प्रोफेसर गुरपाल सिंह, संध्याकालीन अध्ययन विभाग, एमडीआरसी, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

सम्मेलन के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित शोधपत्र प्रस्तुत किए गए-

सत्र - 1

प्रोफेसर अशोक मोदक : *राजीव मल्होत्रा : ए यूनीक एक्स्पोनेंट ऑफ हिंदू वर्ल्ड्व्यू।*

प्रोफेसर सुधीर कुमार : *टूवर्डस ए धर्म–सेंट्रिक जीवन–दर्शन (वर्ल्ड–व्यू) रीडिंग ऑफ कपिल कपूर, राजीव मल्होत्रा एण्ड मकरंद परांजपे।*

प्रोफेसर अंबिका दत्त शर्मा : *ऑन यशदेव शल्या।*

सत्र - 2

प्रोफेसर शंकर शरण : *सच्चिदानंद वात्स्यायन का भाषा–चिंतन और उसकी मूल्यवत्ता।*

प्रोफेसर अरविंद शर्मा : *प्रोफेसर जी.सी. पाण्डे ऑन द कंपेरेटिव स्टडी ऑफ रिलिजन।*

प्रोफेसर अवधेश प्रधान : *हजारी प्रसाद द्विवेदी की स्त्री–दृष्टि।*

सत्र - 3

प्रोफेसर आनंद कुमार : *गोरखनाथस हठ योग इन पद्मावत : ए कंटैम्परेरी रीडिंग।*

डॉ. विश्वनाथ मिश्र : *रिथिंकिंग द जनन–पद्धति : ब्रह्म–सूत्र रिवाइटिड।*

प्रोफेसर गिरिजा शर्मा : *चैलेंजिंग द स्टीरियोटाइपस : एम.टी. वदसूदेवन नायरज शॉर्ट फिक्शन।*

सत्र - 4

प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया : *ऑन महादेवी वर्मा : रेलवेंस ऑफ हर विज़न।*

डॉ. आशुतोष जावड़ेकर : *लिंजरिंग एण्ड लॉगिंग इन पंडिता रमाबाईस ट्रैवलॉग–द पीपुल्स ऑफ यूनाइटेड स्टेट्स (1889)।*

प्रोफेसर कृष्ण मोहन पांडे : *द कंट्रीब्यूशन ऑफ पं. रामकिंकर उपाध्याय टू रामकथा ट्रैडिशन।*

सत्र - 5

डॉ. अनुराधा बैनर्जी : *एक्स्प्लोरिंग फायर ऑफ द सोल ऑफ काजी नाजुल इस्लाम।*

प्रोफेसर सदानंद शाही : *वासुदेव शरण अग्रवाल और लोगों के अध्ययन की दृष्टि।*

सत्र - 6

सुश्री शिल्पी दास : *एक्स्प्लोरिंग द केस ऑफ कल्चरल मेमोरिसाइड इन प्रिइंडिपेंडेंस इण्डियन पेंटिंगस : ए रिअसैस्मेंट ऑफ द अंडरऐस्टिमेटिड क्रिएटिव जेनिअस ऑफ सिलेक्ट वुमेन आर्टिस्टस।*

श्री आशुतोष भारद्वाज : *वुमेन एण्ड द नॉवेल : ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ अर्ली इण्डियन नॉवेलस।*

डॉ. आर. सुब्रमणी : *श्री किट्टू रेड्डी एण्ड द श्री अरबिंदोनियन परसेप्शन ऑफ हिस्ट्री।*

सत्र - 7

डॉ आलोक ओक : *द आफ्टरलाइफ ऑफ गीता रहस्य : ट्रैंसडैंडिंग/मेडिटिंग धर्म एज एक्शन।*

सुश्री मयूरी पाटनकर : *व्यंकटेश अत्रमस गोंडी संस्कृतिक संदर्भ : एन्चेस्टिंग द नेशनस ऑफ आइडैंटिटी, एथनिसिटी एण्ड मॉडर्निटी इन द ट्राइबल कंटैक्स्ट।*

डॉ. एस. चेल्लपांडियन : *स्प्रिचुअल नेशनलिज़म आफ पुसम्पन मुथुरामलिंग थेवर।*

डॉ. मोहम्मद शहीर सिद्दीकी : *मचलती नफरतें और बिखरता समाज : राह मासूम रजा और उनके पी. शुक्ला की वर्तमान प्रासंगिकता।*

सत्र - 8

डॉ. मेनका सिंह : *सेंट्रिग द सबल्टरन थियेटर एण्ड पॉयटिक्स ऑफ भिखारी ठाकुर।*

डॉ. सुदेश बलिराम भौवटे : *दलित ऐस्थेटिक्स कन्सेप्चुअलाइज़ड बाई शरण कुमार लिंबाले एण्ड ओम प्रकाश वाल्मीकि : द फिलॉसफिकल बेस एण्ड इम्पॉरटैंस टू ह्यूमन वैल्यूस इन दलित लिटरेचर।*

सत्र - 9

प्रोफेसर गुरपाल सिंह : *एपिस्टमॉलजिकल ट्रैडिशन, कंटैम्परेरलिटी एण्ड मेकिंग ऑफ द कल्चरल मेमोरी।*

ग. अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत साप्ताहिक संगोष्ठियां

संस्थान के अध्येताओं द्वारा नियमित तौर पर साप्ताहिक संगोष्ठियां प्रस्तुत की जाती हैं जिनमें संस्थान के दूसरे अध्येता, सह–अध्येता तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तथा अन्य इच्छुक आमजन भाग लेते हैं। ये संगोष्ठियां संस्थान के अध्येताओं की शोध परियोजनाओं पर आधारित होती हैं तथा अन्य विद्वानों के साथ औपचारिक विचार विमर्श का अवसर प्रदान करती है। आलोच्य वर्ष 2017–18 के दौरान अध्येताओं द्वारा निम्नलिखित संगोष्ठियां प्रस्तुत की गईं–

1. प्रोफेसर बेटिना शारदा बौमर : *द योग ऑफ द नेत्रा तंत्र द 'थर्ड आई' एण्ड द ओवरकमिंग डेथ'* (13 अप्रैल 2017)
2. श्री समीर बनर्जी : *सत्यार्थी टू सत्याग्रही : इंटरप्रेटिंग गाँधीयन थॉट* (20 अप्रैल 2017)
3. प्रोफेसर सुमन्यु सत्पथी : *बनबाला एण्ड 'रेबती' : ट्रैडिशन एण्ड मॉडरनिटी इन अर्ली ओडिया प्रिंट* (4 मई 2017)
4. प्रोफेसर त्रिलोकी सिंह *: बाउंसिंग एण्ड साइकलिक मॉडल ऑफ यूनिवर्स* (09 मई 2017)
5. लियोन एंजेलो मोरेनस : *व्हाट् इज स्मार्ट अबाउट स्मार्ट सिटी?* (11 मई 2017)
6. डॉ. आर. ललिता राजा : *एस्लैटिक अप्रोच टू ओटीन फीनोलॉजिकल एक्विजिशन एंड डिसऑर्डर* (25 मई, 2017)
7. डॉ. आदित्य प्रताप देव : *राइटिंग ट्रांस–टेंपोरलिटी इन्टू हिस्ट्री : टाइम एंड पॉलिटिक्स इन द ओरल ट्रेडिशंस ऑफ द मिक्स्ड ट्राइब–कास्ट कम्युनिटीज ऑफ द प्रिंसीली स्टेट ऑफ कांकेर, सदरन छत्तीसगढ़* (01 जून 2017)
8. प्रोफेसर के.एम. बहरुल इस्लाम : *आइडैंटिटी क्वेश्चनस एण्ड द ट्रांसलिंगुअल राइटरस इन आसमीज लिटरेचर* (08 जून 2017)
9. श्री अमित दत्ता : *जंगगढ़ज पेंटिंग – ब्रिजिंग द मार्गी एण्ड देसी ए जियांट लीप इन्टू मॉडरनिजम एण्ड मोर* (19 जून 2017)
10. डॉ. गौहर यकूब : *द ट्रायल बिटवीन एण्ड बिहाइंड* (21 जून 2017)
11. प्रोफेसर आनंद कुमार : *टूवर्डस यूनिटी इन डायवर्सिटी : सम एस्पैक्टस ऑफ पॉलिटिकल एण्ड सोशल इंजीनियरिंग इन इण्डिया* (1947– 2017) (29 जून 2017)
12. डॉ. बी. रविचंद्रन : *लैंग्वेज कास्ट एण्ड टैरिटरी : द मेकिंग ऑफ ए पॉल्युटिड स्वीपर इन इण्डिया* (04 जुलाई 2017)
13. प्रोफेसर पुन्नप्पुरथ माधवन : *रिफ्लैक्शन ऑन मीनिंग* (06 जुलाई 2017)
14. डॉ. अर्पिता मित्रा : *व्हट इज न्यू इन वेदांता ? इन्क्लूसिविजम एण्ड प्लूरलिजम इन स्वामी विवेकानंद* (13 जुलाई 2017)
15. डॉ. प्रदीप कुमार नायक : *फ्रॉम लैण्ड रिफॉर्मस टू लैण्ड टाइटलिंग : इण्डियाज क्वेस्ट सिक्योरर प्रॉपट्री राइट्स इन लैण्ड* (20 जुलाई 2017)
16. डॉ. ज्योति सिन्हा : *बनारस, बाईयों का जमाना और बनारसी ठुमरी का आरम्भिक दौर : 19वीं, 20वीं सदी* (27 जुलाई 2017)
17. डॉ. मार्टिन कैम्पचन : *रबींद्रनाथ टैगोर मीटस पॉल एण्ड एडिथ गेहीब : एन इंडो–जर्मन एनकाउंटर* (10 अगस्त 2017)

18. प्रोफेसर अम्बा कुलकर्णी : *कम्प्यूटेशनल मॉडलिंग ऑफ योग्यता एण्ड तात्पर्य* (24 अगस्त 2017)

19. प्रोफेसर जे. रंगास्वामी : *ए ट्रांसलेशन एण्ड कमेंटरी अपान तिरूविमोइल ऑफ नाम्मीवर विद इट्स* ±×*U* 36,000 *PA*×*I* *कमेंटरी ऑफ वाxअक्कुतिरूव* ± *तिपाआई इन्टू इंग्लिश* (31 अगस्त 2017)

20. प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा : *वेस ऑफ नोइंग* (21 सितंबर 2017)

21. डॉ. गिरिजा के.पी. : *नॉलेज एण्ड सब्जैक्ट : कल्चरल हिस्ट्री ऑफ आयुर्वेद थ्रू लाइफ नैरेटिव ऑफ प्रैक्टिशनरस* (28 सितंबर 2017)

22. डॉ. अजय कुमार : *दलित अस्मितावादी इतिहास लेखन : वैकल्पिक अधीनस्थ समाजशास्त्र की खोज में* (एक समीक्षात्मक मूल्यांकन) (02 नवंबर 2017)

23. डॉ. मैथ्यू अचनाक वर्गीज : *कम्पेरेटिव एक्स्पोरेशनस ऑफ ह्यूमन इकॉलजीस इन द मेकिंग* (02 नवंबर 2017)

24. श्री आशुतोष भारद्वाज : *द इन्काउंटर ऑफ द इण्डियन नॉवेल विद मॉडरनिटी एण्ड नेशनलिज़म एज रिफ्लैक्टिड थ्रू इट्स वुमेन करैक्टरस/द जैण्डर पॉलिटिक्स ऑफ द इण्डियन नॉवेल* (30 नवंबर 2017)

25. डॉ. जगदीश लाल डावर : *हिस्ट्री ऑफ फूड इन नॉथ–ईस्ट इण्डिया : मिजोरम सिन्स* प्री–कलोनिअल टाइम्स (07 दिसंबर)

26. डॉ. संघमित्रा साधू : *स्पीकिंग सब्जैक्टस : लाइफ–राइटिंग इन इण्डिया फ्रॉम बिलो* (12 दिसंबर 2017)

27. सुश्री प्राची दुबले : *टूवर्डस ए थियोटिकल फ्रेमवर्क ऑफ आदिवासी म्यूज़िक : स्टडींग द म्यूजिकल ट्रैडिशन ऑफ रथवा आदिवासी, ए रिप्रेजेंटेटिव ट्राइब लिविंग ऑन बॉर्डरस ऑफ मध्य* (14 दिसंबर 2017)

28. *डॉ. डंबरुधर नाथ : निर्गुण भक्ति इन ईस्टरन इण्डिया : आइडियॉलज, प्रोटैस्ट एण्ड आइडैंटिटी–स्टडी ऑफ द मायामारा सब–सैक्ट ऑफ आसाम* (8 मार्च 2018)

29. डॉ. रत्नाकर त्रिपाठी : *ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ द रीजनल म्यूज़िक इंडस्ट्रीस इन हिन्दी स्पीकिंग इण्डिया : विद स्पेशल फोकस ऑन हिमाचल प्रदेश, बिहार एण्ड हरियाणा* (15 मार्च 2018)

30. प्रोफेसर सुमन्यु सत्पथी : *इन प्रिंटः द अर्ली पीरीआडिकल प्रेस एंड मॉडर्न ओड़िया लिटरेरी कल्चर* (22 मार्च 2018)

घ. अध्येताओं से प्राप्त पाण्डुलिपियां

अध्येताओं को पाण्डुलिपि के रूप में अपनी शोध संबंधी अंतिम विष्कर्ष परिणाम संस्थान में जमा करवाना होता है। प्रतिवेदन की अवधि के दौरान अध्येताओं से निम्नलिखित पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई–

1. श्री अमित दत्ता : *द आर्ट ऑफ हिस्टोरिकल इन्क्वेरी इन्टू द लाइफ एण्ड डैथ ऑफ जंनगढ़ज सिंह श्याम* (25 मई 2017)

2. डॉ. बी. रविचंद्रन : *लैंग्वेज कास्ट एण्ड टैरिटरी : द मेकिंग ऑफ ए पॉल्युटिड स्वीपर इन इण्डिया* (18 जुलाई 2017)

3. डॉ. ज्योति सिन्हा : *बनारसी ठुमरियों की परंपरा में ठुमरी गायिकाओं की चुनौतियां एवं उपलब्धियां* (14 अगस्त 2017)

4. प्रोफेसर निर्मल सेन गुप्ता : *टैडिशनल नॉलेज इन मॉडरन इण्डिया* (18 अगस्त 2018)

5. डॉ. बिन्दु मैनन एम. : *मॉरलिटी टेल्स इन ट्रांसनेशनल मीडिया स्केपस : सोशल रिफॉर्म एण्ड माइग्रेशन इन मालाबर होम फिल्म्स* (28 अगस्त 2018)

6. श्री समीर बनर्जी : *सत्यार्थी टू सत्याग्रही : इंटरप्रेटिंग गाँधीयन थॉट* (15 सितंबर 2017)

7. डॉ अर्पिता मित्रा : *वेदांता इन मॉडरन मॉडरन टाइम्स : रि–इंटरप्रेटिंग स्वामी विवेकानंद* (13 फरवरी 2017)

8. डॉ. प्रदीप कुमार नायक : *टूवर्डस गारंटिंग लैण्ड टाइटलिंग (सिक्योर राइट्स इन इण्डिया)* (16 अक्तूबर 2017)

9. प्रोफेसर अम्बा कुलकर्णी : *संस्कृत परसर बेस्ड ऑन द थीअरीस ऑफ शब्दबोध* (25 अक्तबूर 2017)

10. डॉ. गौहर यकूब : *शेपिंग ए लिटरेरी स्पेस : द डिस्कोर्स ऑफ आइडैंटिटी एण्ड यूसज ऑफ कश्मीरियत एज ए कैटगरि इन अर्ली लिट्रेरी हिस्ट्री कश्मीरी* (30 अक्तूबर 2017)

11. प्रोफेसर बेटिना शारदा बौमर : *द योग ऑफ द नेत्रा तंत्र द 'थर्ड आई' एण्ड द ओवरकमिंग डेथ'* (13 फरवरी 2017)

12. डॉ. मार्टिन कैम्पचन : *रबींद्रनाथ टैगोर मीटस पॉल एण्ड एडिथ गेहीब : एन इंडो–जर्मन एनकाउंटर* (27 मार्च 2018) (प्रारूप)

13. प्रोफेसर विजय शंकर वर्मा : वेस ऑफ नोइंग (28 मार्च 2018)

ङ. आगन्तुक प्राध्यापक

संस्थान की शासी निकाय द्वारा सुविख्यात विद्वानों को आगंतुक प्रोफेसर के रूप में आमंत्रित किया जाता है जो अपनी विशेषज्ञता से संबंधी रूचि के तीन व्याख्यान प्रस्तुत करते हैं। वे संस्थान में एक महीने के लिए रूकते हैं और संस्थान के अकादमिक समुदाय के साथ परस्पर विमर्श करते हैं। प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान में निम्नलिखित आंगतुक प्राध्यापक पधारे–

जून 2017

79, माउंट कैलाश, एसएफएस अपार्टमेंट, नई दिल्ली से आए श्री केकी एन. दारुवाला, ने निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए–

- *हिस्टोरिकल फिक्शन : नेगोसिएटिंग द पर्सनल एण्ड द हिस्टोरिकल* (06 जून 2017)
- *न्यूट्रल स्पेस? पॉलिटिक्स एण्ड पोइट्री* (15 जून 2017)

जुलाई 2017

सेंटर फॉर साउथ एशियन स्टडीज, स्कूल फॉर एडवांस्ड स्टडीज इन सोशल साइंसेज, पेरिस से आए वरिष्ठ सीएनआरएस अध्येता प्रोफेसर जीन–ल्यूक रेसीन, एमेरिटस ने निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए–

- *इण्डिया एण्ड वर्ल्ड, 1991–2013* (03 अगस्त 2017)
- *इण्डियाज 'सॉफ्ट पॉवर' कल्चरल डिप्लोमेसी एण्ड सिविल सोसाइटी* (09 अगस्त 2017)
- *ए न्यू नॉर्मल? द मोदी–फिक्शन ऑफ इण्डिया* (18 अगस्त 2017)

च. अतिथि विद्वान

संस्थान में अतिथि विद्वान की भी एक योजना है, जिसके तहत प्रख्यात विद्वानों को एक सप्ताह के लिए आमंत्रित किया जाता है। वे अपनी पसंद की विषय वस्तु पर व्याख्यान देते हैं। रिपोर्ट की अवधि के दौरान इस श्रेणी के अंतर्गत आमंत्रित किए गए विद्वानों ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किए–

1. सेंट लुइस, वाशिंगटन यूनिवर्सिटी से मॉडलिंग इंटरडिसिप्लिनरी इंक्वायरी, ह्यूमैनिटीज इंटरडिसिप्लिनरी प्रोजेक्ट, के अंतर्गत एंड्रयू डब्लू मेलन अध्येता डॉ. कैथरीन हार्डी ने 5 मई 2017 को *साउंडिंग आउट द क्राउड : सिनेमैटिक साइन्स एण्ड एम्बोडिड पॉलिटिक्स इन रीजनल 'मुंबई* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
2. विजिटिंग फैकल्टी, रटगर्स लॉ स्कूल, फुलब्राइट–नेहरू सीनियर स्कॉलर, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च, नई दिल्ली से आईं डॉ. एलिजाबेथ विल्सन ने 21 जून 2017 को *बी द चेंज : गाँधी एण्ड ह्यूमन राइट्स* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
3. हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से इतिहास, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व संस्थान के प्रोफेसर दिनेश प्रसाद सकलानी ने 28 जुलाई 2017 को *वाल्मीकि रामायण एण्ड जैण्डर इश्यू– केस ऑफ सीता* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
4. तल्ला डंडा तल्लीताल नैनीताल ने आए डॉ. शेखर पाठक, ने 14 सितंबर 2017 को *चिपको एंडोलन : एन इवॉल्युशन लीडरशिप, आर्गेनाइजेशन एण्ड पार्टिसिपेशन* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
5. गौराम, प्रभात रोड, 9 वीं लेन, पुणे से आए श्री मकरंद साठे ने 6 अक्तूबर 2017 को *नेशनलिजम एण्ड कल्चरल फ्रीडम* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
6. पूरबी विवेकानंद मार्ग, भुवनेश्वर से आए श्री अनंत महापात्रा ने 12 अक्तूबर 2017को *ओड़िया थियेटर थ्रू डिकेडस* विषय पर व्याख्यान दिया।
7. आईएनआईएए, पेरिस, फ्रांस से आए प्रोफेसर जेरार्ड ह्यूट, एमेरिटस प्रोफेसर, ने 26 अक्तूबर 2017 को *द संस्कृति हैरिटेज प्लेटफॉर्म* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
8. यूनिवर्सिटी पॉल वैलेरी मोंटपेलियर 3, फ्रांस से आए एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. जुडिथ मिश्राही–बराक ने 8 मार्च 2018 को *इन्टेंट्युरशिप, कास्ट एण्ड द क्रॉसिंग ऑफ द काला पानी* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

छ. अतिथि अध्येता

अतिथि अध्येताओं को संस्थान में तीन माह की अवधि के लिए बुलाया जाता है मगर उन्हें किसी प्रकार की अध्येतावृति राशि नहीं दी जाती है। संस्थान द्वारा केवल उनके यात्रा खर्च की अदायगी की जाती है तथा निः शुल्क खाने–पीने व रहने की सुविधा मुहैया करवाई जाती है। इस श्रेणी में वे विद्वान आते हैं तो पूर्णकालिक अध्येतावृति ग्रहण नहीं कर सकते मगर कम से कम समय के लिए संस्थान में शोध के लिए आना चाहते हैं। इस अवधि के दौरान उन्हें अन्य अकादमिक गतिविधियों में भाग लेने के आमंत्रित किया जाता है और वे संस्थान के पुस्तकालय तथा अन्य सुविधाओं का निः शुल्क प्रयोग कर सकते हैं। अपनी अध्येतावृति अवधि के पूर्ण होने पर उन्हें संस्थान के अन्य अकादमिक समुदाय के समक्ष अपने शोध–पत्र की प्रस्तुति करनी होती है।

इस श्रेणी के अंतर्गत निम्नलिखित शोध–पत्र प्रस्तुत किए गए–

अगस्त 2017

- नॉटिघंम ट्रैंट विश्वविद्यालय, हैदराबाद से कला एवं मानविकी संस्थान के डॉ. कथरिन लुम ने 01 अगस्त 2017 को *रिजर्वेशनस इन ब्राज़ील* विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- नॉर्थ एवेन्यु, हौज़ खास, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान परिसर से आए डॉ. अनुराधा वीरावल्ली ने 17 अगस्त 2017 को *थीअरी ऑफ द वर्नाकूलर : ए काउंटर–मॉडरनिटी* विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

सितंबर 2017

- डॉ. अनुरूद्धा भट्टाचार्य ने 23 नवम्बर 2017 को *एन एम्पायरिकल स्टडी एड्वर्टाइजिंग* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

ज. मानविकी एवं समाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में अंतर-विश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी)

संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओरसे मानविकी एवं समाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में एक अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी) भी चलायमान है। आईयूसी के अकादमिक कार्यक्रमों में तीन प्रमुख कारक हैं– (1) सह–अध्येतावृति की योजना, (2) देश के विभिन्न भागों में संगोष्ठियां आयोजित करना (3) संस्थान में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय हित से संबंधित समस्याओं पर अध्ययन सप्ताहों का आयोजन करना। इस केंद्र के अंतर्गत देश के विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को तीन सालों में तीन बार अध्ययन के बुलाया जाता है, जो मूलतः निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पधारते हैं–

(क) अपने किसी लेख को पूर्ण करने हेतु जो किसी कारणवश अधूरा रह गया हो; (ख) प्रकाशन के लिए अपने शोध–कार्य को संशोधित करने हेतु ; (ग) संस्थान के पुस्तकालय के प्रयोग हेतु तथा (घ) संस्थान में आये देश विदेश के अध्येताओं तथा अतिथि प्राध्यापकों व अतिथि विद्वानों के साथ विमर्श करने के लिए। ये सह–अध्येता संस्थान की नियमित अकादमिक गतिविधियों के अतिरिक्त समय–समय पर आयोजित होने वाली राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय संगोष्ठियों व सम्मेलनों में भाग लेते हैं। सह–अध्येताओं से अपेक्षा की जाती है किवे अपने शोध–कार्य के अलावा संस्थान की अन्य अकादमिक गतिविधियों में भी प्रतिभागिता करें। केंद्र में अपने रहने के दौरान उन्हें अपना एक शोध–पत्र प्रस्तुत करना होता है। हालांकि यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है कि वे अपने शोध–पत्र को संस्थान द्वारा प्रकाशित जर्नलों में प्रकाशनार्थ दें अथवा नहीं। आलोच्य वर्ष के दौरान जो सह–अध्येता संथान में अध्ययन हेतु पधारे उनका तथा उनके द्वारा प्रस्तुत शोध–पत्रों का विवरण निम्न प्रकार से है–

समीक्षा अवधि के दौरान आईयूसी सह–अध्येताओं द्वारा निम्नलिखित शोधपत्र प्रस्तुत किए गए–

अप्रैल

- डॉ. देबोपम राहा (पश्चिम बंगाल) : *पटैरोडैक्टल, पूरन सहाय एण्ड पिर्था बाई महाश्वेता देवी : रिप्रेजेंटिंग ट्राइबल वायस* (17 अप्रैल 2017)
- डॉ. उत्तम बलीराम सोनकंबले (महाराष्ट्र) : *कक्षा में श्रवण कौशल की चुनौती और प्रभावकारिता* (17 अप्रैल 2017)
- डॉ. बिजयानंद सिंह (ओड़िशा) : *पोइट रवींद्रनाथ एण्ड ओड़िया 'साबूजा' कान्शस्निस* (17 अप्रैल 2017)
- डॉ. जगन कराड़े (महाराष्ट्र) : *मैन–मेड थर्ड जेंडर : ए सोशियोलॉजिकल एनालिसिस* (17 अप्रैल 2017)

- डॉ. शैलजा बी. वाडिकर (नांदेड़) : *भोमा : रिव्यू ऑफ पोस्ट इंडिपेंडेंस इंडियन सोसाइटी* (18 अप्रैल 2017)
- डॉ. प्रभाकरन नायर वी. आर. (केरल) : *बैंकिंग रिफॉर्म्स, क्रेडिड मार्केट एण्ड रूरल इन्डेब्टनेस इन इण्डिया* (18 अप्रैल 2017)
- श्री वाहुल अरुण सूर्यभान (महाराष्ट्र) : *आंबेडकर के बाद महाराष्ट्र में दलित* आन्दोलन की दशा और दिशा (18 अप्रैल 2017)
- डॉ. अनया मिलिंद थत्ते (मुंबई) *: नाट्य संगीत की लोकप्रियता में गायकों का आंदोलन* (18 अप्रैल 2017)
- डॉ. बलिराम रघुनाथ धापसे (महाराष्ट्र) : *हिंदी–मराठी सिनेमा से संबंधित व्यक्तियों का जीवनीपरक साहित्य (जोहरा सहगल कृत करीब से) और शांता हुबलीकर उपहार कुहाल उदयाची बात के विशेष संदर्भ में* (19 नवंबर 2017)
- श्री पुरुषोत्तम रावसाहेब कुंदे (महाराष्ट्र) : हिंदी में सौन्दर्य शास्त्रियों की दिशाएँ (19 अप्रैल 2017)
- डॉ. रामदास पी.(केरल) : *टैक्नॉलजी एण्ड लेबर इन मालाबर फिशरी* (1880–1930) : *आउटलाइन ऑफ एन इन्डस्ट्रियल फार्मेशन* (19 अप्रैल 2017)
- डॉ. रामचंद्र मोहंती (ओडिशा) : *ऐटिटूड ऑफ एससी/एसटी प्राइमरी स्कूल स्टूडैण्टस ऑफ बाराखाना ब्लॉक टूवर्डस एजूकेशन* (19 अप्रैल 2017)

मई

- डॉ. सोनी स्कारिया (केरल) : *द होली थ्रेड ऑफ बॉटनी* (22 मई 2017)
- डॉ. दर्शन पाडिया (अहमदाबाद) : *स्टेट्स ऑफ जेण्डर रिस्पॉन्सिव बजटिंग इन द स्टेट्स ऑफ गुजरात पोस्ट थ्री ईयरस ऑफ पब्लिकेशन सिन्स* 2014–15 (22 मई 2017)
- डॉ. आलोक प्रसाद (इलाहाबाद) : *एजूकेशन एण्ड सोशल एक्स्कलूसन : ए केस स्टडी ऑफ दलितस इन उत्तर प्रदेश (1950–1964)* (22 मई 2017)
- डॉ. इश्मीत कौर चौधरी (गुजरात) : *राइटिंग परसनल मेमोरीज; रि–राइटिंग पार्टीशन हिस्ट्री* (23 मई 2017)
- डॉ. विनोद बालाकृष्णन (तमिलनाडु) : *वायरेलिटी इन द इन्वायरन्मेंट ऑफ पॉलिटिकल कारटूनस* (23 मई 2017)
- डॉ. अखिलेश कुमार शंखधर (मणिपुर) : *21वीं सदी की हिंदी कविता : विविध संदर्भ* (23 मई 2017)
- डॉ. रोहिंग्मावी (मिजोरम) : *नॉलेज एण्ड पावर : द प्रोसेस ऑफ सब्जूगेशन एण्ड द एक्स्पीरियंस ऑफ मिजोरम* (24 मई 2017)
- डॉ. बी.पी. बडोला (हि.प्र.) : *सिचुएटिंग सबाल्टर्न डिस्कोर्स इन द परस्पैक्टिव ऑफ वेदांतिज़म एण्ड पोस्टमॉडरनिज़म* (24 मई 2017)
- डॉ. जी.ए. घनश्याम (छत्तीसगढ़) : *छत्तीसगढ़ का संवाद–भरतरी एक लोकगाथात्मक काव्य* (24 मई 2017)

जून

- डॉ. आकाश वर्मा (असम) : *भोजपुरी लोकगीतों में महिला* (19 जून 2017)
- डॉ. बनब्रीता महंत (उत्तर प्रदेश) : *द स्पेस बिटवीन : ग्लोबल रियलिटीस, लोकल परस्पैक्टिवस एण्ड द रिप्रेजेंटेशन ऑफ डिसेबिलिटी इन लिटरेचर* (19 जून 2017)

- डॉ. लक्ष्मीकांता पाधी (पश्चिम बंगाल) : *डज रिलिजन गिव मीनिंग टू लाइफ?* (20 जून 2017)
- डॉ. सुशील कुमार (भटिंडा) : *द एपिडेमिक ऑफ ड्रग ऐटिक्शन इन पंजाब (इण्डिया) : द स्टोरीज ऑफ मॉर्टल प्लेजर इन पंजाबी लिटरेचर* (20 जून 2017)
- डा. वीरेंद्र सिंह ढिल्लों (हरियाणा) : *लैण्ड–एन 'ऑनर' : गवर्नमेंट, इन्स्टिटूशनएण्ड सोसाइटी इन 19थ सेंचरी कलोनिअल पंजाब* (20 जून 2017)
- डॉ. दीपा कांसरा (नई दिल्ली) : *द लाइफ एण्ड पोटेंशियलिटी ऑफ नॉन–ह्यूमन इन लॉ* (21 जून 2017)
- डॉ. नंदिता बनर्जी (पश्चिम बंगाल) : *बॉर्डरस एण्ड बाउंडरीज : नैरेटिवस एण्ड डिस्कोर्स ऑफ इण्डियन सिनेमा विद स्पेशल रेफरेंस टू ऋत्विक घातक* (21 जून 2017)
- डॉ. रंजना कृष्णा (लखनऊ) : *हर काइंड : वुमेन इन क्लासिकल ऐंटिक्वीटी (ए रि–रीडिंग ऑफ मिथ ऑफ हैलन थ्रू द लैंस ऑफ नियो ऐपिक)* (22 जून 2017)
- सुश्री कविता बी. हरिहर (धारवाड़) : *हारबिंगरस ऑफ सोशल चेंज : ए स्टडी ऑफ वुमेन वाकानाकारस* (22 जून 2017)
- डॉ. एस.एन. किरण (कर्नाटक) : *द फ्लैनूर इन द मॉडर्न मेट्रोपोलिस : द टेक्स्टुअल प्रोडक्शन ऑफ द अर्बन एक्सपीरियंस* (23 जून 2017)
- डॉ. ललित कुमार पात्रा (ओडिशा) : *फरॉम इन्टेन्शन टू एक्शन : प्रोमोटिंग परो–इन्वायरन्मेंटल बिहेवियर फॉर सस्टेनेबल डिवेलप्मेंट* (23 जून 2017)
- डॉ. अनिंद्य सियाम चौधरी (असम) : *द ब्रेकिंग ऑफ साइलेंस : एडरेसिंग इश्यूज ऑफ डिस्पेसमेंट, आइडेंटिटी एण्ड बिलॉंगिंग इन पार्टीशन नैरेटिवस फरॉम सदरन आसाम* (23 जून 2017)

जुलाई

- डॉ. शोभा कौर (दिल्ली) : *श्री दाम ग्रन्थ में अर्थशास्त्रीय मूल्य* (19 जुलाई 2017)
- डॉ. सोना मंडल (नई दिल्ली) : *ग्लोबलाइजेशन एण्ड द पॉलिटिकल इकानमी ऑफ इन्विजिवल वर्क : वुमेन होम एण्ड डोमेस्टिक वर्करस इन इण्डिया* (19 जुलाई 2017)
- डॉ. शर्मिला छोटारे (त्रिपुरा) : *कल्चरल पॉलिटिक्स ऑफ पॉपुलर परफॉर्मेंस : स्ट्रक्चर एण्ड रिप्रेजेंटेशन* (19 जुलाई 2017)
- डॉ. प्रद्युम्न सर्मा (असम) : *बिलीफस एण्ड कस्टमस एज रिफ्लैक्टिड इन गेम्स : ए स्टडी ऑफ फोक गेम्स ऑफ असाम* (20 जुलाई 2017)
- डॉ. मेघाली गोस्वामी (पश्चिम बंगाल) : *कालीघाट पेंटिंगस : डॉक्यूमेंटेशन ऑफ द सोसिओ–रिलिजस कल्चर* (20 जुलाई 2017)
- डॉ. अनुपम बहरी (चंडीगढ़) : *कमर्सियल सैक्सुअल एक्स्प्लॉइटेशन ऑफ गर्ल्स : ए कम्पेरेटिव स्टडी* (20 जुलाई 2017)
- डॉ. एस. राम दास (चेन्नई) : *प्रिवेन्शन ऑफ क्राइम एण्ड डेलिन्क्वेंसी : एन ओवरव्यू* (21 जुलाई 2017)
- डॉ. सुरेश कुमार (हरियाणा) : *राइजिंग इंडिया : चैलेंजिस एण्ड अपोरच्यूनिटीस* (21 जुलाई 201)

- डॉ. किशोर कुमार दास (ओडिशा) : *क्रॉस–कल्चरल ट्रेनिंग ऑन एक्स्पेरिएट असाइन्मेंटस : इण्डियन एविडेंस ऑन इन प्रोफेशनलस* (21 जुलाई 2017)
- डॉ. ताहिर हुसैन अंसारी (असम) : *द खोखरा चीफटैंसी एण्ड द मुगल एम्पायर* (21 जुलाई 2017)

अगस्त

- डॉ. शीला एच.के. श्रीधर (मैसूर) : *डांस–ए क्लासिक परफॉर्मिंग आर्ट मल्टिपल आइडेंटिटी ऑफ भरतनाट्य* (28 अगस्त 2017)
- डॉ. एस. कार्तिक (तमिलनाडु) : *द कंफ्लुएंस ऑफ साइंस एंड स्पिरिचुअलिटी इन द सेलेक्ट वर्क्स ऑफ उम्बर्टो इको* (28 अगस्त 2017)

सितंबर

- डॉ. पुष्पम नारायण (बिहार) : *बिहार की गोदना कला और पमरिया नृत्य : एक अध्ययन* (20 सितंबर 2017)
- डॉ. सपना पंडित (शिमला) : *फिलिंग द गैप : डिस्टैंस बिटवीन हर्ट एण्ड फीट–रि रीडिंग इमाइग्रेंट एक्स्पीरियंस इन रहिन्टन मिस्त्रीज सच ए लॉंग जर्नी* (20 सितंबर 2017)

अक्तूबर

- डॉ. हर्ष त्रिवेदी (राजस्थान) : *हिंदी नाट्य साहित्य को दया प्रकाश सिन्हा का प्रदेय* (23 अक्तूबर 2017)
- डॉ. एस. चंद्रकिरण (मंड्या) : *कन्नड़ दलित प्लेस ऑन द सोशल प्लेटफॉर्म* (23 अक्तूबर 2017)
- डॉ. कमल नयनपुत्री (असम) : *मैन एण्ड सराउंडिंगस : एन इन्वायरन्मेंटल स्टडी इन रेफरेंस टू द कालिका पुराण* (23 अक्तूबर 2017)
- पुनम सूद (नई दिल्ली) : *बदलते मंजर के तेवर और कविता* (24 अक्तूबर 2017)
- डॉ. मनीष कुमार सी. मिश्रा (कल्याण) : मानवता को सिंचित करती महाराष्ट्र की वंचित स्त्रियाँ (संदर्भ : जिंदा कहानियाँ– शशिकला राय) (24 अक्तूबर 2017)
- डॉ. आशा सुसान जैकब (केरल) : *सीटिंग द ट्राइबल : मदर फॉरेस्ट–द अनफिनिश्ड स्टोरी ऑफ सी. के. जानू* (24 अक्तूबर 2017)
- डॉ. मंजीत मान (हरियाणा) : *इमैनसिपेशन ऑफ वेल्ड वुमेन इन हरियाणा* (24 अक्तूबर 2017)
- डॉ. रमेश धागे (महाराष्ट्र) : *द किंग ऑफ द मास और नॉट ऑफ द अक्तूबर कास्ट : शिवाजी अंडरग्राउंड भीमनगर मोहल्ले* (25 अक्तूबर 2017)
- डॉ. आलोक प्रसाद (इलाहाबाद) : *कैपेबिलिटी अप्रोच ऑफ अमर्त्य सेन एण्ड द क्वेश्चन ऑफ कास्ट–बेस्ड सोशल एक्स्क्लूसन* (25 अक्तूबर 2017)
- डॉ. चंद्रशेखर बाबी ताम्बे (महाराष्ट्र) : *जतनजी पोस्ट–ट्रुथ पॉलिटिक्स 'रू ए क्रिटिकल एप्रिसिएशन* (25 जनवरी 2017)
- डॉ. रूपा सिंह (राजस्थान) : *फेसबुक पर स्त्री–विमर्श* (25 अक्तूबर 2017)

नवंबर

- प्रोफेसर अनिंद्य भट्टाचार्य (हुगली) : *ट्रेड–ऑफ बिटवीन डिफैंस एण्ड डिवेलप्मेंट : ए टाइम सिरीज स्टडी इन इण्डिया* (24 नवंबर 2017)
- डॉ. अनुराधा आर. चेतिया (दिल्ली) : *स्टैटिक्स एण्ड म्यूजिक : एप्लीकेशन ऑफ मार्कोव मॉडलस इन म्यूजिक* (24 नवंबर 2017)
- (अयूब खान (सांसद) : *इमेजिस ऑफ हिजड़ा इन हिन्दी सिनेमा विद स्पेशल रिफरेंस ऑन सड़क, तमन्ना एण्ड शबनम मौसी* (24 नवंबर 2017)
- प्रोफेसर हरीश के. ठाकुर (शिमला) : *रोमा राइट्स इन यूरोप : ए स्टडी इन सिटीजनशिप इन स्टेटलेसनेस* (24 नवंबर 2017)

मार्च 2018

- डॉ. महेश्वर मिश्र (बिहार) : *लिंग्विस्टिक स्पेकुलेशन इन द ईस्ट एण्ड वेस्ट* (19 मार्च 2018)
- डॉ. ज्योति स्वरूप दुबे (भोपाल) : *तर्कना की न्याय परंपरा*(19 मार्च 2018)
- डॉ. शत्रुघ्न कुमार पांडे (झारखंड) : *झारखंड मूवमेंट एण्ड ट्रुथ* (19 मार्च 2018)
- डॉ. सुरेश आर. (तिरुवंतपुरम) : *तिब्बत एण्ड इण्डिया चाइना बॉर्डर डिस्प्यूट : द इमर्जिंग ट्रेंड्स* (20 मार्च 2018)
- श्री माइनस मल्लिक (ओड़िशा) : *सोशल कन्स्ट्रक्टिविज़म एण्ड पब्लिक डिप्लोमेसी : ए न्यू परस्पैक्टिव इन इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी* (20 मार्च 2018)
- डॉ. शीला श्रीवास्तव (रायबरेली) : *रेफ्रिजेशन एण्ड ग्लोबल वार्मिंग* (21 मार्च 2018)
- डॉ. सुनीता जाखड़ (राजस्थान) : *भानगढ़ : ए नैरेटिव ऑफ स्पूक, सोर्सेरी एण्ड सोसाइटी* (21 मार्च 2018)
- डॉ. सुनेता मित्रा (पश्चिम बंगाल) : *द एज ऑफ रिफॉर्म एण्ड स्वामी विवेकानंद : एन अल्टरनेटिव अप्रोच* (21 मार्च 2018)

4. पुस्तकालय

संस्थान के पुस्तकालय का न सिर्फ नियमित अध्येता ही अपितु देशभर से आए आगंतुक प्रोफेसर, आंगतुक विद्वान, आईयूसी सह–अध्येता, परामर्शी सदस्य तथा संगोष्ठियों में आए प्रतिभागी लाभ उठाते हैं। पुस्तकालय के संग्रह और अधिक बढ़ाने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान 2724 पुस्तकें उपार्जित की गईं। संस्थान के पुस्तकालय में 151398 पुस्तकों तथा 50000 बंधित पत्रिकाओं का समृद्ध संग्रह है। पुस्तकालय द्वारा मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के 96 मुद्रित पत्रिकाएं अभिदत्त की गईं। मुद्रित पत्रिकाओं के अलावा पुस्तकालय द्वारा मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों की व्यापक स्तर पर ई–पत्रिकाएं अभिदत्त की जा रही हैं।

सेज प्रकाशन, ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रैस, एसीएलएस, अनुअल रिव्यू, ई–बुक्स आदि अग्रणी प्रकाशकों ई–पत्रिकाएं अभिदत्त की जा रही हैं।

पुस्तक प्रदर्शनी : पुस्तकालय अनुभाग द्वारा संस्थान की परिसर में 1–2 नवबंर 2017 को एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। लगभग 25 प्रकाशकों ने इस प्रदर्शनी में भाग लिया। संस्थान के अध्येताओं ने पुस्तकालय के

लिए पुस्तकों का चयन किया। पुस्तकालय में पुस्तक चयन समिति के अनुशंसाओं पर नियमित तौर पर नई पुस्तकों एवं पत्रिकाओं की खरीद की जाती है और पुस्तक संग्रह का यथानुसार अद्यतन किया जाता है।

ई-संसाधनों की अभिगम्यता : पुस्तकालय के पास ई–शोध सिंधु तथा इन्फिलिबनेट केन्द्र, गाँधीनगर की सदस्यता भी है। इस कार्यक्रम के तहत मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में तकरीबन सभी ई–संसाधनों की अभिगम्यता है। ई–शोध सिंधु कार्यक्रम के अतिरिक्त पुस्तकालय के पास इन्फिलिबनेट के एनलिस्ट कार्यक्रम के अंतर्गत आने वाले सभी इ–संसाधनों की अभिगम्यता है। जेस्टोर, प्रोजैक्ट म्यूज, टेलर एण्ड फ्रांसिस, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, आईएसआईडी, साउथ एशिया आर्काइव, इवीडब्ल्यू, एच डब्ल्यू विल्सन, ऑक्सफोर्ड ई–स्कॉलरशिप (ई–बुक्स), कैम्ब्रिज बुक ऑनलाइन, स्प्रिंगर ई–बुक्स, वर्ल्ड ई–बुक लाइब्रेरी आदि प्रमुख ई–संसाधन हैं। अध्येता इन ई–संसाधनों का अपने आवासों एज़प्रोक्सी सॉफ्टवेयर पर लॉगइन कर प्रयोग कर सकते हैं। संस्थान का पुस्तकालय पूरी तरह कम्प्यूटरीकृत है तथा पुस्तकालय की पुस्तकों की सूची को ऑनलाइन कर दिया गया है। पुस्तकालय का ओपैक (http:14.139.58.198/WebOpac_n/Default.aspx) का प्रयोग 24 घण्टे किया जा सकता है। पुस्तकालय में 19 बाहरी तथा 17 लघु अवधि के लिए नाम मात्रा शुल्क प्राप्त कर पुस्तकालय की सदस्यता प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त वर्ष 2017–18 में 1316 आगंतुक पुस्तकालय में आए।

वर्ष के दौरान पुस्तकालय अनुभाग द्वारा निम्नलिखित दो कार्यशालाओं/प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया–

(क) पुस्तकालय स्वचलन (आईआरटीपीए) विषय पर इन्फिलिबिनेट क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

पुस्तकालय अनुभाग द्वारा इन्फिलिबिनेट केन्द्र, गाँधीनगर के सहयोग 17 जुलाई से 21 जुलाई 2017 तक स्वचलन (आईआरटीपीए) विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें देशभर आए लगभग 65 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य इन्फिलिबिनेट केन्द्र द्वारा पुस्तकालय प्रबंधन के लिए ईजाद किए सोल सॉफ्टवेयर के बारे में पुस्तकालय से जुड़े पेशेवरों को प्रशिक्षण देना था।

(ख) एनडीएल परियोजना के अंतर्गत डीस्पेस सॉफ्टवेयर का प्रयोग करते हुए इण्डियन डिजिटल रिपोजिट्री (आईडीआर) के लिए दो दिन का प्रशिक्षण–

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर के सहयोग से 21–22 सितंबर 2017 को राष्ट्रीय डिजिटल कार्यक्रम विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। एनडीएल परियोजना का उद्देश्य देश के ई–शिक्षण संस्थानों में प्रयोग किए जा रहे डिजिटाइज़ड तथा डिजिटल सामग्री को एकत्रित करना था ताकि हमारे देश में प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शैक्षणिक स्तर के प्रयोगकर्ताओं को एक जगह ई–शिक्षण सुविधा मिल सके। इस कार्यशाला से संस्थान के पुस्तकालय स्टाफ को अपना व्यावसायिक ज्ञान बढ़ाने में लाभ प्राप्त हुआ।

5. प्रकाशन

शोधकार्यों को प्रोत्साहित करना तथा ज्ञान का प्रसार करना संस्थान का मूल उद्देश्य है। संस्थान द्वारा अध्येताओं, अतिथि प्राध्यापकों द्वारा प्रस्तुत पाण्डुलिपियों तथा आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों की कार्यवाहियों को पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया जाता है। इन पुस्तकों को या तो संस्थान द्वारा स्वंय प्रकाशित किया जाता है या फिर ओरियंट ब्लैकस्वैन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, पर्मानेंट ब्लैक रूटलेज, सेज़, स्प्रिंगर आदि व्यावसायिक फर्मों के साथ सह–प्रकाशित किया

जाता है। संस्थान के प्रकाशनों को संस्थान परिसर में स्थित फायर स्टेशन बुक शॉप से खरीदा जा सकता है। इसके अतिरिक्त इन पुस्तकों का क्रय आदेश सेल्ज़ एव जनसंपर्क अधिकारी को लिखित, ऑनलाइन एवं ऐमज़ान पर दिया जा सकता है। प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान द्वारा निम्नलिखित पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित की गई हैं –

1. डॉ. समारिका नवानी कृत पुस्तक *एन्टैगल्ड स्पेसिस सम एस्पैक्टस ऑफ पुर्तगीज प्रेजेंस इन कोरोमण्डल–आर्किपेलैगो साउथईस्ट एशिया कम्प्लैक्स*
2. आईसी4एचडी अध्येता, डॉ. फैज़र जिहादी कृत *सोशल सिक्योरिटी फरॉम ए ह्यूमन डिवेलप्मेंट परस्पैक्टिव इन डिजास्टर प्रोन एरिया ऑफ द आर्किपैलेगिक ऑफ सदरन एशिया : लेशनस लर्नड फरॉम इण्डोनेशिया*
3. डॉ. मंजीत भाटिया द्वारा संपादित*लोकेटिंग जेण्डर इन द न्यू मिडल क्लास इन इण्डिया*
4. डॉ. गौतम पटेल कृत *डिवोशन इन इण्डियन ट्रैडिशन*
5. डॉ. कौस्तव चक्रबर्ती कृत *इंडिजेनिटी टेलस एण्ड अल्टरनेटिवस रिविजिटिंग सलेक्ट ट्राइबल फोकटेलस*
6. आईसी4एचडी अध्येता, सुश्री वान या शिन कृत *मलेशिया : सोशल प्रोटैक्शन इन एडरेसिंग लाइफ साइकिल वल्नरेबिलिटीस*
7. डॉ. एन. जयाराम द्वारा संपादित *नोइंग द सोशल वर्ल्ड परस्पैक्टिवस एण्ड पॉसबिलिटीस*
8. डॉ. एनाक्सी रे मित्रा कृत*लेटरविट्टगैन्सटाइन ऑन लैंग्वेज एण्ड मैथमैटिक्स : एन नॉन–फाउंडेशन नैरेशन*
9. डॉ. आईसी4एचडी अध्येता डॉ. श्वेता कोलूरी कृत *सोशल सिक्योरिटी फॉर वेस्ट पिकरस इन इण्डिया*
10. डॉ. अर्नब चटर्जी कृत *कैटगरिकल ब्लू : परसनैलिटिक ऐथिक इन सोशल वर्क एण्ड अदर स्ट्रक्चरस ऑफ*
11. डॉ. अमित दत्ता कृत *इन्विजिवल वेब : एन आर्ट हिस्टॉरिकल इन्क्वेरी इनटू दलाइफ ऑफ जनगण सिंह श्याम*
12. श्री छेरिंग दोरजे कृत *थीअरी एण्ड प्रैक्टिस ऑफ हैरिटेज कन्जरवेशन एण्ड रेस्टोरेशन ऑफ राष्ट्रपति निवास, शिमला*
13. डॉ. संयोतनी दत्ता कृत *दामुडा : सैक्रेड वाटर नैरेटिवस ऑन इन्वायरन्मेंटल लॉस एण्ड कन्फिलिक्ट इन दी अप्पर एण्ड मिडल दामोदर रीवर बेसिन*
14. श्री मोहनदास नैमिशराय कृत *दलित साहित्य की अवधारणा में रंगमंच*

सह-प्रकाशन

15. डॉ. के.एल. टुटेजा एवं डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती द्वारा संपादित*टैगोर एण्ड नेशनलिज़म (सह–प्रकाशक, स्प्रिंगर)*
16. डॉ. विजया सिंह कृत *लेवल क्रॉसिंग : रेलवे जर्नीस इन हिन्दी सिनेमा* (सह–प्रकाशक ओरियंट ब्लैकस्वैन)
17. श्री राजेश जोशी कृत *कविता का शहर एक कवि की नोटबुक (सह–प्रकाशन राजकमल)*
18. डॉ. आर. उमामहेश्वरी कृत *रीडिंग हिस्ट्री विद द तमिल जैनस : ए स्टडी ऑन आइडैंटिटी, मेमोरी एण्ड मार्जिनलाइजेशन (सह–प्रकाशन स्प्रिंगर)*
19. डॉ. एन. जयराम द्वारा संपादित *सोशल डायनामिक्स ऑफ द अर्बन स्टडीज फरॉम इण्डिया (सह–प्रकाशन स्प्रिंगर)*
20. डॉ. उद्यन मिश्रा कृत *बर्डन ऑफ हिस्ट्री : अनरिजॉल्ब्ड इश्यूज ऑफ असाम एण्ड पार्टीशन (*सह–प्रकाशक ओयूपी*)*

21. डॉ. उमा दास गुप्ता द्वारा संपादित *फरैन्डशिपस ऑफ लार्जनेस ऐंड्रयूज, टैगोर एण्ड गाँधी एन एपिस्टलरी अकाउंट 1912–1940 (सह–प्रकाशन ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस)*

22. डॉ. कविता पंजाबी कृत *अन्क्लेम्ड हार्वेस्ट एन ऑरल हिस्ट्री ऑफ द तेभागा वुमेनस मूवमेंट (*सह–प्रकाशक जुबान*)*

पुस्तकों के अलावा संस्थान *स्टडीज इन ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंसिस* नामक अर्द्धवार्षिक अंतर्विषयक जर्नल का प्रकाशन भी करता है जिसकी शुरूआत वर्ष 1994 में की गई थी। इस जर्नल में मानवीय सभ्यता तथा समाज से जुड़े आलेख शामिल किए जाते हैं। उक्त जर्नल की ऑनलाइन भी अभिगम्यता है। साथ ही संस्थान द्वारा *समरहिल* नामक अर्द्धवार्षिक जर्नल का भी प्रकाशन करता है जिसमें विद्वत्तापूर्ण आलेख तथा साक्षात्कार प्रकाशित किए जाते हैं। आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित जर्नल प्रकाशित किए गए–

1. *स्टडीज इन ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंसिस,* वॉ. 22, नं. 1 समर 2015 संपादक, सुमन्यु सत्यपति

2. हिन्दी पत्रिका *हिमांजलि* का 14वां व 15वां अंक

6. सेल्ज़ एवं जनसम्पर्क

क. संस्थान के प्रकाशनों की बिक्री

इस अवधि के दौरान संस्थान ने देशभर में ग्राहकों ने 2,34,441.00 (मात्र दो लाख चौंतीस हजार चार सौ इकतालीस) रूपए मूल्य की 681 पुस्तकें बेचीं। इसके अतिरिक्त संस्थान ने दिनांक 06.1.2018 से 15.1.2018 तक नई दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले भाग लिया जिसमें 40,929.00 (मात्र चालीस हजार नौ सौ उनतीस) रूपए राशि की कुल 463 पुस्तके बेचीं। साथ दिनांक 15.11.2017 से 17.11.2017 तक चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय में आयोजित चण्डीगढ़ पुस्तक मेले में भी भाग लिया जिसमें 15,414.00 (मात्र पंद्रह हजार चार सौ चौदह) रूपए राशि की 181 पुस्तकों की बिक्री हुई। संस्थान ने ऑनलाइन से भी 61,049.00 (मात्र इकसठ हजार उनचास) रूपए की कुल 303 पुस्तके बेचीं। इस प्रकार पुस्तकों की बिक्री से संस्थान को कुल 4,67,460.00 (मात्र चार लाख सतासठ हजार चार सौ साठ) रूपए की आमदन हुई।

ख. प्रवेश शुल्क से प्राप्त आय

आलोच्य वर्ष के दौरान संस्थान में 2,23,775 पर्यटक घूमने आए तथा प्रवेश शुल्क के रूप में 78,55,605/–(मात्र अठहत्तर लाख पचपन हजार छः सौ पांच) रूपये की आय प्राप्त हुई। जबकि वाहनों का प्रवेश से 6,63,760/– (मात्र छः लाख तरेसठ हजार सात सौ साठ) रूपये की आय प्राप्त हुई। इस प्रकार वर्ष के दौरान प्रवेश टिकटों की बिक्री से कुल आय 85,19,365.00 (पचासी लाख उन्नीस हजार तीन सौ पैंसठ) रूपए हुई।

ग. संस्थान के बुक शॉप में अन्य प्रकाशकों की पुस्तकों की बिक्री

संस्थान की बुक शॉप में राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय अग्रणी प्रकाशकों की पुस्तकें बिक्री के लिए रखी जाती हैं। वर्ष के दौरान संस्थान ने इन प्रकाशकों की 468 पुस्तकों की बिक्री हुई तथा बिक्री से कुल 22,170/–(मात्र बाइस हजार एक सौ सत्तर) रूपये की आय प्राप्त हुई जिसमें से 4,660/–(मात्र चार हजार छः सौ साठ) रूपए का शुद्ध लाभ हुआ।

घ. सोवनियर की बिक्री

संस्थान की बुक शॉप में 'वायसरीगल लॉज और भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान' नामक पुस्तिका, टी–शर्टस, स्वेट शर्टस, टोपियां, कॉफी मग, पिक्चर पोस्ट कार्डस तथा ग्रीटिंग कार्डस बिक्री के लिए रखे गए हैं। इस अवधि के दौरान संस्थान ने सोवनियर की बिक्री से कुल 6,94,180.00 (मात्र छः लाख चौरानवे हजार एक सौ अस्सी) रूपए की आमदन प्राप्त की जिसमें राशि 2,32,344.00 (दो लाख बत्तीस हजार तीन सौ चवालीस) रूपए का शुद्ध लाभ हुआ।

वर्ष के दौरान विभिन्न स्त्रेतों से प्राप्त आय का विवरण निम्न प्रकार है-

क्रमांक	विवरण	राशि (रूपयों में)
1.	भा.उ.अ.सं. की पुस्तकों की बिक्री	4,67,440.00
2.	प्रवेश शुल्क से प्राप्त आय	85,19,365.00
3.	अन्य प्रकाशकों की पुस्तकों की बिक्री से शुद्ध लाभ	4,600.00
4.	सोवनियर से शुद्ध लाभ	2,32,344.00
	कुल	**92,23,809.00**

7. औषधालय

संस्थान में अच्छे साज–सामान युक्त एक औषधालय है जिसमें एक आवासी चिकित्सा अधिकारी सेवारत है, जो संस्थान के अध्येताओं सह–अध्येताओं, कर्मचारियों और उनके परिवारों को चिकित्सीय सहायता प्रदान करता है। आलोच्य वर्ष (01.4.2017 से 31.3.2018) के दौरान औषधालय में लगभग 3476 रोगियों की जांच की गई तथा उनका ईलाज किया गया। उक्त अवधि के दौरान आवासी चिकित्सा अधिकारी द्वारा 95 रोगियों को आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गई।

8. आंतरिक शिकायत समिति

संस्थान में गठित पांच सदस्यीय आंतरिक शिकायत समिति के निम्नलिखित सदस्य हैं–

1. डॉ. अजय कुमार, अध्येता
2. श्रीमती ज्योतिका गुप्ता, अधिवक्ता
3. डॉ. मनीषा चौधरी, अध्येता
4. डॉ मीनू अग्रवाल, आवासी चिकित्सा अधिकारी
5. श्री रविन्द्र सैनी, निदेशक के वरिष्ठ निजी सचिव

9. सूचना का अधिकार

दिनांक 01.4.2017 से 31.3.2018 तक सूचना के अधिकार अधिनियम 2005 के तहत कुल 54 आवेदन आए जिनमें मांगी जानकारी संबंधी आंकड़े एकत्रित कर आवेदकों को सूचनाएं प्रेषित की गई।

10. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय से प्राप्त दिशा–निर्देशों की अनुपालना में संस्थान में 21 जून 2017 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। 'आर्ट ऑफ लिविंग' संस्था के आए श्रीमती सारिका अहूजा तथा श्री सूर्यवंशी ने

संस्थान के अध्येताओं, सह–अध्येताओं, अधिकारियों/कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों को योग प्रशिक्षण दिया और प्राणायम तथा विभिन्न योगासनों को दैनिक जीवन का अंग बनाने हेतु प्रेरित किया।

11. सतर्कता जागरूकता सप्ताह

भारत सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुरूप संस्थान में 30 अक्तूबर से 4 नवंबर 2017 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। संस्थान के सचिव श्री प्रेम चंद ने संस्थान के अधिकारियों व कर्मचारियों को भारत को भ्रष्टाचार मुक्त रखने की भापथ दिलाई। हिमाचल प्रदेश के पूर्व प्रधान महालेखाकार श्री राम मोहन जौहरी तथा संस्थान के अध्येता डॉ. जगदीश लाल डाबर तथा डॉ. अजय कुमार ने 'भ्रष्टाचार निवारण' पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। इसके अतिरिक्त सप्ताह के दौरान प्रश्न–मंच तथा वाद–विवाद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया।

12. सफाई अभियान

भारत सरकार दिशा–निर्देशों के अनुपालन में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा 22 मई 2017 को अपने–अपने अनुभागों में स्वेच्छा से दो घण्टे सफाई की गई। इसी परिप्रेक्ष्य में 01–15 सितंबर 2017 के दौरान स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया।

संस्थान द्वारा परिसर में कूड़ेदान लगाए गए हैं और यह सुनिश्चित कर लिया जाता है कि कूड़ेदानों से एकत्रित कूड़े को आगामी प्रक्रिया के लिए नगर निगम शिमला के सुपुर्द कर दिया जाए।

संस्थान के सभी अधिकारी/कर्मचारी वर्ष में 100 घण्टे सफाई के लिए समर्पित करने के उद्देश्य से प्रत्येक सोमवार को दो घण्टे का समय सफाई में लगाते है। इसके अतिरिक्त प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान ने मुख्य भवन तथा फैलोज मैस से लगती पहाड़ी की तलहटी में सफाई की गई।

13. सम्पदा

सम्पदा का रखरखाव तथा विशेष मुरम्मत कार्य

आलोच्य वर्ष के दौरान के.लो.नि. विभाग के दोनो विंगों सिविल एवं विद्युत तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा दैनिक रखरखाब के कार्य किए गए जिनका विवरण निम्न प्रकार से है–

- संस्थान ने के.लो.नि.वि. (सिविल) को गोरखा गेट नं. 1 व 2 से लेकर टिकट बूथ तथा टिकट बूथ से लेकर संस्थान के मुख्य अतिथि गृह तक डामर बिछाने के लिए 56,65,070.00 रूपए की राशि जारी थी। उक्त कार्य पूर्ण कर लिया गया है।
- संस्थान ने के.लो.नि.वि. (सिविल) को प्रोस्पैक्ट हिल में स्थित बी–ब्लॉक को जाने वाली सड़क के किनारे मण्डी रिवाल्सर पत्थर लगाने, गैरेज को बड़ा करने, फाल्स सीलिंग, सीढ़ियों तथा निकास नाली की मरम्मत तथा पोर्च व वाल फाइल क्लैडिंग का कार्य पूरा कर लिया गया है।
- जाकिर हुसैन हाउस की मरम्मत तथा जीर्णोद्धार का कार्य प्रगति पर है।
- संस्थान ने परिसर में स्थित रिहायशी भवनों की वार्षिक मरम्मत तथा रखरखा के लिए प्रस्तुत आक्कलन 51,88,221.00 रूपए राशि की एवज में के.लो.नि.वि. (सिविल) को 17,29,234.00 रूपए जारी किए गए।
- संस्थान ने परिसर में स्थित गैर– रिहायशी भवनों की वार्षिक मरम्मत तथा रखरखाव के लिए प्रस्तुत आक्कलन 47,05,000.00 रूपए की राशि की एवज में 15,68,176.00 रूपए की राशि जारी की।

14. उद्यान

पैदावार संबंधी कार्य

क्यारियां बनाना- उद्यान अनुभाग के कर्मियों ने रोटरी टिलर से जुताई कर क्यारियों को पौधारोपण के लिए तैयार किया गया। तदोपरांत क्यारियों में खाद मिलाकर और सालाना फूलों का बीजारोपण किया गया। पौधों में दो–तीन पत्ते आने पर उनकी छंटनी की गई। इस प्रक्रिया में नवजात पौधों को अलग गमलों में रखा जाता है या नर्सरी में स्थित दूसरी क्यारियों में बदला जाता है। इससे पौधों के मरने की संभावना कम हो जाती है। एक माह के उपरांत इन पौधों को संस्थान के अध्येताओं व अधिकारियों के आवासों जैसे स्केवयर हाल, सिद्धार्थ विहार, आब्ज़रवेटरी हाउस, रेड स्टोन, डैलविला, बिलासपुर हाउस आदि जगहों में स्थानांतरित कर दिया जाता है।

फूलों का बीजारोपण

- माह फरवरी–मार्च के दौरान गेलारडिया, पोर्टुलाका, तिथोनिआ, गोम्फरेना, कॉक्सकॉम्ब, बलसाम आदि फूलों का बीजारोपण किया गया और एक माह के उपरांत संस्थान परिसर के विभिन्न भागों में लगाया गया।
- बरसाती फूलों जैसे गैंदा, कॉसमॉस, बिगोनिया, जिन्निया, एमारंथस, कोचिया, सूरजमुखी आदि का बीजों का माह जून–जुलाई में बिजाई की गई।
- सर्दियों में खिलने वाले फूल जैसे पैटुनिया, पैंजी, गोडिशिया, क्लारिका, प्रिमुला, आइस प्लांट, कॉर्न फ्लॉवर, कलैन्डुला आदि का सितंबर–अक्तूबर माह में बीजारोपण किया गया।

प्रबंधकीय कार्य

- मालियों द्वारा पौधों की नियमित तौर पर निंदाई की गई।
- पौधों की समय–समय पर सिंचाई की गई।
- पौधों के लिए समीपर्वी जंगल से बांस के खूंटे इकत्रित किए गए जोकि पौधों को सीधा रखने के लिए प्रयोग में लाए गए।
- पौधों की फालतु टहनियों की नियमित तौर पर छंटनी की गई।
- माह नवंबर–दिसंबर के दौरान चिनार, मैगनोलिया आदि वृक्षों की छंटाई की गई।
- थूजा, क्यूप्रेसस, जूनिपर, वान्सिया रोज़, विस्टेरिया आदि छंटनी की सजावट की गईं
- संस्थान मुख्य भवन के सामने तथा परिसर में स्थित अन्य लॉन में लगे घास की नियमित तौर पर कटाई की गई।
- उद्यान के किनारे बने रास्तों तथा घास के मैदानों की नियमित तौर पर सफाई की गई।

नर्सरी का रखरखाव

- मिट्टी को अच्छी तरह मसलकर उसमें खाद मिलाई गई और गमलों के लिए उसका प्रयोग किया गया।
- गुलाब, जूनिपरस, प्रिवेट, क्रिप्टोमेरिया, वैगेला, थूजा आदि की कलमें मिस्ट चैम्बर में रोपित की गईं तथा बाद में उन्हें पी–बैग में डालकर बिक्री के लिए रखा गया।
- गमलों का बराबर नियमित तौर पर रखरखाव किया गया।

- माह में दो बार सोमवार को पीतल के गमलों को साफ किया गया तथा उद्यान अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों द्वारा मुख्य भवन, जन प्रवेश में रखे गए मिट्टी के गमलों का बराबर रखरखाव किया गया तथा फूल–सज्जा का कार्य किया गया।
- हिमालयी बान के वृक्षों के गिरे हुए पुराने पत्तों को इकट्ठा किया गया। पत्तों को एक गहरे गढडे में रखा गया जिन्हे गल–सड़ जाने के बाद मिट्टी में मिलाया गया जिससे खाद बनकर तैयार की गई।
- प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान उद्यान अनुभाग द्वारा 11,580/–रूपए के पौधों की बिक्री की गई।

15. राजभाषा

आलोच्य वर्ष में संस्थान द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार तथा क्रियान्वयन के लिए निम्नलिखित प्रयास किए गए–

राजभाषा कार्यान्यन समिति की तिमाही बैठकों का आयोजन - संस्थान द्वारा हर तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया तथा गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राजभाषा प्रभाग द्वारा जारी दिशा–निर्देशों के अनुरूप हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग हेतु आवश्यक कदम उठाए गए।

हिन्दी तिमाही प्रगति रिपोर्ट - आलोच्य वर्षावधि के दौरान हिन्दी के तिमाही प्रगति रिर्पोटें गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राजभाषा प्रभाग को यथासमय प्रेशित की गईं।

हिन्दी दिवस/सप्ताह/पखवाड़े/माह तथा हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन - संस्थान में 14 सितंबर 2017 को हिन्दी दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के अध्येता, अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे। माह सितंबर 2017 के दौरान संस्थान में हिन्दी के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जिनमें संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा बढ़–चढ़कर भाग लिया गया।

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह - संस्थान में 14 नवंबर 2017 को राजभाषा हिन्दी का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह मनाया गया जिसमें संस्थान की अध्यक्ष प्रोफेसर चन्द्रकला पाडिया ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर हिन्दी में श्रेष्ठ कामकाज करने वाले 10 अधिकारियों/कर्माचारियों को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा भारत सरकार द्वारा निर्धारित पुरस्कार राशि नकद रहित योजना के तहत संबंधित अधिकारियों/कर्मचारियों के बचत खाते में हस्तांतरित कर दी गई।

हिन्दी पत्रिका 'हिमांजलि' का प्रकाशन - समीक्षा अवधि के दौरान संस्थान द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार हेतु हिन्दी पत्रिका 'हिमांजलि' का 15 अंक प्रकाशित किया गया तथा पत्रिका की प्रतियां मंत्रालय, विभिन्न संस्थानों के अलावा देश–विदेश के अन्य पाठकों को भी प्रेषित की गईं।

16. लेखे एवं बजट

क) वर्ष 2017–2018 का अनुमोदित संशोधित आंकलन तथा वर्ष 2018–2019 के लिए अनुमानित बजट इस प्रकार है–

योजना का नाम	**संशोधित आंकलन** 2017–2018	**बजट आंकलन** 2018–2019
	(रुपए लाखों में)	
अभिलक्ष्य शीर्ष–31	1030.00	1536.00
अभिलक्ष्य शीर्ष–35	370.00	200.00
अभिलक्ष्य शीर्ष–36	1100.00	764.00
कुल	**2500.00**	**2500.00**

महालेखाकार, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग चण्डीगढ़ द्वारा वर्ष 2017–18 के संस्थान के परीक्षित वार्षिक लेखे पृष्ठ 73–109 पर हैं।

ख) आई.यू.सी. लेखे

मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिए अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी) योजना के लेखों का परीक्षा सनदी लेखाकार मैसर्ज डोगर एवं कंपनी, शिमला द्वारा की गई है। वर्ष 2017–2018 का व्यय 31.87 लाख रूपए था।

मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिए अंतर–विश्वविद्यालय (आईयूसी) केन्द्र योजना के वर्ष 2017–2018 परीक्षित लेखों का विवरण पृष्ठ 110–115 पर है।

Speed Post

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

सत्यमेव जयते

Indian Audit & Accounts Department
Office of The Principal Director of Audit (Central),
Chandigarh

स०/No: पी.डी.ए. (सी)/के. व्यय/SAR/ IIAS Shimla/ 2017-18/2018-19/ 3462 दि०/Dated: 22.01.2019

निदेशक कार्यालय में प्राप्ति की तारीख
25 JAN 2019
वरिष्ठ निजी सचिव

सेवा मे,

सचिव,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
भारत सरकार
कमरा न. 127, सी विंग
शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110001

विषय: Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2017-18 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

महोदय,

कृपया Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2017-18 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन (Separate Audit Report) संसद के दोनों सदनों के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु सलंग्न पायें| संसद में प्रस्तुत होने तक प्रतिवेदन को गोपनीय रखा जाए|

संसद में प्रस्तुत करने के उपरांत प्रतिवेदन की पांच प्रतियाँ इस कार्यालय को भी भेज दी जाएँ।

कृपया इस पत्र की पावती भेजें।

भवदीय,

-हस्ता-

प्रधान निदेशक

संलग्न: उपरोक्त अनुसार

उपरोक्त की प्रतिलिपी वर्ष 2017-18 की पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन की प्रति सहित आवश्यक कार्यवाही हेतु निदेशक, Indian Institute of Advanced Study, Shimla, राष्ट्रपति निवास, शिमला, हिमाचल प्रदेश-171005 को प्रेषित की जाती है।

उप निदेशक (केन्द्रीय व्यय)

Secy/AO
MP
31/1/19

31.1.19

प्लाट न. 20-21, सेक्टर - 17ई, चण्डीगढ़ - 160017 Plot No. 20-21, Sector-17E, Chandigarh - 160017
दूरभाष/ Tel.No. 0172 - 2782020 & 2706117 फैक्स/ FAX No:0172 - 2782021 / 2783974 ई-मेल/ Email: pdacchandigarh@cag.gov.in

31/1/19

31 मार्च, 2018 को समाप्त वर्ष के लिए, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के लेखों के बारे में भारत के नियंत्रक-महालेखा परीक्षक की पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट।

1. हमने 31 मार्च, 2018 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के तुलन–पत्र, तथा उस तिथि को समाप्त वर्ष आय एवं व्यय लेखा/प्रप्तियां एवं भुगतान लेखों की नियन्त्रक–महालेखा परीक्षक के (कर्तव्य, शक्तियां एवं सेवा की शर्ते) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के अन्तर्गत लेखापरीक्षा की है। यह लेखापरीक्षा 2013–14 से 2017–18 तक की अवधि के लिए सौंपी गई है। इन वित्तीय विवरणों का उत्तरदायित्व संस्थान के प्रबन्धन का है। हमारा उत्तरदायित्व हमारी लेखापरीक्षा पर आधारित इन वित्तीय विवरणों पर मत व्यक्त करना है।

2. इस पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में केवल वर्गीकरण, उत्तम लेखाकरण प्रथाओं के साथ अनुरूपता, लेखाकरण सम्बन्धी मानकों और प्रकटन मानकों आदि के सम्बन्ध में केवल लेखाकरण व्यवहार पर नियन्त्रक–महालेखापरीक्षक (सीएजी) की टिप्पणियां शामिल हैं। कानून, नियमों एवं विनियमों (औचित्य एवं नियमितता) तथा दक्षता एवं निष्पादन आदि के पहलुओं के अनुपालन में वित्तीय लेन–देन पर लेखापरीक्षा अभ्युक्तियां आदि कोई हों तो निरीक्षण प्रतिवेदनों/भारत के नियंत्रक महा–लेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों के माध्यम से अलग से सूचित की गई है।

3. हमने भारत में सामान्य रूप से स्वीकार किए गए लेखापरीक्षण मानकों के अनुसार अपनी लेखापरीक्षा की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि हम इस विषय में समुचित आश्वासन प्राप्त करने के लिए कि क्या वित्तीय विवरण मिथ्या विवरणों से मुक्त हैं, योजना बनाते हैं और लेखापरीक्षा करते हैं। लेखापरीक्षा में नमूना के आधार पर जांच करना, राशियों का समर्थन करने वाले साक्ष्यों और वित्तीय विवरणों में किए गए प्रकटन शामिल होते हैं। लेखापरीक्षा में प्रयुक्त किए गए लेखाकरण सिद्धान्तों तथा प्रबन्धन द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण अनुमानों के निर्धारण और वित्तीय विवरणों के समग्र प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन भी शामिल है। हम विश्वास करते हैं कि हमारी लेखापरीक्षा हमारे मत के लिए समुचित आधार प्रधान करती है।

4. अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर हम रिपोर्ट करते हैं कि –

   क. हमने अपनी सर्वोतम जानकारी तथा विश्वास के अनुरूप लेखापरीक्षा के उद्देश्यार्थ आवश्यक सूचनाएं और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिये हैं।

   ख. इस प्रतिवेदन से सम्बन्धित तुलनपत्र और आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियाँ एवं भुगतान लेखा की क्रमांक बी.6 पर दी गई टिप्पणी के अलावा भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी आदेश संख्या 29–4/2012–एफडी, दिनांक 17 अप्रैल 2015 में निर्धारित प्रारूप में तैयार किया गया है।

   स. बही–खातों का निरीक्षण करने के उपरांत हमारी राय में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला द्वारा लेखों का अभिलेख क्रमांक बी.4 के अलावा उपयुक्त बहियों और अन्य सम्बद्ध अभिलेखों में किया गया है।

   ग. हम आगे रिपोर्ट करते हैं कि–

अ. तुलन पत्र

चालू देनदारियां तथा प्रावधान (अनुसूची-3)

प्रायोजित परियोजना की एवज में प्राप्तियां ₹ शुन्य

निर्धारित प्रारूप के अनुसार न तो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अंतर्गत मानवीकि एवं सामाजिक विज्ञानों के लिए अंतर–विशविद्यालय केन्द्र (आईयूसी) प्ररियोजना की बकाया राशि ₹ 33.44 लाख की चालू देनदारियों

(अनुसूची 3–ए) में प्रायोजित परियोजना के अंतर्गत प्राप्तियों में दर्शाया गया है और न ही इसकी ₹ 3.40 लाख की बैंक शेष राशि, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त होने वाली ₹ 26.94 लाख की राशि तथा ₹ 3.10 लाख रूपए ऋण तथा पेशगी की राशि को परिसम्पत्तियों के रूप में दर्शाया गया। इस कारण चालू देनदारियों तथा प्रावधानों (अनुसूची–3) में ₹ 33.44 लाख (₹ 3.40 लाख चालू परिसम्पत्तियां (अनुसूची–7) तथा ₹ 30.04 लाख ऋण तथा अग्रिम जमा राशि (अनुसूची–8)) की न्यूनोक्ति हुई है।

ब. सामान्य

ब-1 वार्षिक लेखों पर लेखा परीक्षा टिप्पणी का शुद्ध प्रभाव

31 मार्च 2018 को समाप्त भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के वार्षिक लेखों पर लेखा परीक्षा पर शुद्ध प्रभाव है कि परिसम्पतियों को ₹ 33.44 लाख रूपए कम दर्शाया गया है तथा देनदारियों को भी कम दर्शाया गया है।

ब-2 लेखा नीति की क्रम संख्या (सी)(1) को संदर्भित किया जाता है जिसमें निहित है कि वित्तीय वर्ष 2013–14 के दौरान संस्थान द्वारा स्थिर सम्पतियों पर कोई मूल्य ह्रास उपलब्ध नहीं करवाया गया है।

ब-3 के.लो.नि.वि. द्वारा जमा किए गए उपयोगिता प्रमाण पत्रों में दर्शाया गया है कि जारी की गई 7.24 करोड़ रूपए की राशि में विभाग ने कुल 7.90 करोड़ रूपए (सिविल 7.33 करोड़ तथा विद्युत 57 लाख) की राशि व्यय की। इस प्रकार 66 लाख रूपए की राशि का का अंतर है जिसके मिलान की आवश्यकता है।

ब-4 संस्थान के स्टॉक रजिस्टरों में प्राप्तियों, निर्गमों तथा भण्डार में शेष/स्टॉक को वस्तु रूप में दर्शाया गया है मगर उनका मौद्रिक मूल्य नहीं। उपभोग्य भण्डार के अंतशेष में उनके मूल्य को दर्शाने की आवश्यकता है।

ब-5 यद्यपि वार्षिक लेखों में सेवानिवृति लाभ का प्रावधान किया गया है मगर इन प्रावधानों को बीमांकिक आधार पर किया गया है जोकि मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा एएस–15 के निर्धारित लेखा प्रारूप के अनुरूप नहीं है।

ब-6 अनुसूची 3सी (जिसमें यूजीसी, भारत सरकार तथा राज्य सरकार) अनुसूची–7 का अनुलग्नक–क जिनमें सभी बचतों, चालू खातों तथा मियादी जमा का उल्लेख होता है वे मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा निर्धारित प्रारूप के अनुसार नहीं तैयार किया गया है

ब-7 दिनांक 31.3.2018 को संस्थान के पास अभिलक्ष्य शीर्ष– 36 के अंतर्गत 52.00 लाख रूपए का ऋण शेष है। इस शीर्ष के अंतर्गत व्यय की गई राशि को नियमित करने के लिए केन्द/मंत्रालय का विशिष्ट अनुमोदन प्राप्त करने की आवश्यकता है।

ब-8 अनुसूची 10 (अनुदान/अनुवृत्ति) में भारत सरकार से प्राप्त अनुदान के अंतर्गत अथशेष 22.71 करोड़ रूपए (गैर–वेतन/पैन्शन को मिलाकर) तथा अंतशेष 14.58 करोड़ रूपए दर्शाया है। जबकि मानव संसाधन विकास मंत्रालय को दिए गए उपयोगिता प्रमाण पत्र में संस्थान ने अथशेष और अंतशेष क्रमशः 13.94 करोड़ तथा 4.41 करोड़ रूपए दर्शाया है। अंतर को मिलान की आवश्यकता है और मंत्रालय में नया उपयोगिता प्रमाण पत्र भेजना होगा।

स. सहायता अनुदान

उपलब्ध कुल निधि 33.40 करोड़ रूपए (अभिलक्ष्य शीर्ष–31 के अंतर्गत 21.92 करोड़ रूपए, अभिलक्ष्य शीर्ष–35 के अंतर्गत 3.76 करोड़ तथा अभिलक्ष्य शीर्ष–36 के अंतर्गत 7.72 करोड़ रूपए) विगत वर्ष की अप्रयोग शेष निधि राशि 22.71 करोड़ रूपए (अभिलक्ष्य शीर्ष–31 के अंतर्गत, अभिलक्ष्य शीर्ष–35 के अंतर्गत 2.41 करोड़ तथा अभिलक्ष्य शीर्ष–36 के

अंतर्गत 2.62 करोड़ रूपए) तथा वर्ष 2017–18 के दौरान प्राप्त अनुदान राशि 9.04 करोड़ रूपए (अभिलक्ष्य शीर्ष–31 के अंतर्गत 2.59 करोड़ रूपए, अभिलक्ष्य शीर्ष–35 के अंतर्गत 1.35 करोड़ तथा अभिलक्ष्य शीर्ष–36 के अंतर्गत 5.10 करोड़ रूपए); तथा 0.25 करोड़ की राशि का ब्याज (अभिलक्ष्य शीर्ष–31 के अंतर्गत 0.25 करोड़ रूपए, अभिलक्ष्य शीर्ष–35 के अंतर्गत शून्य तथा अभिलक्ष्य शीर्ष–36 के अंतर्गत शून्य करोड़ रूपए) तथा अभिलक्ष्य शीर्ष–31 के अंतर्गत 1.40 करोड़ रूपए की अन्य प्राप्तियां थी जिसमें से संस्थान ने मात्र 18.82 करोड़ रूपए (अभिलक्ष्य शीर्ष–31 के अंतर्गत 9.21 करोड़ रूपए, अभिलक्ष्य शीर्ष–35 के अंतर्गत 1.37 तथा अभिलक्ष्य शीर्ष–36 के अंतर्गत 8.24.72 करोड़ रूपए) की ही राशि खर्च की तथा 31 मार्च 2018 को 38.34 करोड़ रूपए (अभिलक्ष्य शीर्ष–31 के अंतर्गत 12.71 करोड़ रूपए, अभिलक्ष्य शीर्ष–35 के अंतर्गत 2.39 तथा अभिलक्ष्य शीर्ष–36 के अंतर्गत –0.52 करोड़ रूपए) की अप्रयोग्य राशि शेष रह गई।

संस्थान के पास दिनांक 31.3.2018 को 8.02 करोड़ रूपए की पूंजीगत अग्रिम राशि है। अतः पूंजीगत अग्रिम राशि को घटाने के से पूर्व संस्थान ने मात्र 22.60 करोड़ की राशि (अभिलक्ष्य शीर्ष–31 के अंतर्गत 12.71 करोड़ रूपए, अभिलक्ष्य शीर्ष–35 के अंतर्गत 2.39 तथा अभिलक्ष्य शीर्ष–36 के अंतर्गत –0.52 करोड़ रूपए) व्यय की है।

उपर्युक्त के अलावा संस्थान के पास यूएनडीपी योजना के अंतर्राष्ट्रीय मानव विकास केन्द्र (आइसी4एचडी) के अंतर्गत 17.05 करोड़ रूपए की अव्ययित राशि है।

घ. पूर्ववर्ती परिच्छेदों में हमारी अभ्युक्तियों के अनुसार हम रिपोर्ट करते हैं कि इस प्रतिवेदन से सम्बन्धित तुलनपत्र और आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियां एवं भुगतान लेखा, लेखा–बहियों के अनुरुप हैं।

ङ. हमारी राय में और हमारी सर्वोत्तम जानकारी तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार लेखाकरण नीतियां एवं लेखाओं पर टिप्पणियों के साथ पठित तथा उपर्युक्त उल्लिखित महत्वपूर्ण मामलों और इस लेखापरीक्षा प्रतिवेदन के अनुबन्ध में उल्लिखित अन्य मामलों से सम्बधित उक्त वितीय विवरण भारत में सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण के सिद्धांतों के अनुरुप सही एवं उचित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैः –

1. जहां तक 31 मार्च 2018 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के कार्यो के तुलन–पत्र से संबधित हैः तथा

2. जहां तक उस तिथि को समाप्त वर्ष के लिए 'घाटे' के आय एवं व्यय लेखे से संबधित है।

भारत के नियंत्रक-महालेखा परीक्षक की ओर से

हस्ता./

प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
चण्डीगढ़

स्थानः चण्डीगढ़
दिनांकः 22-01-2018

लेखा परीक्षण के साथ अनुलग्नक

(1) आन्तरिक लेखा परीक्षा प्रणाली की पर्याप्तता

संस्थान की आंतरिक लेखा परीक्षा सनदी लेखाकार द्वारा की गई है।

(2) आन्तरिक नियंत्रण प्रणाली की पर्याप्तता

देनदारों से बकाया राशि की पुष्टि का कोई तरीका नहीं है।

(3) अचल परिसम्पतियों तथा वस्तु-सूचियों का सत्यापन

वर्ष 2017–18 के दौरान अचल परिसम्पतियों तथा वस्तु–सूचियों का भौतिक सत्यापन किया गया है। हलांकि परिसम्पतियों तथा वस्तु–सूचियों के सत्यापन का लेखापरीक्षा के दौरान प्रगति पर था।

(4) सांविधिक देयताओं की अदायगी में नियमितता।

संस्थान द्वारा सभी सांविधिक देयताओं को नियमित रूप से जमा करवाया गया है।

हस्ता./–
उप निदेशक

संदीप लाल, आई.ए.ए.एस.
प्रधान-निदेशक, लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) चण्डीगढ़

क्रमांकः पीडीए/सीई/एस.ए.आर.भा.उ.अ.सं./2018–19/3464

दिनांकः 22.01.2019

प्रिय प्रोफेसर परांजपे,

31 मार्च 2018 को समाप्त वित्तीय वर्ष के आपके संस्थान लेखों के निरीक्षण के उपरांत कुछ कमियां पाई गई हैं। पृथक लेखा परीक्षण रिपोर्ट के अंतर्गत लेखों के बारे में महत्त्वपूर्ण टिप्पणियां पहले ही कर दी गई हैं तथा कुछ कमियों (अनुलग्नक पर विस्तृत विवरण) को पृथक लेखा परीक्षण रिपोर्ट में सम्मिलित नहीं किया गया है, उनके सुधार तथा उन कमियों को आपके संज्ञान में लाया जाता है।

कृप्या इस दिशा में सुधारात्मक निर्देश जारी करें।

आदर सहित।

भवदीय

हस्ता.

प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे
निदेशक
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

प्रबंधकीय पत्र के साथ अनुलग्नक

क. तुलन पत्र

निधि की प्रयुक्ति

चालू परिसम्पत्तियां - ₹ 36.19 करोड़ **(अनुसूची-7)**

स्टॉक - शून्य

दिनांक 31.3.2018 को संस्थान के पास 4.41 लाख रूपए की राशि का भण्डारगत वस्तुएं हैं। 4.41 लाख रूपए राशि की अंतशेष भण्डारगत वस्तुओं के गैर लेखों के कारण अनुसूची–7 में चालू परिसम्पतियों में व्यय में अतियुक्ति के अतिरिक्त 4.41 लाख रूपए राशि की न्यूनोक्ति हुई है।

ख. आय तथा व्यय पूर्वावधिक व्यय (अनुसूची-22) : शून्य

उपुर्यक्त में वर्ष 2017–18 के दौरान 15.77 लाख रूपए की राशि का भुगतान किया गया संपत्ति कर सम्मिलित नहीं किया गया है जोकि वर्ष 2014–15, 2015–16 तथा 2016–17 से संबंधित है और जिसे गलती से चालू वर्ष में मरम्मत और रखरखाव (अनुसूची–23) में सम्मिलित किया गया है। फलस्वरूप मरम्मत और रखरखाव (अनुसूची–23) खाते में अतियुक्ति हुई है और पूर्वावधिक व्यय (अनुसूची–22) व्यय में 15.77 लाख रूपए की न्यूनोक्ति हुई है।

ग. सामान्य

निर्धारित प्रपत्र की दिशा–निर्देशानुसार जहां परिसम्पत्तियों का स्वामित्व प्रायोजकों के द्वारा रखा गया है मगर वास्तव में जो संस्थान के पास है और संस्थान द्वारा उसे प्रयोग किया जा रहा है उसे पृथक लेखा टिप्पणियों में दर्शाने की आवश्यकताा है।

यूजीसी द्वारा जब अनुदान राशि स्वीकृत की जाती है तो उसमें स्पष्ट रहता है कि उसकी एवज में अर्जित की गई परिसम्पत्तियां बिना यूजीसी की अनुमति से न तो निरस्त की जाएंगी और न ही किसी अन्य परियोजन के लिए प्रयोग की जाएंगी। यदि यूजीसी द्वारा उक्त परियोजना को बंद किया जाता है तो सभी परिसम्पत्तियां यूजीसी को लौटा दी जाएंगी।

हलांकि, संस्थान ने तथ्यों को उजागर नहीं किया है कि उसके पास आईयूसी परियोजना के तहत लेखा टिप्पणियों में (अनुसूची–24) 72.36 लाख रूपए की स्थिर परिसम्पत्तियां हैं।

हस्ता./–
उप निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

तुलन-पत्र (31 मार्च, 2018)

निधि का स्त्रोत	अनुसूची	राशि (रूपयों में)	राशि (रूपयों में)
		चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
संग्रह / पूंजीगत निधि	1	242745672.08	238742117.80
निर्दिष्ट / निर्धारित / प्रतिबंधित निधि	2	42491712.00	47546604.00
चालू देनदारियां तथा प्रावधान	3	376543271.68	441320022.43
कुल		**661780655.76**	**727608744.23**
निधि की प्रयुक्ति		-	-
स्थाई परिसंपत्तियां		-	-
भौतिक परिसंपत्तियां	4	212896010.73	218267092.73
अभौतिक परिसंपत्तियां	4	-	39653.00
चालू कार्य पूंजी		-	-
निश्चित एवं अनुदान से निवेश	5	-	-
दीर्घावधि		-	-
लघु अवधि		-	-
निवेश –अन्य	6	-	-
चालू परिसम्पतियां,	7	361920871.03	410398586.50
ऋण, अग्रिम जमा	8	86939981.00	98903412.00
कुल		**661756862.76**	**727608744.23**
महत्त्वपूर्ण लेखा पद्धतियां	23		
संभाव्य देनदारियां तथा लेखा–1 के बारे में टिप्पणी	24		

हस्ता. / –	हस्ता. / –	हस्ता. / –
(अविनाश सोलंकी)	(प्रेम चंद)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31 मार्च, 2018 को समाप्त वित्तीय वर्ष के आय व व्यय का लेखा

आय	अनुसूची	राशि (रूपयों में) चालू वर्ष 2017–18	राशि (रूपयों में) विगत वर्ष 2016–17
अकादमिक प्राप्तियां	9	0.00	0.00
अनुदान एवं दान	10	174579742.75	147973745.43
आय और निवेश	11	-	0.00
अर्जित ब्याज	12	-	0.00
अन्य आय	13	5541553.28	2639509.37
पूर्वाधि आय	14	-	0.00
पूंजीगत अनुदान को हस्तांरित ह्रास मूल्य		3204891.00	4167380.00
कुल (क)		**183326187.03**	**154780634.80**
व्यय			
स्टाफ का भुगतान तथा लाभ	15	91,785,000.00	70,388,891.00
अकादमिक व्यय	16	30,480,711.00	32,589,218.12
प्रशासनिक तथा सामान्य व्यय	17	14,050,556.00	13,310,052.87
यातायात व्यय	18	447849.00	388419.00
मरम्मत और रखरखाव	19	37812332.00	31464101.00
वित्तीय लागतें	20	3294.75	4123.56
अन्य व्यय	4	3575291.00	4574088.00
ह्रास मूल्य	21	-	-
पूर्वाधि व्यय	22	-	-
कुल (ख)		**178155033.75**	**152718893.55**
व्यय पर आय की अधिक्य का संतुलन (क-ख)		5171153.28	2061741.25
निर्दिष्ट निधि को/से हस्तांतरण भवन निधि अन्य (निर्दिष्ट)		-	-
अधिक्य बकाया/(घाटा) पूंजीगत निधि में हस्तांतरित		-	-
महत्त्वपूर्ण लेखा पद्धतियां	23	-	-
संभाव्य देनदारियां तथा लेखा के बारे में टिप्पणी	24	-	-

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(अविनाश सोलंकी)	(प्रेम चंद)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची -1 संग्रह/पूंजीगत निधि

राशि (रूपए)

विवरण		चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
वर्ष के प्रारंभ में बकाया राशि जमा : संग्रह/पूंजीगत निधि में अंशदान जमा : यूजीसी से प्राप्त अनुदान, भारत सरकार तथा राज्य सरकार से पूंजीगत व्यय हेतु जमा : निर्धारित निधि से परिसम्पतियों की खरीद जमा : प्रायोजित परियोजनाओं, जहां मालिकाना हक संस्थान के पास है से परिसम्पतियों की खरीद		238742117.80	236680376.55
जमा : दान की गई परिसम्पतियां/ उपहार प्राप्त जमा : अन्य योजन		18781.00	2061741.25
जमा : आय व व्यय लेखा से हस्तांतरित व्यय पर आधिक्य आय		5171153.28	
कुल		**243932052.08**	**238742117.80**
न्यूनत्तर	आय और व्यय खाते से घाटे का हस्तांतरण		
आयकर का भुगतान		1186380.00	
वर्ष के अंत		**242745672.08**	**238742117.80**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची-2 निर्दिष्ट/निश्चित की गई/चंदा निधि/पूंजीगत अनुदान

राशि (रूपए)

विवरण	निधिवार विच्छेद					कुल	
	पूंजीगत अनुदान सहायता	निधि क.क.क.	निधि ख.ख.ख.	निधि ग.ग.ग.	चंदा निधि	चालू वर्ष	विगत वर्ष
क							
क. अथशेष	47546604.00						23428115.00
ख. वर्ष के दौरान जमा	13675849.00						28285869.00
ग. निधि के निवेश से प्राप्त आय							
घ. निवेश/अग्रिम राशि से उपार्जित ब्याज							
ङ. बैंक बचत से प्राप्त ब्याज							
च. अन्य आधिक्य (विशिष्ट प्रकृति के)	0.00						
कुल (क)	**61222453.00**	0	0	0	0		**51713984.00**
ख							
प्रयोगिक/निधि के उद्देश्यों के प्रति व्यय							
पूंजीगत व्यय	15525850.00						
आगम व्यय	0.00						
न्यूनतर ह्रास मूल्य	3204891.00						4167380.00
कुल (ख)	**18730741.00**	**0**	**0**	**0**	**0**		**47546604.00**
वर्ष के अंत में शेष बकाया राशि (क–ख)	42491712.00						47546604.00
प्रस्तुतकर्ता							
नकद एवं बैंक शेष							
निवेश							
उपार्जित ब्याज मगर देय नहीं							
स्थाई परिसम्पतियां	42491712.00						47546604.00
कुल							

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची -3, चालू देयताएं एवं प्रावधान

	राशि (रूपयों में)	राशि (रूपयों में)
	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
(क) चालू देयताएं		
1. स्टॉफ द्वारा जमा		
2. छात्रों द्वारा जमा		
3. विविध लेनदार	194309.00	
4. जमा–अन्य (ईएमडी, सिक्योरिटी जमा)	49900.00	
5. वैधानिक देयताएं (जीपीएफ, टीडीएस, डब्ल्यूसी, सीपीएफ, कर, जीआईएसय, एनपीएस)	1240676.00	
अ) अतिदेय		42653.00
ब) अन्य		
6. अन्य चालू देयताएं		
क) वेतन	5781953.00	4651474.00
ख) प्रायोजित परियोजनाओं के तहत प्राप्तियां		
ग) प्रायोजित अध्येतावृतियों तथा छात्रवृतियों के निमित्त प्राप्तियां		
घ) अप्रयोगिक अनुदान	316265171.68	383393841.43
ङ) एमओसी का अप्रयोगिक अनुदान	202157.00	202157.00
च) अन्य निधियां		
छ) अन्य देनदारियां (सेल्ज़ एवं ज.सं.अ. को प्रतिदाय)	4789.00	
ज) देय नई पेंशन योजना		121039
झ) देय व्यय	3053477.00	3664041.00
ञ) आईसी4एचडी के लिए देय		97558.00.00
कुल (क)	**326792432.68**	**391972763.43**
(ख) प्रावधान		
कराधान हेतु		
ग्रेच्यूटी	28499578.00	31590383.00
सेवानिवृत्ति / पैंशन	1700000.00	1700000.00
जमा अवकाश का नकदीकरण	19551261.00	16056876.00
व्यापार वारंटी / दावे		
अन्य (विशेषतः)		
कुल (क)	**49750839.00**	**49750839.00**
कुल (क+ख)	**376543271.00**	**441320022.43**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-4, सहायता अनुदान से अर्जित स्थाई परिसम्पतियां

(क) संस्थान की संस्थापना से लेकर स्थिर परिसम्पतियां

विवरण	मूल्य ह्रास कर दर	01.4.2017 को अथशेष	01.04.2017 से 31.3.2018 तक जमा	01.04.2017 से 31.3.2018 तक विलोपन	कुल	वार्षिक मूल्य ह्रास	31.03.2018 को बट्टे में डाली गई रकम
कार्यालयी उपकरण		7742537.63	-	-	7742537.63	-	7742537.63
इलैक्ट्रॉनिक उपकरण		10123527.00	-	-	10123527.00	-	10123527.00
फर्नीचर एवं फिटिंग		6923261.75	-	-	6923261.75	-	6923261.75
वाहन		2838064.64	-	-	2838064.64	-	2838064.64
पुस्तकालय उपकरण		5926142.38	-	-	5926142.38	-	5926142.38
अन्य उपकरण		814603.20	-	-	814603.20	-	814603.20
प्रकाशन उपकरण		839040.02	-	-	839040.02	-	839040.02
पुस्तकालय पुस्तकें तथा पत्रिकाएं		137892532.43	-	-	137892532.43	-	137892532.43
पुस्तक योजना संसाधन		247622.12	-	-	247622.12	-	247622.12
संसाधन पुस्तक योजना उपकरण		41087.56	-	-	41087.56	-	41087.56
उद्यान उपकरण		145805.00	-	-	145805.00	-	145805.00
श्रव्य दृश्य		422500.00	-	-	422500.00	-	422500.00
भारतीय सभ्यता के अध्ययन केन्द्र की परियोजना		518442.00	-	-	518442.00	-	518442.00
वर्ड प्रोसेसर्ज		1304921.00	-	-	1304921.00	-	1304921.00
आईसी4एचडी के अंतर्गत स्थिर परिसम्पतियां			-	-	0.00	-	0.00
आईसी4एचडी के अंतर्गत इलैक्ट्रॉनिक्स परिसम्पतियां		1603450.00	-	-	1603450.00	-	1603450.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा पत्रिकाएं		103748.00	-	-	103748.00	-	103748.00
फर्नीचर तथा फिटिंग		516537.00	-	-	516537.00	-	516537.00
उप योग (क)		**178003821.73**	**-**	**-**	**178003821.73**	**-**	**178003821.73**

ख) स्थिर परिसम्पतियां

योजना

पुस्तकालय पुस्तकें एवं उपकरण	10	13848589.00	0.00	0.00	13848589.00	1384860.00	12463729.00
अध्येताओं के लिए वर्ड प्रोसेसर्ज	20	37775.00	0.00	0.00	37775.00	7560.00	30215.00
ईपीबीएक्स	7.5	210857.00	0.00	0.00	210857.00	15810.00	195047.00
प्रिंटर	20	5236.00	0.00	0.00	5236.00	1050.00	4186.00
क्रॉकरी		50357.00	0.00	0.00	50357.00	3780.00	46577.00
एलईडी	7.5	89843.00	0.00	0.00	89843.00	6740.00	83103.00
बिस्तर	7.5	83991.00	0.00	0.00	83991.00	6300.00	77691.00
एल्यूमिनियम सीढ़ी	5	34359.00	0.00	0.00	34359.00	1720.00	32639.00
बिस्तर एवं लिनेन (पूंजीगत व्यय योजना)	7.5	306976.00	0.00	0.00	306976.00	23020.00	283956.00
बिस्तर एवं लिनेन (पूंजीगत व्यय योजना एस.सी)	7.5	234878.00	0.00	0.00	234878.00	17620.00	217258.00
बायोमैट्रिक हाजरी मशीन (पूंजीगत व्यय)	5	43850.00	0.00	0.00	43850.00	2190.00	41660.00
इलैक्ट्रॉनिक पोडियम (पूंजीगत व्यय योजना एसटी)	5	300609.00	0.00	0.00	300609.00	15030.00	285579.00
फर्नीचर और जुड़नार (पूंजीगत व्यय)	7.5	50748.00	0.00	0.00	50748.00	3810.00	46938.00
फर्नीचर और जुड़नार (पूंजीगत व्यय, एसटी)	7.5	218020.00	0.00	0.00	218020.00	16350.00	201670.00
व्यावसायिक एलइडी (पूंजीगत व्यय)	7.5	194247.00	0.00	0.00	194247.00	14570.00	179677.00
वीडियो कांफ्रेंसिंग उपकरण (पूंजीगत व्यय योजना)	8	209622.00	0.00	0.00	209622.00	16770.00	192852.00
डिजिटाइजेशन/स्वचलन/ई–संसाधन	40	513622.00	0.00	0.00	513622.00	205450.00	308172.00
फाइल कैबिनेट	7.5	59760.00	0.00	0.00	59760.00	4480.00	55280.00
इलैक्ट्रॉनिक कम्पैक्ट स्केल	7.5	1865.00	0.00	0.00	1865.00	140.00	1725.00
हस्त मैटल डिटेक्टर	7.5	5411.00	0.00	0.00	5411.00	410.00	5001.00
जर्नल	40	1589051.00	0.00	0.00	1589051.00	635620.00	953431.00
क्यू–मैनेजर	7.5	32780.00	0.00	0.00	32780.00	2460.00	30320.00

जूता सफाई मशीन	7.5	4891.00	0.00	0.00	4891.00	370.00	4521.00
वैप321 वायरलेस एन सिलेक्टेबल बैंड	8	191268.00	0.00	0.00	191268.00	15300.00	175968.00
मोनो ब्लॉक पम्प	5	210249.00	0.00	0.00	210249.00	10510.00	199739.00
हैण्ड ड्रायर	5	52250.00	0.00	0.00	52250.00	2610.00	49640.00
फायर अलार्म सिस्टम	5	13265828.00	0.00	13964030.00	(698202.00)	(698202.00)	-
गीज़र एवं निकास पंखा	5	463799.00		-	463799.00	23190.00	440609.00
बार कोड स्कैनर	7.5	17290.00	0.00	0.00	17290.00	1300.00	15990.00
उप योग (ख)		**32328021.00**	**0.00**	**13964030.00**	**18363991.00**	**1740818.00**	**16623173.00**
ग) गैर–योजना							
पुस्तकालय पुस्तकें एवं उपकरण	10	1957.00	0.00	0.00	1957.00	200.00	1757.00
एल्यूमिनियम सीढ़ी	5	22056.00	0.00	0.00	22056.00	1100.00	20956.00
उद्यान उपकरण	5	58315.00	0.00	0.00	58315.00	2920.00	55395.00
घास काटने की मशीन	5	55565.00	0.00	0.00	55565.00	2780.00	52785.00
माइक	5	38768.00	0.00	0.00	38768.00	1940.00	36828.00
कम्प्यूटर	20	235120.00	0.00	0.00	235120.00	47020.00	188100.00
क्रॉकरी	7.5	11840.00	0.00	0.00	11840.00	890.00	10950.00
पर्दे एवं उनके उनके टांगने की छड़ें	7.5	49716.00	0.00	0.00	49716.00	3730.00	45986.00
इलैक्ट्रॉनिक्स उपकरण	7.5	11562.00	0.00	0.00	11562.00	870.00	10692.00
प्रिंटर	20	48720.00	0.00	0.00	48720.00	9740.00	38980.00
दूरभाष	7.5	5585.00	0.00	0.00	5585.00	420.00	5165.00
रसोई अल्मारियां	7.5	74139.00	0.00	0.00	74139.00	5560.00	68579.00
टुलु पम्प	7.5	10625.00	0.00	0.00	10625.00	800.00	9825.00
ईपीबीएक्स (कार्यालय उपकरण)	7.5	12256.00	0.00	0.00	12256.00	920.00	11336.00
वैक्यूम क्लीनर	7.5	92210.00	0.00	0.00	92210.00	6920.00	85290.00
उप योग (ग)		**728434.00**	**0.00**	**0.00**	**728434.00**	**85810.00**	**642624.00**

घ) आईसी4एचडी के अंतर्गत स्थिर परिसम्पतियां							
आईसी4एचडी के अंतर्गत इलैक्ट्रॉनिक्स परिसम्पतियां	7.5	292738.00	0.00	0.00	292738.00	21960.00	270778.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा पत्रिकाएं	10	167487.00	0.00	0.00	167487.00	16750.00	150737.00
खेल परिसम्पतियां	5	121832.00	0.00	0.00	121832.00	6090.00	115742.00
कार्यालयी उपकरण (हॉट केस)	7.5	31419.00	0.00	0.00	31419.00	2360.00	29059.00
ऑडियो प्रणाली	7.5	1444683.00	0.00	1561820.00	-117137.00	-117137.00	0.00
फर्नीचर उपकरण	7.5	15651.00	0.00	0.00	15651.00	1170.00	14481.00
कुल (घ)		**2073810.00**	**0.00**	**1561820.00**	**511990.00**	**-68807.00**	**580797.00**
(ङ) वर्ष के दौरान स्थाई संपत्तियां							
25 डैल कम्प्यूटर	20		2035000.00		2035000.00	407000.00	1628000.00
25 एचपी लेज़र कम्प्यूटर	20		449975.00		449975.00	90000.00	359975.00
डबाल बॉक्स बिस्तर	7.5		113200.00		113200.00	8490.00	104710.00
डबाल हार्ड बिस्तर	7.5		83300.00		83300.00	6250.00	77050.00
इलैक्ट्रिक केतली	5		49770.00		49770.00	2490.00	47280.00
फारगो पहचान पत्र प्रिंटर	7.5		54900.00		54900.00	4120.00	50780.00
एचपी लेजर प्रिन्टर	20		9800.00		9800.00	1960.00	7840.00
पुस्तकालय पुस्तकें (पूंजी)	10		6376434.00		6376434.00	637640.00	5738794.00
माइक्रोटैक यूपीएस	20		163750.00		163750.00	32750.00	131000.00
मैट्रिक्स इटरनिटी पिन एवं डिजिटल फोन	7.5		34810.00		34810.00	2610.00	32200.00
माइक्रोटैक टिवन गार्ड पिन 500003	7.5		89980.00		89980.00	6750.00	83230.00
मॉपिंग म ीन टूल	7.5		13235.00		13235.00	990.00	12245.00
नई अलैन्ट्रा कार	0		1466399.00		1466399.00	0.00	1466399.00
पैनड्राइव	20		4875.00		4875.00	980.00	3895.00
प्रिन्टर एचपी एलजे	20		34690.00		34690.00	6940.00	27750.00
सोनी एलइडी टी.वी.	7.5		871200.00		871200.00	65340.00	805860.00
वायस रिकॉर्डर	7.5		7490.00		7490.00	560.00	6930.00
जल भण्डारन ड्रम	7.5		11410.00		11410.00	860.00	10550.00
वाईफाई डी–लिंक	20		1581.00		1581.00	320.00	1261.00

कार्पेट वाल तथा सीढ़ी	7.5		245260.00		245260.00	18390.00	226870.00
ड्यूरोटर्फ (323 वर्ग फुट)	7.5		59153.00		59153.00	4440.00	54713.00
पूंजीगत परिसम्पतियां (एससी)							
क्रॉकरी (पूंजी एससी)	7.5		57647.00		57647.00	4320.00	53327.00
डेल कम्प्यूटर	20		82000.00		82000.00	16400.00	65600.00
एचपी ऑफिस जैट प्रिंटर	20		37830.00		37830.00	7570.00	30260.00
एचपी स्कैनर जैट	0		20000.00		20000.00	0.00	20000.00
एलईडी ब्राविआ	0		115930.00		115930.00	0.00	115930.00
एलईडी टॉर्च	7.5		7980.00		7980.00	600.00	7380.00
पुस्तकालय पुस्तकें (पूंजीगत एससी)	10		295498.00		295498.00	29550.00	265948.00
फोटोस्टेट म ाीन	7.5		66491.00		66491.00	4990.00	61501.00
सोनी एक्स्टर्नल एचडीडी आईटीबी	7.5		43400.00		43400.00	3260.00	40140.00
सुकल इन्वर्टर	7.5		22000.00		22000.00	1650.00	20350.00
टेलीफोन लाइन केवल	7.5		260190.00		260190.00	19510.00	240680.00
दीवार घड़ी	7.5		24650.00		24650.00	1850.00	22800.00
पूंजीगत परिसम्पतियां (एसटी)							
गोदरेज फाइल कैबिनेट	7.50		47700.00		47700.00	3580.00	44120.00
पुस्तकालय पुस्तकें (एसटी)	10.00		231472.00		231472.00	23150.00	208322.00
रैस्बैरी पीआई3 बोर्ड सेट/चार्जर	7.50		11142.00		11142.00	840.00	10302.00
सैमसंग 43 एफएचडी एलइडी	7.50		49981.00		49981.00	3750.00	46231.00
सीगेट 4टीबी ब्लैक प्लस	20.00		14986.00		14986.00	3000.00	11986.00
तोशिबा फोटोस्टेट मशीन	7.50		89000.00		89000.00	6680.00	82320.00
वीपी3000ईयू	7.50		21740.00		21740.00	1630.00	20110.00
उपयोग (ङ)		**0.00**	**13675849.00**	**0.00**	**13675849.00**	**1431210.00**	**12244639.00**
(ख) अमूर्त संपत्तियां							
नेटवर्क सुविधा	40.00	39653.00	0.00	0.00	39653.00	15860.00	23793.00
उपयोग (ख)		**39653.00**	**0.00**	**0.00**	**39653.00**	**15860.00**	**23793.00**
योग 1 (क+ख+ग+घ+ङ)		**213173739.73**	**13675849.00**	**15525850.00**	**211323738.73**	**3204891.00**	**208118847.73**

अनुसूची–4 (2)स्वनिधि से उपार्जित स्थिर परिसम्पतियां							
कालीन	7.5	546813.00	0.00	0.00	546813.00	41010.00	505803.00
सीसीटीवी कैमरे	7.5	3476017.00	0.00	0.00	3476017.00	260700.00	3215317.00
हनीवाल आउटडोर कैमरा	5	24715.00	0.00	0.00	24715.00	1240.00	23475.00
क्यू मैनेजर	7.5	36630.00	0.00	0.00	36630.00	2750.00	33880.00
कैफे सॉफ्टवेयर	40	32970.00	0.00	0.00	32970.00	13190.00	19780.00
एलईडी	7.5	28675.00	0.00	0.00	28675.00	2150.00	26525.00
एलईडी जुड़नार	5	972651.00	0.00	0.00	972651.00	48630.00	924021.00
टिकट बूथ मशीन	5	14535.00	0.00	0.00	14535.00	730.00	13805.00
इलैक्ट्रिक कैश बिलिंग मशीन			14750.00	0.00	14750.00	0.00	14750.00
हाथ में पकड़ने वाली टिकट मशीन			23600.00	0.00	23600.00	0.00	23600.00
उप योग (2)		**5133006.00**	**38350.00**	**0.00**	**5171356.00**	**370400.00**	**4800956.00**
सकल योग (सरकारी एवं उपार्जित निधि) स्थिर परिसम्पत्तियां		**218267092.73**	**13714199.00**	**15525850.00**	**216455441.73**	**3559431.00**	**212896010.73**
सकल योग (स्थिर एवं अस्प् य परिसम्पत्तियां)		**218306745.73**	**13714199.00**	**15525850.00**	**216495094.73**	**3575291.00**	**212919803.73**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-5, निर्दिष्ट/चंदा निधि से निवेश

राशि रूपयों में

	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
1. केन्द्र सरकार की प्रतिभूतियां	-	-
2. राज्य सरकार की प्रतिभूतियां	-	-
3. अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां	-	-
4. ऋण पत्र तथा बॉड	-	-
5. अन्य (निर्दिष्ट करने योग्य)	-	-
कुल	0.00	0.00

अनुसूची-5क, निर्दिष्ट/चंदा निधि से निवेश (निधिवार)

राशि रूपयों में

क्रमांक	निधि	चालू वर्ष 2017–18
1.	-	-
2.	-	-
3.	-	-
4.	-	-
5.	धर्माथ निधि निवेश	-
कुल	0.00	0.00

अनुसूची-6, अन्य निवेश

राशि (रूपयों में)

	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
1. केन्द्र सरकार की प्रतिभूतियां	-	-
2. राज्य सरकार की प्रतिभूतियां	-	-
3. अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां	-	-
4. शेयर	-	-
5. ऋण पत्र तथा बॉड	-	-
6. अन्य (निर्दिष्ट करने योग्य)	-	-
कुल	0.00	0.00

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-7, चालू परिसम्पत्तियां

	राशि (रूपयों में)	राशि (रूपयों में)
	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
1. स्टॉक		
क) भण्डार एवं अतिरिक्त		
ख) खुले उपकरण		
ग) प्रकाशन	6031162.25	5098778.00
घ) प्रयोगशाला केमिकल, उपभोग्य तथा कांच की वस्तुएं		
ङ) भवन सामग्री		
च) विद्युत सामग्री		
छ) स्टेशनरी		
ज) जलापूर्ति पदार्थ		
ञ) सोवनियर वस्तुएं	727190.00	842316.00
2. विविध लेनदार		
अ) छः माह से अधिक की अवधि के बकाया ऋण	511139.75	447560.75
ब) अन्य		42311.50
3. नकद एवं बैंक में जमा राशि		
नकद	173955.00	28630.00
अ) अनुसूचित बैंक में जमा :		
चालू खाते में	.....	.....
आवधिक जमा खाते में	220762795.00	207565720.00
बचत खाते में	133697424.03	196370307.25
ब) चालू खाते में गैर–अनुसूचित बैंक में जमा		
–अवधि जमा खाते–बचत खाते में जमा		
4. डाकघर बचत खाते में जमा	.....	.....
डाक टिकटों का स्टॉक	14242.00	0.00
विविध अग्रिम राशि (आईसी4एचडी)	2963.00	2963.00
ड्राफ्ट तथा भा.पो.ऑ.	.....	.....
कुल	**361920871.03**	**410398586.50**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-8, ऋण, अग्रिम तथा जमा राशि

(राशि रूपयों में)

	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
1. कर्मचारियों को भुगतान की अग्रिम राशि (गैर–ब्याज सहित)		
क) वेतन		
ख) त्योहार	92250.00	93150.00
घ) चिकित्सा अग्रिम	.	
ङ) अन्य (निर्दिष्ट)	.	0.00
च) डब्ल्यू.सी.ए.	6750.00	27900.00
छ) प्रतिकूल जलवायु तथा हुड हेतु अग्रिम राशि	431.00	431.00
2. कर्मचारियों को दीर्घकालीन अग्रिम राशि (ब्याज सहित)		
क) वाहन ऋण	73000.00	63000.00
ख) गृह ऋण		...
ग) अन्य (निर्दिष्ट)	2444442.00	2444442.00
घ) कम्प्यूटर के लिए अग्रिम राशि	218000.00	477000.00
3. अग्रिम राशि तथा नकद अथवा वस्तु के रूप में अथवा जिसका मूल्य प्राप्त होने वाला हो		
क) पूंजीगत राशि से		
ख) आपूर्ति कर्ताओं के लिए		
ग) अन्य (के.लो.नि.वि.)	72443868.00	84963227.00
आईयूसी से वसूल करने योग्य	...	5873687.00
भा. पु. सर्वेक्षण से वसूल करने योग्य	7760053.00	...
अन्य से प्राप्य	250000.00	...
आईसी4एचडी से वसूल करने योग्य	...	...
अतिथि गृह से वूसल करने योग्य	7800.00	...
अन्य से वसूल करने योग्य	106219.00	106219.00
4. पूर्वदत्त व्यय		
क) बीमा		
ख) अन्य व्यय (पूर्व भुगतान किये गए ई–जर्नल)	2191198.00	..
ग) पूर्व चुकता वा.रखरखाव (आईसी4एचडी)	..	..
5. जमा		
क) दूरभाष	36200.00	36200.00
ख) पट्टा किराया		
ग) विद्युत/जवाहर बुक बांइडर के पास प्रतिभूति	20000.00	20000.00
घ) एआईसीटीइ, यदि लागू हो		
ङ) अतिथि	2400.00	2400.00
1. विनीत गैस एजेंसी के पास प्रतिभूति	19000.00	19000.00
2. नगर निगम के पास प्रतिभूति	980.00	980.00
3. ईंधन के लिए जमा	100000.00	100000.00
4. अन्य	4633.00	4633.00
5. वसूली योग्य नकद छुट्टी अतिरिक्त भुगतान	....	....

वसूली योग्य टीडीएस प्रकाशनाधीन पुस्तकें अग्रिम कर वसूली योग्य आयकर टीडीएस (निर्धारण वर्ष 2016–17) मैस से वसूली योग्य	95237.00 9986.00 932500.00 65920.00	95237.00 74701.00 500000.00 65920.00 58190.00 .....
6. उपार्जित आय क. निवेश–अन्य ख. ऋण तथा अग्रिम ग. अन्य (अप्राप्त देय आय)	....	.....
7. यूजीसी एवं प्रायोजित परियोजनाओं से अन्य प्राप्ति योग्य क) प्रायोजित परियोजनाओं में जमा शेष ख) अध्येतावृति तथा छात्रवृति में जमा शेष ग) भारत सरकार से वसूली योग्य अनुदान घ) यूजीसी से वसूली योग्य	**.....**	4000000.00
8. दावे प्राप्ति योग्य	59114.00	.....
कुल	**86939981.00**	**98903412.00**

टिप्पणी– यदि चलायमान निधि को कर्मचारियों को गृह निर्माण, कम्प्यूटर तथा वाहन की खरीद हेतु अग्रिम धन के तौर पर दिया गया हो तो उक्त अग्रिम राशि निशिचित/चंदा के रूप में होगी। इस ब्याजयुक्त अग्रिम राशि का बकाया इस सूची में नहीं दर्शाया गया है।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची-9, शैक्षणिक प्राप्तियां

(राशि रूपयों में)

	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
छात्रें से फीस		
अकादमिक	0.00	0.00
1. ट्यूशन फीस	0.00	0.00
2. प्रवेश शुल्क	0.00	0.00
3. नामांकन शुल्क	0.00	0.00
4. पुस्तकालय प्रवेश शुल्क	0.00	0.00
5. प्रयोगशाला शुल्क	0.00	0.00
6. आर्ट एंड क्राफ्ट शुल्क	0.00	0.00
7. पंजीकरण शुल्क	0.00	0.00
8. पाठ्यक्रम शुल्क	0.00	0.00
कुल (क)	0.00	0.00
1. प्रवेश परीक्षा शुल्क	0.00	0.00
2. वार्षिक परीक्षा शुल्क	0.00	0.00
3. मार्क शीट, प्रमाण पत्र शुल्क	0.00	0.00
4. प्रवेश परीक्षा शुल्क	0.00	0.00
कुल (ख)	0.00	0.00
अन्य शुल्क	0.00	0.00
1. पहचान पत्र शुल्क	0.00	0.00
2. जुर्माना/विविध शुल्क	0.00	0.00
3. चिकित्सा शुल्क	0.00	0.00
4. परिवहन शुल्क	0.00	0.00
5. छात्रावास शुल्क	0.00	0.00
कुल (ग)	0.00	0.00
प्रकाशनों की बिक्री	0.00	0.00
1. एडमिशन फॉर्मों की बिक्री	0.00	0.00
2. सिलेबस और प्रश्न पत्र, आदि की बिक्री	0.00	0.00
3. प्रोस्पेक्टस प्रवेश फॉर्मों की बिक्री	0.00	0.00
कुल (घ)	0.00	0.00
अन्य अकादमिक प्राप्तियां	0.00	0.00
1. कार्यशालाओं, कार्यक्रमों का पंजीकरण शुल्क	0.00	0.00
2. पंजीकरण शुल्क (अकादमिक स्टाफ कॉलेज)	0.00	0.00
कुल (ङ)	0.00	0.00
समग्र योग (क+ख+ग+घ+ङ)	0.00	0.00

टिप्पणी–प्रवेश शुल्क सदस्यता शुल्क आदि सामग्री रहे हैं और पूंजीगत प्राप्तियों की प्रकृति मे होते हैं, ऐसी राशि पूंजीगत निधि के रूप में मानी जानी चाहिए। अन्यथा इस तरह की फीस उचित रूप से इस सूची में शामिल की जाएगी।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-10, अनुदान/रियायत (अचल अनुदान प्राप्ति)

(राशि रूपयों में)

विवरण	योजना		गैर वेतन / वेतन / पैन्शन भा.सरकार	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
	भा.सरकार	विशिष्ट योजना आईसी4एचडी			
अथशेष अग्रानीत	200904521.00	156246279.00	26243041.43	383393841.43	235025832.86
जमा : वर्ष के दौरान प्राप्तियां	90450000.00	0.00	0.00	90450000.00	304558000.00
उपार्जित ब्याज	2494154.00	12656918.00	0.00	15151072.00	20069623.00
जीआईए संशोधित पृविष्टी	13964030.00	1561820.00	0.00	15525850.00	0.00
गैर वेतन से हस्तांतरण	26243041.43	0.00	0.00	26243041.43	0.00
योजना से आईसी4एचडी में हस्तांतरण	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
कुल	**334055746.43**	**170465017.00**	**26243041.43**	**530763804.86**	**559653455.86**
न्यूनतर–यूजीसी / भा.स. से वापिसी	0.00	0.00	26243041.43	26243041.43	0.00
बकाया	**334055746.43**	**170465017.00**	**0.00**	**504520763.43**	**559653455.86**
न्यूनतर– पूंजीगत व्यय के लिए प्रयुक्त (क)	13675849.00	0.00	0.00	13675849.00	28285869.00
बकाया	**320379897.43**	**170465017.00**	**0.00**	**490844914.43**	**531367586.86**
न्यूनतर– राजस्व व्यय के लिए प्रयुक्त (ख)	174579742.75	0.00	0.00	174579742.75	147973745.43
बकाया अग्रनीत	**145800154.68**	**170465,017.00**	**0.00**	**316265171.68**	**383393841.43**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-11, निवेश से आय

(राशि रूपयों में)

विवरण	निश्चित / दान		अन्य निवेश	
	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
1. ब्याज	....	....	....	....
क. सरकारी प्रतिभूति पर	....	....	....	....
ख. अन्य बॉण्ड/ऋणपत्र	....	....	....	....
2. मियादी जमा पर ब्याज	....	....	....	....
3. उपार्जित आय मगर कर्मचारियों की अग्रिम राशि की मियादी जमा ब्याज पर नहीं	....	....	....	....
4. बैंक बचत खाते पर ब्याज	....	....	....	....
5. अन्य (निर्दिष्ट)	....	....	....	....
कुल	....	....	....	....
निश्चित/दान निधि में हस्तांतरण	....	....	....	....
शेष	....	....	....	....

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-12, उपार्जित ब्याज

(राशि रूपयों में)

विवरण	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
1. अनुसूचित बैंकों में बचत खाता पर	....	....
2. ऋण पर	....	....
क. कर्मचारी/स्टाफ	....	....
ख. अन्य (एफडीआर)	....	....
3. कर्जदारों तथा अन्य प्राप्तियों से	....	....

टिप्पणी– कृप्या अनुसूची–10 का संदर्भ ग्रहण करें।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-13, अन्य आय

विविध आय में सम्मिलित पदार्थों की राशि में मदें अलग से विनिर्दिष्ट होनी चाहिए।

(राशि रूपयों में)

क. भूमि और भवनों से आय	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
1. छात्रावास कक्ष का किराया	--	--
2. लाईसेंस शुल्क	--	--
3. सभागार/खेल का मैदान/सुविधा केन्द्र आदि से प्राप्त किराया	--	--
4. बिजली प्रभार की वसूली	--	--
5. जल प्रभार की वसूली	--	--
कुल	--	--
ख. संस्थान के प्रकाशनों की बिक्री	957555.82	592550.45
ग. आयोजनों से प्राप्त आय		
1. वार्षिक समारोह/खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन से सकल प्राप्ति		
न्यूनतरः वार्षिक समारोह/खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन पर प्रत्यक्ष व्यय		
2. त्योहारों से सकल प्राप्ति		
न्यूनतरः त्योहारों के आयोजनों पर प्रत्यक्ष व्यय		
3. शैक्षणिक दौरों से प्राप्त सकल प्राप्ति		
न्यूनतरः शैक्षणिक दौरों प्रत्यक्ष व्यय		
4. अन्य (निर्दिष्ट तथा पृथक दर्शाने योग्य)		
कुल	0.00	0.00
घ. अन्य		
1. परामर्श आय		
2. सूचना के अधिकार से शुल्क		
3. रॉयल्टी से प्राप्त आय		
4. आवेदन पत्रों की बिक्री (भर्ती)		
5. अन्य प्राप्तियां (टैण्डर फार्म, रद्दी आदि की बिक्री)	---	34978.00
6. बिक्री से लाभ/परिसम्पतियों का निपटान		
क) स्वाधिकृत परिसम्पतियां		
ख) निः शुल्क प्राप्त परिसम्पतियां		
7. संस्थानों, कल्याणकारी निकायों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से अनुदान/दान		
8. अन्य (निर्दिष्ट)		
अन्य निर्दिष्ट सुविधा प्रसार का किराया	7875.00	74518.00
अतिथि गृह	457300.00	500512.87
वाहन का निजी प्रयोग	-	-

पौधों की बिक्री	13380.00	7990.00
पुस्तकालय सदस्यता	27500.00	74140.00
अप्रयोगिक वस्तुओं की बिक्री	0.00	0.00
खेल सदस्यता शुल्क	0.00	0.00
विविध आय	309326.76	0.00
टिकट बूथ से प्राप्त शुद्ध आय	3768615.70	1354820.05
कुल अन्य (निर्दिष्ट)	4583997.46	2011980.92
कुल अन्य (8)	4583997.46	2046958.92
समग्र योग (क + ख + ग + घ)	**5541553.28**	**2639509.37**

अनुसूची-14, पूर्व कालिक आय

	राशि रूपयों में	
विवरण	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
1. अकादमिक प्राप्तियां	---	---
2. निवेश से आय	---	---
3. उपार्जित ब्याज	---	---
4. अन्य	---	---
कुल	---	---

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-15, स्टाफ का वेतन तथा लाभ (व्यवस्थापन व्यय)

शिक्षक और गैर–शिक्षक एवं तदर्थ स्टाफ का पृथक वर्गीकरण होगा। मंहगाई भत्ते की बकाया राशि तथा वेतन वृद्धि का बकाया पृथक दर्शाया जाएगा।

(राशि रूपयों में)

विवरण	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
क. वेतन एवं मजदूरी	58936900.00	44994361.00
ख. भत्ते तथा बोनस	-	0.00
ग. भविष्य निधि/नई पेंशन योजना में योगदान	851111.00	1250276.00
घ. अन्य निधि (विशिष्ट) पेंशन निधि में योगदान	0.00	500000.00
ङ. कर्मचारी कल्याण व्यय		0.00
च. सेवानिवृति तथा सेवानिवृति लाभ	9144379.00	1625728.00
छ. एलटीसी सुविधा	207560.00	152066.00
ज. चिकित्सा सुविधा	530615.00	569410.00
झ. बच्चों का शैक्षणिक भत्ता	718188.00	599934.00
ञ. मानदेय	187156.00	629365.00
ट. अन्य (विशिष्ट) पेंशन	21014091.00	19800185.00
ठ. वर्दी	195000.00	194179.00
ड. आतिथ्य		73387.00
कुल	**91785000.00**	**70388891.00**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-15(क), कर्मचारियों की सेवानिवृति एवं सेवानिवृति लाभ

(राशि रूपयों में)

	पैन्शन	ग्रेच्यूटी	अवकाश नकदीकरण	कुल
अथशेष	.....	.....	.....	.....
जमा : अन्य संगठनों से प्राप्त योगदानों का पूंजी मूल्य	.....	.....	.....	.....
कुल (क)	.....	.....	.....	.....
न्यूनतरः वर्ष के दौरान वास्तविक भुगतान (ख)	.....	.....	.....	.....
उपलब्ध बकाया शेष (क–ख)	.....	.....	.....	.....
31.3 को बीमाकिक मूल्यांकन (घ) के अनुसार आपेक्षित प्रावधान	.....	.....	.....	.....
क. चालू वर्ष के दौरान प्रावधान (घ–ग)	.....	.....	.....	.....
ख. नई पेन्शन में योगदान	.....	.....	.....	.....
ग. सेवा निवृत कर्मचारियों को चिकित्सा खर्च की अदायगी	.....	.....	.....	.....
घ. सेवानिवृति पर होम टाउन का भुगतान	.....	.....	.....	.....
ङ. संबंद्ध बीमा भुगतान जमा	.....	.....	.....	.....
कुल (क+ख+ग+घ+ङ.)	.....	.....	.....	.....

टिप्पणी

1. इस उप सूची में कुल (क+ख+ग+घ+ङ) अनुसूची 15 में सेवानिवृति तथा सेवानिवृति लाभ के अंतर्गत है।
2. ख, ग, घ तथा ङ मदों की गणना उपचय आधार पर की गई है तथा इसमें वरीयता प्राप्त बिलों को सम्मिलित किया गया है मगर 31.3.2017 को उनका भुगतान शेष है।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-16, अकादमिक व्यय

(राशि रूपयों में)

विवरण	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
क. प्रयोगशाला व्यय	----	----
ख. फील्ड संबंधी कार्य/सम्मेलनों में प्रतिभागिता	----	----
ग. संगोष्ठियों/कार्यशालाओं पर व्यय	6035575.00	7062366.00
घ. आगंतुक संकाय को भुगतान	-	0.00
ङ. परीक्षा	-	0.00
च. छात्र कल्याण व्यय	-	0.00
छ. प्रवेश व्यय	-	0.00
ज. दीक्षांत समारोह व्यय	-	0.00
झ. प्रकाशन	320048.00	171060.12
ञ. वजीफा/संसाधन व योग्यता छात्रवृति	-	0.00
ट. अंशदान व्यय	-	0.00
ट. अन्य (निर्दिष्ट) अध्येताओं को अध्येतावृति	24125088.00	22127405.00
राष्ट्रीय अध्येतावृति	0.00	3228387.00
कुल	**30480711.00**	**32589218.12**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-17, प्रशासनिक तथा सामान्य व्यय

(राशि रूपयों में)

विवरण	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
1. अवसंरचना		
क. विद्युत एवं ऊर्जा	3828820.00	5216574.00
ख. जल प्रभार	702844.00	789687.00
ग. बीमा	54278.00	95991.00
घ. किराया, किराया तथा कर (सम्पति कर सहित)	2286762.00	1410514.00
2. संचार	-	0.00
ङ. डाक व लेखन सामग्री	58679.00	163500.00
च. दूरभाष, फैक्स तथा इंटरनेट प्रभार	385633.00	426684.00
3. अन्य	-	0.00
छ. मुद्रण एवं लेखन (उपभोग)	953610.00	541199.00
ज. यात्रा एवं यातायात सुविधा व्यय	3071358.00	2955422.87
झ. आतिथ्य	217247.00	0.00
ञ. लेखा परीक्षक मानदेय	165518.00	117216.00
ट. व्यावसायिक प्रभार	365875.00	569668.00
ठ. विज्ञापन एवं प्रचार–प्रसार	682051.00	663606.00
ड. पत्रिकाएं एवं जर्नल	341598.00	176239.00
ढ. ई–संसाधन अभिदान	521054.00	0.00
ण. अन्य (विशिष्ट)	273747.00	0.00
4. विविध व्यय	141482.00	183752.00
कुल	**14050556.00**	**13310052.87**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-18, यातायात संबंधी व्यय

(राशि रूपयों में)

विवरण	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
1. वाहन (संस्थान द्वारा खरीदे गए)	-	0.00
क. चालू व्यय	385667.00	278694.00
ख. मरम्मत एवं रखरखाव	62182.00	109725.00
ग. बीमा व्यय	-	0.00
2 किराये/पटटे पर लिए गए वाहन	-	0.00
क. किराये/पट्टे का व्यय	-	0.00
3 वाहन/टैक्सी किराया	-	0.00
कुल	**447849.00**	**388419.00**

अनुसूची-19, मरम्मत एवं रखरखाव

विवरण	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
क. भवन	35770298.00	30055994.00
ख. फर्नीचर एवं स्थिर वस्तुएं	-	0.00
ग. संयंत्र एवं मशीनरी	-	0.00
घ. कार्यालयी उपकरण	578470.00	580677.00
ङ. कम्प्यूटर	-	0.00
च. प्रयोगशाला तथा वैज्ञानिक उपकरण	-	0.00
छ. श्रव्य–दृश्य उपकरण	-	0.00
ज. सफाई संबंधी सामान तथा सेवाएं	-	0.00
झ. पुस्तक जिल्दबंदी शुल्क	-	0.00
ञ. बागवानी	198931.00	175269.00
ट. सम्पदा का रखरखाव	-	0.00
1. अन्य (विशिष्ट) उपभोग्य भण्डार	1264633.00	652161.00
स्थिर परिसम्पतियां बट्टे में	-	0.00
कुल	**37812332.00**	**31464101.00**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
अनुसूची-20, वित्तीय व्यय

(राशि रूपयों में)

विवरण	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
क. बैंक प्रभार	3294.75	4123.56
ख. अन्य (विशिष्ट)	-	0.00
कुल	**3294.75**	**4123.56**

अनुसूची-21, अन्य व्यय

विवरण	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
क. डूबी तथा संदिग्ध रकम/अग्रिम राशि का प्रावधान	-	-
ख. वसूल न होने बकाया बट्टे में डाली गई रकम	-	-
ग. अनुदान/अन्य संस्थानों/संगठनों को रियायत	-	-
घ. अन्य (विशिष्ट)	-	-
कुल	**0.00**	**0.00**

अनुसूची-22, पूर्वकालिक व्यय

विवरण	चालू वर्ष 2017–18	विगत वर्ष 2016–17
1 संस्थापन व्यय	-	-
2 अकादमिक व्यय	-	-
3 प्रशासनिक व्यय	-	-
4 यातायात व्यय	-	-
5 मरम्मत एवं रखरखाव	-	-
6 अन्य व्यय	-	30855.00
कुल	**0.00**	**30855.00**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31.3.2018 को समाप्त वित्तीय वर्ष की प्राप्तियों एवं भुगतान के लेखे

1	अथशेष	चालू वर्ष	विगत वर्ष	1	व्यय	चालू वर्ष	विगत वर्ष
	क) नकदी शेष	28630.00	32505.00		क) स्थापना व्यय	120110729ण्00	80315826ण्00
	ख) बैंक शेष				ख) अकादमिक व्यय	11416943.00	4314818.00
	1) चालू खाते में		47638937.94		ग) प्रशासनिक व्यय	6888877.00	12658084.00
	2) बचत खाते में	196370307.25	121282694.87		घ) यातायात व्यय	633930.00	2096935.87
	3) बैंक में मियादी जमा	207565720.00	72405810.00		ङ) मरम्मत एवं रखरखाव	11567751.00	1616189.00
					च) पूर्वावधिक व्यय/बैंक प्रभार	3294.75	4846.37
2	प्राप्त अनुदान			2	निश्चित/धर्मार्थ निधि की एवज में भुगतान	0.00	
	क) भारत सरकार से						
	1) पूंजी अनुदान	13510000.00	192805000.00				
	2) राजस्व अनुदान	80940000.00	107753000.00				
	ख) संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार की ओर से						
	ग) अन्य स्त्रोत से (आइसी4एचडी के अंतर्गत बैक में सावधि जमा)	13197075.00	15090958.00				
	घ) भा. सरकार से वसूली योग्य सहायता अनुदान						
3	अकादमिक प्राप्तियां			3	आईसी4एचडी से प्रतिदाय		
4	निश्चित/धर्मार्थ निधि की एवज में प्राप्तियां			4	प्रायोजित अध्येतावृति/छात्रवृति की एवज में भुगतान		
5	आइसी4एचडी से प्राप्तियां			5	निवेश एवं जमा क) निश्चित/धर्मार्थ निधि से ख) निजी/धर्मार्थ निधि से (अन्य निवेश)		
6	प्रायोजित फैलोशिप एवं छात्रवृत्ति की एवज में प्राप्तियां			6	अनुसूचित बैंकों के साथ नए सिरे से सावधि जमा	-	

6	प्रायोजित अध्येतावृति/छात्रवृति की एवज में प्राप्तियां			6	अनुसूचित बैंकों में आवधिक जमा		
7	निवेश से आय			7	देने योग्य व्यय	0.00	19862368.95
	क) निश्चित/धर्मार्थ निधि से				क) स्थिर परिसम्पतियां		
	ख) अन्य से				1) सहायता अनुदान से	13675849.00	12424251.00
					2) अपने संसाधनों से	38350.00	125550.00
					ख) कार्यशील पूंजी		
8	उपार्जित ब्याज			8	वैधानिक भुगतान सहित अन्य भुगतान	-	-
	क) बैंक में जमा						
	ख) ऋण तथा अग्रिम						
	ग) बचत बैंक खाता	2231997.00	4978665.00				
9	नकद निवेश	-	-	9	अनुदान प्रतिदाय		
10	अनुसूचित बैंक में आवधिक जमा राशि का परिपक्क	-	-	10	अग्रिम तथा निकासियां		
					क) स्टाफ	280300.00	943500.00
					ख) अन्य	2545822.24	40430967.00
11	अन्य आय (पूर्वावधिक आय सहित)	7952290.77	13903749.63	11	वैधानिक भुगतान सहित अन्य भुगतान		
12	जमा और अग्रिम धनराशि	0.00	2866673.00	12	अंतशेष		
					क) नकद	173955.00	28630.00
					ख) बैंक में शेष राशि		
					चालू खाते में		
					बचत खाते में	133697424.03	196370307.25
					बैंक में आवधिक जमा	220762795.00	207565720.00
13	विविध प्राप्तियां (पूर्वावधिक आय सहित)						
14	अन्य प्राप्तियां						
	कुल	**521796020.02**	**578757993.44**		**कुल**	**521796020.02**	**578757993.44**

हस्ता./–
(अविनाश सोलंकी)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(प्रेम चंद)
सचिव

हस्ता./–
(मकरंद आर. परांजपे)
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31.3.2018 को समाप्त वर्ष के लेखा की लेखा नीतियां तथा टिप्पणियां

लेखा नीतियां

(क) लेखा अवधारणाएं

वित्तीय विवरण सामान्यतः परम्परागत लागत रीति के अनुसार भारत में प्रचलित लेखा सिद्धांतों के आधार पर तैयार किये गये हैं।

सोसाइटी सामान्यतः लेखा प्रणाली की उपचय पद्धति का अनुसरण करती है तथा संभूति के आधार पर आय और व्यय की महत्वपूर्ण मदों की पहचान करती है।

(ख) अचल परिसम्पत्तियां

सोसाइटी की अचल परिसम्पत्तियां परम्परागत लागत पर घोशित हैं, जिनमें समस्त प्रासंगिक व्यय सम्मिलित हैं।

(ग) मूल्य ह्रास

1. संस्थान द्वारा वित्तीय वर्ष 2013–14 तक अचल संम्पत्ति पर कोई मूल्यह्रास नहीं दर्शाया गया है। तदोपरांत वर्ष के लिए अचल परिसम्पत्तियों की अधिक्य पर मूल्यह्रास आयकर नियम 1962 के अंतर्गत किया गया है। हलांकि वर्ष 2017–18 के दौरान केन्द्रीय उच्च भौक्षणिक संस्थानों के लिए निर्धारित वित्तीय विवरण के प्रपत्र में निहित दरों के अनुरूप मूल्यह्रास दर्शाया गया है।
2. मूल्यह्रास को आयकर अधिनियम 1962 के आधार पर दर्शाया गया है। पूंजीगत सहायता अनुदान में हस्तांतरित कर दिया गया है। केन्द्रीय उच्च भौक्षणिक संस्थानों के लिए निर्धारित वित्तीय विवरण के प्रपत्र में निहित दरों के अनुरूप स्थिर परिसम्पतियों पर मूल्यह्रास 35,75,291.00 रूपए की अपेक्षा 81,90,328.00 रूपए होना चाहिए था।
3. अनुदान सहायता से अचल अर्जित की स्थिति में मूल्यह्रास को पूंजीगत अनुदान सहायत में हस्तांतरित कर दिया गया है।

(घ) मूल्य निर्धारण/वस्तु सूची

प्रकाशित पुस्तकों का मूल्य निर्धारण व्यय अथवा शुद्ध विश्वस्त कीमत पर किया गया है, जो भी न्यूनतर है।

लेखा रिपोर्ट के बारे में टिप्पणियां

लेखा रिपोर्ट के बारे में टिप्पणियां

1. लेखे भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी नए प्रारूप के अंतर्गत तैयार किए गए हैं ताकि समरूप लेखा पद्धति का अनुपालन सुनिश्चित हो सके।
2. सामान्य भविश्य निधि लेखा के लिए पृथक तुलन पत्र तैयार की गई है।
3. दिनांक 31.3.2018 को ग्रेच्यूटी तथा अवकाश नकदीकरण की राशि क्रमशः 2,84,99,578.00 रूपए तथा 1,95,51,261.00

दर्शायी गई है जबकि दिनांक 31.3.2017 को यह राशि 3,15,90,383.00 रूपए तथा 1,60,56,876.00 रूपए थी।

4. तुलन पत्र में चालू सम्पत्ति के अंतर्गत दर्शायी गई संस्थान के प्रकाशनों की राशि 60,31,162.00 रूपए (दिनांक 31.3.2017 को 50,98,778.00 रूपए) सेल्ज़ एवं जन सम्पर्क अधिकारी द्वारा उपलब्ध करवाई गई सूचना पर आधारित है।

5. संस्थान के मतानुसार चालू परिसम्पत्तियां, ऋण तथा अग्रिम राशियां आंकित मूल्य के लगभग हैं, यदि प्रयोजन की सामान्य प्रक्रिया के अनुरूप किया गया हो। सभी प्रकार की ज्ञातव्य देनदारियों का प्रावधान पर्याप्त है तथा न्यायोचित तौर पर आवश्यक राशि से अधिक नहीं है।

6. लेनदारों, देनदारों तथा अन्य खातों में नामे शेष तथा जमा शेष सत्यापन तथा मिलान का विषय हैं।

7. विभिन्न कर्जदारों के पास पड़ी कुल बकाया राशि 5,11,139.75 रूपए को वसूली के लिए उपयुक्त मानी गई है।

8. पांच वर्षों से अधिक अवधि से 24,44,442.00 रूपए की विविध अग्रिम राशि विगत 5 वर्शों से बकाया है जो वसूली के लिए उपयुक्त मानी गई है।

9. जहां आवश्यक समझा गया विगत वर्ष के दौरान आकड़ों को चालू वर्ष के तुल्य बनाने के लिए पुनः तैयार, पुनः वर्गीकृत तथा पुनः व्यवस्थित किया गया है।

10. टिप्पणी संख्या 1 से 24 तक तलुन–पत्र का आंतरिक भाग है तथा उसे पूर्णतः सत्यापित किया गया है।

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(अविनाश सोलंकी)	(प्रेम चंद)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

डोगर एण्ड कंपनी
सनदी लेखाकार
प्रथम मंजिल, पंचायत भवन मेन गेट के सामने
बस स्टैण्ड, शिमला–171001
दूरभाष # (0177) 2656809 (का.)
मो. # 098170-73000
इमेल. dogersachin@gmail.com

लेखा परीक्षा रिपोर्ट

हमने मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र (आई.यू.सी.) के तुलनपत्र के साथ उसकी प्राप्तियों व भुगतान तथा आय व व्यय का 31 मार्च, 2018 को समाप्त वर्ष का लेखा परीक्षण किया है तथा संबंधित रिपोर्ट संलग्न कर दी है।

वित्तीय विवरणों के लिए आई.यू.सी. प्रबन्धन जिम्मेवार है। हमारी जिम्मेवारी इन वित्तीय विवरणों के आधार पर लेखा परीक्षा के पश्चात् अपनी राय व्यक्त करना है।

हमने भारत के लेखा परीक्षा के मानकों के आधार पर लेखा परीक्षण किया है जो भारत में सामान्यतः स्वीकार्य हैं। इन मानकों के आधार पर हम लेखा परीक्षण करते हैं कि क्या वित्तीय विवरणीय स्पष्ट हैं और किसी प्रकार के गलत विवरणियाँ नहीं हैं। लेखा परीक्षण के आधार पर किया जाता है, तथा वित्तीय विवरणियों में रकमों के सबूत भी लिये जाते हैं। लेखा परीक्षण में लेखा सिद्वान्तों और विस्तृत आंकलन जोकि प्रबन्धन द्वारा तैयार किये जाते हैं उसका भी परीक्षण किया जाता है तथा वित्तीय विवरणियों का मूल्यांकन भी किया जाता है। हमें विश्वास है कि हमारा लेखा परीक्षण हमारी राय को व्यक्त करने में मूल आधार होता है।

पूर्ववर्ती टिप्पणियों के आधार पर हम रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं–

1) लेखा परीक्षण के लिए अनिवार्य सभी सूचनायें और स्पष्टीकरण हमने अपनी पूर्ण जानकारी और विश्वास के आधार पर प्राप्त कर लिये हैं।

2) हमारे मत तथा जानकारी के अनुसार एवं हमें दिये गये स्पष्टीकरण तथा अनुलग्नक–2 में दिये गये मानकों के आधार पर इन लेखाओं की स्पष्ट स्थिति प्रकट होती हैः –

क) तुलनपत्र में 31 मार्च, 2018 को समाप्त वर्ष के केन्द्र के कार्य कलाप हैं।

ख) आय–व्यय लेखे में उस तिथि को समाप्त हुए वर्ष में प्राप्त सहायता अनुदान से उपयोग की गई रकम का लेखा–जोखा है।

ग) प्राप्तियों तथा भुगतान के लेखों में उस तिथि को समाप्त हुए वर्ष का प्राप्तियाँ तथा भुगतान का लेखा–जोखा है।

कृते डोगर एण्ड कंपनी
सनदी लेखाकार
आईसीएआई नं. 019516एन
(**स.ले.** मुनीष कौंडल)
एफसीए प्रॉप.
पार्टनर एम. न. 508733

शिमला
दिनांक : 21.06.2018

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31.3.2018 को मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिये अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र का तुलन पत्र

देनदारियां	**राशि**	**राशि**	**परिसम्पतियाँ**	**राशि**	**राशि**
पूंजी आरक्षित		7236129.00	स्थाई परिसम्पतियाँ (अनुसूची–1 के अनुसार)		7236129.00
चालू देनदारियां		3344131.01	चालू परिसम्पतियां, ऋण तथा अग्रिम		3344131.01
अनुदान सहायता	3256573.01		भा.स्टेट बैंक (बचत खाता सं. 10116686391)	340292.01	
संस्थान की फैलोज मैस को देय	13165.00		यूजीसी से प्राप्त करने योग्य सहायता अनुदान	2694048.00	
देय वेतन/मजदूरी	64670.00		ऋण तथा अग्रिम	309791.00	
देय लेखा परीक्षण शुल्क	9723.00				
कुल		**10580260.01**	**कुल**		**10580260.01**

हस्ता./–
(अविनाश सोलंकी)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(प्रेम चंद)
सचिव

हस्ता./–
(मकरंद आर. परांजपे)
निदेशक

आज दिनांक तक हमारी रिपोर्ट के अनुसार*

डोगर एण्ड कम्पनी
सनदी लेखाकार
आईसीएआई एफआरएन 019516एन
मुनीष कौंडल, सनदी लेखाकार
आईसीएआई एम. न. 508733

स्थान : शिमला
दिनांकः 21.06.2018

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31.3.2018 को मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिये अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र का आय–व्यय लेखा

व्यय	राशि (रूपये में)	आय	राशि (रूपयों में)
रखरखाव भत्ता	788809.00	प्रयुक्त अनुदान सहायता	3045542.50
सह–अध्येताओं का यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	762807.00	उपार्जित ब्याज	117105.00
शोध संगोष्ठी/अध्ययन सप्ताह/कार्यशाला	13165.00	अन्य आय	24470.00
प्रशासनिक एवं साचिविक सहायता (डाक, मैडिकल लेख सामग्री)	8482.00		
विविध व्यय	9592.00		
प्रशासनिक इकाई मजदूरी, समयोपरि भत्ता, यात्रा भत्ता/मंहगाई भत्ता	1437947.00		
वाहन का रखरखाव तथा चालू व्यय	140442.00		
वाहन का बीमा	15638.00		
ब्याज तथा बैक प्रभार	265.50		
लेखा परीक्षण शुल्क	9970.00		
कुल	**3187117.50**	कुल	**3187117.50**

हस्ता./–
(अविनाश सोलंकी)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(प्रेम चंद)
सचिव

हस्ता./–
(मकरंद आर. परांजपे)
निदेशक

आज दिनांक तक हमारी रिपोर्ट के अनुसार*

डोगर एण्ड कम्पनी
सनदी लेखाकार
आईसीएआई एफआरएन 019516एन
मुनीष कौंडल, सनदी लेखाकार
आईसीएआई एम. न. 508733

स्थान : शिमला
दिनांकः 21.06.2018

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के लिए अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र
स्थाई परिसम्मपतियों की अनुसूची (31.3.2018 को समाप्त वर्ष)

क्र.	विवरण	दिनांक 01.4.2017 को अथशेष	वर्ष के दौरान जोड़ी गई	वर्ष के दौरान घटाई गई	दिनांक 31.3.2018 को अंतशेष
1.	कम्प्यूटर	1764725.00	0.00	0.00	1764725.00
2.	विद्युत उपकरण	876816.00	0.00	0.00	876816.00
3.	फर्नीचर व स्थिर वस्तुएं	1192092.00	0.00	0.00	1192092.00
4.	पुस्तकालय व पुस्तकें	2809649.00	0.00	0.00	2809649.00
5..	नया वाहन	592847.00	0.00	0.00	592847.00
	कुल योग	**7236129.00**	**0.00**	**0.00**	**7236129.00**

हस्ता./–
(अविनाश सोलंकी)
लेखा अधिकारी

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिये अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र
प्राप्तियाँ एवं भुगतान (31.3.2018 को समाप्त वर्ष)

प्राप्तियां	राशि रूपये में	**भुगतान**	राशि रूपयों में
अथशेष		**राजस्व व्यय**	
भा.स्टेट बैंक में बचत खाता संख्या 10116686391	2765242.51	रखरखाव भत्ता	788809.00
		सह–अध्येताओं का यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	762807.00
प्राप्त राजस्व		प्रशासनिक इकाई मजदूरी, समयोपरि भत्ता, यात्रा भत्ता/मंहगाई भत्ता/मानदेय	1438711.00
उपार्जित ब्याज	117105.00	अन्य व्यय	9592.00
विविध आय	26068.00	वाहन का रखरखाव तथा चालू व्यय	137592.00
		वाहन का बीमा	15638.00
अन्य प्राप्तियां		ब्याज तथा बैक प्रभार	265.50
संसाधन पर कर की कटौती	825.00	व्यावसायिक शुल्क	247.00
मैस से प्राप्त प्रभार	499755.00		
विविध पेशगियां	150.00	**अन्य भुगतान**	
सहायता अनुदान	6479063.00	विविध पेशगियाँ	10500.00
		टीडीएस जमा	825.00
		संस्थान की मैस में जमा मैस प्रभार	499755.00
		देय लेखा परीक्षण शुल्क	9488.00
		भा.उ.अ.सं.	5873687.00
		अंतशेष	
		भारतीय स्टेट बैक खाता सं. 86391	340292.01
कुल	**9888208.51**	**कुल**	**9888208.51**

हस्ता./–
(अविनाश सोलंकी)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(प्रेम चंद)
सचिव

हस्ता./–
(मकरंद आर. परांजपे)
निदेशक

आज दिनांक तक हमारी रिपोर्ट के अनुसार*
डोगर एण्ड कम्पनी
सनदी लेखाकार
आईसीएआई एफआरएन 019516एन
मुनीष कौंडल, सनदी लेखाकार
आईसीएआई एम. न. 508733

स्थान : शिमला
दिनांकः 21.06.2018

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

सोसाइटी

1. प्रोफेसर कपिल कपूर
   अध्यक्ष, सोसाइटी
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   मोबाइल– 09810202146
   ईमेलः kkapoor40@yahoo.com

2. प्रोफेसर चमन लाल गुप्ता
   उपाध्यक्ष, सोसाइटी
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   मोबाइल : 9418141898
   दूरभाष : 0177–2830637
   ईमेल : guptcl@gmail.com

3. प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे
   निदेशक
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   दूरभाष : 0177–2830006 (का.) 2831275 (आ.) फैक्स : 2831389, 2830995
   ईमेलः director@iias.ac.in

नियम 3 (क) संस्थागत सदस्य (पदेन)

1. श्री आर. सुब्रमणयम, भा.प्र.से.
   सचिव
   उच्चतर शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   कमरा नं. 127, सी–विंग
   शास्त्री भवन
   नई दिल्ली–110015
   दूरभाषः 011–23386451, 23382698 (का.) 26979585,
   फैक्सः 011–23385807, 23381355
   ईमेलः secy.dhe@nic.in,

2. श्री अजय नारायण झा, भा.प्र.से.
सचिव, व्यय एवं वित्त
भारत सरकार
व्यय विभाग, वित्त मंत्रालय,
नार्थ ब्लाक केन्द्रीय सचिवालय, नई दिल्ली–110001
ईमेलः secyexp@nic.in

3. सुश्री इशिता रॉय
संयुक्त सचिव (आईसीआर)
उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
कमरा नं. 109–सी, शास्त्री भवन
नई दिल्ली–110015
दूरभाषः 011–23385915 फैक्सः 011–23074410
ईमेलः ishita.edu@gov.in

4. प्रोफेसर डी.पी. सिंह
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली–110002
दूरभाषः 011–23239628 (कार्यालय) फैक्सः 011–23231797
ईमेलः cm.ugc@nic.in

5. डा. शेखर सी. मान्डे
महानिदेशक
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद
रफी मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाषः 011–23710472, 23717053 (का.) फैक्सः 011–23710618
ईमेल: dgcsir@csir.res.in, dg@csir.res.in

6. डॉ. ब्रज बिहारी कुमार
अध्यक्ष
भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद
पोस्ट बाक्स न0 10528
अरूणा आसिफ अली मार्ग, नई दिल्ली–110067
दूरभाषः 011–26179679 (का.) 011–255454865 / 26717146 (आ.)
फैक्स : –011–26162516 / 26179836

7. प्रोफेसर अरविंद पी. जामखेड़कर
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
35 फिरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाषः 011–23386033, 23384869, फैक्स 23383421, 23387829, मोबाइलः 9415243954

8. प्रोफेसर रमेश चन्द्र सिन्हा
अध्यक्ष
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद
36 तुगलकाबाद इन्स्टीच्यूशनल एरिया
मेहरोली बदरपुर मार्ग, नई दिल्ली–110062
टेलीफैक्स : 011–29051762 / 29901503, 29901501; मोबाइल : 09013181940
फैक्स : 011–29964755; ईमेल : chairman@icpr.in

9. श्री बलदेओ भाई शर्मा
अध्यक्ष
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
नेहरु भवन, इन्स्टीट्यूश्नल एरिया, फेज–II
वसंतकुंज, नई दिल्ली–110070
दूरभाषः 011–26121880 (का.), मोबाइल : 09910052933
ईमेलः chairman@nbtindia.org.in

10. डॉ. चन्द्रशेखर कंबर
अध्यक्ष
साहित्य अकादमी
श्री सैम्पिज
नं. 44, प्रथम मेन, बनशंकरी तृतीय स्तर,
चौथा ब्लॉक, बेंगलुरू– 560085
मोबाइल : 09980559000
ईमेलः cbkambara@gmail.com

11. श्री शेखर सेन
अध्यक्ष
संगीत नाटक अकादमी
रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली–110001
दूरभाष 011– 24116375 / 76 फैक्स 011– / 23381621
ईमेल : chairman@sangeetnatak.gov.in

12. श्री के.एस. सेट्टी, भा.प्र.से.
प्रशासक
अध्यक्ष
ललित कला अकादमी
फिरोजशाह मार्ग,
नई दिल्ली–110001
दूरभाषः 011–23387241–43
ईमेलः chairman@lalitkala.gov.in; secretary@lalitkala.gov.in

13. श्री अजय कुमार सूद
अध्यक्ष
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी,
बहादुरशाह ज़फर मार्ग,
नई दिल्ली– 110002
दूरभाष– 011–22932340(का.)
ईमेलः president@insa.nic.in

14. प्रोफेसर सुनैना सिंह
उपाध्यक्ष
भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद
एन–38, पंचशील पार्क
नई दिल्ली–110017
दूरभाष : 011–233379309, 23379310
ईमेल : president.iccr@nic.in

15. प्रोफेसर पी.बी. शर्मा
अध्यक्ष, ए.आई.यू. भारतीय विश्वविद्यालय परिषद
16 कामरेड इन्द्रजीत गुप्ता मार्ग (कोटला मार्ग)
राष्ट्रीय बाल भवन के सामने, आईटीओ के समीप
नई दिल्ली– 110002
एवं
कुलपति
अमिटी विश्वविद्यालय हरियाणा
गुड़गांव (मनेसर) हरियाणा– 122413
मोबाइल : 09810146096
ईमेलः pbsharma@ggn.amity.edu ; vcauh@ggn.amity.edu

16. श्री श्रवण कुमार
महानिदेशक (अतिरिक्त कार्यभार)
राष्ट्रीय पुस्तकालय
वैलवैड्रे, अलीपुर, कोलकाता–700027
दूरभाष : 033–24792968 / 24791462
(का.) : फैक्स 033–24791462
ईमेलः nldirector@rediffmail.com

17. श्री श्रवण कुमार
महानिदेशक अभिलेखागार (अतिरिक्त कार्यभार)
राष्ट्रीय अभिलेखागार
जनपथ, नई दिल्ली–110001
दूरभाषः –011–23381396
ईमेल : archives@nic.in

18. श्री बी.के. अग्रवाल
मुख्य सचिव
हिमाचल प्रदेश सरकार
हिमाचल प्रदेश सचिवालय,
शिमला–171002
दूरभाषः 0177–2621022 (का.),2880714 (आ.) फैक्स : 2621813
ईमेलः cshp@nic.in

यदि आवश्यक हो तो संस्थागत सदस्य बैठकों में अपने मनोनीत प्रतिनिधियों को भेज सकते हैं।
नियम 3 (ख) नामित सदस्य
नियम 3 (ख) (1) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित भारतीय विश्वविद्यालयों के छः कुलपति

1. प्रोफेसर कुलदीप चंद अग्निहोत्री
कुलपति
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
हिमाचल प्रदेश–176206
दूरभाष – 01792–229330, फैक्स 229331
ईमेलः vc.cuhimachal@gmail.com

2. रिक्त

3. प्रोफेसर एस.के. श्रीवास्तव
कुलपति
नॉर्थ–ईस्टरन हिल यूनिवर्सिटी
शिलांग –793002
दूरभाष : 0364–2721003 / 2721004
फैक्स : 0364–2550076
ई–मेलः vcnehu@nehu.ac.in

4. प्रोफेसर बी. थिम्मेगोड़ा
कुलपति
कर्नाटक राज्य ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विश्वविद्यालय
गड़क, रैता भवन, जनरल करियप्पा सर्कल, गड़क
कर्नाटक –582101
दूरभाष : 08372–230338
फैक्स : 08372–297343
ई–मेलः vc.ksrdpru@gmail.com;btgowda@yahoo.co.in

5. प्रोफेसर अप्पा राव पोडिल़
कुलपति
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद–500046, तेलंगाना
दूरभाष : 040–23132000 / 23010121
मोबाइलः 9100655777
ई–मेलः podilerao@gmail.com;vc@uohyd.ac.in.

6. प्रोफेसर वसंत शिंदे
कुलपति
दक्षिण महाविद्यालय, स्नातकोत्तर एण्ड शोध संस्थान
पुणे–411006,
दूरभाष : 020–26513203
मोबाइलः 9923693795; 915888893
ई–मेलः vshinde.dc@gmail.com;vasant.shinde@dcpune.ac.in.

नियम 3 (ख) (2) के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा नामित 18 से 24 शिक्षाविद

1 प्रोफेसर कपिल कपूर
बी–2/332, एकता गार्डन
9– आईपी एक्सटेन्शन
मदर डायरी मार्ग, दिल्ली– 110092
दूरभाष : 011–22723406, मोबाइल : 9810202146
ईमेल : kkapoor40@yahoo.com

2. प्रोफेसर चमन लाल गुप्ता
विवके कुटीर, समरहिल
शिमला–171005
मोबाइल नं. 9418141898, दूरभाष : 0177–2830637
ईमेल : guptcl@gmail.com

3. प्रोफेसर जी.के. करंथ
प्राध्यापक समाजशास्त्र
सामाजिक परिवर्तन एवं विकास अध्ययन केन्द्र
इन्स्टिट्यूट फार सोशल चेंज एण्ड डिवेलपमेंट
बंगलोर–560072
मोबाइल : 7899837275; 9845731403
ईमेल : gk.karanth@gmail.com

4. प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा
प्राध्यापक एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ–250005, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0121–2764455, मोबाइल : 9412205348, 9458609921
ईमेल : sanjeevaji@gmail.com

5. प्रोफेसर पवन कुमार शर्मा
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ–250005, उत्तर प्रदेश
मोबाइलः 8989120208
ईमेल : pawansharmaccs@gmail.com

6. प्रोफेसर बी.के. कुठियाला
अध्यक्ष
हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद
हरियाणा

7. प्रोफेसर (डॉ.) जगबीर सिंह
डब्ल्यूजेड–707/सी, गली नं. 18, शिव नगर
जेल रोड़, नई दिल्ली– 110058
ईमेलः jagbir707@yahoo.com

8. प्रोफेसर राकेश कुमार मिश्रा
202, साई अपार्टमेंटस
सी–40, जे पार्क–II
महानगर एक्सटेन्शन, लखनऊ– 226006
मोबाइल– 8953809188

9. प्रोफेसर हिमाशुं प्रभा रॉय
603, आइवरी टॉवर, द रीट्रट कॉम्प्लैक्स
सैक्टर– 30, साउथ सिटी–1
गुड़गाँव– 122007, हरियाणा
दूरभाष : 0124–2381947
मोबाइलः 9811119084
ईमेल: hprayjnu@vsnl.com ; rayhimanshuprabha@gmail.com

10. प्रोफेसर डी. मुरली मनोहर
अंग्रेजी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय
डाक. केन्द्रीय विश्वविद्यालय
हैदराबाद–500046, तेलंगाना राज्य
दूरभाष : 040–231334069, मोबाइलः 9908569272
ईमेल: dmmpsh@gmail.com

11. प्रोफेसर शरद देशपाण्डे
13 खगोल वैज्ञानिक, सहकारी हाउसिंग सोसाइटी
38/1 पंचवटी पाषाण पुणे– 411008
ई–मेलः sharad.unipune@gmail.com

12. रिक्त

13. प्रोफेसर डी.एन त्रिपाठी
लीला निलायम, 99–ए, इंदिरा नगर
डाकघर– शियोपुरी, न्यू कलोनी
गोरखपुर–273016, उत्तर प्रदेश
मोबाइलः 9415282388, 9415243954
ईमेलः dayatripathi136@gmail.com , dntripathi@gmail.com

14. प्रोफेसर प्रेमा नंद कुमार
श्री अरबिंदो विद्वान
स्वामी विवेकानंद चेयर
महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, केरल– 686560
ईमेलः premnand@gmail.com

15 प्रोफेसर एस.के. चक्रवर्ती
पी–69, डायमण्ड पार्क
डायमण्ड हारवड़ रोड़
जोका, कोलकाता– 700104
दूरभाष : 033–65353677 मोबाइल : 9007116459
ईमेलः drdebangshu.chakraborty@gmail.com

16. श्री राजीव मल्होत्रा
संस्थापक, द इन्फिनिटी फाउंडेशन
174 नस्साउ एसटी
पीएमबी 400, प्रिस्टन, एनजे 08542
ईमेलः rajivmalhotra2007@gmail.com

17. डॉ. के.एस. कानन
107, विभावी
17थ मेन क्रॉस (न्यू 2बी क्रॉस)
मुनेश्वरा ब्लॉक, बंगलोर –560026
मोबाइल : 9900275255
ईमेलः ks.kannan.2000@gmail.com

18. प्रोफेसर शांतिश्री धुलीपुडी पण्डित
राजनीति एवं लोक प्रशासन
पुणे विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र– 411007
दूरभाष : 91 20–25410519 / 65203772
ईमेलः shantishreepandit@gmail.com

19. प्रोफेसर जी. नागेश्वर राव
कुलपति
आन्ध्र प्रदेश विश्वविद्यालय
विशाखापटनम– 530003, आन्ध्र प्रदेश
दूरभाष : 0891–2844333 / 4222
फैक्स : 0891–2525611
ईमेल (का.): vicechancellor@andhrauniversity.edu.in
ईमेल (नि.): gollapallinr@yahoo.com

20. प्रोफेसर गुरूराज कराजगी
संस्थापक एवं अध्यक्ष
अकैडमी फॉर क्रिएटिव टीचिंग (एसीटी)
बंगलुरू– 560032
दूरभाष : 080– 41697855, 41697855 / 23439822 (का.) / 23331748 (आ.)
मोबाइल : 9663611221
ईमेलः gururaj.karajagi@actedu.in

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

शासी निकाय

1. प्रोफेसर कपिल कपूर
   अध्यक्ष, शासी निकाय
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   मोबाइल– 09810202146
   ईमेलः kkapoor40@yahoo.com

2. प्रोफेसर चमन लाल गुप्ता
   उपाध्यक्ष, शासी निकाय
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   मोबाइल नं. 9418141898
   दूरभाष : 0177–2830637
   ईमेलः guptcl@gmail.com

3. प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे
   निदेशक
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   दूरभाष : 0177–2830006 (का.) 2831275 (आ.) फैक्स : 2831389, 2830995
   ईमेलः director@iias.ac.in

मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा वित्त मंत्रालय से एक–एक प्रतिनिधि

1. श्री आर. सुब्रमणयम, भा.प्र.से.
   सचिव
   उच्चतर शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   कमरा नं. 127, सी–विंग
   शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110015
   दूरभाषः 011–23386451, 23382698 (का.) 26979585,
   फैक्स : 011–23385807, 23381355
   ईमेलः secy.dhe@nic.in,

2. सुश्री दर्शन एम डबराल
सयुंक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार
माध्यम एवं उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
120–सी, शास्त्री भवन
नई दिल्ली–110015
दूरभाषः –011–23382696 फैक्सः – 011–23070668
ईमेलः jsfa.edu@gov.in

पांच संस्थागत सदस्य

1. प्रोफेसर डी.पी. सिंह
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली–110002
दूरभाषः 011–23239628 (कार्यालय) फैक्सः 011–23231797
ईमेलः cm.ugc@nic.in

2. डॉ. ब्रज बिहारी कुमार
अध्यक्ष
भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद
पोस्ट बाक्स न0 10528
अरूणा आसिफ अली मार्ग
नई दिल्ली–110067
दूरभाषः 011–26179679 (का.) 011–255454865 / 26717146 (आ.)
फैक्स : –011–26162516 / 26179836

3. प्रोफेसर रमेश चन्द्र सिन्हा
अध्यक्ष
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद
36 तुगलकाबाद इन्स्टीच्यूशनल एरिया
मेहरोली बदरपुर मार्ग
नई दिल्ली–110062
टेलीफैक्स : 011–29051762 / 29901503, 29901501; मोबाइल : 09013181940
फैक्स : 011–29964755; ईमेलः chairman@icpr.in

4. डा. शेखर सी. मान्डे
महानिदेशक
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद
रफी मार्ग
नई दिल्ली–110001
दूरभाषः 011–23710472, 23717053 (का.)
फैक्सः 011–23710618
ईमेलः dgcsir@csir.res.in, dg@csir.res.in

5. प्रोफेसर अरविंद पी. जामखेड़कर
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
35 फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली–110001
दूरभाषः 011–23386033, 23384869, फैक्स 23383421, 23387829, मोबाइलः 9415243954

यदि आवश्यक हो तो संस्थाग सदस्य बैठकों में अपने प्रतिनिधि भेज सकते हैं।

नियम 3 (ख) (1) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित दो उप–कुलपति

1. रिक्त

2. प्रोफेसर एस.के. श्रीवास्तव
कुलपति
नॉर्थ–ईस्टरन हिल यूनिवर्सिटी
शिलांग –793002
दूरभाष : 0364–2721003 / 2721004
फैक्स : 0364–2550076
ईमेलः vcnehu@nehu.ac.in

नियम 3 (ख) (2) के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा नामित चार सदस्य

1. प्रोफेसर चमन लाल गुप्ता
विवके कुटीर, समरहिल
शिमला–171005
मोबाइल नं. 9418141898
दूरभाष : 0177–2830637
ईमेलः guptcl@gmail.com

2. प्रोफेसर जी.के. करंथ
प्राध्यापक समाजशास्त्र
सामाजिक परिवर्तन एवं विकास अध्ययन केन्द्र
इन्स्टिट्यूट फार सोशल चेंज एण्ड डिवेलपमेंट
बंगलोर–560072
मोबाइल : 7899837275; 9845731403
ईमेलः gk.karanth@gmail.com

3. प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा
प्राध्यापक एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ–250005, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0121–2764455
मोबाइल : 9412205348, 9458609921
ईमेलः sanjeevaji@gmail.com

4. प्रोफेसर गुरूराज कराजगी
संस्थापक एवं अध्यक्ष
अकैडमी फॉर क्रिएटिव टीचिंग (एसीटी)
बंगलुरू– 560032
दूरभाष : 080– 41697855, 41697855 / 23439822 (का.) / 23331748 (आ.)
मोबाइल : 9663611221
ईमेलः gururaj.karajagi@actedu.in

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

वित्त समिति

1. प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे
   निदेशक — अध्यक्ष
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005
   ईमेलः director@iias.ac.in

2. सुश्री दर्शन एम डबराल
   सयुंक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार — सदस्य
   माध्यम एवं उच्चतर शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   120–सी, शास्त्री भवन
   नई दिल्ली–110015
   दूरभाषः –011–23382696 फैक्सः – 011–23070668
   ईमेलः jsfa.edu@gov.in

3. प्रोफेसर अरविंद पी. जामखेड़कर — सदस्य
   अध्यक्ष
   भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
   35, फिरोजशाह रोड़, नई दिल्ली–110001

4. प्रोफेसर (डॉ.) जगबीर सिंह — सदस्य
   डब्ल्यूजेड–707/सी, गली नं. 18, शिव नगर
   जेल रोड़, नई दिल्ली– 110058
   ईमेलः jagbir707@yahoo.com

5. प्रोफेसर शरद देशपाण्डे — सदस्य
   13 खगोल वैज्ञानिक, सहकारी हाउसिंग सोसाइटी
   38/1 पंचवटी पाषाण पुणे– 411008
   ईमेलः sharad.unipune@gmail.com

ANNUAL REPORT

2017–18

Contents

Sl. No.	Particulars	Page
	Foreword	3
	Director's Note	5
	Background	7
I	Administration	8
II	Fellows in Position	8
III	Academic Activities	10
	A) Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture	10
	B) Seminars, Conferences, Symposia and Round Tables	11
	C) Weekly Seminars by Fellows	60
	D) Monographs Received from Fellows	62
	E) Visiting Professors	63
	F) Visiting Scholars	64
	G) Guest Fellows	65
	H) Inter-University Centre for Humanities and Social Science	65
IV	Library	70
V	Publication	71
VI	Sales and Public Relations	73
VII	Dispensary	74
VIII	Internal Complaint Committee	75
IX	RTI	75
X	International Yoga Day	75
XI	Vigilance Awareness Week	75
XII	Swachhata Pakhwada	75
XIII	Estate	76
XIV	Horticulture	76
XV	Official Language	78
XVI	Accounts and Budget	79
XVII	Audited Statement of Accounts of IIAS	80
XVIII	Audited Statement of Accounts of Inter-University Centre (IUC)	118
XIX	List of IIAS Society, Governing Body and Finance Committee	123

FOREWORD

I am very happy and feel privileged to write this Foreword for the Indian Institute of Advanced Study, Shimla Annual Report for the year 2017-18. It is evident during the Institute implemented a number of academic activities and various administrative initiatives. Several eminent Fellows joined and involved themselves, as the continuing Fellows did in serious research. Various seminars and workshops had also been conducted over a year in multifarious themes fundamental and applied. I am sure this work reinforces the high reputation of the Institute.

We are indebted to the generous support of the Secretary and other officials of the Department of Higher Education, Union Ministry for Human Resource Development for their support.

I must express my thanks to Professor Ajit Kumar Chaturvedi, the then Director, the present Director Professor Makarand R. Paranjape and other officials, especially Shri Prem Chand ji, the officiating Secretary of the Institute for their dedication which enabled the Institute to fulfill the dreams of the venerated academician and former President of India, Professor Radhakrishnan during the period under report. Continue its good work.

I am glad to share that the Institute is moving forward in the objectives of the Institute as enshrined in its Memorandum of Understanding. The Governing body in its Meeting held on January 22, 2019, decided to establish the Centre of Indian Civilization. Besides, distinguished lectures and seminars were held on themes of Indian Civilization and the Indian Knowledge System.

I pray that the Institute progresses affirmatively in the coming years as well.

Kapil Kapoor
President of Society
& Chairman, Governing Body

DIRECTOR'S NOTE

Professor S. Radhakrishnan observed in his inaugural address on 20th October 1965 that 'Whether what has come down to us as truth, is in fact true or requires some kind of modification'; to which he declared: 'We should not be prisoners of the status quo.' It is important to point out that the Indian Institute of Advanced Study, Shimla has remained committed to its original objective of enabling outstanding scholars to explore fundamental concepts and significant issues that deeply affect humanity. The Institute encourages its eminent scholars to explore the horizons in all fields of knowledge and dig out the most precious gemstones of intellect to polish them with their remarkable sagacity. The IIAS has complete academic freedom where scholars in residence from India and abroad – belonging to a diverse range of disciplines – engage in the exploration of ideas and in debate and discussion that is stimulating, substantial and inclusive.

Evaluating the attainment and collapses of the year passed 2017-18, IIAS as an Institute that is a bearer of an age-old legacy of culture and aesthetics, closely observes the aspects of activities undertaken in all genres of organizational enhancement. The Fellowship programme is especially important for the Institute. Eminent and outstanding scholars work on their respective projects and submit the outcome to the Institute for publication. I am happy to state that the Institute has published twenty-two Books and three Journals. The Institute organised a large number of academic interactions and research programmes in the form of seminars, conferences, workshops and study weeks during the period of report. The 22nd Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture on '**Weaving India's *MAHAKATHA* (Grand Narrative) for the 21st Century**' delivered by Shri Rajiv Malhotra, Chairman, Infinity Foundation, USA was a great success. Numerous Visiting Professors, Visiting Scholars and Guest Fellows from different academic disciplines during their stay at the IIAS also delivered lectures on different topics.

The Institute is housed in an impressive heritage building erstwhile the Viceregal Lodge needs special care. Efforts are being made to upkeep the building keeping in view of its heritage character. The Archaeological Survey of India and the CPWD are the maintenance agencies. Consistent efforts are in progress to maintain and renovate the monumental building. The horticulture department nurtures the impeccable gardens with a variety of foliage that needs

constant care and supervision. The flora and fauna of the institute along with the gothic beauty of the heritage building serve as the most amiable host to the tourists world-wide. The ambience of the institute pulls the scholars towards nature, defamiliarizing their mechanised perception of the world and helps in the emergence of new humanistic sensibilities.

The success that the Institute achieved in opening a window of research and knowledge sharing at global levels would not have been possible without the support of Professor Kapil Kapoor, the Chairman of the Governing Body and President of the Society. I thank him for his valuable suggestions and unconditional cooperation. The fellows and staff of the institute serve as the latent catalysts for the growth of academic and administrative arena. Last but not the least, I express my heartfelt gratitude to the Union Ministry of Human Resource Development for providing the resources and administrative suggestions to run the Institute effectively and efficiently.

Makarand R. Paranjape

Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA - 171 005

ANNUAL REPORT FOR THE YEAR 2017-18

The Indian Institute of Advanced Study Society was established on 6th October 1964, under the Societies Registration Act XXI of 1860 (Punjab Amendment) Act 1957. Located at the Rashtrapati Nivas, Shimla, the Institute is devoted to higher levels of research, primarily in the areas of Humanities and Social Sciences. The academic community at the Institute consists mainly of Fellows in residence, Visiting Professors, Visiting Scholars, and Associates etc. who pursue their individual research and interact with each other, both formally and informally. Rashtrapati Nivas itself, and the natural surroundings which constitute the estate, provides an ambience conducive to living a life of the mind and exploring the different facets of the human condition.

The Institute's Memorandum of Association offers its perspective on research which is that:

(a) The areas of investigation should promote inter-disciplinary research;

(b) The areas identified should have deep human significance.

The Memorandum of Association also spells out the areas of study, which are:

(a) Social, political and economic philosophy;

(b) Comparative Indian literature (including ancient, medieval, modern folk and tribal);

(c) Comparative studies in philosophy and religion;

(d) Education, culture, arts including performing arts and crafts;

(e) Fundamental concepts and problems of Logic and Mathematics;

(f) Fundamental concepts and problems of natural and life sciences;

(g) Studies in environment – both natural and social;

(h) Indian Civilisation in the context of its Asian neighbours and the world; and

(i) Problems of contemporary India in the context of national integration and nation-building.

The Memorandum mentions that special attention should be given to:

(a) Theme of Indian unity in diversity;

(b) Integrality of Indian consciousness;

(c) Philosophy of education in the Indian perspective;

(d) Advanced concepts in natural sciences and their philosophical implications;

(e) Indian and Asian contribution to the synthesis of science and spirituality;

(f) Indian and human unity;

(g) 'Companions' to Indian Literature;

(h) Comparative studies of the Indian epics; and

(i) Human Environment.

I. ADMINISTRATION

During the year under report, the Indian Institute of Advanced Study Society and its Governing Body was headed by Professor Kapil Kapoor. The members of the Society and the Governing Body are eminent persons drawn from different walks of life. The Institute has a Finance Committee, which includes representatives from the Ministry of Human Resource Development, besides other members from the Society and Governing Body of the Institute to advise the Governing Body on financial matters.

The Institute is headed by a Director who is assisted by a Secretary and other officers. Professor Ajit Kumar Chaturvedi was the Director during the period of report.

II. FELLOWS IN POSITION

The Fellowship programme is the flagship programme of the Institute. National Fellows, Fellows and Tagore Fellows reside at the Institute and pursue research on their respective research projects. Their tenure is for a maximum period of two years. At the end of their term the Fellows submit a monograph which, if found suitable for publication, is published by the Institute. They are also required to take part in seminars, discussions and deliberations during their stay at the Institute. In 2017-18, the following National Fellows, Tagore Fellows and Fellows were in position:

Sl. No.	Name of Scholars	Research Project
1.	Professor Nirmal Sengupta National Fellow	*The Transition Paradigm of Traditional Knowledge Management and Governance System.*
2.	Professor Vijaya Shankar Varma National Fellow	*Translation of a manuscript in the KhudaBaksh Library in Patna on the "Rays of Light" by the Arab Philosopher and Scientist Al-Kindi.*
3.	Dr. Martin Kampchen Tagore Fellow	*Rabindranath Tagore and Paul Geheeb: Their personal Relationship and convergence of Education Ideas*
4.	Dr. B. Ravichandran Fellow	*Language, Caste and Territory: Language Spoken by the Scavenging Communities in South India*

5.	Dr. Jyoti Sinha Fellow	*Challenges and Attainments of 'Thumari Singers' in the Custom of Banarsi.*
6.	Dr. Arpita Mitra Fellow	*Vedanta in Modern Times:Re-Interpreting Swami Vivekananda".*
7.	Dr. Amba Kulkarani Fellow	*Sanskrit Parser based on the Theories of Shabdabodha.*
8.	Dr. Gowhar Yaqoob Fellow	*Shaping a Literary Space: The Discourse of Identity and Use of Kashmiriyat as a Category in early Literary History of Kashmiri.*
9.	Shri Samir Banerjee Fellow	*Reinterpreting Gandhian Thought by Contemporary Civil Society Initiatives.*
10.	Dr. Pradeep Kumar Nayak Fellow	*Towards Guaranteeing Land Titling (Secure Property Rights) in India: A Study.*
11	Professor Jagdish Lal Dawar Fellow	*History of Food in Northeast India-Mizoram since Pre-colonical Times*
12.	Dr. RatnakarTripathy Fellow	*A Comparative study of the regional music industries in Hindi-speaking India: with special focus on Himachal Pradesh, Bihar and Haryana*
13.	Ms. Prachi Dublay Fellow	*Towards a theoretical framework of Adivasi Music: Studying the Musical Tradition of RathwaAdivasi, a representative tribe living on borders of Madhya Pradesh, Gujarat and Maharashtra*
14.	Dr. Sumanyu Satpathy Fellow	*In Print: The Role of the Early Periodical Press in Shaping Modern Odia Literary Culture*
15.	Dr. R. Lalitha Raja Fellow	*Significance of Optimality Theory in Phonological Acquisition and in Assessment and Intervention of Phonological Disorders.*
16.	Dr. Bindu Menon Mannil Fellow	*"Morality Tales in Transnational Media Scapes: Social Reform and Migration in Malabar Home Films".*
17.	Dr. Aditya Pratap Deo Fellow	*Writing Trans-temporality into History: Time and Politics in the Oral Traditions of the Mixed Tribe-Caste Communities of the Princely State of Kanker, Southern Chhattisgarh*
18.	Dr. Leon Morenas Fellow	*Mohallas and Smart Cities: Post-Colonial Development in Delhi.*
19.	Professor Triloki Singh Fellow	*Bouncing and Cyclic Models of the Universe*

20.	Dr. Anand Kumar, Fellow	*India: Between Democratic Nation-building and Dominant Castes' Democracy*
21.	Professor K. M. Baharul Islam, Fellow	*Migrant Muse: The Third Space in Assamese Literature*
22.	Professor Madhavan Punappurath, Fellow	*Decanonizing Bhartrhari: An Exploration in to Sanskrit Grammatical Tradition.*
23.	Dr. J. Rangaswami, Fellow	*A Translation and Commentary upon Tiruv°Ymoîi of Namm°Îv°R with Its ±×U 36,000 Pa×I Commentary of Va×Akkutiruv±Tipââai into English*
24.	Dr. Girija kizhakke Pattathil, Fellow	*Knowledge and Subjects: Situating Ayurveda through Life Stories of Practitioners.*
25.	Dr. Ajay Kumar, Fellow	*Dalit asmitavadi eithas lekhan: vaklpik adhinsath smajshastr ki talash me (ek smikshatmk mulyakn.*
26.	Dr. Mathew Akkanad Varghese, Fellow	*"Globalising States: The Metaphors from Ecologies in the Making."*
27.	Shri Ashutosh Bhardwaj, Fellow	*Novel Research on Classical and Contemporary Literary Theories and Devices.*
28.	Dr. Dambarudhar Nath, Fellow	*Nirguna Bhakti in Eastern India: Ideology, Protest and Identity –Study of the Mayamara Sub-Sect of Assam.*
29.	Dr. Manisha Chowdhary, Fellow	*The History of Thar::Environment Culture & Society*
30.	Dr. Rekha Chaudhary, Fellow	*Social Diversity and Political Divergance in Jammu and Kashmir Identifying the Complexity of Conflict Situation and the Format for its Restoration*
31.	Dr. Sanghamitra Sadhu, Fellow	*"Speaking Subjects: Life –Writing from Below"*
32.	Dr. Rama Shanker Singh, Fellow	*Natural Resources and Marginal communities: Social and Culture Symbosis of Rivers and Nishadas in Pre-colonial India.*

III. ACADEMIC ACTIVITIES

The following academic activities were organized during the period under report:

(A) DR. SARVEPALLI RADHAKRISHNAN MEMORIAL LECTURE

The Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture is amongst the most important academic activities of the Institute. The 22nd Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture on '**Weaving India's *MAHAKATHA* (Grand Narrative) for the 21st Century**' was delivered by Shri Rajiv

Malhotra, Chairman, Infinity Foundation, USA at the India International Centre, New Delhi on 20 March 2018. Professor Ajit K. Chaturvedi, Director, IIAS welcomed the speaker and the audience. Professor Kapil Kapoor, Chairman, IIAS gave the Presidential Address. Shri Prem Chand, Librarian, holding additional charge of the post of Secretary of the Institute proposed the Vote of Thanks.

(B) SEMINARS, CONFERENCES, SYMPOSIA AND ROUND TABLES

Several seminars and conferences were organized by the Institute during this period. They are listed below along with the academic rationale that as spelt out in the concept note prepared by the respective conveners/co-conveners. Also mentioned with each report of the seminar are the names of participants and the sessions that were organized in each seminar.

The concept note of each seminar is placed on the website of the Institute and a call for papers is announced simultaneously on the website. In addition to inviting eminent scholars who have already made significant contribution to the subject matter of the proposed seminar, an effort is thus made to reach out to interested scholars working on the concerned topic. The number of younger scholars responding to this call for papers has been quite good. With growing publicity the quality of responses has also improved considerably.

The following were the seminars organized by the Institute:

1. National Seminar on 'Indian Literature and Social Development: Theory, Practice and Community Impact' (05-07 April 2017)

Rationale: Literature is known to resonate with the social conditions prevailing in a time and place. The writer's art is linked to a context and history in a myriad ways, some of which are narratives of communities, heroism of individuals, human relations, representations of events, biographies and ideologies. While critical work on Indian literature has copiously studied subjects of a range such as class, caste, gender, poverty, socio-economic compulsions, family, romance, and communities, a comprehensive and integrated analysis of creative literature across time and across languages has not been attempted much. The reason lies in the complexity of plotting such a matrix.

The proposed seminar focused on the link between Indian social history and Indian literature charting the interactions between community life and creative writing. Not keeping only to mainstream and selected few texts from well-known writers, the seminar will expect to present a pan Indian perspective with a greater representation given to Indian languages and translations than is usual. In other words, the purpose is to build a platform for intellectual discussion on literature and social transformation. The scope of the seminar will be to explore historical periods, languages, emancipatory moments, national movement, dalit uprising, alternative sexualities and other such significant topics. The social and cultural impact of literature will be the focus.

Context of Theoretical Frameworks

The relation between society and literature in contemporary theory has been explored through a few key perspectives which remain in dialogue with each other. Lucas George Lukács in '*The Theory of the Novel'* (1914-1915) coined the phrase 'transcendental homelessness', and defined this as 'longing of all souls for the place in which they once belonged, and the 'nostalgia' for utopian perfection.' His arguments about class consciousness and dialectical materialism led to a modification of his earlier stand and built his evolutionary thoughts on 'historical realism' (1938). From that to the cultural materialist approach of Raymond Williams (*Culture and Society*, 1958) marks an irreversible track wherein society, literature and culture become inextricably linked. In parallel, the work of Michel Foucault in France, especially the text *Madness and Civilization* (1961) brought psychology into the ambit of discussing social construction of culture and language, making thereby a philosophical base for challenging the assumptions of 'normalcy', exclusions and inclusions.

The influence of the European thinkers found its resonance in India in the exploration of social reality that was structured rather differently from the West, caste being a major factor in the discourse of power. The early works of Ashis Nandy, for instance, began to critique the colonial imperatives that were assumed to have shaped Indian polity and he advanced the view that the counterforce of tradition interfered with the social constructions that were imposed by the decisions of colonial administration. Nandy, with his theory of the 'intimate enemy' (1983) has continued to delve into the intricacies of Indian literature and culture to attempt mapping a collective as well as individual psyche in interest groups in India, his work on cinema being an outstanding example.

Mention must also be made of Sudhir Kakar's work which also examines the impact of colonial history and moves further into unravelling what stands paradoxically between one's aspirations and achievements, as in The *Inner World: A Psycho-analytic Study of Childhood and Society in India* (1978). Later too, as in the collection titled '*The Indian Psyche'* (1996) the canvas of analysis is the poly layered Indian society and a clash of interest exists between development goals and individuated, culturally determined circumstances.

In other words, the history of thinking on the subject of 'literature and social development' showed some common theoretical frameworks in Marxist ideology but the Indian aspect of social stratifications led to thought provoking modifications, and the creation of regional paradigms.

The Contentions, West and East

By the 1980s, the emergence of postmodernist Indian Writing in English, specially the appearance of Salman Rushdie's '*Midnights Children'* (1981), signaled a confident literary and social identity by which the colonial past was brutally subjected to questioning. The voice from

other languages in India was equally strong as in the work of Hindi writer Namwar Singh and Marathi writer Bhalchandra Nemade. Accepting the frame of Marxism but innovating within it, both the stalwarts created fresh vocabulary and concepts that rang true to their generation of readers. Nemade's theory of 'Deshivad'/Nativism (2009), a term that negates English language learning and globalisation wishes to emphasize native heritage and history. At some levels the commonality with Indian English critics may be worth considering. Aijaz Ahmad's bold incursions against the hegemonic control of Frederic Jameson is well known but let us recount that his book '*In Theory: Classes, Nations, Literatures'* (1992) sharply rebuts the vocabulary and capitalist thought processes of a certain kind of American scholarship and interprets imperialism from a South Asian viewpoint.

Local and Global Issues Now

In a world saddened by the politics of trauma and terror, rendered helpless by climate change, beset with imbalances in equity principles, scholars in the 'west' and the 'east' are no longer as separated by ideological frameworks. Literature is recognized as a powerful tool for social analysis. Zizek's notion of 'ideological fantasy' has influenced a wealth of interpretations that keep the 'political community' at the core. Borders and boundaries are fluid entities when migration, displacement, wars and refugee conditions move human subjects in the largest numbers ever known in history. Concomitant upon such transitions are changes in culture and in literary articulations. Furthermore, in a world troubled by more questions than it has answers for, a revival of interest in the philosopher Jacques Rancière is perceptible. His book '*The Ignorant Schoolmaster: Five Lessons in Intellectual Emancipation'* (1991) was written for educators and educators-to-be. It strongly advocates a breakaway from conventional learning into a self-learning mode because institutions carry no meaningful history for the immigrant or the compelled traveller.

Should one add to this the voice of Ganesh N. Devy, the language activist who is bravely carrying out a nationwide People's Linguistic Survey of India? Recuperating the roots of several languages in the post Sanskritik era, he reminds us of the lost links in the chain of Indian dialects and seeks to bring dignity to the undocumented oral traditions of this country. Devy's essays '*The Being of Bhasha'* and *'Countering Violence'* pose a link between lost languages and the influence of globalization (*The G.N. Devy Reader*, 2009). If the cultural diversity of India is surrendered, he sees little hope in the possibility of social cohesion and peace.

The Objectives of the National Seminar

- To present theoretical frameworks that will examine the current discourse on Indian literature and social development.
- To explore linkages between specific literary histories of Indian languages and regional histories

- To share specific research in this area based on in-depth study or field work with literary/ cultural material.
- To foreground translated material from Indian languages.
- To consider interdisciplinary methods for such explorations combining tools of research in Humanities as well as Social Sciences.
- To establish the current quality of scholarship and intellectual enquiry in this subject.
- To envisage a book publication based on the papers presented.

Themes for presentations are indicated below but should not be limiting:

1. Linkages between specific literary histories of Indian languages and regional histories
2. Bhakti literature
3. Sufi literature and its social contexts
4. The Progressive movement
5. Nation and Narration
6. Rethinking Gender
7. Evolving Society and changing aesthetic paradigms
8. Study of specific literary movements with their social implications
9. Literary texts/ authors that have caused attitudinal change in society
10. Literature and Class
11. Cultural diversity
12. Impact of globalisation on Indian Literature
13. Literature of trauma, terror, and conflict zones
14. Literature and Eco-aesthetics
15. Tribal/ Adivasi Awakening
16. Dalit Literature and Politics of change
17. The Region and the Nation
18. Translation for social impact
19. Linguistic Plurality
20. Literature and the social impact of Visual and Performing Arts.

A National Seminar on *'Indian Literature and Social Development: Theory, Practice and Community Impact*' was organised in collaboration with the Sahitya Akademi, New Delhi during

05-07 April 2017 at IIAS. Professor Malashri Lal, English Advisory Board of the Sahitya Akademi, New Delhi and Professor Sumanyu Satpathy, Fellow, IIAS were the Conveners of the seminar. The welcome address was given by Professor Vijaya Shankar Varma, National Fellow, IIAS and Dr. K. Sreenivasarao, Secretary, Sahitya Akademi, New Delhi. Professor Malashri Lal, Convener of the seminar gave introductory remarks. The Inaugural Address was given by Dr. Sudhir Kakar, Psychoanalyst, Novelist, Scholar, Benaulim, Goa.

PARTICIPANTS:

- Professor Akshaya Kumar, Panjab University, Chandigarh
- Mr. Santanu Gangopadhyay, Sahitya Akademi, New Delhi
- Professor Jyotirmaya Tripathy, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Madras
- Dr. Himadri Roy, School of Gender and Development Studies, Indira Gandhi National Open University, New Delhi
- Dr. Kaustav Chakraborty, Southfield College, Darjeeling
- Ms. Arunabha Bose, Vivekananda College, University of Delhi, Delhi
- Dr. Simran Chadha, Department of English, Dayal Singh College, University of Delhi
- Professor Moon Moon Mazumdar, Professor of English, North-Eastern Hill University, Shillong, Meghalaya
- Ms. Anandita Pan, Research Scholar of English, Indian Institute of Technology, Kanpur, Uttar Pradesh
- Ms. Ragini Kapoor, M.Phil Scholar, Department of Modern Indian Languages and Literary Studies, University of Delhi
- Professor Shail Mayaram, Centre for the Study of Developing Societies, Delhi
- Dr. Reba Som, Senior Fellow, ICSSR
- Professor Satish C. Aikant, Basant Watika, Kulri, Mussoorie
- Ms. Namita Gokhale, C5/15 SDA, Hauz Khas, New Delhi
- Professor Vinita Dhondiyal Bhatnagar, Department of English, University Institute of Technology RGPV, Bhopal, Madhya Pradesh
- Dr. V. Deepa, Department of English, Shaheed Bhagat Singh College, Sheik Sarai, New Delhi
- Dr. Martin Kämpchen, Tagore Fellow, IIAS
- Dr. Nirban Manna, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology (Indian School of Mines), Dhanbad

- Dr. R. Umamaheshwari, Former Fellow, IIAS, Shimla
- Professor Bettina Sharada Bäumer, National Fellow, IIAS
- Dr. Prem Kumari Srivastava, Maharaja Agrasen College, University of Delhi
- Ms. Priya Surukai Chabria, 6, Bellavista, 40/9 Eran Lawane, Pune
- Professor Anita Balakrishnan, Department of English, Queen Mary's College, Chennai
- Mr. Rama Shanker Singh, G. B. Pant Social Science Institute, Allahabad
- Dr. Rohit Phutela, Department of English, DAV College, Sector 10 D, Chandigarh
- Dr. Pandurang Kashiram Bhoye, Department of Politics and Public Administration, Savitribai Phule Pune University, Pune
- Professor Chetan Singh, Former Director, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Namita Gokhale: *Remembering Kumaon, Recording Kumaon.*

Priya Sarukkai Chabria: *Evolving an aesthetic of rupture and rapture.*

Session II

Reba Som: *Sister Nivedita's Web of Indian Life (1903) – A Narrative for Nation Building.*

Ragini Kapoor: *The Indian Visual Artist and Socio-Cultural Contexts of the Indian Art.*

Vinita Dhondiyal Bhatnagar: *Writers for Change: A History and Account of the Progressive Writers Association.*

Session III

Moon Moon Mazumdar: *The Politics of Representation in Select Works of Fiction from India's Northeast.*

Nirban Manna: *Interrogating Applied Theatre as a Tool for Capacity Building in Contemporary Bengal: A Case Study.*

Session IV

Martin Kämpchen: *Rabindranath Tagore's Worldwide Reception – A Critical Overview.*

Shail Mayaram: *A literary genealogy of right-wing nationalism.*

Jyotirmaya Tripathy: *The Production of Literary Values in Contemporary India.*

Session V

Satish Aikant: *India and Europe: Nirmal Verma as a Critical Insider*

Anandita Pan: *Writing the Self: Autobiographies and the Politics of Change*

Arunabha Bose: *The engendering of a subaltern historiography in the Palamau fiction of Mahasweta Devi.*

Session VI

Akshaya Kumar: *Progressive Punjabi Poetry: From Lok Yudha to Dharmayudha.*

Himadri Roy: *Torn Between Emotions: A Critical Analysis of Bisexuality in Rao's* Lady Lolita's Lover.

Rama Shanker Singh: *Life, language and politics of nomads of Uttar Pradesh: An empirical study.*

Session VII

Simran Chadha: *Refracted Witnessing: Narratives from the Valley.*

Rohit Phutela: *Finding Agency, Combating the Collective Trauma: Balbir Madhopuri's* Against the Night.

Session VIII

Prem Kumari Srivastava: *Ontological articulations of the folk: Deshivad and the Barahmasa of North India.*

Pandurang Kashiram Bhoye: *Literature on Adivasis Awaking in Maharashtra.*

Anita Balakrishnan: *Requiem for a Tribe: Environmental Ethics and Ethnography – Rereading Rajam Krishnan's* when the Kurinji Blooms.

Valedictory Session

Kaustav Chakraborty: *In Search of an Endogenous Eco-masculinity: A Journey through Select Tribal Tales and the Green Poems of Gulzar.*

V. Deepa: *The poetics and politics of 'Jallikattu' in C.S.Chellappa's* Vaadivaasal/Arena.

2. International Seminar on 'Regional Cultures and New Media Technologies'. (26-28 April 2017)

Rationale: The National Seminar on *'Regional Cultures and New Media Technologies'* was an attempt to address the cultural continuum that lies between the local/immediate, the national capital or cultural production hubs and the many linkages in the vast web that connects them. The term 'regional' used here is not the same as 'peripheral' if one were to follow the mainstream vs margins discourse. We take the term 'Region' as inherently 'unsteady', 'diffuse' and are constantly reformulated by linguistic, cultural and geo political communities.

More empirically, the context for this conference was the remarkable growth in the regional or local forms of cultural expressions since the rise of new technologies in the last four decades. This marks not only a shift from the analog format to the digital, but also the rise of the global web through the internet. For example, the growth of Bhojpuri cinema and music among several other languages and dialects in the Hindi heartland and other regions such as the distant Ladakh, Manipur, Mizoram or Malappuram in Kerala are surely evidences of the new opportunities of empowerment that the digital media has provided. This could only have been achieved through technologies - cell phones, thumb drive – laptop/notebook and even live concerts where the gigantic video projections allow large audiences to enjoy the proximity of the performer in ways akin to small and exclusive cultural gatherings.

The story of growth among the regional languages and cultures is however not linear – much is being lost even as much is gained. Empirical evidence from the field suggests that the regional languages and cultures are also going through a process of reorientation and modification or are altogether shedding old forms and canons. The regional languages and cultures are also absorbing influences from the 'mainstream' as well as the adjacent cultures but also those that are culled from inconceivably distant sources made easily available anywhere through the internet. This process and its outcomes are themselves puzzling enough and deserve extensive research and analysis. But the unavoidable question remains – what exactly is the meaning of such growth in a wider social-political context?

These are questions that warrant engagement at both the empirical level and theoretical/ philosophical levels. How these industries/ markets/practices come into being and are mobilized provides valuable lessons about the hybrid geographies of conflict and cooperation that shape our democracy. The conference is thus an occasion to bring in perspectives, perceptions and factual reports from different parts of the country and attempt at achieving a broader and comparative perspective. These digital cultures provide valuable and previously inaccessible insights on the local, regional, and global forces shaping and sustaining linguistic and subaltern communities.

The conference thus had place for intellectual contributions on the structure of the new cultural industries and markets, the sociology-anthropology of the cultures seen through the producing as well as the audience communities, the technology-culture linkages, the implicit or explicit politics of the new genres and the industries, the aesthetic assessments and the recent shifts in public taste as well as the contribution of these cultures to the wider processes of democratization in its most overt as well as tacit sense.

An International Seminar on *'Regional Cultures and New Media Technologies'*was organised at IIAS during 26-28 April 2017. Dr. Bindu Menon, Fellow, IIAS and Dr. Ratanakar Tripathy, Fellow, IIAS were the Conveners of the seminar. The welcome address was given by Professor Vijaya Shankar Varma, National Fellow, IIAS. Dr. Ratanakar Tripathy and Dr. Bindu Menon, Conveners of the seminar gave introductory remarks.

PARTICIPANTS:

- Dr. Joe Christopher , US Consulate General, 1-8-323, Paigah Palace, Chiran Fort Lane, Begumpet, Secunderabad, Telangana
- Dr. Alice Samson , NALSAR University of Law, Hyderabad
- Dr. Ravi Kant, Centre for the Study of Developing Society, Delhi
- Professor Anna Morcom, Department of Music, Royal Holloway, University of London.
- Professor T.T. Sreekumar, English and Foreign Languages University, Hyderabad
- Dr. Vebhuti Duggal , Sarai-CSDS, Rajpur Road, Delhi
- Ms. Silpa Mukherjee, Doctoral Candidate, School of Arts and Aesthetics, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Shikha Jhingan, Cinema Studies, School of Arts and Aesthetics, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Vasudha Pande, Department of History, Lady Shri Ram College, University of Delhi
- Shri Koonal Duggal , Flat no. 1102, Ganga Apartments, Kaushambi, Ghaziabad, Uttar Pradesh
- Ms. Rashmi M., PhD Student, School of Social Sciences, National Institute of Advanced Studies, Bangalore, Karnataka
- Dr. Gaurav Rajkhowa, Flat No. 1C, 1st Floor, 65, Sonia Enclave, Gitanagar, Zoo-Narengi Road, Guwahati
- Dr. Madhuja Mukherjee, Department of Film Studies, Jadavpur University, West Bengal
- Mr. Alam Sreenivas, Senior Journalist, Centre for Culture Media and Governance, Jamia Milia Islamia University, Delhi
- Dr. Kathryn Hardy, Washington University St. Louis, USA
- Shri Neikolie Kuotsu, Ph.D student, Cinema Studies, School of Arts and Aesthetics, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Mr. Rohit Prakash, Centre for the Study of Developing Societies, Delhi
- Dr. Akshaya Kumar, School of Culture and Creative Expressions, Ambedkar University, Delhi
- Ms. Sampreeti , Research Scholar, Department Of Dance, University of Hyderabad, Telangana
- Shri Sasi Kiran, Doctoral Candidate, Department ofCommunication, University of Hyderabad, Telangana

- Ms. C. Yamini Krishna, English and Foreign Languages University (EFLU), Hyderabad, Telangana
- Professor Lakshmi Subramanian , Department of History, Centre for Studies in Social Sciences, Calcutta

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Akshaya Kumar: *Govinda at the Cusp: Relaying Provinciality at across territories.*

Ravikant: *Media, Memory and Intermediality: The 'regional' in Hindi Cinema.*

Shikha Jhingan: *Sounding the region: Sound tracks of New Bollywood Cinema.*

Session II: Political Economy and Digital Culture

Alam Srinivas: *Regional Imprints on National Enterprises: The Case of Business Models of Cable Companies*

Vibodh Parthasarathi: *Regional Imprints on National Enterprises: The Case of Business Models of Cable Companies.*

Rohit Prakash: '*Smart' Media: Understanding new digital practices through a case study of Go News.*

Rashmi M: *Caller Tunes, Ring Tones and Youtube Channel: The Rise of Kannada content Industry.*

Session III: Collectives and Media cultures

T. T. Sreekumar: *Collectives and Spatial Imaginaries in Regional Digital Cultures.*

Anna Morcom: *Industry Community and exchange in Tibetan exile pop music and Tibetan chanting albums.*

Madhuja Mukherjee: *Speaking through Manbhum films: enquiries into language speech and dubbing.*

Koonal Duggal: *Technologies of cultural practices in a Dera: Dera Saccha Sauda and Sachkhand Ballan.*

Session IV: Auditory Geographies

Lakshmi Subhramaniam: *Technologies and New Musical Geographies: Understanding National, Regional and Glocal flow of Carnatic Music.*

Vebhuti Duggal: *Imagining sound through the Farmaish: Radio and Request Post cards in North India 1955-75.*

Shilpa Mukherjee: *Aural Sleaze in Urban Mohalla: The New Digital Sonotope of the Item Number and Feedback Loop.*

Session V: Spatial Imaginaries and Regional Cultures -I

Kathryn Hardy: *How to do things wings with Viral Videos: Spectacular Performativity, Global networks and the region.*

Neikolie Kotsu: *Audio Visual Cultures of North East India.*

Sasi Kiran M & C. Yamini Krishna**:** *Telugu Digital Video Cultures.*

Session VI: Spatial Imaginaries and Regional Cultures -II

Gaurav Rajkhowa: *Consuming the Xudhakantha: Bhupen Hazarika, the Music Market, and Assamese Nationalism in the 1990s.*

Joe Christopher: *Exporting the Excess and Importing the Solutions: the Realpolitik in Telugu States in the age of New Media.*

Music Session Lecture Demonstration

Jyoti Sinha: *भोजपुरी लोकगीतों का सौन्दर्य।*

Pravin Jaret: *A presentation on traditional Himachali Music.*

Session- VII : Performance and Digital Narratives

Vasudha Pande: *The Many Lives of a Kumauni Epic: Rajula Malushahi from Oral to Digital.*

Alice Samson: *A Filter for the Self: New Media and the emerging Youth Culture.*

Sampreeti Malladi: *Digital Cultures and Regional performing Traditions .*

Round Table

Regional Media: Aesthetics and Politics

Lakshmi Subhramaniam

T T Sreekumar

Ravi Kant

Madhuja Mukherjee

Anna Morcom

Kathryn Hardy

Akshaya Kumar

3. International Conference on 'Purifying the Dialect of the Tribe: Cross-Cultural Concerns in Colonial and Postcolonial India'. (17-19 May 2017)

Rationale: Different regions of what now constitutes India came under the British rule, no doubt; but, they were also either hegemonized by or were hegemonic towards, other internecine cultures. With the advent of colonial modernity came one of the major new ideologies, that of linguistic (Modern Indian Languages) nationalism in line with European (Modern European Languages) nationalism. It is not as if, for nearly four centuries, these languages and their cultures had not mutated under diverse social and political pressures: Pali (Buddhism), Perso-Arabic (Mughal / Islam). But communities inhabiting ever-changing kingdoms and sultanates are not known to have made much of their linguistic identities, and they were somewhat polyglot. But, linguistic identities, along with those of others, hardened under the impact of European colonialism. The nascent forms of *linguistic nationalism* in India fought their own local battles, but, in time, these were quickly turned into *identitarian* modes of resistance in the face of newer, pan-Indian anti-colonial struggles. Even so, the stamp of European grids were never gotten rid of, giving rise to the idea of a 'national' literature, Bangla, Kashmiri, Hindi, Tamil, Telugu, Odia etc. Simultaneously, radical revisions and inventions following the impact of English education brought in a whole range of new modes of cultural expressions into each of the Indian languages. The past was both repudiated and reinvented; the modern and foreign were welcomed but domesticated.

Against this backdrop, primary and perhaps radical questions must be posed concerning *sahitya*/ literature and literary traditions as the primary metaphoric place where tradition, collective memory, and identity take shape in their different Indian languages in terms of a sense of belonging to a collective multilingual place/space. What does it mean to be Indians? What has literature, and the literary, cultural tradition to do with this? Indians speak and write different languages, and yet in the same language they have different cultures all merging into one multi-lateral, differential identity. Is it possible to retrace those processes from the early nineteenth century onward?

These are urgent issues needing to be posed as the very basis of any idea of Indian political unity in respect of all national, linguistic, cultural differences of all the linguistic 'states' involved, or to be involved in these important processes. There are linguistic and cultural differences marked as borderlines between national traditions and identities, yet those borderlines seem often blurred so that distinctions are not always easily made. On the other hand, the historically stratified Indian literary production, the Indian tradition, shows that there are common emblems, symbols, genres, modes of writing, themes which must be considered as belonging to a whole, to one literary tradition expressing itself in different languages.

THEMES AND ISSUES

- New disciplines, European education and textbooks
- Newspapers and periodical press, literary periodicals

- The older, indigenous cognitive category, 'Sahitya' vis-à-vis European notions of the 'literary'
- The emergence of the 'literary field,' and augmenting 'cultural capital' in mutually symbiotic linguistic regions.
- Reinventing and Understanding the Past: Regional histories to literary histories
- Language-Dialect Controversies
- New genres and conventions in mutual linguistic interface
- Prose and its uses across kindred linguistic cultures
- Popular, folk and other forms of entertainment
- Caste, tribe and gender
- Of *desaja*/*bidesia* and *jatiya* and *bejatiya* bhasas etc.

An International conference on *'Purifying the Dialect of the Tribe: Cross-Cultural Concerns in Colonial and Postcolonial India'* was organised at IIAS during 17-19 May 2017. Professor Sumanyu Satpathy, Fellow, IIAS was the Convener of the seminar. The welcome address was given by Professor Anand Kumar, Fellow, IIAS. Professor Sumanyu Satpathy, Convener of the seminar gave introductory remarks. The keynote address was given by Professor Javed Majeed, Department of English and Comparative Literature, King's College London.

PARTICIPANTS:

- Professor E.V. Ramakrishnan, Professor Emeritus, Central University of Gujarat
- Dr. Rakhshanda Jalil, 46 New Moti Bagh, New Delhi
- Professor Regenia Gagnier, Professor of English, University of Exeter, Exeter
- Mr. Shaswat Panda, Department of English, Faculty of Arts, University of Delhi, Delhi
- Mr. Umasankar Patra, Ph.D Scholar, Department of English, University of Delhi, Delhi
- Dr. Lalit kumar , Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi
- Professor Mohd. Asaduddin, Department of English, Faculty of Humanities and Languages, Jamia Millia Islamia, New Delhi
- Professor Jatindra Kumar Nayak, Department of English, Ravenshaw University, Orissa
- Dr. Ayesha Mukherjee, Department of English, University of Exeter, Exeter
- Dr. Ranita Chatterjee , Department of English and Film, College of Humanities, University of Exeter
- Dr. Animesh Mohapatra, Department of English, Delhi College of Arts and Commerce, New Delhi

- Professor Wendy Singer, Department of History, Kenyon College, Gambier
- Dr. Jagriti Upadhyaya , Sardar Patel University of Police, Security and Criminal Justice, Jodhpur
- Professor Tanutrushna Panigrahi, Department of Humanities, International Institute of Information Technology
- Ms. Madhura Damle, Department of Political Science, Presidency University, Kolkata
- Professor H.S. Shivaprakash, Dean, School of Arts and Aesthetics, Jawaharlal Nehru, University, New Delhi
- Dr. Soma Mukherjee, Department of English and Other Modern European Languages, Visva-Bharati, Santiniketan
- Dr. Sabiha Hashami, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor M. Sridhar, Retired Professor, University of Hyderabad, Hyderabad
- Professor Akshaya Kumar, Department of English & Cultural Studies, Panjab University, Chandigarh
- Professor Desmond L. Kharmawphlang, Department of Cultural and Creative Studies, North-Eastern Hill University, Shillong
- Professor Chetan Singh, Former Director, IIAS
- Professor K M Baharul Islam, Fellow, IIAS
- Professor P. Madhavan, Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Wendy Singer: *The Re/Emergence of Regional Languages: From Culture to Courts in Bihar and Tamilnadu.*

Session II

M. Sridhar: *Reflection on the Modern Telugu Movement.*

Tanutrushna Panigrahi: *Missionaries Interface: Assamese and Odia Literature in the 19th Century.*

Shaswat Panda: *Songs of the Jailed Bard: A Study of Two Incarceration Narratives in Colonial India.*

Session III

Punnappurath Madhavan: *The Language of Knowledge on the Postcolonial Qualms.*

Madhura Damle: *'Contaminant Foreign Languages' and the Marathi Self: Language Politics in Colonial Maharashtra.*

Jagriti Upadhayay: *Language Palimpsest in the Daroga Dasatari Bahi of the Marwar Region.*

Session IV

Regenia Gagnier: *Transcultural Political Languages.*

Soma Mukherjee: *Comparative Literature and its Relevance in Indian Literature.*

Session V

E.V. Ramakrishnan: *Imperial Imaginary & the Idea of the Literary.*

Ayesha Mukherjee: *Agrarian Reform and Multi-lingual Knowledge in Early Colonial India.*

Session VI

Jatindra K. Nayak: *Identity, Language and Print Culture: The Moment of Utkal Sahitya.*

Akshay Kumar: *Indian Literature: Configurations of the Cosmopolitan Vernacular.*

Sabiha Hasmi: *Hindi in Bihar: Colonial Legacy to people's Language.*

Session VII

H.S. Shivaprakash: *Tracing the Origin of Native Modernity in Kannada Literature and Theatre.*

Ranita Chatterjee: *Cultural Nationalism and the Formation of a "Bengali" Cinema in Colonial Calcutta.*

Session VIII

Mohd. Asaduddin: *The Place of Translated Literature in Literary Historiography.*

Animesh Mohapatra: *Intercultural Genealogies: A Study of an Early Multilingual Comparatist.*

Session IX

Baharul Islam: *Socio-political appropriation of a Dialect: The Case of Sylheti Dialect and Identity Question in Assam.*

Desmond Kharmaphlang: *Regimen of Resistance: Codifying Khasi Oral Literature.*

Lalit Kumar: *Battle of Scripts: Emergence of Modern Maithili.*

Session X

Rakshanda Jalil: *In Praise of the Silent: Didactic Writing for Women in early Urdu Literary Journals.*

Umasankar Patra: *Poets and Arbiters: Modernity and Literary Marketplace in Odisha and Bengal.*

Session XI

Valedictory Session

Aruni Mahapatra: *Novelist, Nationalists and Readers: Bankimchandra Chatterejee and Fakir Mohan Senapati* (Skype).

4. National Seminar on CHAMPARAN CENTENARY 'Gandhi and the Champaran Satyagraha: An Endeavour, A Legacy and Contemporary India'. (29 -31 May 2017)

Rationale: Satyagraha is both an individual and collective pursuit of truth through non-violence. Since its first application by Mahatma Gandhi in South Africa in the first decade of the twentieth century, it has been practiced in a variety of situations around the world to seek justice and dignity by victims of casteism, racism, sexism, colonialism, imperialism, ecological degradation and state repression.

People and polity of India made their first engagement with Satyagraha in modern times when Gandhi employed it at Champaran in Bihar in the context of the grievances of rural masses between April and November, 1917. Gandhi wrote in his Autobiography, "That day in Champaran was an unforgettable event in my life and a red-letter day for the peasants and me." Here, on a common platform, as an integrated initiative, he brought together the local elite, lawyers, national leaders, social workers and the suffering peasants to fight against unjust laws. He also initiated a variety of constructive programs to alleviate the abysmal living conditions of the suffering men and women.

In the ensuing decades, as part of the Indian national movement for freedom from the British Raj, Gandhi elaborated and expanded the application of Satyagraha in conjunction with constructive programmes, to the national resistance movement. In the process he led and guided more than forty initiatives including the Mill-workers Satyagraha (Ahmedabad, 1918), Non-cooperation Movement (1921), Vaikom Satyagraha (1924), Bardoli Satyagraha (1928), Salt Satyagraha (1930), and Quit India Movement (1942). Among various factors that helped India emerge as a democratic republic, Satyagraha is certainly crucial and seminal.

Since independence, there has been a continuation of the practice of Satyagraha by a variety of organizations and groups, within the political community and civil society to resolve various issues and problems. However in the plethora of efforts somewhere, it seems, that the core sensitivity of Satyagrha has either got diffused, watered down or even side tracked. Thus, it is time to revisit what Gandhi and his way of Satyagraha stood for; more so because the continuity of seeking to draw inspiration from both Gandhi and Satyagraha remains unabated.

The occasion of the Champaran Centenary provides us an opportunity to have an overview of the wide and complex canvass and narrative of Satyagraha. We propose to bring together

knowledgeable persons from diverse disciplines and fields to look together at the following aspects of the past, present and future of Satyagraha in a holistic manner:

a) Understanding the context, content and impact of Champaran Satyagraha of 1917;

b) The century of Satyagraha as a way of collective activities in post-Champaran India (1917-2017);

c) Satyagraha and Sarvodaya – Key Concepts, practices and practitioners in India after Gandhi ;

d) Satyagraha and the discourses of democratic nation-building since Gandhi in Champaran;

e) Ethics, philosophy and politics of Satyagraha : yesterday, today and tomorrow;

f) The Trajectories of Satyagraha today – from economy to ecology;

g) Satyagraha and politics of violence in the era of globalization.

A National seminaron *CHAMPARAN CENTENARY 'Gandhi and the Champaran Satyagraha: An Endeavour, A Legacy and Contemporary India'*was organised at IIAS during 29-31 May 2017. Professor Anand Kumar and Shri Samir Banerjee, Fellows, IIAS were the Conveners of the seminar. Professor Anand Kumar, Convener of the seminar gave introductory remarks. The welcome address was given by Professor Chandrakala Padia, Chairperson, IIAS. The keynote address was given by Professor Sabyasachi Bhattacharya, 18 Aswini Dutt Road, Kolkata. Presidential address was delivered by Professor Chandrakala Padia, Chairperson, IIAS.

PARTICIPANTS:

- Professor Sudhir Kumar, Panjab University, Chandigarh
- Professor Gopal Guru, Professor of Political Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Chetan Singh, Former Director, IIAS
- Shri Surendra Kumar, National Secretary, Association of Voluntary Organizations for Rural Development (AVARD), New Delhi
- Shri Arvind Mohan , A-504, Jansatta Apartment, Sector – 9, Vasundhara, Ghaziabad
- Dr. Upendra Kumar, College of Vocational Studies, University of Delhi
- Professor Sundar Sarukkai, Professor of Philosophy, National Institute of Advanced Studies, Indian Institute of Science Campus, Bangalore
- Professor Giriraj Kishore, 11/210, Sooterganj, Kanpur
- Dr. Mirai Chatterjee, SEWA, Chanda Niwas, Opposite Karnavati Hospital, near Town Hall, Ellisbridge, Ahmedabad

- Mr. Binoy Acharya, 12 Ashokwadi Apts, Panchvati Marg, Ellisbridge, Ahmedabad
- Ms. Megha Todi, Research Associate, Archives and Research Centre, Gandhi Smarak Sanghrahlaya, Sabarmati Ashram, Ashram Road, Ahmedabad
- Dr. Nishikant Kolge, Department of History, Tripura University, Tripura West, Agartala, Tripura
- Dr. Chaitra Redkar, Department of Political Science, S.N.D.T. Women's, University, Mumbai
- Professor Sudarshan Iyenga, Fomer Vice-Chancellor, Gujarat Vidyapeeth, Ahmedabad
- Dr. V. Krishna Ananth, Department of History, School of Social Sciences, Sikkim University, Gangtok
- Ms. Deepali Yadav, Department of English, Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh
- Ms. Manimala, Ex. Director, Gandhi Smriti Darshan Samiti,18 Panchmahal Awas, Plot No. 47, Indraprastha Extension, Patparganj, Delhi
- Dr. Ranjana Kumari, Centre for Social Research, 2 Nelson Mandela Marg, Vasant Kunj, New Delhi
- Ms. Lele Chitra Ashwinikumar, 1117, Shaniwar Peth, Satara Maharashatra
- Ms. Priya Sharma, Centre for Political Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Mr. Sreejith Sugunan, Centre for Political Science, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Shri Prafulla Samantra, Lokshakti Abhiyan, Lohia Academy, Bhubaneshwar
- Ms. Radha Behn Bhatt, Kasturba Mahila Utthan mandal, Laxmi Ashram, Uttarakhand

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I: Living with the Promises of Champaran Satyagraha

Radha Behn Bhatt: *चम्पारण सत्याग्रह की विशेषतायेंः एक संवाद।*

Arvind Mohan: *भइले/गइले निलहवा के राज।*

Mirai Chatterjee: Re-visiting the Champaran Satyagraha: taking forward lessons for organising informal workers at SEWA.

Session II: Satyagraha in Democracy

Manimala: *वैश्वीकरण, हिंसा और सत्याग्रह।*

Ranjana Kumari: *From Champaran to Nirbhaya: How Gandhian Philosophies Have Influenced Women's Movements in India.*

Prafulla Samantra: *The present democratic struggles have roots of Champaran Satyagraha.*

Session III: Satyagraha: Learning from History

Surendra Kumar: *चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष में सत्याग्रह की महता।*

Binoy Acharya: *Understanding the relevance of Testimonies: Taking a leaf from Gandhiji's study of conditions of Indigo farmers in Champaran.*

Priya Sharma: *Satyagraha: Reconciling the Moral and the Pragmatic.*

Session IV: *Satyagraha: Some Conceptuals*

Gopal Guru: *Gandhi's Satyagraha: A conception of Moral Hegemony.*

Sundar Sarukkai: *Theory of truth in Gandhi.*

Session V: Gandhi: A Satyagrahi

Sudarshan Iyengar: *Champaran Satyagraha: Gandhiji's Intervention in Agrarian Situation.*

Giriraj Kishore**:** *गांधी, सत्याग्रह और चंपारण।*

Session VI: On- Hundred years of Satyagraha

V. Krishna Ananth: *One Hundred Years after Champaran and the Idea of India.*

Nishikant Kolge: *What is a place of Satyagraha in Democracy*?

Lele Chitra: *Prema Kantak's 'Satyagrahi Maharashtra': A women's perspective on Satyagraha.*

Session VII: Post-Gandhi Trajectories of Satyagraha

Chaitra Redkar: *The Issue of Temple Entry and Efficacy of Satyagraha: The Case of Pandharpur Temple Entry Satyagaraha.*

Deepali Yadav: *Gandhi and Hazare: The story of Success and Failure of Satyagraha*

Sreejith Sugunan: *The political and moral foundations of Gandhian Satyagraha*

Upender Kumar: *हिंदी उपन्यासों में सत्याग्रह का विचार।*

Session VIII: Satyagraha- What Next?

Megha Todi: *Peasant testimonies from Champaran against the cultivation of Indigo and other land based rights, 1917.*

Samir Banerjee: *Champaran: A Gandhian and Gandhi's Satyagraha.*

Anand Kumar: *Growing relevance of Civil disobedience and transformational constructive work since Gandhi's Champaran Satyagraha (1917).*

Round Table: Re-appropriating Histories and Memories

Radha Behn Bhatt

Sabyasachi Bhattacharya

Gopal Guru

Sundar Sarukkai

Giriraj Kishore

Manimala

Surendra Kumar

5. International Conference on 'Indian Media Studies: Contemporary Perspectives'. (25-26 July 2017)

Rationale: The past three decades have seen a spate of publications that have attempted to theorize various aspects of Indian media. We are witnessing a thriving field of media research at the crossroads of a variety of academic disciplines including Anthropology, History, Sociology, Political Science, Cultural Studies, Media Studies and Communication Studies. This is an opportune moment to take stock of this rich and growing field and to create new frames that will help us better understand media's role in the making of contemporary India. For the purpose of this seminar 'media studies' will refer to work on television, radio, print, web and social media as well as the more cognate fields of mobile telephony, advertising, public relations and informatics. Rather than considering these media forms and communication practices in isolation, the conference intended to look into the larger contexts where such forms and practices converge in technologies, expertise, entrepreneurial endeavors, markets and reception to produce a mediated social framework.Cyber cultures and digital technologies particularly characterize such a framework in our times, demanding a critical, inter-disciplinary engagement with media as a whole. The conference consisted of 8 single-session panels tentatively structured around the following themes: Media histories; Media pedagogy; Media industries; Audiences and Publics; Regional and Vernacular Media; Alternative Media; Media Law; New/Digital Media, and India in Global Media.

An International conference on 'Indian Media Studies: Contemporary Perspectives'was organised at IIAS during 25-26 July 2017. Dr. Biswarup Sen, Associate Professor, School of Journalism and Communication, University of Oregon, Professor Abhijit Roy, Department of Film Studies, Jadavpur University and Dr. Bindu Menon, fellow of IIAS were the Conveners of the seminar. The welcome address was given by Professor Anand Kumar, Fellow, IIAS. Dr. Biswarup Sen, Convener of the seminar gave introductory remarks.

PARTICIPANTS:

- Ms. Namita Nagpal, A-3, MCD Flates, Soami Nagar, New Delhi
- Dr. Britta Ohm, Institute of Social Anthropology, University of Bern, Switzerland

- Dr. Shelly Pandey, Nehru Memorial Museum and Library, Teen Murti Bhawan, New Delhi
- Dr. Ravinder Kaur, Centre of Global South Asian Studies, University of Copenhagen
- Mr. Sriram Mohan, Department of Communication Studies, University of Michigan
- Ms. Silpa Mukherjee, School of Art and Aesthesis, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Ms. Ritika Popli, Sispal Vihar, Sohna Road, Gurgaon, Haryana
- Professor Daya Kishan Thussu, Communication and Media Research Institute, University of Westminster, London
- Mr. Vibodh Parthasarathi, Centre for Media and Governance, Jamia Milia Islamia University, Delhi
- Professor Mohan Jyoti Dutta, Department of Communications and New Media, National University of Singapore
- Dr. Ratnakar Tripathy, Fellow, IIAS, Shimla

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Daya Kishan Thussu: *India Internationalizing Media Studies?*

Vibodh Parthasarathi: *An Indulgence of 'Markets': Considerations on the Media as an Economy of Markets.*

Shelly Pandey: *Negotiating Forms of Capital on Social Media: Understanding Lifestyles of Contemporary Middle Classes in India.*

Session II

Britta Ohm: *The Limits and Limitations of Media: (False) Information, (Real) Critique, (Non) Use.*

Sriram Mohan: *The Photoshop State: Image Manipulation, Visual Culture and Electoral Politics in Digital India.*

Session III

Bindu Menon: *Home and the World: South Asian Women Migrants and Digital Belonging in the Gulf Council Countries.*

Ritika Popli: *The 1947 Partition Archive Sculpting the 1947 Partition: Negotiating Memory and Trauma through 'Digital Archives.*

Session IV

Namita Nagpal: *Virtual in the Domestic: Social Change and Structural Integration of New Media.*

Silpa Mukherjee: *YouTube Sleaze: Viral Mutations of Item Numbers.*

Session V

Rituparna Patgiri: *Gender in 'News': A Critical Study of Assamese Electronic Media.*

Abhijit Roy: *Indian Media, Publics and Mobilization.*

Session VI

Ravinder Kaur: *New India: On Novelty, Spectacle, Capital.*

Ratnakar Tripathy: *Driving Culture: A Comparison between the Organic and Policy Driven Cultural Growth.*

Mohan Jyoti Dutta: *Digital Media and Resistance: Co-creating Alternative Narratives that Invert Neoliberal Imaginaries.*

Session VII

Biswarup Sen: *New directions in Media Studies.*

6. International conference on 'Retrieving the Voices from the Margins: Thinkers of Modern India' at Banaras (11-13 August 2017)

Rationale: The Seminar aimed at critically examining the multiple dimensions and continuing relevance of the visions and voices of those modern Indian thinkers whose world-views and the critical examination of their continuing continue to remain neglected and occluded in contemporary Bharat/India because of overtly hegemonic and dogmatic character of certain ideological discourses that continue to colonize the domains of higher education, print and electronic media. These hitherto marginalized voices and visions of some of the eminent thinkers/ practitioners who made seminal contributions to Indian wisdom-traditions manifest in such diverse fields as politics, social work, nationalism/nation-building, national integration, development from below (or sustainable / green development), women-empowerment, dalit-consciousness, caste/class/ gender/religion-oriented radical activism and reforms, transformative poetics, cultural studies, creative writing, issues related to constructions, conflicts and co-existence of identities-ethnic, linguistic, national/transnational, ecological/environmental awareness, spiritual world-views and practices, new forms of bhakti and their dissemination among the masses etc. are to be collected, collated and critically analyzed in the contemporary contexts. In brief, this process, that requires sincere '*chintana, manana* and *vishleshana*' (thinking, contemplation, and critical examination) characterizes the core of the project of this Seminar which is also intended to be published subsequently in a series of volumes. It is important to emphasize here that the seminal contributions of such eminent modern Indian thinkers as Rabindranath Tagore, Gandhi, Sri Aurobindo, Swami Vivekananda, Dr B.R. Ambedkar and others have already attracted, and still continue to attract a lot of national and international critical attention. Needless to say, the

Seminar focuses on the critical analysis of the voices and world-views of those Indian thinkers who, notwithstanding their selfless dedication to the cause of the nation-building in different fields, were, as stated above, relegated to the margins of Indian academia.

It is worthwhile to mention that in the post-independence era in India, the different and differing narratives/discourses of great significance were not disseminated as dialogically interrelated forming a continuum of India's protean polycentric and plural *parampara* but, instead, were compartmentalized in mutually warring or conflicting categories because of overt Euro-Americo-centric influences. Hence, the urgent need to de-centre the hegemonic model of socio-cultural discourses at present in order to retrieve and re-centre the voices and visions of the hitherto neglected Indian Thinkers. The seminar will focus on the works of such important thinkers, to give a few examples only, as Bankim Chandra Chattopadhyaya, Brahmabandhav Upadhyaya, Pandita Ramabai, Jotiba Phule, M.G. Ranade, Bal Gangadhar Tilak, Pandit Madan Mohan Malviya, Lala Lajpat Rai, Sardar Patel, Abul Kalam Azad, Narayan Guru, V.D. Savarkar, Shyama Prasad Mukherjee, Deen Dayal Upadhyaya, U.R. Ananthamurthy, Ananda Coomarswami, Gopinath Kaviraj, Vidyaniwas Mishra, Yashadev Shalya, G.C. Pandey, and others.

It is worth mentioning here that, in order to thoroughly discuss and scrutinize the continuing relevance of these thinkers. it was proposed that, at least, two chapters of the Seminar on this theme be held, first at Banaras Hindu University, Varanasi, and the second at IIAS, Shimla

An International conference*on 'Retrieving the Voices from the Margins: Thinkers of Modern India'*was organised in collaboration with Banaras Hindu University at Banaras during 11-13 August 2017. Professor Chandrakala Padia, Chairperson, IIAS and Dr. Sudhir Kumar, Professor of English,DES-Multidisciplinary Research Centre, Panjab University, Chandigarhwere the Conveners of the seminar. The welcome address was given by Professor Chandrakala Padia, Chairperson, IIAS. Dr. Sudhir Kumar, Convener of the seminar gave introductory remarks. Professor Kapil Kapoor, Chancellor, Mahatma Gandhi Antar-Rashtriya University, Wardha-Maharashtra and Former Rector and Professor of English and Sanskrit, Jawaharlal Nehru University, New Delhi delivered the inaugural address. Shri Zafar Sareshwala, Chancellor, Maulana Azad National Urdu University delivered the valedictory address. Professor Grirish Chandra Tripathi, Vice Chancellor, Banaras Hindu University, Varanasi gave the presidential remarks. Professor Chandrakala Padia, Chairperson, IIAS gave the vote of thanks.

PARTICIPANTS:

- Professor Badri Narayan, Social History/Cultural Anthropology, Govind Ballabh Pant Institute of Social Sciences, Jhoosi, Allahabad (U.P)
- Professor R.K. Mishra, Department of Political Science, University of Lucknow, Lucknow
- Professor Ambikadutt Sharma, Department of Philosophy, H.S.Gaur Central University, Sagar (M.P.)

- Dr. R. Subramony, Department of English, Madurai Autonomous College, Madurai
- Professor Shrawan Kumar Sharma, Department of English, Gurukul Kangri University, Haridwar (Uttarakhand)
- Professor Ashok Modak, University of Mumbai, Mumbai
- Professor Shankar Sharan, Department of Political Science, NCERT, New Delhi
- Professor Sreekala M. Nair, Professor and Head, Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Kerala
- Dr. Anindita Balslev, 1-1667 2nd Floor, Chiitranjan Park, New Delhi
- Dr. Javed Jamil, Chair in Islamic Studies and Research, Yenepoya University, Mangalore
- Shri Sheo Dayal, Eminent Writer and Thinker, Patna
- Professor M. Satish Kumar, School of Natural and Built Environment, Queen's University, Belfast, UK
- Professor D.R. Purohit, Coordinator for establishment of Centre for Endangered Languages, HNB Garhwal University, Srinagar
- Dr. Ravi Saxena, KPM-School of Law, NMIMS, Mumbai
- Professor Manjeet Chaturvedi, Faculty of Social Sciences & Professor of Sociology, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor Sadashiv K. Dwivedi, Department of Sanskrit, Faculty of Arts, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor J.S. Jha, Department of English, Banaras Hindu University
- Dr. Vishwanath Mishra, Department of Political Science, Arya Mahila Post Graduate College, Varanasi
- Dr. Arti Nirmal, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Banibrata Mahanta, Department of English, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Vinita Chandra, Faculty of Social Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Preeti Singh, Department of Political Science, Vasanta College for Women, Varanasi
- Shri. K. Chandramauli, BHU Centenary Celebrations, Varanasi
- Professor Awadhesh Pradhan, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor Reva Prasad Dwivedi, Faculty of Sanskrit, Vidya Dharma Vijnan Sankaya, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Rakesh Kumar Upadhyay, Bharat Adhyan Kendra, Banaras Hindu University, Varanasi

- Professor P.V. Rajeev, Institute of Management Studies, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Alok Kumar Pandey, Centre for Integrator Rural Development, Faculty of Social Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Ashok Kumar Sonkar, Department of History, Faculty of Social Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor A.N. Tripathi, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Ramesh Chandra Singh, Department of English, GSPG College, Samodhpur, Jaunpur
- Professor Rakesh Pandey, Department of psychology, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor Royana Singh, Institute of Medical Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor Hiralal Prajapati, Faculty of Visual Arts, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor Birendra Nath Mishra, Faculty of Performing Arts. Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Anurag Dave, Department of Journalism, Faculty of Arts, Banaras Hindu University, Varanasi

Plenary Session-I

Anindita N. Balslev: *The Indian Conceptual World: Its Relevance for TheWorld Today.*

M. Satish Kumar: *Margaret Noble (Sister Nivedita), from Dunganon to India: Forays into Indian Nationalist Discourse.*

Session I: Expanding the Frontiers of Indian Thought

Awadhesh Pradhan: *आधुनिक भारत का सांस्कृतिक अरुणोदय सनातन परम्परा काः नवोन्मेष।*

Sreekala M. Nair: *A Revisionary Approach to Vedadhikaratva: Towards Expanding the Frontiers of Indian Philosophy.*

Session-II: Seminal Thinkers and Philosophers of Modern India: Contemporary Perspectives

Javed Jamil: *Allama Iqbal, New World Order and the Urgent Need ofUnity of Religions.*

Shrawan Kumar Sharma: *Hindu Nationalism as Dharma: Native Modernity in Lala Lajpat Rai.*

K. Chandramouli*: Mahamana Malaviya as Karmayogi: Vision, Aim & Action.*

Session III: Women in Colonial India: Society, Identity, Religion

Preeti Singh: *Theorizing Indian Feminism: A Study of Tarabai's Stri Purush Tulana.*

Arti Nirmal: *Feminist Resistance and Social Reform in India: A Disquisition on Rassundari*

Devi's Amar Jiban (My Life) and Begum Rokeya's Sultana's Dream.

Plenary Session-II

Chandrakala Padia: *Women in India's Intellectual Tradition: Contesting Eurocentric Representations.*

Session IV: Decolonizing the Mind

Ambika Dutt Sharma: *Decolonizing Indian Mind: A Project of Regaining Authentic Cultural Self.*

Vishwanath Mishra: *भारतीय इतिहास लेखन का विउपनिवेशीकरण और समसामयिक महिषासुर विमर्श।*

Vinita Chandra : *Decolonizing the Mind: Insights from Dharampal's The Beautiful Tree.*

Session V: Dalit Consciousness and Socio-cultural Transformation

Badri Narayan: *Dalit Popular Sects and the making of Dalit Consciousness.*

Ravi Saxena: *Tradition, Caste and Education in Jotiba Phule's Thought: Some Reflections.*

D. R. Purohit: *Jayanand Bharati: A Freedom Fighter and Gandhian Crusader of Dalit Assimilation into the Mainstream Culture.*

Session VI: Alternative Narratives of the Nation/Nationalism/Transnationalism

Ashok Modak: *Integral Humanism and Sustainable Development Goals.*

Sheo Dayal: *राष्ट्रवाद और भारतीय परम्परा।*

Session VII: Seminal Thinkers and Philosophers of Modern India: Contemporary Perspectives (2)

Shankar Sharan: *बंकिमचन्द्र और राष्ट्रवाद पर वर्तमान बहस।*

Rakesh Mishra: *Tilak and Postcolonial Discourse.*

Sudhir Kumar: *Re-centering the Margins: A Critical Reading of Hindutvawith Special Reference to V.D. Savarkar and Pandit DeenDayal Upadhyaya.*

Session VIII: Seminal Thinkers and Philosophers of Modern India: Contemporary Perspectives (3)

A.N. Tripathi: *Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya: Nation Building Through Education.*

Rakesh Upadhyay: *Swarajya: लोकमान्य तिलक की स्वराज्य विषयक अवधारणा एवं वर्तमान भारतीय राजनीति।*

R. Subramony: *Sri Aurobindo, The Mother and Ramana Maharishi: Their Vision of India.*

7. National Seminar on 'Need for Inclusive Reforms: Varying Perspectives'. (21-23 August 2017)

Rationale: India introduced a set of economic reforms in 1991 in the midst of severe internal and external crisis in the affairs of the Indian economy. The economic reforms were mostly successful in stabilizing the macroeconomic fundamentals and paved a base for further reforms to accelerate the growth process for the long run benefit of the economy. Repealing socialist legacy laws and creating state capacity is widely argued as necessary to address market failures and to ensure a framework for a well-functioning and evolving market economy. Creating the legal and regulatory framework for a well-functioning market economy involves legislative, regulatory and administrative changes. The reform processes in the past 25 years invariably were directed towards such attempts and are being intensively attempted for creative destructions. In every aspect, there are fundamental differences between the legal and regulatory framework of a command and control economy (Socialist economy) and an evolving market economy. These reforms accelerated economic growth rate which enabled the government to enact some rights based legislations largely favouring the poor during the last ten years. It is argued the necessity of further reforms to get the increased benefits of previous reforms and strengthening our various regulatory bodies and institutions. So the agenda of the government for further reforms needs to be assessed considering the larger interest of our economy, polity and society.

India started moving towards a market economy but still we follow the old socialist and colonial texts for governing economic and political institutions. There are inconsistencies between the texts and context. Some economic laws were framed in the colonial period and some other laws in the zenith of socialist thinking. Almost all labour laws were framed before 1990 and how can this socialist and colonial legacy labour laws suit the evolving market economy? The institutions, governing and regulatory systems we framed on the 1950s, 1960s and 1970s need to be re-looked in the changing situations.

But the nature, content and intensity of the economic, political and governing challenges have got much deeper and wider dimensions after the introduction of the New Economic Policy of 1991. Even though our institutions and systems are in the best form of governance to address and accommodate the interests of different sections of our society, many economic and social problems of India remain unresolved and this should prompt initiation of reforms and changes in the priorities of the governments. It is presumed that the democratic system would take care of the diverse interests of the large sections of our population and it is perceived that almost all political parties in last 25 years have a common agenda and consensus on economic reforms.

The consensus on reforms notwithstanding, there is also a view that many vital sectors including agricultural and allied activities, small scale and traditional industries, concerns of retail traders, accelerated environmental degradation and decelerated decline of poverty, inequality, starvation,

malnutrition and other vital health issues got back seats in the reform era. The economic and political agenda and policy decisions undermined the vital relevance of state intervention and accelerate the stepping back of the state from ensuring food security, public health and education, waste management and such basic amenities.

The economic and political ideology of economic reforms is the message that private is good and public is bad, on that market forces are good, and state regulation is bad. The main themes of this paradigm which find a great resonance in the present India state and media are:

- The market always allocates resources where they are most needed;
- Private ownership always ensures incentives to maximize efficiency;
- Private management is intrinsically more efficient than public management;
- Public investment 'crowds out' private investment;
- People will pay for what they need and do not need what they cannot pay for;
- The state should police the effects of inequality but not deal with its causes;
- Collective provisions and action are enemies of individual liberty;
- Competition is a sufficient defence against self-interest.

A little reflection would show that the liberal economic policy choices mentioned above are too far-reaching in their consequences, costs and implications, both for the immediate run well-being and quality of life of the Indian people as well as the long term future of India, to be justified only in terms of accelerated growth.

But the high rate of growth of GDP seems to be used for concealing the real status of the major problems such as poverty, unemployment, growing inequalities, farmers' suicide, ecological imbalances and the level and rate change of human and social welfare by creating the smokescreen of a 'national' achievement. Thus, in practice reforms mainly aimed at, and influence, the pattern of growth in a manner that advances the interests and agenda of the top echelons of private, mainly the rich. So this form of economic and political governances faces challenges and there are increasing aspirations for making economic reforms and growth process very inclusive.

This issue invites special attention especially in the context of federal form of governance (now widely used co-operative federalism and competitive federalism) with laudable autonomy of the state governments. The most interesting in the era of economic reforms is that the political parties with diverse and mutually opposing interests and constituents of electoral base seem to have agreed on the common agenda of unregulated and unidentified flow of factors of production and products. It was expected that the parliamentary democracy would mitigate the basic livelihood problems of dalits and adivasis, poor farmers and villagers, problems of the workers in the

unorganized sector, communities engaged in traditional economic activities and fisher men. But the problems remain unaddressed and seem to have worsened.

The entire issues stated above, therefore raises a series of questions:

- What are the strengths and weaknesses of economic reforms in ensuring all-encompassing development and pro-poor social engineering?
- Whether the parliamentary democracy is failing in genuinely addressing the undesirable social and economic developments in the era of economic reforms?
- Whether we are able to ensure an inclusive development through economic reforms?
- Will the present increased economic growth benefit out of demographic dividend?
- Whether the Judiciary should restrain from interfering the economic policies of the government describing it as policy matters?
- Whether our parliamentary democracy successful in mitigating the negative social developments caused due to economic reforms?.
- What is the relevance of legislations today in the context of economic reforms?
- What is the response of civil society in this regard?

A National seminar on *'Need for Inclusive Reforms: Varying Perspectives'*was organised at IIAS during 21-23 August 2017. Dr. Arun Kumar, Associate Professor, Department of Commerce, Feroze Gandhi College, Raebareli was the Convener of the seminar. The welcome address was given by Professor Nirmal Sengupta, National Fellow, IIAS. Dr .Arun Kumar, Convener of the seminar gave introductory remarks. The Keynote address was given by Professor Nageshwar Rao, Vice Chancellor, Uttarakhand Open University, Haldwani.Professor Peeush Ranjan Agarwal, Professor, School of Management Studies, MNNIT, Allahabad gave presidential address.

PARTICIPANTS:

- Professor S. K. Srivastava, School of Commerce, Hemavati Nandan Bahuguna University, Garhwal, Uttarakhand
- Professor Ravi S. Srivastava, Centre for the Study of Regional Development, School of Social Sciences,Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Prashant Kumar, Faculty of Commerce, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor Farah Naaz Gauri, Dr. Baba Saheb Ambedkar Marathwada University
- Professor Nisha Srivastava, Department of Economics, University of Allahabad, Allahabad
- Shri O.N. Bhargava, Feroze Gandhi College, Raebareli
- Dr. Pradeep Kumar Khattri, National PG College, Lucknow

- Dr. Sheila Srivastava, Department of Chemistry, Feroze Gandhi College, Raebareli, U.P.
- Dr. Yamini Sharma, Department of Physics, Feroze Gandhi College, Raebareli
- Dr. Sudhanshu Pandiya, University Institute of Business Management, CSJM University, Kanpur
- Dr. Sebastian T.J, Joseph, School of Business Studies, Sam Higginbottom Institute of Agriculture,Technology & Sciences, Deemed University
- Dr. K. P. Vipin Chandran, Department of Economics, E K Nayanar Memorial Government College, Kerala
- Dr. Jomon Mathew, Research Department of Economics, University College, Kerala
- Adv. Anju Radhakrishnan, Advocate of District Court, Trivandrum, Kerala
- Dr. Priyesh C.A., Department of Economics University College, Govt. of Kerala, Thiruvananthapuram
- Ms. Vasvi Adarsh Java, Department of Pharmacy, Maharishi Markendeshwer University, Ambala
- Ms. Shubh Lakshmi Srivastava, Department of Commerce, Feroze Gandhi College, Raebareli
- Mr. Sandeep Kumar Sonkar, Department of Commerce, Feroze Gandhi College, Raebareli
- Dr. Sunita Jakhar, Department of English, Govt. Arts College, Sikar, Rajasthan
- Mr. Pradeesh Kumar, PhD Research Scholar, Department of Economics, Kerala University, Kerala
- Dr. Meena Yadav , Department of Commerce, Feroze Gandhi College, Raebareli
- Professor Vijaya Shankar Varma, National Fellow, IIAS
- Dr. Pradeep Kumar Nayak, Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Ravi Srivastava: *Growth, Economic Reforms and Employment in India.*

Sudhanshu Pandiya: *A study of Inclusive Growth of Indian Economy propelled by Women Entrepreneur.*

P.K. Khatri: *Importance of Human Behaviour for Policy Makers: A Creative Way to Development.*

Session II

O.N. Bhargava: *Whither Economy in India?*

Sebastian T. Joseph: *An Exploratory Research into the Hotel Industry As a Vibrant Contributor to India's Economic Reforms.*

K.P. Vipin Chandran: *Human Deprivation and Inclusive Development in India: Priorities for future.*

Session III

Priyesh C.A: *Transforming Economic Governance in India.*

Jomon Mathew: *Reforms, Development and Environment: Missing Links in Kerala Experience.*

Sunita Jhakkar: *Agriculture in Rajasthan: Reforming Reforms & Raising Issues.*

Session IV

Peeush Ranjan Agarwal: *Ushering a New Era of Vegetable Revolution: A 03 Pronged Strategy.*

Farah Naaz Gauri: *Economic Reforms lagging areas in India and the need for accelerating reforms.*

Anju Radhakrishnan: *Are Courts the Forum to Determine Policy Matters?*

Session V

Sheila Srivastava: *Unfinished Reforms in Indian Fertilizer Sector: An Analysis.*

Meena Yadav: *Role of Foreign Direct Investment in Indian Economics Reforms.*

Sandeep Kumar Sonkar: *Economic Reforms and its Impact on the Insurance Industry in India.*

Session VI

Prashant Kumar: *Corporate Social Responsibility-A Promise to Work for the Development of Society.*

Yamini Sharma: *Insights into relationship between rapid Economic growth and Environmental degradation.*

Ranjit Singh*: Inclusivity in Education (Read* by Dr. K. P. Vipin Chandran*).*

Session VII

Pradeesh Kumar: *Does Globalisation Accelarate Road Accidents in India? A Study from Kerala.*

Vasvi Adarsh Java: *Drug Price Control Order (DPCO) In the Era Of Economic Reforms: Indian Pharmaceutical Industry.*

Session IV

Nisha Srivastava: *How Inclusive is Employment? An Analysis of Patterns in the Post Reform Period.*

Shubh Laxmi Srivastava: *Role of Economic Reform on Social Welfare.*

Valedictory Session

S. K. Srivastava: *Whether Demonetisation is a Success or Failure towards Digitalisation or Cashless Economy?*

8. National Seminar on '*Indian Music and Dance: The Absence of Critical Attention and Analysis*'. (04-06 September 2017)

Rationale: The classical Indian music and dance present a very rich, dynamic and sustained creative repertoire of Indian imagination. Their reach is wide; they exist in all regions of India and, lately, beyond India. They have ever-expanding followers of rasikas belonging to all generations especially the younger generation. They have survived the powerful and all-devouring onslaught of the Western music and dance. Arguably they are the only other forms of classical music and dance other than the western in the world.

Fortunately, the Indian classical music and dance have had a dynamics in which preservation of tradition and individual innovations have taken place together without any dissonance. Divested of the royal and feudal patronage soon after independence, these forms have in many different ways, democratized themselves winning large audiences and popular support. Though largely thought of as stubbornly conservative, the classical arts have embodied many changes and innovations. The grand narrative of the decisive changes in the jealously guarded tradition has yet to be written about and analyzed critically.

It is truly amazing that the classical arts have survived and thrived in the absence of critical attention and analysis. This in a country like Indian where until the 18^{th}-19^{th} century elaborate critical thinking about music and dance took place. The shastric tradition of discovering and articulating new concepts got, more or less, abandoned or, at the least, not pursued vigorously.

There have been many changes, subversions, departures, deviations, innovations etc. in the classical tradition but they have all gone critically almost unnoticed or largely under noticed. The institutions, both of dissemination and training, have done very little in this behalf. Compared to the largeness and complexity of a dynamic repertoire critical writing about music and dance is small and largely inconsequential. The classical concepts are not rejuvenated meaningfully nor any additions made in the light of several changes that have come about.

In modern times literature and arts in the world over have received vast and meticulous critical attention, appreciation and nurturing. Their absence in India in the face of thriving classical arts seems unusual, indefensible and surprising.

A National seminar on '*Indian Music and Dance: The Absence of Critical Attention and Analysis*' was organised at IIAS during 04-06 September 2017. Shri Ashok Vajpeyi, Chairman, Raza Foundation, New Delhi and Dr. Jyoti Sinha, Fellow, IIAS were the Conveners of the seminar. The welcome address was given by Professor Vijay Shankar Varma, National Fellow, IIAS. The Keynote address was given by Shri Ashok Vajpeyi, Convener of the seminar.

PARTICIPANTS:

- Dr. Avishek Ray, Department of Humanities & Social Sciences, National Institute of Technology, Silchar, National Institute of Technology, Silchar, Cachar, Silchar, Assam
- Professor Sameer Dublay, B-4/11 Saritanagari Phase II, Sinhagad Road. Opp. Deepak Nitrite Pune
- Ms. Rose Merin, Department of Theatre and Performance Studies, School of Arts and Aesthetics, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Mythili Maratt Anoop, House No. 302, Shivaahan Residency, Ibrahim Nagar, Road No. 14, Banjara Hills, Hyderabad
- Mr. Kanav Gupta, School of Arts and Aesthetics, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Mr. J. Shashi Kiran Reddy, Research Scholar, Bangalore
- Ms. SonalNimbkar, CEH, IIIT-H, Ghachibowli, Hyderabad
- Ms. Sana Khan, Shipra Hostel, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Ms. Shahwar Kibria, Research Scholar, SAA, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Mr. NavtejJohar, F-27, 2nd Floor., Green Park, New Delhi
- Shri Sadanand Menon, # 1 Elliots Beach Road, Chennai
- Professor Navjyoti Singh, Center for Exact Humanities, International Institute of Information Technology, Gachibowli, Hyderabad
- Ms. Leela Venktaraman, 102, Tower 4, Vipul Belmonte, Golf Course Road, Gurgaon
- Dr. Sunil Kothari, 94, Bakhtawar Singh Block, Asiad Village, New Delhi
- Mrs. Manjari Sinha, E-181, Richmond Park, DLF City Phase IV, Gurgaon
- Dr. Mukesh Garg, Department of Hindi, Faculty of Arts, University of Delhi, Delhi
- Pt. Satyasheel Deshpande, 68, Chamdowati Mitra Mandal Colony, Pune
- Ustad Bahauddin Dagar, 6/20, Rukmini, R.C. Marg, Chembur, Mumbai
- Mr. Deepak S Raja, 201, Mayfair Residency, 9th Rd. Khar West Mumbai
- Professor Lawanya Kriti Singh, Faculty of Music & Drama, Lalit Narain Mithila University, Darbhanga, Bihar

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Sadanand Menon: *Alternate Critiques - From Framing the Moves to Moving the Frame*

Mukesh Garg: *संगीत और आलोचना।*

Session II

Navjyoti Singh: *Returning to the Foundations of Music and Dance: Two Experiments in rāgadhyāna and in sṛṣṭīnāṭya.*

Sunil Kothari: *Indian Classical Dance: Context and Continuity: Reflections on absence of critical attention and analysis.*

J. Shashi Reddy: Vajra Nrithyam 'Dance as a Movement of Meditation in Space and Time'.

Session III

Deepak Raja: *The Critical Environment and the musical culture.*

Satyasheel Deshpande: *The Lack of Critical Analysis in the Culture of the Khayal - It's Nature, Reasons and Possible Solutions.*

Leela Venkatraman: *Wrapped in gilded cage of Nationalism and Spirituality as Cultural Ambassador.*

Bahauddin Dagar: *Observations and solutions for Lack of Critical Attention in Music and Arts.*

Avishek Ray: *Traversing Between the Classical and the Folk: Questioning the Dichotomy.*

Navtej Johar: *To Show or to Reflect: The Impossibility of Indian Dance.*

Session IV

Sameer Dublay: *Dr. Ashok Da Ranade, the trendsetter in Musical Analysis*

Jyoti Sinha: *आलोचना की अनुपस्थिति चिंतन प्रश्न – संगीत समीक्षा स्थित्यंकन और – अपेक्षित दिशा।*

Sana Khan: *Understanding Cultural Politics: An Interpretative Study of Sambhaji Bhagat's Protest Music.*

Session V

Manjari Sinha: '*Tradition and Change'.*

Rose Merin: *Performing the Tradition: How Usha Nangiar and Kapila Venu re-constructs and re-interprets tradition in Nangiarkoothu.*

Kanav Gupta: *The Evolution of English as a musicological language in post-independence India.*

Session VI

Mythili Anoop: *The Scripted and the Spontaneous: Exploring the Dynamic in Classical Indian Performances.*

Shahwar Kibria: *Sound of the Chishtiya Khanqahs: Sufi Qawwali in Coke Studio Pakistan.*

Cultural Programme

Poetry Recitation by Ashok Vajpeyi and Performances by Classical Vocalist Satyasheel Deshpande.

Session VII

Lawanya Kriti Singh: *Indian Music Education: Critical Attention and analysis.*

Sonal Nimbalkar: *Ontological study of dance movements.*

9. National Seminar on '*Land Questions in Neoliberal India*' (09-11 October 2017)

Rationale: In recent years, questions pertaining to land in India have become more relevant and critical for policy planners, bureaucrats, civil society activists and academics than ever before. Earlier land revenue was a critical factor for the consolidation of the British Empire. In the post-colonial period, the contribution of the land revenue to the national exchequer has lost its central place. Yet the importance of land ownership/land tenure/land rights as the basis of the Indian state's vision for a just and democratic social order continues to be an important concern. Land questions /issues in India can be said to have appeared, disappeared and reappeared in the policy agenda of the Indian state since the 1990s thanks to the neoliberal economic reforms. Demographic pressure, massive and uncontrolled changes in land use, conversion of agricultural and irrigated land for non-agricultural purposes and related sustainability issues, vanishing common property resources, changing agrarian relations, marginalization of landless agricultural labourers and tenants, growth of landlessness across all social categories, decline in per capita landholding size, rise of the rich agrarian classes, continuities and change in tenancy, gender issues in land, forest rights to tribals and other forest dwellers, are some of the indicators of the importance of remerging land issues in India. The state in India, in the contemporary political economy, has virtually abandoned its redistributive agenda of land reform and instead is pursuing land titling regime in a "reform by stealth" approach. Land management issues have taken the place of land reform agenda.

India's rural-agrarian scene is undergoing massive changes. Urbanisation and peri-urban growth, the rise of the so-called rurban phenomenon and urban villages, point towards important short term and long-term policy implications. In urban areas, massive investments initiated by the Indian state to develop the so-called 'smart cities' in order to make them emerge as engines of growth, have brought up the hitherto unexplored subject of urban property rights and records.

The commodification of urban land and rapid growth of real estate sectors in the Indian cities have created the problems of the urban commons, right to city and inclusive city**.** This abstract should foreground a problematic and provoke a discussion around the land questions outlined earlier.

A National seminar on **'***Land Questions in Neoliberal India*' was organised at IIAS during 09-11 October 2017. Dr. Pradeep Nayak, Fellow, IIAS was the Convener of the seminar. The welcome address was given by Professor Vijay Shankar Varma, National Fellow, IIAS. The Keynote address was given by Professor Nirmal Sengupta, National Fellow, IIAS.

PARTICIPANTS:

- Professor Jagpal Singh, School of Social Sciences, Indira Gandhi National Open University, Maidan Garhi, New Delhi
- Professor Sukhpal Singh, Centre for Management in Agriculture (CMA), Indian Institute of Management, Ahmedabad (IIMA), W-6, IIM Heritage (Old) Campus, Vastrapur, Ahmedabad
- Professor Dhanmanjiri Sathe, Department of Economics, Savitribai Phule Pune University, Pune
- Professor Deepak K Mishra, Centre for the Study of Regional Development, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Nikita Sud, Oxford Department of International Development University of Oxford OX1 3TB
- Professor Vandana Upadhaya, Department of Economics, Rajiv Gandhi University, Rono Hills, Arunachal Pradesh
- Professor Satyakam Joshi, Centre for Social Studies, Veer Narmad South Gujarat University Campus, Udhana-Magdalla Road, SURAT, Gujarat, India
- Dr. Sheetal Patil, Resource Person Research Centre of Azim Premji University, Bengaluru
- Professor Amita Saha, 63, Monalisa Apts., Ambawadi Ahmedabad, Gujarat (India)
- Dr. Namita Wahi, Centre for Policy Research Founding Director, Land Rights Initiative Dharma Marg, Chanakyapuri, New Delhi
- Dr. Walter Fernandes, North Eastern Social Research Centre Guwahati, Assam, India
- Dr. Animesh Roy, Giri Institute of Development Studies, Lucknow
- Ms. Ranjini Basu, School of Development Studies, Tata Institute of Social Sciences, Mumbai
- Dr. Dayabati Roy, Centre for Studies in Social Sciences, Calcutta, R1 BP Township, Kolkata

- Dr. Jayaseelan Raj, Centre for Development Studies, Thiruvananthapuram
- Dr. Prashant K Trivedi, Giri Institute of Development Studies, Lucknow
- Dr. Anish Gupta, 33 D, 3rd Floor, Near Gurudwara, Munirka, New Delhi
- Ms. Anindita Tagore, H-1/5, First Floor, Mahavir Enclave, Dwarka, New Delhi
- Ms. Ann Mary Chacko, Department of Economic Studies and Planning, Central University of Karnataka
- Ms. Sili Rout, Department of Anthropology, Central University of Orissa, Odisha
- Dr. Manasi, Centre for Research in Urban Affairs, Institute for Social and Economic Change, Bangalore
- Dr. Virender Singh Dhillon, Department of History, Maharaja Agrasen Mahavidalya, Jagadhri, Yamunanagar, Haryana
- Mr. Kumar Sambhav,37-H, Sheikh Sarai Phase II, New Delhi
- Dr. Budhaditya Das, 2 B Pocket 4, Mayur Vihar, Phase I, Delhi
- Ms. Kahkashan Kamaal, #303, Ganga Hostel, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Mridula Sharada, Department of Political Science, H.P. University, Shimla
- Dr. Farhat Naz, II Lane, Johri Farm, Jamia Nagar, Okhla, New Delhi
- Professor Navdeep Mathur, Indian Institute of Management, Ahmedabad, Gujarat

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Nikita Sud: *Some Under-explored Questions around Land in Contemporary India: Sub-national and Informal Regulation.*

Jagpal Singh: *Contextualizing Land Question in a Green Revolution Area: Agrarian Transformation and Politics in Western Uttar Pradesh (Neoliberal Period).*

Pradeep Nayak: *Land Reform or Land Titling: India's Quest for Secure Property Rights in Land.*

S. Manasi: *E-Governance in Land Administration: Experiences in Urban and Rural setting of Karnataka.*

Session II

Sukhpal Singh: *Ownership vs Control: The Changing Dynamics of Land Use in Liberalised Agricultural Context of India.*

Sheetal Patil: *Landowners as Non-farm Workers - Case of Small Farmer Migrants in Karnataka.*

Ranjini Basu: *Tenancy Reforms in West Bengal: An Evaluation of its Implementation and Challenges.*

Session III

Virender Singh Dhillon: *Honouring the Landless: Issues and Challenges in Legalizing/ Recording of Tenancy in Haryana*

Anish Gupta: *Emerging Agrarian Issues in Post Reform Period: An Empirical Study of a Village in Rajasthan*

Dayabati Roy: *Land, Caste and Class in Rural West Bengal.*

Session IV

Animesh Roy: *Rethinking the Land Question: Neoliberal Urbanism, Dispossession and Societal Transformation in Rajarhat.*

Amita Saha: Changing Land Use and Rurban Poor in a SEZ: A Case Study of Reliance SEZ in Gujarat

Navdeep Mathur: *Neoliberal Governance in India's Urban Policy: Contemporary Transformations in Gujarat's Landscape.*

Session V

Walter Fernandes: *Land Issues and Liberalisation in Northeast India.*

Vandana Upadhyay: *The Transformation of Land Rights and Feminisation Hill Agriculture in Arunachal Pradesh: Insights from Field Survey.*

Deepak K Mishra: *The Political Economy of the Community Land Rights in Arunachal Pradesh, India.*

Session VI

Kumar Sambhav: *Mapping Land Conflicts in India.*

Farhat Naz: *Land Grabbing In Common Property Resources: A Case Study of a Gujarat Village.*

Mridula Sharda: *Locating the Rural and Tribal In the Era of Neo Liberal Economy: A Case Study of Himachal Pradesh.*

Session VII

Namita Wahi: *Understanding Disputes over Land Acquisition in India.*

Prashant K. Trivedi: *The Expressway to Agra: Two Roads, Same Destination: Land Acquisition under Old and New Land Acquisition Regimes.*

Dhanmanjiri Sathe: *LARR 2013 --- What Does it Deliver? (On the New Land Acquisition Act, 2013).*

Session VIII

Jayaseelan Raj: *Colonies to Ghettos: Adivasi-Dalit Land Struggles andthe State in Kerala.*

Budhaditya Das: *Farmers or Forest Dwellers: The Dilemma of Implementing the Forest Right Act in Upland Central India.*

Sili Rout*: Tribal Land Alienation and Community Conflict and the Role of the State in Schedule Areas: Field Notes form Highland Odisha.*

Session IX

Kahkashan Kamaal: *Tribal Land: Identity or Commodity?*

Anindita Tagore: Urban *Women and Matters of Land: An Analysis of Land Politics in Delhi through Gendered Lens.*

Ann Mary Chacko: *Land Relations and Women Autonomy: A Comparison across Different Castes in a Village in Kerala.*

10. International Seminar on '*Paradigm Shift in Indian Linguistics and its Implications for Applied Disciplines*' (30 October– 01 November 2017)

Rationale: India can be legitimately proud of its rich heritage in linguistics and language-related knowledge systems. All over the world, interdisciplinary research in language studies is spanning out in different directions, and creating remarkable networks of connections among diverse fields. However, in India we very rarely come across traditional linguists working in the interdisciplinary areas, barring in a few fields such as computational linguistics. Against this backdrop, the proposed three-day National Seminar on '*Paradigm Shift in Indian Linguistics and its Implications for Applied Disciplines*' is an attempt provide a common platform to the traditional grammarians, theoretical linguists, academicians in the areas of computational linguistics, psycholinguistics, cognitive linguistics and clinical linguistics, and also practitioners in the field of language pedagogy, in order to initiate a meaningful dialogue between them. It will not only aim at building consciousness about the urgent need to delve into Indian grammatical theories, and explain their relationship to society regarding their applicability in the broadest sense but will also seek to lay down a set of concrete procedures, as well as create experimental tools for accomplishing these ends.

The knowledge of language and its use have been at the centre of Indian thought for centuries. The investigations in this regard have raised several issues which continue to engage the attention of the academics. The major issues are: language as a discipline, language and mind, language and reality, the relation between language and knowledge, development of language, and universal features of language. The grammarians and philologists were the standard-bearers of this great multi-cultural, literary tradition. The extent of this wide-ranging

scholarship can be discerned in the texts produced not only in Sanskrit and Tamil, but also in Bangla, Oriya, Kannada, Malayalam, Telugu, and Gujarati. Texts in Pali and Prakrit are also valuable sources of knowledge, in need of rehabilitation. It is worth noting that traditional Indian grammars, particularly of Sanskrit and Tamil, buttressed by solid theoretical frameworks, shed light on enduring questions in ontology and epistemology. Later, when the western theories came in, naturally, they influenced the thinking of scholars, resulting in a re-conceptualization of the central tenets of the Indian Linguistic tradition.

The potential applications in the modern era, of linguistic insights of the past, could be quite significant in the cognitive, computational and clinical aspects of language. These moves could be viewed as ushering in a paradigm shift in the Indian linguistic thought, especially in the applied fields. The gulf between the knowledge base on the one hand and its potential applications on the other might have arisen because of the deliberate denigration of indigenous knowledge, masterminded by the colonial regime. In the post-independent era, the problem is manifest in a different form: while there is a positive reassessment of the values of traditional knowledge systems, the project of rehabilitation suffers from a lack of expert know-how.

In recent times, Indian grammatical theories have been successfully applied in the field of computational linguistics. This could be replicated, in principle, in other inter-disciplinary areas such as cognitive linguistics, clinical linguistics and psycholinguistics, and language pedagogy. There is visible enthusiasm among the traditional scholars of the present generation to showcase the relevance of their theories in the modern context.

An International Seminar on '*Paradigm Shift in Indian Linguistics and its Implications for Applied Disciplines*' was organised at IIAS during 30 October-01 November 2017. Dr. Amba Kulkarni and Dr. P. Madhavan, Fellow, IIAS were the Conveners of the seminar. The welcome address was given by Professor Vijay Shankar Varma, National Fellow, IIAS. The Keynote address was given by Professor Kapil Kapoor.

PARTICIPANTS:

- Professor Peter Scharf, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology Bombay, Mumbai, Maharashtra
- Professor Gerard Huet, Emeritus Professor, Inria, Paris, France
- Professor G. Uma Maheshwar Rao, Emeritus Professor, Centre for Applied Linguistics & Translation Studies University of Hyderabad, Hyderabad
- Professor Srinivas Varakhedi, Karnataka Sanskrit University, Bangalore, Karnataka
- Professor S.V. Shanmugam, Director (Retd.), CAS in Linguistics, Annamalai University, Annamalanagar, Tamil Nadu
- Professor V. Renuga Devi, Department of Linguistics, Madurai Kamaraj University, Palkalai Nagar Madurai, Tamil Nadu-India

- Professor L. Rama Moorthy, Linguistic Data Consortium for Indian Languages (LDC-IL), Central Institute of Indian Languages, Mysore
- Professor Kapil Kapoor, B-2/332, Ekta Garden, 9.I., P. Extension, Mother Dairy Marg, Delhi
- Professor Ramesh Mishra, Centre for Neural and Cognitive Sciences University of Hyderabad, Hyderabad
- Dr. K. Balasubramanian, Professor and Director (Retd.), Centre of advanced study in Linguistics, Annamalai University, Annamalainagar, Tamil Nadu
- Professor Arulmozi Selvaraj: Centre for Applied Linguistics & Translation Studies, University of Hyderabad, Hyderabad
- Professor V.N. Jha, Ex. Director, Centre of Advanced Study in Sanskrit, University of Pune, Pune
- Professor Usha Dalvi, Department of Audiology and Speech and Language Pathology, SRM University, Chennai
- Dr. Amrith Krishna, Department of Computer Science & Engineering, IIT Kharagpur
- Ms. Anupama Ryali, Department of Sanskrit Studies University of Hyderabad, Hyderabad
- Ms. Dishari Chattaraj, Room No. 126, Chandrabhaga Hostel, Jawaharlal Nehru University New Delhi
- Dr. Jobin M. Kanjirakkat, Post-doctoral fellow, Cosmopolitanism and the Local in Science and Nature, Dalhousie University and University of King's College, Halifax, NS, Canada
- Dr. Naresh Keerthi, Chinmaya Eswar Gurukala, Chinmaya Vishwavidyapeeth, Veliyanad, Ernakulam, Kerala
- Dr. Rakesh Das, Navin Nagar, Aswinipally,PO-Barasat, Parganas, Kolkata
- Dr. Rangan Krishnasamy, Tamil University, Thanjaur, Tamil Nadu
- Dr. Soibam Rebika Devi, National Translation Mission, Central Institute of Indian Languages, Mysore
- Dr. Satyam Dwivedi, Mandi Bazar, Tirwa Ganj, Kannauj, UP, India

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Professor S.V. Shanmugam: *Linguistics of Simile (with special reference to Tamil Grammar, Tolkappiyam).*

Professor Rangan Krishnasamy: *Exploring the paradigm of Tolkappiyar's language Analysis.*

Session II

Professor B.N. Patnaik: *Exploring the Possibilities of a Theory of meaning for Theory of Discourse Structure.*

Professor L. Ramamoorthy: *Tolkappiyar's Conceptualisation of Grammar and its applicability for Natural Language Processing.*

Session III

Dr. Naresh Keerthi: *Identifying Metaphor in language - from CMT to Kāvyaśāstra.*

Dr. Satyam Dwivedi: *Abhāva: Cognizing presence through absence.*

Dr. Jobin M. Kanjirakkat: *Foundational Questions of the Study of Language and Indigenous Traditions.*

Session IV

Dr. K. Balasubramaniam: Tolkappiyam: An integrated model for linguistic Description.

Professor V. Renuga Devi: *The Concept of Word Formation Traditional to Modern.*

Session V

Professor V.N. Jha: *Language Comprehension: Some Classical Indian Models.*

Professor Peter Scharf: *Generating linguistic dependency structures In accordance with Paninian grammar and theory of verbal cognition.*

Session VI

Professor Srinivasa Varakhedi: *Grammar of Vernacular Languages and Panini's System: Some Missing Links.*

Professor Gerard Huet: *Computational treatment of Indian languages: Problematic.*

Session VII

Professor Ramesh Misra: *Psycholinguistic studies of Language and Cognition in Indian languages.*

Professor Usha Dalvi: *Application of Sanskrit grammar in communication Disorders.*

Dr. Lalitha Raja: *Indian Theories and Clinical Linguistics*

Session VIII

Professor Arul Mozi Selvaraj: *Revisiting Tamil Word Net: Paradigm Shifts in Lexicography.*

Ms. Anupama Ryali: *Pedagogical Tools for Learning and Teaching the Sanskrit Language- a Paradigm Shift (with reference to e-reader of śiśupālavadha of māgha).*

Dr. Amrith Krishna: *Synthesising Grammars & Programs for Natural Language from Data.*

Session IX

Ms. Dishari Chattaraj: *English Language Teaching Methodology: An Ancient Indian Perspective.*

Dr. Rakesh Das: *A study of the varṇadoṣ as detailed in the Ṛkprātiśākhya: an approach to standardize the pronunciation of Samskrita.*

11. National Seminar on the Scourge of Scavenging: Revisiting the Question of Sanitation/Scavenging/Scavengers (08-10 November 2017)

Rationale: India has been consistently critiqued, locally and globally, for its inability to ban the inhuman practice of manually cleaning human faces, otherwise popularly known as manual scavenging. Different stake-holders have consistently argued towards achieving clean and safe practices in sanitation, particularly with respect to the disposal of human waste. In order to do so, governments have set up committees such as the 1949 Barve Committee and programmes such as the Central Rural Sanitation programme to the contemporary Swachh Bharat campaign. The major findings of these committees has been that the scavenging system in India is a customary practice that, along with the social stigma attached to it, is carried forward from one generation to the next. It is in this context that attempts were later made to improve the working conditions of the sweepers and to remove the social stigma related to the occupation, thereby leading to the formation of the National Commission for Safai Karamcharis towards the rehabilitation of scavengers. The committees and the programmes did not attain their goal towards abolishing manual scavenging. As a result, various civil society groups began arguing against the apathy faced by sanitary workers and campaigning for better working environment through books, documentaries, legal cases. If one NGO focused on the complete ban on manual scavenging, another would focus on introducing toilets that are cost effective. Adding to the already existing problem, financial liberalisation in India has further endangered the job security that scavengers earlier had. If earlier dignity of labour was the fight of scavengers, then after liberalisation even their basic survival was brought to question. With the contemporary resurgence of Dalit movements, the complete annihilation of caste once again became an articulated demand, one that could not be achieved without eradicating manual scavenging and the insanitary conditions within which scavengers are made to work.

Sub Theme

1. Histories, Sociologies and Anthropologies of Manual Scavenging
2. The Indian State and Scavenging
3. Scavenging and Media: Photography and Cinema
4. The Toilet in Popular and Monumental Architecture

5. The Economy and Ecology of Scavenging
6. Representations of Scavenging in Literature
7. Popular Struggles around Scavenging
8. Dr. B. R. Ambedkar and the Question of Manual Scavenging
9. Critiquing the Gandhian response to scavenging
10. Law and Scavenging
11. The role of NGOs
12. Scavenging and Scheduled Caste

A National seminar on '*The Scourge of Scavenging: Revisiting the Question of Sanitation/ Scavenging/Scavengers*' was organized by IIAS during 08-10 November 2017**.** Dr. Ravi Chandran, Fellow, IIAS was the Convener of the seminar. The welcome address was given by Professor Vijay Shankar Varma, National Fellow, IIAS. The Keynote address was given by Professor Bezawada Wilson.

PARTICIPANTS:

- Mr. Samuel Sathya Seelan, Room No. 102, Narmada Hostel, Jawaharlal Nehru University, New Mehrauli Road, New Delhi
- Mr. Achuth A. Pooramkulam, MGRA 29 C, Marappalam Gardens, Pattom P.O., Thiruvanan, thapuram
- Mr. Bharathi Dasan K., Research Scholar, Madras Institute of Development Studies (MIDS), 79, Second Main Street Gandi Nagar Adyar Chennai, Tamil Nadu
- Ms. Rachna, Research Scholar at School of Social Science, Jawaharlal Nehru University, Delhi
- Ms. Teena Anil, 356 Ganga Hostel, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Ranjith Thankappan, Assistant Professor, Department of Communication, School of Interdisciplinary Studies, EFL University, Hyderabad, Telangana
- Ms. Manisha Suryabhan Meshram, Ph.D. (Pursuing), Centre for Social Medicine and Community Health, Jawaharlal Nehru University New Delhi
- Mr. Bibekananda Suna, Room No.134 (O), BHP Hostel, JNU, New Delhi
- Mr. Sunil Laxman Yadav, Ph.D. in Inclusive Development and Justice, Tata Institute of Social Sciences, Mumbai, Maharashtra
- Ms. Renu Chauhan: Ward no 14, Tehsil- Charkhi Dadri, Dist. Charkhi Dadri, Haryana
- Mr. Parikshit Thakur,42/3 , Kaikhali Chiria More, Dum Dum Airport, Kolkata, West Bengal, India.

- Ms. Joopaka Shubadra, 13-6-462/a/27 Bhagavandasbagh, Tallagadda, Hyderabad
- Mr. Kanthi Swaroop Gunti, Ph.D., Centre for Policy Studies, IIT Bombay, Powai, Mumbai-400076, Maharashtra
- Mr. Narayanan, Director, Change India, No.2/628, Rapid Nagar, Gerugambakkam, Chennai – 602 101
- Professor S. Kannan, ICFAI Law School, IFHE University, Hyderabad
- Mr. Hashir Kunnummal, Kunnummal House Mattathur PO, Othukungal Panchayath, Kerala
- Ms. Masroor Rather, House 26-B, First floor, Lane 7, Johri Farms, Jamia Nagar, Okhla, New Delhi
- Ms. Bhasha Singh, 55-C Pocket 4, Mayur Vihar Phase -1,Delhi
- Mr. Bezawada Wilson, Safai Karamchari Andolan, 36/13 Ground Floor, East Patel, New Delhi
- Dr. Sharmila Chhotaray, Assistant Professor, Department of Sociology, Tripura University, Suryamaninagar, Tripura
- Professor S.R. Mazta, Department of Community Medicine, DYSP Government Medical College, Nahan

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Bhasha Singh: (Author: Unseen) *Indian State and Scavenging.*

Joopaka Shubadra: *If Scavenging as a profession is sacred why other castes do not take it up.*

B. Ravichandran: *Patriarchy, Pollution, Architecture: A study of Toilet behaviour in India.*

Session II

Sunil Laxman Yadav: *Lives of Women Scavengers, Journey and aspirations: Evidences from Municipal Corporation of Greater Mumbai.*

Ranjith Thankappan: *Caste as public spectacle: Scaverning/Scavengers in News photography.*

Achuth A: *Remains of the Meal: Food and Waste in Hindu Philosophy.*

Session III

Narayanan: Law *and Scavenging: Tamil Nadu experiences.*

Sharmila Chhotaray: *Sulabh: Discourse of sanitizing untouchability.*

Session IV

Renu Chauhan: *Manual Scavenging and migration of manual scavengers: A Case study of Delhi based manual scavengers.*

Teena Anil: Revisiting caste and consumption of cleanliness: Anthropology of manual scavenging.

Masroor Rather: *Scavenging and Scheduled Caste.*

Session V

Parikshit Thakur: *The Methars in the metropolis: The story of the manual scavengers in the early colonial Calcultta.*

Hashir Kunnummal: *Law and Scavenging: A case study of thottis in Kerala.*

Bharathi Dasan: *From Agricultural labourers to manual Scavenging Arundhathiyars in the corporation of Madras (1850 -1947).*

Session VI

Bibekananda Suna: *Economic of labour: A study of manual Scavengers.*

S. Kannan: *Manhole deaths: Realizing the unrealistic.*

S.R Mazta: *Health Safety of workers disposing Hospital waste.*

Kanti Swaroop Gunti: *Everybody loves shit.*

Session VII

Samuel Sathya Seelan: *Interface between the Human Rights Institutions in protecting the rights of the Manual Scavengers and Safai Karamcharis: Challenges and Opportunities.*

Manisha Suryabhan Meshram: *Women Manual scavengers: A study of intersectionality of caste and gender in Maharashtra.*

Rachana: *Gender and Caste Discrimination in urban informal sector. A study of women toilet cleaners in Delhi NCR.*

Session VIII

Roundtable discussion

12. International Conference on 'Retrieving the Voices from the Margins: Thinkers of Modern India' (Second Chapter) (24-26 March 2018).

Rationale: The Second Chapter of International Conference on 'Retrieving the Voices from the Margins: Thinkers/Writers of Modern India' is intended to focus on critically examining the relevance of the vision of those modern Indian thinkers/writers/artists whose dharma-centric

world-views as represented in their works/texts have so far been neglected in the domain of cultural/literary studies in contemporary Bharat/India. In the first chapter of the Conference which was held at Banaras Hindu University, Varanasi (11-13 August 2017) in collaboration with Indian Institute of Advanced Study, Shimla, the emphasis was on the critical examination of the worldviews of the thinkers of modern India whose civilizationally and socially significant vision remains hitherto occluded or ignored in the dominant academic discourses in India. In the second IIAS Shimla Chapter of the Conference, due emphasis will be laid on the significance of the interrelated literary, cultural and philosophical worldviews of the hitherto neglected writers/ thinkers of modern India in contemporary socio-cultural contexts.

1. Objectives and Significance of the Conference:-

A. To critically examine voices and worldviews of the hitherto marginalized/neglected Indian writers/thinkers having a bearing on literary/cultural studies at present with special reference to such issues as identity, nation/nationalism, class, caste, gender, ecology, literature, language, culture and society etc). Even the hitherto less or unexplored aspects of the works of some of the major modern writers/thinkers, having a bearing on the above issues may also be analysed.

B. To focus on, how in the works of the hitherto ignored modern writers, the modern is re-inscribed and reconstructed in accordance with polycentric Indian wisdom traditions.

C. To critically analyses the significance of the world-views of the hitherto ignored modern Indian writers in contemporary literary/cultural/social/political/ecological contexts.

An International conference on *'Retrieving the Voices from the Margins: Thinkers of Modern India'* (Second chapter) was organised at IIAS in collaboration with Banaras Hindu University, Varanasi during 24-26 March 2018. Professor Chandrakala Padia, Ex-Chairperson, IIAS & Professor, Department of Political Science Banaras Hindu University Varanasi (U.P.) and Professor Sudhir Kumar, Professor of English, DES-MDRC, Panjab University Chandigarh were the Conveners of the conference. The welcome address was given by Professor Chandrakala Padia, convener of the conference. Professor Sudhir Kumar, convener of the conference gave introductory remarks. Prefatory Remarks was given by Professor Kapil Kapoor, Chairman, IIAS.The Keynote address was delivered by Shri Rajiv Malhotra, Chairman, Infinity Foundation, USA. Professor Kapil Kapoor gave Presidential address.

PARTICIPANTS:

- Professor Ashok Modak, University of Mumbai, Mumbai
- Professor Ambikadutt Sharma, Department of Philosophy, Dr. H.S.Gaur Central University, Sagar, MP
- Professor Shankar Sharan, Department of Political Science, NCERT, New Delhi

- Professor Arvind Sharma, Associate Professor, Faculty of Religious Studies, McGill University, Canada
- Professor Sadanand Shahi, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi, UP
- Professor Anand Kumar, Former Professor & Head, Department of Reproductive Biology, AIIMS, New Delhi
- Dr. Vishwanath Mishra, Department of Political Science,Arya Mahila Post Graduate College, Chetganj, Varanasi
- Professor Girija Sharma, Department of English, Himachal Pradesh University, Shimla
- Dr Ashutosh Javadekar, 101, Gaurishankar, Mayur Colony, Pune
- Professor Krishna Mohan Pandey, Department of English, Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)
- Dr. Anuradha Banerjee, Ex-faculty, Department of English, Basant Kanya Mahavidyalaya, Kamachha, Varanasi
- Professor Awadhesh Pradhan, Department of Hindi, Banaras Hindu University,Varanasi
- Ms. Shilpi Das, Ph.D Research Scholar, Department of English, Kazi Nazrul University, Asansol, West Bengal
- Shri Ashutosh Bhardwaj, Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. R. Subramony , Department of English, The Madura College (Autonomous), Madurai, Tamil Nadu
- Dr. Alok Oak, Leiden Institute of Area Studies, University of Leiden, the Netherlands
- Ms. Mayuri Patankar, M.Phil Candidate,Department of English,Delhi University, Delhi
- Professor S. Chellapandian, The Madura College (Autonomous), Madurai, Tamil Nadu
- Dr. Mohammad Shaheer Siddiqui, Department of Education, Visva-Bharati, Santiniketan, West Bengal
- Ms. Menka Singh, Daulat Ram College, University of Delhi, Delhi
- Dr. Sudesh Baliram Bhowate, Dr. Madhukarrao Wasnik P.W.S. Arts & Commerce College, Kamptee Road, Nagpur
- Professor Gurpal Singh, Department of Evening Studies, MDRC, Panjab University, Chandigarh

Participants made presentations on the following theme during the conference:

Session I

Professor Ashok Modak: *Rajiv Malhotra: A Unique Exponent of Hindu Worldview.*

Professor Sudhir Kumar: *Towards a Dharma-centric Jeevana-Darshana (World-view): Reading Kapil Kapoor, Rajiv Malhotra and Makarand Paranjape.*

Professor Ambika Dutt Sharma: *On Yashadev Shalya.*

Session II

Professor Shankar Sharan: *सच्चिदानन्द वात्स्यायन का भाषा–चिंतन और उसकी मूल्यवत्ता।*

Professor Arvind Sharma: *Professor G.C. Pande on the Comparative Study of Religion.*

Professor Awadhesh Pradhan: Hazari Prasad Dwivedi ki Stri-Drishti.

Session III

Professor Anand Kumar: *Gorakhnath's Hatha Yoga in Padmawat: A Contemporary Reading.*

Dr. Vishwanath Mishra: *Rethinking the Jnana-Paddhati: Brahma-Sutra Revited.*

Professor Girija Sharma: *Challenging the Stereotypes: M.T. Vadsudevan Nair's Short Fiction.*

Session IV

Professor Chandrakala Padia: *On Mahadevi Verma: Relevance of Her Vision.*

Dr. Ashutosh Javadekar: Lingering and Longing in Pandita Ramabai's Travelogue- The Peoples of United States (1889).

Professor Krishna Mohan Pandey: *The Contribution of Pt. Ramkinkar Upadhyaya to Ramkatha Tradition.*

Session V

Dr Anuradha Banerjee: *Exploring the Fire of the Soul of Kazi Nazrul Islam.*

Professor Sadanand Shahi: *वासुदेव शरण अग्रवाल और जनपदीय अध्ययन की दृष्टि।*

Session VI

Ms. Shilpi Das: *Exploring the Case of Cultural Memoricide in Pre- Independence Indian Paintings: A Reassessment of the Underestimated Creative Genius of Select Women Artists.*

Shri Ashutosh Bhardwaj: *Woman and the Novel: A Critical Study of Early Indian Novels.*

Dr. R. Subramony: *Shri Kittu Reddy and the Sri Aurobindonian Perception of History.*

Session VII

Dr. Alok Oak: *The Afterlife of Gita Rahasya: Transcending/Mediating Dharma as Action.*

Ms. Mayuri Patankar: *Vyankatesh Atram's Gondi Sanskrutiche Sandarbh: Investigating the Notions of Identity, Ethnicity, and Modernity in the Tribal Context.*

Dr. S. Chellapandian: *Spiritual Nationalism of Pusumpon Muthuramalinga Thevar.*

Dr. Mohammad Shaheer Siddiqui: *मचलती नफरतें और बिखरता समाजः राही मासूम रज़ा और उनके पी शुक्ला की वर्तमान प्रासंगिकता।*

Session VIII

Dr. Menka Singh: *Centring the Subaltern Theatre and Poetics of Bhikhari Thakur.*

Dr. Sudesh Baliram Bhowate: *Dalit Aesthetics Conceptualised by Sharan Kumar Limbale and Om Prakash Valmiki: The Philosophical Base and Importance to Human Values in Dalit Literature.*

Session IX

Professor Gurpal Singh: *Epistemological tradition, Contemporality and Making of the Cultural memory.*

(C) WEEKLY SEMINARS BY FELLOWS

The Fellows of the Institute regularly presented weekly seminars. The seminars are open to other scholars at the Institute, Associates of the Inter-University Centre and faculty of Himachal Pradesh University and other interested members of the public. These seminars are related to the themes of the projects being undertaken by Fellows at the Institute and provide an opportunity for formal interaction among the scholars.

During the period under report the Fellows made the following seminar presentations:

1. Professor Bettina Sharada Bäumer: *The Yoga of the Netra TantraThe 'Third Eye' and 'Overcoming Death'* (13 April 2017).
2. Shri Samir Banerjee: *Satyarthi to Satyagrahi: Interpreting Gandhian Thought* (20 April 2017).
3. Professor Sumanyu Satpathy*: Banabala and 'Rebati': Tradition and Modernity in Early Odia Print Culture* (04 May 2017).
4. Professor Triloki Singh: *Bouncing and Cyclic Models of the Universe* (09 May 2017).
5. Dr. Leon Angelo Morenas: *What is 'smart' about a Smart City?* (11 May 2017).
6. Dr. R. Lalitha Raja: *Eclectic Approach of OTin Phonological Acquisition and Disorders* (25 May 2017).

7. Dr. Aditya Pratap Deo: *Writing Trans-temporality into History: Time and Politics in the Oral Traditions of the Mixed Tribe-Caste Communities of the Princely State of Kanker, Southern Chattisgarh* (01 June 2017).
8. Professor K.M. Baharul Islam: *Identity Questions and the Translingual Writers in Assamese Literature* (08 June 2017).
9. Shri Amit Dutta: *Jangarh's Paintings - Bridging the Margi and Deśi, a giant leap into Modernism and More* (19 June 2017).
10. Dr. Gowhar Yaqoob: *The Trails between and Behind* (21 June 2017).
11. Professor Anand Kumar: *Towards Unity in Diversity: Some Aspects of Political and Social Engineering in India (1947- 2017)* (29 June 2017).
12. Dr. B. Ravichandran: *Language Caste and Territory: The Making of a Polluted Sweeper in India* (04 July 2017).
13. Professor Punnappurath Madhavan: *Reflections on Meaning* (06 July 2017).
14. Dr. Arpita Mitra: *What is new in 'New-Vedanta'? Inclusivism and Pluralism in Swami Vivekananda*(13 July 2017).
15. Dr. Pradeep Kumar Nayak: *From Land Reform to Land Titling: India's Quest Secure Property Rights in Land* (20 July 2017).
16. Dr. Jyoti Sinha: *बनारस, बाईयों का ज़माना और बनारसी ठुमरी का आरम्भिक दौरः 19वीं, 20वीं सदी* (27 July 2017).
17. Dr. Martin Kämpchen: *Rabindranath Tagore Meets Paul and Edith Geheeb: An Indo-German Encounter* (10 August 2017).
18. Professor Amba Kulkarni: *Computational Modeling of Yogyatā and Taatparya* (24 August 2017).
19. Professor J. Rangaswami *A Translation and Commentary Upon Tiruv°Ymoîi of Namm°Îv°R With Its ±×U 36,000 Pa×I Commentary of Va×Akkutiruv±Tipââai into English* (31 August 2017).
20. Professor Vijaya Shankar Varma: *Ways of Knowing* (21 September 2017).
21. Dr. Girija Kizhakke Pattathil: *Knowledge and Subjects: Cultural History of Ayurveda through Life Narrative of Practitioners* (28 September 2017).
22. Dr. Ajay Kumar: *दलित अस्मितावादी इतिहास लेखनः वैकल्पिक अधीनस्थ समाजशास्त्र की तलाश में (एक समीक्षात्मक मूलयांकन)* (02 November 2017).
23. Dr. Mathew Akkanad Varghese: *Comparative Explorations of Human Ecologies in the Making* (02 November 2017).

24. Shri Ashutosh Bhardwaj: *The Encounter of the Indian Novel with Modernity and Nationalism as Reflected through its Women Characters/The Gender Politics of the Indian Novel* (30 November 2017).
25. Dr. Jagdish Lal Dawar: *History of Food in Northeast India: Mizoram since Pre-colonial Times* (07 December 2017).
26. Dr. Sanghamitra Sadhu: *Speaking Subjects: Life-writing in India from Below* (12 December 2017).
27. Ms. Prachi Dublay: *Towards a Theoretical Framework of Adivasi Music: Studying the Musical Tradition of Rathwa Adivasi, a Representative Tribe Living on Borders of Madhya Pradesh, Gujarat and Maharashtra* (14 December 2017).
28. Dr. Dambarudhar Nath: *Nirgun Bhakti in Eastern India: Ideology, Protest and Identity-Study of the Mayamara Sub-Sect of Assam (8 March 2018)*
29. Dr. Ratnakar Tripathy: *A Comparative Study of the Regional Music Industries in Hindi-Speaking India: With Special Focus on Himachal Pradesh, Bihar and Haryana* (15 March 2018)
30. Professor Sumanyu Satpathy: *In Print: The Early Periodical Press and Modern Odia Literary Culture* (22 March 2018)

(D) MONOGRAPHS RECEIVED FROM FELLOWS

Fellows are required to submit the final findings of their research to the Institute in the form of a monograph. During the period under report, the following monographs were received:

- Shri Amit Dutta: *An Art Historical Inquiry into the life and Death of Jangarh Singh Shyam* (25 May 2017).
- Dr. B. Ravichandran: *Language, Caste and Territory: The making of a polluted Sweeper* (18 July 2017).
- Dr. Jyoti Sinha: *बनारसी ठुमरी की परम्परा में ठुमरी गायिकायों की चुनौतियां एवं उपलब्धियाँ* (14 August 2017).
- Professor Nirmal Sengupta: *Traditional Knowledge in Modern India* (18 August 2017).
- Dr. Bindu Menon M.: *Morality Tales in Transnational Media Scapes: Social Reform and Migration in Malabar Home Films* (28 August 2017).
- Shri Samir Banerjee: *Satyarthi to Satyagrahi: Interpreting Gandhian Thought* (15 September 2017).

- Dr. Arpita Mitra: *Vedanta in Modern Times: Re-interpreting Swami Vivekananda* (10 October 2017).
- Dr. Pradeep Kumar Nayak: *Towards Guaranteeing Land Titling (Secure Property Rights) in India: A Study (16 October 2017).*
- Professor Amba Kulkarni: *Sanskrit Parser based on the theories of Shabdabodha (25 October 2017).*
- Dr. Gowhar Yaqoob: *Shaping a Literary Space: The Discourse of Identity and use of Kashmiriyat as a Category in Early Literary History of Kashmiri (30 October 2017).*
- Professor Bettina Sharada Baeumer: *The Yoga of the Netra Tantra: 'Third Eye' and 'Overcoming Death' (13 February 2018).*
- Dr. Martin Kampchen: *Rabindranath Tagore meets Paul and Edith Geheeb: An Indo-German Encounter* (27 March 2018) (Draft).
- Professor Vijaya Shankar Varma: *Ways of Knowing* (28 March 2018) (Draft).

(E) VISITING PROFESSORS

Eminent scholars are invited by the Governing Body of the Institute as Visiting Professors to deliver three lectures on subjects of their specialized interest. They reside at the Institute for a month and interact with the academic community at the Institute. The following scholars visited the Institute as Visiting Professors during the period under report:

June 2017

1. Shri Keki N. Daruwalla, 79, Mount Kailash, SFS Apartments, New Delhi gave following lectures:
    - *Historical Fiction:Negotiating the Personal and the Historical* (06 June 2017).
    - *Neutral Space? Politics and Poetry* (15 June 2017).

July 2017

1. Professor Jean-Luc Racine, Emeritus Senior CNRS Fellow, Centre for South Asian Studies, School for Advanced Studies in Social Sciences, Paris gave following lectures:
    - *India and the World, 1991-2013* (03 August 2017).
    - *India's 'soft power'Cultural Diplomacy and Civil Society* (09 August 2017).
    - *A New Normal? The 'Modi-Fiction' of India* (18 August 2017).

(F) VISITING SCHOLARS

The Institute has a scheme of Visiting Scholars under which eminent scholars are invited for a week. They deliver a lecture on a theme or topic of their choice. During the period under report, the following scholars were invited as Visiting Scholars:

April 2017

1. Dr. Kathryn Hardy, Andrew W. Mellon Fellow, Modeling Interdisciplinary Inquiry, Interdisciplinary Project in the Humanities, Washington University in St. Louis, USA delivered a lecture on:
    - *Sounding Out the Crowd: Cinematic Signs and Embodied Politics in 'Regional' Mumbai* (05 May 2017)

June 2017

1. Dr. Elizabeth Wilson, Visiting Faculty, Rutgers Law School, Fulbright-Nehru Senior Scholar, Centre for Policy Research, New Delhi delivered a lecture on:
    - *Be the Change: Gandhi and Human Rights* (21 June 2017)

July 2017

1. Professor Dinesh Prasad Saklani, Department History, Ancient Indian History,Culture & Archaeology, Institution HNB Garhwal University, Srinagar
    - *Valmiki Ramayana & Gender Issue- Case of Sita* (28 July 2017)

September 2017

1. Dr. Shekhar Pathak, Parikrama, Talla Danda Tallital Nainital delivered a lecture on:
    - *Chipko Andolan: An Evaluation Leadership, Organization and Participation* (14 September 2017)

October 2017

1. Shri Makarand Sathe, 5 Gauram, Prabhat Road, 9th Lane, Pune delivered a lecture on:
    - *Nationalism and Cultural Freedom* (06 October 2017)
2. Shri Anant Mahapatra, Purabi Vivekanand Marg, Bhubaneswar delivered a lecture on:
    - *Odia Theatre through Decades* (12 October 2017)
3. Professor Gerard Huet, Emeritus Professor, INRIA, Paris, France delivered a lecture on:
    - *The Sanskrit Heritage Platform* (26 October 2017)

March 2018

1. Dr. Judith Misrahi-Barak, Associate Professor, University Paul Valéry Montpellier 3, France delivered a lecture on:
    - *Intentureship, Caste and the crossing of the Kala Pani* (07 March 2018)

(G) GUEST FELLOWS

Guest Fellows are invited to the Institute for a period of three months but they are not paid any Fellowship amount. The Institute only reimburses their travel expenses and extends free hospitality. The category has been created for scholars who are unable to take up full time Fellowship for some or the other reason but are willing to spend a lesser period at the institute. During their stay, they are invited to participate in all activities and are free to use the library and other facilities. At the end of their term, they are expected to make a presentation to the academic community of the Institute.

Under this category, the following presentations were made:

June 2017

1. Dr. Kathryn Lum, Lecturer, Global Studies, School of Arts and Humanities, Nottingham Trent University, Nottingham delivered a lecture on:
    - *Reservations in Brazil* (01 August 2017).
2. Dr. Anuradha Veeravalli, North Avenue, IIT Campus, Hauz Khas, New Delhi delivered a lecture on:
    - *Theory of the Vernacular:A Counter-Modernity* (17 August 2017).

September 2017

1. Dr. Anuradha Bhattacharjee delivered a lecture on:
    - Effects of Globalization: An Emphirical Study of Advertising (23 November 2017).

(H) INTER-UNIVERSITY CENTRE FOR HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

The Institute acts as the Inter-University Centre (IUC) for Humanities and Social Sciences on behalf of the University Grants Commission. The academic programmes of the IUC have three basic components: (i) the scheme of Associateship; (ii) organization of research seminars in different parts of the country; and (iii) holding of study weeks on problems of national and international interest at the Institute. The Centre invites serving teachers from the universities and colleges in the country to spend three months for three consecutive years at the Centre to: (a) complete a piece of writing that they might at the time be engaged in; (b) revise their doctoral

work for publication; (c) make use of the library facilities of the Institute; and (d) interact with Fellows of the Institute and Visiting Professors and Visiting Scholars from India and abroad ho come to the Institute. The Associateship also takes part in the seminars and conferences, both national and international, which are among the regular activities of the Institute. Apart from their own work, the Associates are also expected to participate in all the academic activities of the Institute. They are required to give at least one presentation during their stay at the Centre. It is, however, optional for Associates to submit their research paper to the Institute for publication in the Institute's journals.

The following seminars were given by the IUC Associates during the period under report:

April

- Dr. Debopam Raha (West Bengal): *Pterodactyl, Puran Sahay and Pirtha by Mahasweta Devi: Representing Tribal Voice* (17 April 2017).
- Dr. Uttam Baliram Sonkamble (Maharashtra): *Challenge andefficacy of Listening Skills in the Classroom* (17 April 2017).
- Dr. Bijayananda Singh (Odisha): *Poet Rabindranath and Odia 'Sabuja' Consciousness* (17 April 2017).
- Dr. Jagan Karade (Maharashtra):*Man-made Third Gender: A Sociological Analysis* (17 April 2017).
- Dr. Shailaja B. Wadikar (Nanded): *Bhoma: Review of Exploitation in the Post Independence Indian Society* (18 April 2017).
- Dr. Prabhakaran Nair V.R (Kerala): *Banking Reforms, Credit Market and Rural Indebtedness in India.* (18 April 2017)
- Shri Wahul Arun Suryabhan (Maharashtra): *आंबेडकर के बाद महाराष्ट्र में दलित आन्दोलन की दशा और दिशा* (18 April 2017).
- Dr. Anaya Milind Thatte (Mumbai): *नाट्य संगीत की लोकप्रियता में शास्त्रीय गायकों का आंदोलन* (18 April 2017) ।
- Dr. Baliram Raghunath Dhapase (Maharashtra): *हिंदी–मराठी सिनेमा से संबंधित व्यक्तियों का जीवनीपरक साहित्य (जोहरा सहगल कृत करीब से और शांता हुबलीकर कृत कुशाला उद्याची बात के विशेष संदर्भ में* (19 April 2017) ।
- Mr. Purushottam Raosaheb Kunde (Maharashtra): *हिंदी में सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन की दिशाएं* (19 April 2017).
- Dr. Ramdas P. (Kerala): *Technology and Labour in Malabar Fishery (1880-1930): Outlines of an Industrial Formation* (19 April 2017).
- Dr. Rama Chandra Mohanty (Odisha): *Attitude of SC and ST Primary School Students of Barachana Block towards Education* (19 April 2017).

May

- Dr. Soni Scaria (Kerala): *The Holy Thread of Botany* (22 May 2017).
- Dr. Darshana Padia (Ahmedabad): *Status of Gender Responsive Budgeting in the State of Gujarat Post Three Years of Publication Since 2014-15* (22 May 2017).
- Dr. Alok Prasad (Allahabad) : *Education and Social Exclusion: A Case Study of Dalits in Uttar Pradesh (1950-1964)* (22 May 2017).
- Dr. Ishmeet Kaur Chaudhry (Gujarat): *Writing Personal Memories; Re/writing Partition History* (23 May 2017).
- Dr. Vinod Balakrishnan(Tamil Nadu): *Virality in the Environment of Political Cartoons: Humour and its Discontents* (23 May 2017).
- Dr. Akhilesh Kumar Shankhdhar (Manipur): *21वीं सदी की हिंदी कविताः विविध संदर्भ* (23 May 2017).
- Dr. Rohmingmawii (Mizoram): *Knowledge and Power: the Process of Subjugation and the Experience of Mizoram* (24 May 2017).
- Dr. B.P. Badola (H.P): *Situating Subaltern Discourse in the Perspective of Vedantisim and Postmodernism* (24 May 2017).
- Dr. G.A. Ghanshyam (Chhathigarh): *छत्तीसगढ़ का संवाद–भरतरी एक लोकगाथात्मक काव्य* (24 May 2017) ।

June

- Dr. Akash Verma (Assam): *भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री* (19 June 2017).
- Dr. Banibrata Mahanta ((Uttar Pradesh): *The Space Between: Global Realities, Local Perspectives, and the Representation of Disability in Literature* (19 June 2017).
- Dr. Laxmikanta Padhi *(*West Bengal*): Does Religion Give Meaning to Life?* (20 June 2017).
- Dr. Sushil Kumar (Bathinda): *The Epidemic of Drug Addiction in Punjab (India): The Stories of Mortal Pleasure in Punjabi Literature* (20 June 2017).
- Dr. Virender Singh Dhillon (Haryana): *Land- an 'Honour': Government, Institutions and Society in 19th Century Colonial Punjab* (20 June 2017).
- Dr. Deepa Kansra (New Delhi): *The Life and Potentiality of the Non-Human in Law* (21 June 2017).
- Dr. Nandita Banerjee (West Bengal): *Borders and Boundaries: Narratives and Discourse of Indian Cinema with special reference to Ritwik Ghatak* (21 June 2017).
- Dr. Ranjana Krishna (Lucknow): *Her Kind: Women in Classical Antiquity (A Re-reading of Myth of Helen through the lens of Neo Epic)* (22 June 2017).

- Ms. Kavita B. Harihar (Dharwad): *Harbingers of Social Change: A Study of Women Vacanakaras* (22 June 2017).
- Dr. S.N. Kiran (Karnataka): *The Flaneur in the Modern Metropolis: The Textual Production of the Urban Experience* (23 June 2017).
- Dr. Lalit Kumar Patra(Odisha): *From Intention to Action: Promoting Pro-Environmental Behaviour for Sustainable Development* (23 June 2017).
- Dr. Anindya Syam Choudhury (Assam): *The Breaking of Silence: Addressing Issues of Displacement, Identity and Belonging in Partition Narratives from Southern Assam* (23 June 2017).

July

- Dr. Shobha Kaur (Delhi): *श्री दसम ग्रन्थ में अर्थशास्त्रीय मूल्य* (19 July 2017) ।
- Dr. Sona Mandal (New Delhi): *Globalization and the Political Economy of Invisible Work: Women Home and Domestic Workers in India* (19 July 2017).
- Dr. Sharmila Chhotaray (Tripura): *Cultural Politics of Popular Performance: Structure and Representation* (19 July 2017).
- Dr. Pradyumna Sarma (Assam): *Beliefs and Customs as Reflected in Games: A Study of Folk Games of Assam* (20 July 2017).
- Dr. Meghali Goswami (West Bangal): *Kalighat Paintings: Documentation of the Socio-Religious Culture* (20 July 2017).
- Dr. Anupam Bahri (Chandigarh): *Commercial Sexual Exploitation of Girls: A Comparative Study* (20 July 2017).
- Dr. S. Ram Dass (Chennai): *Prevention of Crime and Delinquency: An Overview* (21 July 2017).
- Dr. Suresh Kumar(Haryana): *Rising India: Challenges and Opportunities*(21 July 2017).
- Dr. Kishore Kumar Das (Odisha): *Cross-Cultural Training on Expatriate Assignments: Indian Evidence on it Professionals* (21 July 2017).
- Dr. Tahir Hussain Ansari (Assam): *The Khokhra Chieftaincy and the Mughal Empire* (21 July 2017)

August

- Dr. Sheela H.K. Sridhar (Mysore): *Dance-A Classical Performing Art Multiple Identities of Bharatanaya* (28 August 2017).
- Dr. S. Karthick (Tamil Nadu): *The Confluence of Science and Spirituality in the Select Works of Umberto Eco*(28 August 2017).

September

- Dr. Pushpam Narayan (Bihar): *बिहार की गोदना कला एवं पमरिया नृत्यः एक अध्ययन* (20 September 2017).
- Dr. Sapna Pandit (Shimla): *Filling the Gap: Distance between Heart and Feet-Re reading Immigrant Experience in Rahinton Mistry's Such a Long Journey* (20 September 2017).

October

- Dr. Harsha Trivedi (Rajasthan): *हिंदी नाट्य साहित्य को दया प्रकाश सिन्हा का प्रदेय* (23 October 2017).
- Dr. S. Chandrakiran (Mandya): *Kannada Dalit Plays on the Social Platform*(23 October 2017).
- Dr. Kamal NayanPatowary (Assam): *Man and Surroundings: An Environmental Study in Reference to the KalikaPurana* (23 October 2017).
- Dr. Punam Sood (New Delhi): *बदलते मंजर के तेवर और कविता* (24 October 2017) ।
- Dr. Manish Kumar C. Mishra (Kalyan): *मानवता को सिंचित करती महाराष्ट्र की वंचित स्त्रियाँ (संदर्भः जिंदा कहानियाँ – शशिकला राय)* (24 October 2017) ।
- Dr. Asha Susan Jacob (Kerala): *Situating the Tribal: Mother Forest-The Unfinished Story of C. K. Janu*(24 October 2017).
- Dr. Manjeet Maan (Haryana): *Emancipation of Veiled Women in Haryana* (24 October 2017).
- Dr. Ramesh Dhage (Maharashtra): *The King of the Mass and not of the October Caste: Shivaji Underground in Bhimnagar Mohalla* (25 October 2017).
- Dr. Alok Prasad (Allahabad): *Capability Approach of Amartya Sen and the Question of Caste-based Social Exclusion* (25 October 2017).
- Dr. Chandrasheel Babi Tambe (Maharashtra): '*Post-truth Politics': A Critical Appraisal* (25 October 2017).
- Dr. Rupa Singh (Rajasthan): *फेसबुक पर स्त्री–विमर्श* (25 October 2017) ।

November

- Professor Anindya Bhattacharya (Hooghly): *Trade-off between Defence and Development: A Time Series Study in India* (24 November 2017).
- Dr. Anuradha R. Chetiya (Delhi): *Statistics and Music: Applications of Markov Models in Music*(24 November 2017).
- Dr. Ayub Khan (MP): *Images of the Hizra in Hindi Cinema with special reference on Sadak, Tamanna and Shabnam Mausi* (24 November 2017).
- Professor Harish K. Thakur (Shimla): *Roma Rights in Europe: A Study in Citizenship n Statelessness* (24 November 2017).

March 2018

- Dr. Maheshwar Mishra (Bihar): *Linguistic Speculation in the East and the West* (19 March 2018).
- Dr. Jyoti Swaroop Dubey (Bhopal): *तर्कना की न्याय परंपरा* (19 March 2018).
- Dr. Shatrughna Kumar Pandey (Jharkhand): *Jharkhand Movement: Concept & Truth* (19 March 2018).
- Dr. Suresh R. (Thiruvanthapuram): *Tibet and India-China Border Dispute: The Emerging Trends* (20 March 2018).
- Shri Minus Mallick (Odisha): *Social Constructivism and Public Diplomacy: A New Perspective in India's Foreign Policy* (20 March 2018).
- Dr. Sheila Srivastava (Rae Bareli): *Refrigeration and Global Warming* (21 March 2018).
- Dr. Sunita Jakhar (Rajashtan): *Bhangarh: A Narrative of Spook, Sorcery and Society* (21 March 2018).
- Dr. Sunetra Mitra (West Bengal): *The Age of Reform and Swami Vivekananda: An Alternative Approach* (21 March 2018).

IV. LIBRARY

The Library caters to the needs of not only regular fellows of the Institute but also provides services to visiting professors, visiting scholars, IUC Associates, consulting members and seminar participants etc.

In order to strengthen the library collections, the library has acquired 2724 books. It has rich collection of 151398 books and 50000 bound volume journal. The Library subscribes to 96 print journals in different field of Humanities and social science. Besides the print journals, the library is subscribing to wide range of online journals in the field of Humanities and Social sciences. The major online journals which are being subscribed are- Sage publication, Duke University Press and ACLS, Annual Reviews and EBooks from ACLS.

Book Exhibition: The Library has organized two days book exhibition on 1st and 2nd November, 2017 in the IIAS campus. Approximately 25 publishers have participated in the book exhibition. The Library regularly keeps its collection updated by organizing such exhibitions.

Access to E-resources: The library is member of e-Shodh Sindhu, a programme of INFLIBNET Center, Gandhinagar. Under the programme, it has access to all major e-resources (e-journals and e-books in the field of Humanities and Social Science. Besides, Access to e-shodh Sindhu programme, it also has access to e-resources covered under NLIST programme of INFLIBNET. The major e-resources are- Jstore, Project Muse, Taylor and Francis, Oxford University Press,

ISID, South Asia Archive , EPW, Ebrary, H W Wilson, Oxford e-scholarship(ebooks), Cambridge book online ,Springer e-books, world e-book library etc.

The fellows can access to e-resources from the residences by using the login and password generated by using Ezproxy software.

The library is fully computerized and catalogue is online. The library OPAC is accessible round the clock (http://14.139.58.198/WebOpac_n/Default.aspx)

The library has enrolled 19 external members and 17 short term members by charging membership fee. 1316 numbers of walk-in users visited for the period from 1.04.17 to 31.03.18.

Workshop and training: Library has organized two workshop/ training program

A) INFLIBNET Regional Training Program On Library Automation (IRTPLA):

The library has organized five days training program on Library Automation in collaboration with INFLIBNET Centre, Gandhinagar from 17th to 21st July 2017. Sixty-five participants from different parts of the country participated in this workshop. The program aims to train library professionals in using Library management software with emphasis on (SOUL) software designed and developed by INFLIBNET Centre.

B) Two days training for Indian digital repository (IDR) by using Dspace software under NDL Project:

The two day's training cum workshop on National Digital Library Project (NDL) in collaboration with IIT Kharagpur from 21st and 22nd September 2017. The objective of the NDL project was to integrate all the existing digitized and digital contents across educational institutions of the nation to provide a single window access with e-learning facility to different groups of users ranging from primary level to higher educational level of our country.

V. PUBLICATIONS

The Institute's main objective is to encourage and disseminate research. It publishes the research outputs of its Fellows, the Visiting Professor and the proceedings of the seminars conducted by the Institute in the form of books. These are published either as entirely IIAS publications, or in collaboration with leading commercial publishers such as Orient Blackswan, Oxford University Press, Permanent Black, Routledge, SAGE, Springer and the like. The Institute has over 460 such publications to its credit. These are available at the IIAS Bookshop located in the Fire-Station Café on the campus. They can also be procured online through the Institute's website iias.org & Amazon or through written requests to the Sales and Public Relations Officer of the Institute.

The following books are published during the period under report:

1. *Entangled Spaces Some Aspects of Portuguese Presence in Coromandel-Archipelago Southeast Asia Complex* by Dr. Smarika Nawani
2. *Social Security from a Human Development Perspective in Disaster Prone Areas of the Archipelagic of Southern Asia: Lessons Learned From Indonesi*a by Dr. Faisar Jihadi, IC4HD Fellow
3. *Locating Gender in the New Middle Class in India* edited by Dr. Manjeet Bhatia
4. *Devotion in Indian Tradition* by Dr. Gautam Patel
5. *Indigeneity Tales and Alternatives Revisiting Select Tribal Folktales* by Dr. Kaustav Chakraborty
6. *Malaysia: Social Protection in Addressing Life Cycle Vulnerabilities* by Ms. Wan Ya Shin , IC4HD Fellow
7. *Later Wittgenstein on Language and Mathematics: A Non- Foundational Narration* by Dr. Enakshi Ray Mitra
8. *Social Security for Waste Pickers of India* by Dr. Swetha Kolluri, IC4HD Fellow
9. *Categorical Blue: Personalytic Ethic in Social Work and other Structures of Helping* by Dr. Arnab Chatterjee
10. *Theory and Practice of Heritage Conservation and Restoration of Rashtrapati Niwas, Shimla* by Shri Chhering Dorje
11. *Invisible Web: An Art Historical Inquiry into the Life and Death of Jangarh Singh Shyam* by Dr. Amit Dutta
12. *Damuda: Sacred Water Narratives on Environmental Loss and Conflict in the Upper and Middle Damodar River Basin* by Dr. Sayantoni Datta
13. *दलित साहित्य की अवधारणा में रंगमंच* लेखक –श्री मोहनदास नैमिशराय

CO- PUBLICATIONS

14. *Tagore and Nationalism* edited by Dr. K.L. Tuteja and Dr. Kaustav Chakraborty (Co-published with Springer)
15. *Level Crossing: Railway Journeys in Hindi Cinema* by Dr. Vijaya Singh (Co-published with Orient BlackSwan)
16. *Knowing the Social World Perspectives and Possibilities* edited by Dr. N. Jayaram (Co-published with Orient BlackSwan)
17. *कविता का शहर एक कवि के नोटबुक* लेखक – श्री राजेश जोशी

18. *Burden of History: Unresolved Issues of Assam and the Partition* by Dr. Udayon Misra (Co-published with OUP)
19. *Unclaimed Harvest An Oral History of the Tebhaga Women's Movement* by Dr. Kavita Panjabi(Co-published with Zubaan)
20. *Friendships of 'Largeness and Freedom' Andrews, Tagore, and Gandhi An Epistolary Account 1912-1940* edited and introduced by Dr. Uma Das Gupta (Co-published with Oxford University Press)
21. *Reading History with the Tamil Jainas : A Study on Identity, Memory and Marginalisation* by Dr. R. Umamaheshwari (Co-published with Springer)
22. *Social Dynamics of the Urban Studies from India* edited by Dr. N. Jayaram (Co-published with Springer)

In addition the Institute also publishes its own peer-reviewed journal: Studies in Humanities and Social Sciences (SHSS). It is a biannual double-blind, peer-reviewed interdisciplinary journal started in 1994. The journal engages, on a conceptual plane, with issues relating to our understanding of man, civilization, culture, and society. SHSS has been declared on open-access journal and can be easily accessed online. The Institute also publishes Summerhill Review, a biannual review journal that also carries scholarly articles and interviews. The journals published during the given period are:

1. *Studies in Humanities and Social Sciences (SH&SS)* Vol. XXII, Number 1, Summer 2015, Editor: Professor Sumanyu Satpathy
2. हिन्दी पत्रिका 'हिमांजलि' 14वां व 15वां अंक

VI. SALES AND PUBLIC RELATIONS

1. Sale of IIAS Publications

During the period from 1st April 2017 to 31st March 2018 visitors visited to the Institute purchased books costing to Rs. 2,34,441.00 (Rupees Two Lakh Thirty Four Thousand Four Hundred Forty One only). The Institute has sold 681 books to various clients across the country of a sum amounting to Rs. 1, 15,627.00 (Rupees One Lakh Fifteen Thousand Six Hundred Twenty Seven Only). Besides this, the Institute has also participated in World Book Fair held at New Delhi w.e.f 6-01-2018 to 15 -01-2018. The Institute has sold 463 books and net amount from the sale of books is Rs. 40,929.00 (Rupees Forty thousand nine hundred twenty nine only). The institute has also participated at Chandigarh Book Fair w.e.f 15-11-2017 to 18-11-2017. The Institute has sold 181 books and net amount from the sale of books is Rs. 15,414.00 (Rupees Fifteen Thousand Four Hundred Fourteen Only). The Institute has also sold 303 books through online worth Rs.61, 049.00 (Rupees Sixty One Thousand Forty Nine Only). Thus the total amount received from Sale of IIAS Publications is Rs. 4,67,460.00 (Rupees Four Lakh Sixty Seven Thousand Four Hundred Sixty Only)

2. Income from the Tourist Entry Ticket

During the period from 1st April 2017 to 31st March 2018, the Institute received 2, 23,775 Tourists and earned a sum of Rs.78, 55,605.00 (Rupees Seventy Eight Lakh Fifty Five Thousand Six Hundred Five Only) by charging entry fee. The Institute has also earned a sum of Rs. 6, 63,760.00 (Rupees Six Lakh Sixty Three Thousand Seven Hundred Sixty Only) from entry fee being charged from the vehicles coming up to the main building. Thus the total income during the above period from the tourist fee was Rs. 85, 19,365 (Rupees Eighty Five Lakh Nineteen Thousand Three Hundred Sixty Five Only).

3. Sale of books of various publishers at the IIAS Book Shop

The IIAS Book Shop stocks books published by leading National and International publishers. During the period under report the Book Shop sold 468 books worth Rs 22,170.00 (Rupees Twenty Two Thousand One Hundred Seventy Only) and the net profit from the sale of books was Rs. 4,660.00 (Rupees Four Thousand Six Hundred Sixty Only).

Sale of Souvenirs

There are some souvenir items available for sale at the IIAS Book Shop, such as a booklet on the IIAS, T-shirts, Sweat-Shirts, Caps, Coffee Mugs, Picture Postcards, IIAS Calendars and Greeting Cards. During this period, the Institute earned a sum of Rs. 6,94,180.00 (Rupees Six Lakh Ninety Four Thousand One Hundred Eighty Only) from the gross sale of these souvenir items and the net profit from the sale is Rs. 2,32,344.00 (Rupees Two Lakh Thirty Two Thousand Three Hundred Forty Four Only).

Thus the total break-up of income from sale of tickets and sale at the IIAS Book Shop is as under:

S.No.	Head	Amount (Rs.)
1.	Sale of IIAS Publications	4,67,440. 00
2.	Income from the Entry Ticket	85,19,365.00
3.	Net profit from sale of books (Various Publishers)	4,660. 00
4.	Net Profit from sale of Souvenirs	2,32,344. 00
	Total	**92,23,809.00**

VII. DISPENSARY

Institute houses a well equipped dispensary with a Pharmacist for dispensing the medicines and a Resident Medical Officer (RMO) who looks after the health care needs of fellows, associates and other residents of the Institute including employees and their families. 3476 patients attended the dispensary during the period from 01/04/2017 to 31/03/2018. 95 emergency visits were made by the R.M.O.

VIII. INTERNAL COMPLAINT COMMITTEE

internal complaint Committee has been reconstituted with the following members:

1. Dr. Ajay Kumar, Fellow
2. Smt. Jyotika Gupta, Advocate
3. Shri Ravinder Saini, Sr. PS to the Director
4. Dr. Meenu Aggarwal, RMO
5. Dr. Manisha Choudhary, Fellow

No complaint was received during the period under report, nor was there any prior complaint pending before the Committee.

IX. RIGHT TO INFORMATION

Fifty four applications were received during the period w.e.f. from 01/04/17 to 31/03/18 under RTI ACT 2005; required information were collected and supplied to the applicants.

X. INTERNATIONAL YOGA DAY

In pursuance of the order of the Ministry of Human Resource Development, the International Yoga Day was observed at the Institute on the 21st June 2017. Smt. Sarika Ahuja and Shri Suryabanshi, the Yoga trainers from the 'Art of Living' gave demonstration and inspired the audience for Pranayam and different Yoga Asanas in their daily life. All the Fellows, IUC Associates, officials and teir their family members participated in the yoga Session.

XI. VIGILANCE AWARENESS WEEK

In pursuance of the order of the Ministry of Human Resource Development, the Vigilance Awareness week were observed from 30th October to 4th November, 2017 at the Institute. Shri Prem Chand, the Secretary of the Institute administed the oath to the officials of the Institute to keep India corruption free. Shri Ram Mohan Johri, IA&AS, the former Principal Accountant General of Himachal Pradesh, Dr. Jagdish Lal Dawar and Dr. Ajay Kumar, Fellows of the Institute delivered the lectures on "Eradication of Corruption". In addition quiz and debate competitions were also organized during the week.

XII. SWACHHATA PAKHWADA

As per the directives of Government of India all the Sections of the Institute voluntarily devoted two hours for the Cleanliness in their respective Section on 22nd May 2017. Following the directions of the Government of India, the Swacchta Pakhwara from 1-15 September 2017 was

observed at the Institute.

The Institute has already installed dustbins in all around the campus and it is specifically insured by the Institute that the garbage is collected from the dustbins and handed over the same to the Municipal Corporation Shimla for further processing.

All the officers and employees of the Institute are devoting two hours every Monday in order to devote 100 hours in a year for cleanliness.

In addition, to the above, during the period under report, the Institute has taken the initiatives to clean the hill slops besides the main building and near Fellow's mess.

XIII. ESTATE SECTION
MAINTENANCE OF ESTATE AND SPECIAL REPAIR WORKS

During the period under report, both wings of the CPWD (Civil & Electrical) and Archaeological Survey of India (ASI) continued to attend the day-to-day maintenance work of the Institute. The details are as under:

1. CPWD (Civil) Works:

    a) The Institute had assigned CPWD (Civil) the task of laying bitumen from Gorkha gate No.1 & 2 to Ticket booth and from Ticket booth to main guest house of the Institute. The work has been completed.

    b) Mandi Riwalsar stone has been used for retaining wall to the approach road. The extension of garage has been constructed. Repair & renovation of false celling, side staircase and drain has been undertaken. Provision of porch and outside wall has been made. In addition, file cladding for B- Block, Prospect Hill of IIAS has been done.

    c) Repair, renovation and upgradation of Zakir Hussain House is still in progress.

    d) The Institute has released a sum of Rs. 1729234.00 to CPWD (Civil) against the estimate of Rs. 5188221.00 for Annual Repair and Maintenance of (A/R &MO) residential buildings.

    e) The Institute has released a sum of Rs. 1568176.00 to CPWD (Civil) against the estimate of Rs. 4705000.00 for Annual Repair and Maintenance of (A/R &MO) non-residential buildings.

XIV. HORTICULTURE

During the period unde report, following works were executed by the Horticulture Section of the Institute:

Cultivation Practices

A. Preparation of Field Beds

The soil was ploughed to fine tilth with the help of rotary tiller and planting beds were prepared by the gardeners before planting of annuals flowers. After the preparation of planting beds FYM was mixed in the soil. Seeds of different annual flowers were sown in the planting beds of nursery. When the seedlings attain two-three leaves, prickling was done by the gardeners of garden. Prickling is the practice of transplanting young seedlings into small individual pots or in the nursery beds with richer soil giving wider space. It is mainly done to decrease the mortality of the plant. After one month of planting, these plants were transplanted to different area of the Institute, official/fellows residences viz Squire's Hall, Siddharth Vihar, Observatory house (Guest House), Red stone, Delville, Bilaspur House etc.

B. Sowing of Annual Flowers

1. Seeds of the summer annuals like gaillardia, portulaca, tithonia, gomphrena, cocks-comb, balsam were sown in the month of February- March. After one month of planting, they were planted in a different area of the institute.
2. Seeds of the rainy season annuals like marigold, cosmos, begonia, zinnia, amaranthus, kochia, sunflower etc were sown in the month of June-July.
3. Seeds of winter season annuals like petunia, pansy, godetia, clarkia, primula, ice plant, corn flower, calendula etc were sown in the month of September-October.

Management Practices

- Weeding: Regular weeding from time to time was done by the gardeners.
- Irrigation: Irrigation was done twice a week/or when needed.
- Staking: Staking was done by collecting bamboo sticks from the nearby forest. It is the practice of supporting flowers with the help of wooden/bamboo sticks.
- Pinching: Gardeners practiced pinching to induce lateral shoots.
- Pruning: Pruning of roses and certain trees like maple, magnolia etc was done in the month of November-December by the gardeners.
- Training/Trimming: Training of certain trees/climbers/shrubs like thuja, cupressus, junipers, vancia rose, wisteria etc was done to give them proper shape.
- Lawn Mowing: Lawn mowing of the front lawn and different areas of the institute was done on regular basis.
- Cleaning: Cleaning of garden pathways and lawn was done regularly.

Maintenance of the Nursery

- Preparation of garden soil: First the soil was sieved with the help of thin mesh then soil and well decomposed compost is mixed. This soil was used for potting/repotting of plants.
- Preparation of cuttings: The cutting of roses, junipers, privet, cryptomeria, weigela, thuja etc were raised in the mist chamber and later planted in P-bags for sale as well as for use in the garden of the institute.
- Potting/repotting: The works like potting/repotting of the flower pots were done on regular basis.
- Preparation of flower pots: The flower pots for the main building of the institute were prepared in the nursery itself. The flower pots for main building were changed every Monday with the new one and the brass pots were cleaned with Brasso twice a month to maintain the floral decoration of the main building.

Manure and Fertilizers: Organic manure was prepared by the collection of old fallen leaves of Oak trees from different location of the institute by the workers of the garden. They are mixed with soil in a compost pit and after proper degradation manure is ready to use.

Sale of Plants: During the following period, the total sale of the plant is Rs. 11,580/- only.

XV. OFFICIAL LANGUAGE

During the year under report following Initiatives were taken to promote and implementation of Official Language at the Institute with its limited resources:

Quarterly meetings of Official Language Implementation Committee: During the year regular quarterly meetings of Official Language Implementation Committee of the Institute were organised and steps were taken to follow the guidelines of Department of Official Language, MHRD, Government of India regarding practical implementation of Hindi in official work.

Quarterly Hindi Progress Report: During the period of report the Institute has submitted Quarterly Hindi Progress Report in time to the Department of Official Language, Ministry of Home and MHRD.

Hindi Diwas/Week/Fortnight and Hindi Competitions: The Institute celebrated Hindi Diwas on 14 September 2017. The Fellows, Associates and officers/officials of the Institute were present on the occasion. The Institute organised various Hindi competitions also in the month of September 2017. The Officials of the Institute participated with great enthusiasm.

Annual Prize Distribution: Annual Rajbhasha prize distribution function was held on 27-12-2017 and prizes were distributed by Professor Chandrakala Padia, the Chairperson of the Institute to the winners and participants of Hindi competitions. In addition under Incentive scheme for noting/drafting originally done in Hindi, ten officials were awarded with Appreciation Letters and the prescribed amount of prizes was transferred to their saving accounts.

Publication of Himanjali Magazine: During the period of report the Institute published the 15th issue of Hindi magazine- Himanjali and circulated the copies to the ministry, various institutions and readers across the country and abroad also.

XVI. ACCOUNTS AND BUDGET

The Revised Estimates for the F.Y. 2017-18 and Budget Estimated for the year 2018-19 are as under:

Name of Scheme	Revised Estimate 2017-18 (Rs. in Lakhs)	Budget Estimates 2018-19(Rs. in Lakhs)
OH-31	1030.00	1536.00
OH-35	370.00	200.00
OH-36	1100.00	764.00
Total	2500.00	2500.00

The accounts of the Institute for the year 2017-18 duly audited by the Office of the Director General of Audit (Central), Indian Audit and Accounts Department, Chandigarh are enclosed on pages 80-117.

IUC ACCOUNTS

The Accounts of the Inter-University Centre for Humanities and Social Sciences (IUC) Scheme are audited by Chartered Accountants M/S Doger & Co., Shimla. The expenditure for the year 2017-18 was Rs. 31.87 lakh.

The Audited Statement of Accounts of the Inter-University Centre (IUC) Scheme for the year 2017-18 is placed on pages 118-122.

Speed Post

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

Indian Audit & Accounts Department

Office of The Principal Director of Audit (Central), Chandigarh

स०/No: पी.डी.ए. (सी)/के. व्यय/SAR/ IIAS Shimla/ 2017-18/2018-19/ 3462 दि०/Dated: 22.01.2019

निदेशक कार्यालय में प्राप्ति की तारीख
25 JAN 2019
कृते वरिष्ठ निजी सचिव

सेवा मे,

सचिव,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
भारत सरकार
कमरा न. 127, सी विंग
शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110001

विषय: Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2017-18 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

महोदय,

कृपया Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2017-18 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन (Separate Audit Report) संसद के दोनों सदनों के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु सलंग्न पायें| संसद में प्रस्तुत होने तक प्रतिवेदन को गोपनीय रखा जाए|

संसद में प्रस्तुत करने के उपरांत प्रतिवेदन की पांच प्रतियाँ इस कार्यालय को भी भेज दी जाएँ|

कृपया इस पत्र की पावती भेजें|

भवदीय,

हस्ता/-

प्रधान निदेशक

संलग्न: उपरोक्त अनुसार

उपरोक्त की प्रतिलिपी वर्ष 2017-18 की पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन की प्रति सहित आवश्यक कार्यवाही हेतु निदेशक, Indian Institute of Advanced Study, Shimla, राष्ट्रपति निवास, शिमला, हिमाचल प्रदेश-171005 को प्रेषित की जाती है|

उप निदेशक (केन्द्रीय व्यय)

Secy/AO
MP
31/1/19

31.1.19

प्लाट न. 20-21, सेक्टर - 17ई, चण्डीगढ़ - 160017 Plot No. 20-21, Sector-17E, Chandigarh - 160017
दूरभाष/ Tel.No. 0172 - 2782020 & 2706117 फैक्स/ FAX No:0172 - 2782021 / 2783974 ई-मेल/ Email: pdacchandigarh@cag.gov.in

31/1/19

Separate Audit Report of the Comptroller & Auditor General of India on the Accounts of Indian Institute of Advanced Study, Shimla, for the year ended 31st March 2018

1. We have audited the Balance Sheet of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla, as at 31 March 2018, Income & Expenditure Account and Receipts & Payments Account for the year ended on that date under Section 20(I) of the Comptroller & Auditor General's (Duties, Powers & Conditions of Service) Act, 1971. The audit has been re-entrusted from 2013-14 to 2017-18. These financial statements are the responsibility of the Institute's management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

2. This Separate Audit Report contains the comments of the Comptroller & Auditor General of India (CAG) on the accounting treatment only with regard to classification, conformity with the best accounting practices, accounting standards and disclosure norms, etc. Audit observations on financial transactions with regard to compliance with the Law, Rules & Regulations (Propriety and Regularity) and efficiency-cum-performance aspects, etc., if any, are reported through Inspection Reports/CAG's Audit Reports separately.

3. We have conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. These standards require that we plan and perforin the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free from material mis-statements. An audit includes examining, on a test basis, evidences supporting the amounts and disclosure in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by management, as well as evaluating the overall presentation of financial statements. We believe that our audit provides a reasonable basis for our opinion.

4. Based on our audit, we report that:

   i) We have obtained all the information and explanations, which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of our audit;

   ii) The Balance Sheet and Income and Expenditure Account dealt with by this Report have been drawn up in the format prescribed by the Ministry of Human Resources Development, Government of India vide order No. 29-4/2012-FD dated 17 April 2015 except the comment at SI.No. B.6.

   iii) In our opinion, proper books of accounts and other relevant records have been maintained by the Indian Institute of Advanced Study, Shimla in so far as it appears from our examination of such books except the comment at Sl.No. B.4.

   iv) We further report that:

A. Balance Sheet

Current Liabilities & Provisions (Schedule 3)

Receipt against the Sponsored projects: ? NIL

As per prescribed format; neither the fund balance of project Inter University Centre (IUC) for Humanities and Social Sciences (UGC) of Rs. 33.44 lakh' is shown as Receipts against Sponsored Project under Current Liabilities (Schedule 3 (a)), nor its representation in Bank Balance amounting to Rs. 3.40 lakh, receivable from UGC of Rs. 26.94 lakh and Loans & Advances of Rs. 3.10 lakh are shown as Assets. This has resulted in understatement of Current Liabilities & Provisions (Schedule 3) by Rs. 33.44 lakh, Current Assets (Schedule-7) by Rs. 3.40 lakh as well as Loan and Advances & Deposits (Schedule 8) by Rs. 30.04 lakh.

B. General

B.1 Net impact of Audit comments on the Annual Accounts

Net impact of Audit comments on the Annual Accounts of Indian Institute of Advanced Study, Shimla for the year ending 31 March 2018 is Assets are understated by Rs. 33.44 lakh and Liabilities are understated by Rs. 33.44 lakh.

B.2 A reference is invited to Accounting Policy at Sl.No. (c) i) which states that no depreciation on old balances of fixed assets have been provided by the Institute up to the Financial Year 2013-14. Non charging of depreciation on fixed assets up to the financial year 2013-14 has resulted in overstatement of Fixed Assets (Schedule 4) as well as Corpus/ Capital Fund (Schedule 1) to the extent of depreciation not charged.

B.3 The utilisation Certificates submitted by concerned CPWD Divisions shows unutilized deposit of Rs. 7.90 crore (Civil: Rs. 7.33 crore and Electrical: Rs. 57.00 lakh) lying with them as on 31.03.2018 instead of Rs. 7.24 crore. Thus, there is difference of Rs. 66.00 lakh which needs reconciliation.

B.4 Stock ledgers maintained by the Institute reveal only physical terms of receipts, issues & balances of stores/ stocks but not their monetary form. The value needs to be assigned to closing balances of consumable stores.

B.5 Although provisions for retirement benefits have been made in the Annual Accounts but these provisions are not made on actuarial basis which is in contravention of format of accounts prescribed by MHRD as well as AS 15. This issue was also pointed in the previous SARs but no corrective steps were taken.

B.6 Schedule 3C (showing the unutilised Grants from the UGC, Government of India and State Governments) and Annexure A to Schedule 7 which requires disclose/give details of all the saving, current and term deposit accounts maintained by Institute as prescribed in the format prescribed by MHRD, have not been prepared by the Institute.

B.7 The Institute has negative balance of grant of Rs. 52.00 lakh under the Object Head-36 as on 31.03.2018. Specific approval of Government/Ministry needs to be obtained for regularizing excess expenditure already made under OH-36.

B.8 As per Schedule 10 (Grant/ Subsidies), in respect of Government of India grant, the Institute has shown opening balance and closing balance of Rs. 22.71 crore (including Non Salary/ Pension) and Rs. 14.58 crore, respectively. However, in the Utilisation Certificate submitted to the Ministry of Human Resource & Development, the Institute has shown opening balance and closing balanced of Rs. 13.94 crore and Rs. 4.41 crore, respectively. The differences needs reconciliation and revised UC needs to be sent to the Ministry accordingly.

C. Grant-in-aid

Out of the available funds of Rs. 33.40 crore (OH-31: Rs. 21.92 crore, OH-35: Rs. 3.76 crore and OH-36: Rs. 7.72 crore, including previous year balance of Rs. 22.71[1] crore (OH-31: Rs. 17.68 crore, OH-35: Rs. 2.41 crore, OH-36: Rs. 2.62 crore), grant received during the year of Rs. 9.04 crore (OH-31: Rs. 2.59 crore, OH-35: Rs. 1.35 crore, OH-36: Rs. 5.10 crore), interest received on grant of Rs. 0.25 crore (OH- 31: Rs. 0.25 crore, OH-35: Nil, OH-36: Rs. Nil) and other receipt of Rs. 1.40 crore (OH- 31: Rs. 1.40 crore); the Institute utilized Rs. 18.82 crore (OH-31: Rs. 9.21 crore, OH-35: Rs. 1.37 crore, OH-36: Rs. 8.24 crore) leaving an unutilised balance of Rs. 14.58 crore (OH-31: Rs. 12.71 crore, OH-35: Rs. 2.39 crore, OH-36: Rs. (-) 0.52 crore) at the end of the year.

The Institute has capital advances of Rs. 8.02 crore as on 31.03.2018. Thus, before deduction of capital advances, the Institute has an unutilized balance of grant Rs. 22.60 crore (OH-31: Rs. 12.71 crore, OH-35: Rs. 10.41 crore. OH-36: Rs.(-) 0.52 crore).

Apart of above the Institute has an unspent balance of Rs. 17.05 crore under specific Scheme of UNDP namely International Centre for Human Development (IC4HD).

v) Subject to our observations in the preceding paragraphs, we report that the Balance Sheet and Income and Expenditure Account/Receipts & Payments Account dealt with by this report are in agreement with the books of accounts.

vi) In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said financial statements read together with the Accounting Policies and Notes on Accounts, and subject to the significant matters stated above and other matters mentioned in Annexure to this Audit Report give a true and fair view in conformity with accounting principles generally accepted in India:

[1] As per previous SAR the unutilized balance of grant was Rs. 38.34 crore which included balance of project fund IUC Rs. 15.62 crore, the balance difference of Rs. 0.01 crore was due to rounding off of figures.

a. In so far as it relates to the Balance Sheet, of the state of affairs of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla as on 31st March 2018; and

b. In so far as it relates to Income & Expenditure Account, of the surplus for the year ended on that date.

For and on behalf of the C & AG of India.

Principal Director of Audit (Central)

Place: Chandigarh **Chandigarh**

Date: 22/01/2019

ANNEXURE TO AUDIT REPORT

1. Adequacy of Internal Audit system

Internal Audit of Institute is being conducted by the Chartered Accountant. Internal Audit system was found to be deficient as scope of audit was not defined.

2. Adequacy of Internal control system

Internal control system is considered inadequate in view of the following:

a) The Institute has not prepared Accounting Manual;

b) There was no system of taking confirmation of balances from debtors.

3. Physical verification of Fixed Assets / Inventory

Physical Verification of Fixed Assets and Inventory for the year 2017-18 has been conducted.

4. Regularity in payment of Statutory Dues

As per books of accounts, the Institute was regular in depositing statutory dues.

Sd/-

Deputy Director

Speed Post

संदीप लाल, आई.ए.ए.एस
SANDEEP LALL, IAAS

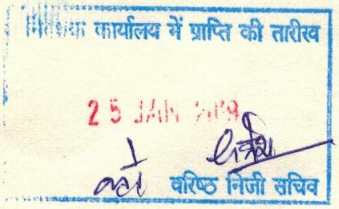

प्रधान निदेशक - लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), CHANDIGARH

NO: PDA (C)/ CE/ SAR/IIAS Shimla/18-19/ 3464
Dated : 22.01.2019

Dear Prof. Paranjape,

While conducting the audit of annual accounts of your Institute for the year ended 31 March 2018 certain deficiencies were noticed. Significant audit comments in respect of the same have already been reported through the Separate Audit Report on the accounts of the Institute. However, certain deficiencies which have not been included in the Separate Audit Report (as detailed in the annexure) are being brought to your notice for remedial/ corrective action.

Kindly issue instructions for taking corrective measures in this regard.

with warm regards,

Yours sincerely,

22/01/19

Prof. Makarand R. Paranjape
Director
Indian Institute of Advanced Study,
Shimla

Secy/ AO
MP
31/1/19

1/2/19

प्रथम तल, लेखा भवन, सैक्टर 17–ई, चण्डीगढ़ – 160 017
1st Floor, Lekha Bhawan, Sector 17-E, Chandigarh - 160 017
Fax : 0172-2782021 & 2783974

ANNEXURE TO THE MANAGEMENT LETTER

A. Balance Sheet

Application of Funds

Current Assets: Rs. 36.19 Crore (Schedule 7)

Stock: Nil

The Institute has a balance of store of different materials of Rs. 4.41 lakh as on 31.03.2018. Non accounting of closing balance of stores of Rs. 4.41 lakh has resulted in understatement of Current Assets (Schedule 7) as well as Corpus/ Capital Fund (Schedule 1) by Rs. 4.41 lakh each besides overstatement of Expenditure to the same extent.

B. Income and Expenditure

Prior period expenses (Schedule 22): NIL

Above does not include payment of property tax (including interest and penalty paid on arrear demand) of Rs. 15.77 lakh paid during the year 2017-18 but related to financial years 2014-15, 2015-16 and 2016-17 which have wrongly been included in current year expenses of Repair and Maintenance (Schedule-23). This has resulted in overstatement of expenditure on account of Repair and Maintenance (Schedule-23) and understatement of Prior Period Expenses (Schedule 22) by Rs. 15.77 lakh each.

C. General

As per guidelines of prescribed format, the assets where the ownership of these assets is retained by the sponsors but held and used by the Institution are required to be separately disclosed in the Notes on Accounts.

UGC while sanctioning the IUC grant stipulates a condition that the assets acquired wholly and substantially out of the grant shall not be disposed or encumbered or utilized for the purposes other than for which the grants was given without proper sanction of the UGC and should at any time the University ceased to function, such assets shall revert to UGC.

However, the Institute has not disclosed the fact it has fixed assets of Rs. 72.36 lakh created out of IUC project, in the Notes to Accounts (Schedule 24).

Sd/-

Deputy Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

BALANCE SHEET AS ON 31st March 2018

Amount in Rupees

Source of Funds	**Schedule**	**"Current Year 2017-18"**	**"Previous Year 2016-17"**
Corpus/Capital Fund	1	242745672.08	238742117.80
Designated/ Earmarked / Endowment Funds	2	42491712.00	47546604.00
Current Liabilities & Provisions	3	376543271.68	441320022.43
Total		**661780655.76**	**727608744.23**
Application of Funds	**Schedule**	**"Current Year 2017-18"**	**"Previous Year 2016-17"**
Fixed Assets			
Tangible Assets	4	212896010.73	218267092.73
Intangible Assets	4	-	39653.00
Capital Works-in-progress		-	
Investments from Earmarked / Endowment Funds	5	-	
Long Term		-	
Investments - Others	6		
Current Assets	7	361920871.03	410398586.50
Loans, Advances & Deposits	8	86939981.00	98903412.00
Total		**661756862.76**	**727608744.23**
Significant Accounting Policies	23	-	-
Contingent Liabilities and Notes to Accounts	24	-	-

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Avinash Solanki)	(Prem Chand)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED, 31st MARCH 2018

Amount in Rupees

Particulars	**Schedule**	**"Current Year 2017-18"**	**"Previous Year 2016-17"**
INCOME			
Academic Receipts	9	-	-
Grants / Subsidies	10	174579742.75	147973745.43
Income from investments	11	-	-
Interest earned	12	-	-
Other Income	13	5541553.28	2639509.37
Prior Period Income	14	-	-
Depreciation transferred to Capital fund Grant- in-Aid		3204891.00	4167380.00
TOTAL (A)		**183326187.03**	**154780634.80**
EXPENDITURE			
Staff Payments & Benefits (Establishment expenses)	15	91785000.00	70388891.00
Academic Expenses	16	30480711.00	32589218.12
Administrative and General Expenses	17	14050556.00	13310052.87
Transportation Expenses	18	447849.00	388419.00
Repairs & Maintenance	19	37812332.00	31464101.00
Finance costs	20	3294.75	4123.56
Depreciation	4	3575291.00	4574088.00!
Other Expenses	21	-	-
Prior Period Expenses	22	-	-
TOTAL (B)		**178155033.75**	**152718893.55**
Balance being excess of Income over Expenditure (A-B)		5171153.28	2061741.25
Transfer to / from Designated Fund		-	-
Building fund		-	-
Others (specify)		-	-
Balance Being Surplus / (Deficit) Carried to Capital Fund		-	-
Significant Accounting Policies	23	-	-
Contingent Liabilities and Notes to Accounts	24	-	-

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Avinash Solanki)	(Prem Chand)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE -1 CORPUS/CAPITAL FUND

Amount in Rupees

Particulars		**"Current Year, 2017-18"**	**"Previous Year, 2016-17"**
	Balance at the beginning of the year	238742117.80	236680376.55
Add:	Contributions towards Corpus/Capital Fund		
Add:	Grants from UGC, Government of India and State Government to the extent utilized for capital expenditure		
Add:	Assets Purchased out of Earmarked Funds		
Add:	Assets Purchased out of Sponsored Projects, where ownership vests in the institution		
Add:	Assets Donated/Gifts Received		
Add:	Other Additions (Provision Written Back)	18781.00	
Add:	Excess of Income over expenditure trasferred from the Income & Expenditure Account	5171153.28	2061741.25
Total		**243932052.08**	**238742117.80**
Less:	Deficit transferred from the Income & expenditure Account		
Less:	Income Tax Paid	1186380.00	
Balance at the year end		**242745672.08**	**238742117.80**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 2 - DESIGNATED/ EARMARKED / ENDOWMENT FUNDS/CAPITAL GRANT

Amount in Rupees

Particulars	Fund wise Breakup					Total	
	Capital Grant in aid	Fund AAA	Fund BBB	Fund CCC	Endowment Funds	Current Year	Previous Year
A.							
a) Opening balance	47546604.00						23428115.00
b) Additions during the year	13675849.00						28285869.00
c) Income from investments made of the funds							
d) Accrued Interest on investments/Advances							
e) Interest on Savings Bank a/c							
f) Other additions (Specify nature)							
Total (A)	**61222453.00**	**0**	**0**	**0**	**0**		**51713984.00**
B.							
Utilisation/Expenditure towards objectives of funds							
ii) Capital Expenditure	15525850.00						
ii) Revenue Expenditure							
Less Depreciation	3204891.00						4167380.00
Total (B)	**18730741.00**	**0**	**0**	**0**	**0**		**4167380.00**
Closing balance at the year end (A - B)	**42491712.00**						**47546604.00**
Represented by							
Cash And Bank Balances							
Investments							
Interest accrued but not due							
Fixed Assets	42491712.00						47546604.00
Total							

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 3- CURRENT LIABILITIES & PROVISIONS

Amount in Rupees

	"Current Year 2017-18"	"Previous Year 2016-17"
"A. CURRENT LIABILITIES"		
1. Deposits from staff		
2. Deposits from students		
3. Sundry Creditors a) For Goods & Services b) Others	194309.00	-
4. Deposit-Others (including EMD, Security Deposit)	49900.00	-
5. Statutory Liabilities (GPF, TDS, WC TAX, CPF, GIS, NPS):	1240676.00	-
a) Overdue	-	42653.00
b) Others		
6. Other Current Liabilities		
a)Salaries	5781953.00	4651474.00
b)Receipts against sponsored projects		
c) Receipts against sponsored fellowships & scholarships		
d)Unutilised Grants	316265171.68	383393841.43
e) Unutilised Grants of MOC	202157.00	202157.00
f) Other funds		
g) Other liabilities Refund amount to SPRO	4789.00	-
h) NPS payable	-	121039.00
i) Expenses Payable	3053477.00	3464041.00
j) Payable for IC4HD	-	97558.00
Total (A)	**326792432.68**	**391972763.43**
B. PROVISIONS		
1. For Taxation		
2. Gratuity	28499578.00	31590383.00
3. Superannuation Pension	1700000.00	1700000.00
4. Accumulated Leave Encashment	19551261.00	16056876.00
5. Trade Warranties/Claims		
6. Others (Specify)		
Total (B)	**49750839.00**	**49750839.00**
Total (A+ B)	**376543271.68**	**441320022.43**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 4: FIXED ASSETS ACQUIRED OUT OF GRANT IN AID

A. Fixed Assets since inception of Institute

Particular	Rate of depreciation	Opening Balance 01.04.17	Additions upto 01.04.2017 to 31.03.2018	Deletion 01.04.2017 to 31.03.2018	Total	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2018
Office Equipment		7742537.63			7742537.63		7742537.63
Electronic Equipment		10123527.00			10123527.00		10123527.00
Furniture & Fittings		6923261.75			6923261.75		6923261.75
Vehicles		2838064.64			2838064.64		2838064.64
Library Equipment		5926142.38			5926142.38		5926142.38
Other Equipment		814603.20			814603.20		814603.20
Publication Equipment		839040.02			839040.02		839040.02
Library Books & Periodical		137892532.43			137892532.43		137892532.43
Source Book Scheme		247622.12			247622.12		247622.12
Equipment Source Book		41087.56			41087.56		41087.56
Garden Equipment		145805.00			145805.00		145805.00
Audio Visual		422500.00			422500.00		422500.00
Project towards the centre for the study of Indian Civilization		518442.00			518442.00		518442.00
Word Processors		1304921.00			1304921.00		1304921.00
Fixed Assets under IC4HD		0.00			0.00		0.00
Electronic Assets under IC4HD		1603450.00			1603450.00		1603450.00
Library Books & Periodical		103748.00			103748.00		103748.00
Furniture & Fittings		516537.00			516537.00		516537.00
Sub-Total (A)		**178003821.73**			**178003821.73**		**178003821.73**

Fixed assets
B. Plan

Particular	Rate of depreciation	Opening Balance 01.04.17	Additions 01.04.2017 to 31.03.2018	Deletion 01.04.2017 to 31.03.2018	Total	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2018
Library Books and Equipment	10	13848589.00	-	-	13848589.00	1384860.00	12463729.00
Word processors for Fellows	20	37775.00	-	-	37775.00	7560.00	30215.00
EPBX (Office Equipment)	7.5	210857.00	-	-	210857.00	15810.00	195047.00
Printer	20	5236.00	-	-	5236.00	1050.00	4186.00
Crokery	7.5	50357.00	-	-	50357.00	3780.00	46577.00
LED	7.5	89843.00	-	-	89843.00	6740.00	83103.00
Bed	7.5	83991.00	-	-	83991.00	6300.00	77691.00
Aluminum ladder	5	34359.00	-	-	34359.00	1720.00	32639.00
"Bedding and Linen (Capital Exp. Plan)"	7.5	306976.00	-	-	306976.00	23020.00	283956.00
"Bedding and Linen (Capital Exp Plan SC)"	7.5	234878.00	-	-	234878.00	17620.00	217258.00
Biometric Attendance Machine(Cap exp)	5	43850.00	-	-	43850.00	2190.00	41660.00
"Electronic Podium (Cap exp ST)"	5	300609.00	-	-	300609.00	15030.00	285579.00
"Furniture and Fixture (Cap Exp)"	7.5	50748.00	-	-	50748.00	3810.00	46938.00
Furniture and Fixture (Cap Exp ST)	7.5	218020.00	-	-	218020.00	16350.00	201670.00
Professional LED (Cap Exp)	7.5	194247.00	-	-	194247.00	14570.00	179677.00
Video Conferencing System (cap exp Plan)	8	209622.00	-	-	209622.00	16770.00	192852.00
E-resources/ Digitation/ Automation and Networking	40	513622.00	-	-	513622.00	205450.00	308172.00
File Cabinet	7.5	59760.00	-	-	59760.00	4480.00	55280.00
Electronic compact scale	7.5	1865.00	-	-	1865.00	140.00	1725.00
Hand held metal detector	7.5	5411.00	-	-	5411.00	410.00	5001.00
Journal	40	1589051.00	-	-	1589051.00	635620.00	953431.00
Q-Manager	7.5	32780.00	-	-	32780.00	2460.00	30320.00

Shoe cleaning Machine	7.5	4891.00	-	-	4891.00	370.00	4521.00
WAP321 wireless N Selectableband	8	191268.00	-	-	191268.00	15300.00	175968.00
Mono Block Pump	5	210249.00	-	-	210249.00	10510.00	199739.00
Hand Dryer	5	52250.00	-	-	52250.00	2610.00	49640.00
Fire Alarm System	5	13265828.00	-	13964030.00	(698202.00)	(698202.00)	-
Geyser and Exhaust Fan	5	463799.00	-	-	463799.00	23190.00	440609.00
Bar Code scanner	7.5	17290.00	-	-	17290.00	1300.00	15990.00
Sub-Total (B)		**32328021.00**	**-**	**13964030.00**	**18363991.00**	**1740818.00**	**16623173.00**

C. Non- Plan	**Rate of depreciation**	**Opening Balance 01.04.17**	**Additions 01.04.2017 to 31.03.2018**	**Deletion 01.04.2017 to 31.03.2018**	**Total**	**Depreciation for the Year**	**Written Down value on 31.03.2018**
Library Books and Equipment	10	1957.00	-	-	1957.00	200.00	1757.00
Aluminum Ladder	5	22056.00	-	-	22056.00	1100.00	20956.00
Garden Equipment	5	58315.00	-	-	58315.00	2920.00	55395.00
Grass Cutter	5	55565.00	-	-	55565.00	2780.00	52785.00
Mike	5	38768.00	-	-	38768.00	1940.00	36828.00
Computer	20	235120.00	-	-	235120.00	47020.00	188100.00
Crokery	7.5	11840.00	-	-	11840.00	890.00	10950.00
Curtains and Rods	7.5	49716.00	-	-	49716.00	3730.00	45986.00
Electronic Appliance	7.5	11562.00	-	-	11562.00	870.00	10692.00
Printer	20	48720.00	-	-	48720.00	9740.00	38980.00
Telephone	7.5	5585.00	-	-	5585.00	420.00	5165.00
Kitchen Cabinets	7.5	74139.00	-	-	74139.00	5560.00	68579.00
Tulu Pump	7.5	10625.00	-	-	10625.00	800.00	9825.00
EPBX (Office Equipment)	7.5	12256.00	-	-	12256.00	920.00	11336.00
Vacuum Cleaner	7.5	92210.00	-	-	92210.00	6920.00	85290.00
Sub Total (C)		**728434.00**	**-**	**-**	**728434.00**	**85810.00**	**642624.00**

D. Fixed Assets under IC4HD

Particular	Rate of depreciation	Opening Balance 01.04.17	Additions 01.04.2017 to 31.03.2018	Deletion 01.04.2017 to 31.03.2018	Total	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2018
Electronic Assets	7.5	292738.00	-	-	292738.00	21960.00	270778.00
Library Books & Periodicals	10	167487.00	-	-	167487.00	16750.00	150737.00
Sports assets	5	121832.00	-	-	121832.00	6090.00	115742.00
Office equipment (hot cases)	7.5	31419.00	-	-	31419.00	2360.00	29059.00
Audio System	7.5	1444683.00	-	1561820.00	(117137.00)	(117137.00)	-
furniture (equipment)	7.5	15651.00	-	-	15651.00	1170.00	14481.00
Sub-Total (D)		**2073810.00**	**-**	**1561820.00**	**511990.00**	**(68807.00)**	**580797.00**

E. Fixed Assets Current Year (2017-18)

Particular	Rate of depreciation	Opening Balance 01.04.17	Additions 01.04.2017 to 31.03.2018	Deletion 01.04.2017 to 31.03.2018	Total	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2018
25 Dell Computer	20		2035000.00		2035000.00	407000.00	1628000.00
25 HP Laser Printer	20		449975.00		449975.00	90000.00	359975.00
Double Box Bed	7.5		113200.00		113200.00	8490.00	104710.00
Double Hard Bed	7.5		83300.00		83300.00	6250.00	77050.00
Electric Kettle	5		49770.00		49770.00	2490.00	47280.00
Fargo ID Card Printer	7.5		54900.00		54900.00	4120.00	50780.00
HP Laserjet Printer	20		9800.00		9800.00	1960.00	7840.00
Library Books (Capital)	10		6376434.00		6376434.00	637640.00	5738794.00
Microtek UPS	20		163750.00		163750.00	32750.00	131000.00
Matrix Eternity Pin & Digital Phone	7.5		34810.00		34810.00	2610.00	32200.00
Microtek Twin Guard Pin 500003	7.5		89980.00		89980.00	6750.00	83230.00
Mopping Machine Tool	7.5		13235.00		13235.00	990.00	12245.00
New Car Elantra	0		1466399.00		1466399.00	-	1466399.00
Pendrive	20		4875.00		4875.00	980.00	3895.00
Printer HP LJ	20		34690.00		34690.00	6940.00	27750.00
Sony LED TV	7.5		871200.00		871200.00	65340.00	805860.00

Voice Recorder	7.5		7490.00		7490.00	560.00	6930.00
Water Storage Drum	7.5		11410.00		11410.00	860.00	10550.00
WiFi D-Link	20		1581.00		1581.00	320.00	1261.00
Carpet Wall and Stair	7.5		245260.00		245260.00	18390.00	226870.00
Duroturf (323 Sqft)	7.5		59153.00		59153.00	4440.00	54713.00
Capital Assets (SC)							
Crokery (Capital SC)	7.5		57647.00		57647.00	4320.00	53327.00
Dell Computer	20		82000.00		82000.00	16400.00	65600.00
HP Office Jet Printer	20		37830.00		37830.00	7570.00	30260.00
HP Scanner Jet	0		20000.00		20000.00	-	20000.00
LED BRAVIA	0		115930.00		115930.00	-	115930.00
LED Torch	7.5		7980.00		7980.00	600.00	7380.00
Library Books (Capital SC)	10		295498.00		295498.00	29550.00	265948.00
Photostat Machine	7.5		66491.00		66491.00	4990.00	61501.00
Sony External HDD ITB	7.5		43400.00		43400.00	3260.00	40140.00
Sukam Inverter	7.5		22000.00		22000.00	1650.00	20350.00
Telephone Line Cable	7.5		260190.00		260190.00	19510.00	240680.00
Wall Clock	7.5		24650.00		24650.00	1850.00	22800.00
Capital Assets(ST)							
Godrej File Cabinet	7.5		47700.00		47700.00	3580.00	44120.00
Library Books (Capital ST)	10		231472.00		231472.00	23150.00	208322.00
Raspberry Pi3 Set of Board/ charger	7.5		11142.00		11142.00	840.00	10302.00
Samsung 43 FHD LED	7.5		49981.00		49981.00	3750.00	46231.00
Seagate 4TB Back Plus	20		14986.00		14986.00	3000.00	11986.00
Toshiba Photostat Machine	7.5		89000.00		89000.00	6680.00	82320.00
VP3000EU	7.5		21740.00		21740.00	1630.00	20110.00
Sub-Total (E)		**-**	**13675849.00**	**-**	**13675849.00**	**1431210.00**	**12244639.00**

(b) Intangible assets	Rate of depreciation	Opening Balance 01.04.17	Additions 01.04.2017 to 31.03.2018	Deletion 01.04.2017 to 31.03.2018	Total	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2018
Networking Facility	40	39653.00	-	-	39653.00	15860.00	23793.00
Sub total (b)		39653.00	-	-	39653.00	15860.00	23793.00
Total I (A+B+C+D+E)		**213173739.73**	**13675849.00**	**15525850.00**	**211323738.73**	**3204891.00**	**208118847.73**

Schedule-4(ii) Fixed Assets acquired out of Own funds

Fixed Assets acquired out of own funds	Rate of depreciation	Opening Balance 01.04.17	Additions upto 01.04.2017 to 31.03.2018	Deletion 01.04.2017 to 31.03.2018	Total	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2018
Carpets	7.5	546813.00	-	-	546813.00	41010.00	505803.00
CCTV Camera (with Computer)	7.5	3476017.00	-	-	3476017.00	260700.00	3215317.00
Honey Wall outdoor Fixed Camera	5	24715.00	-	-	24715.00	1240.00	23475.00
Q Manager	7.5	36630.00	-	-	36630.00	2750.00	33880.00
Café Software	40	32970.00	-	-	32970.00	13190.00	19780.00
LED	7.5	28675.00	-	-	28675.00	2150.00	26525.00
LED fixture	5	972651.00	-	-	972651.00	48630.00	924021.00
Ticket booth Machine	5	14535.00	-	-	14535.00	730.00	13805.00
Electric cash Billing Machine			14750.00	-	14750.00	-	14750.00
Hand Holding Ticket Machine			23600.00	-	23600.00	-	23600.00
Sub total (ii)		**5133006.00**	**38350.00**	**-**	**5171356.00**	**370400.00**	**4800956.00**
Grand total (GOI +Own fund +Tangible assets)		**218267092.73**	**13714199.00**	**15525850.00**	**216455441.73**	**3559431.00**	**212896010.73**
Grand total (Tangeible +intangible)		**218306745.73**	**13714199.00**	**15525850.00**	**216495094.73**	**3575291.00**	**212919803.73**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 5 : INVESTMENTS FROM EARMARKED/ENDOWMENT FUNDS

Amount in Rupees

	"Current Year 2017-18"	"Previous Year 2016-17"
1 In Central Government Securities	-	-
2 In State Government Securities	-	-
3 Other approved Securities	-	-
4 Shares	-	-
5 Debentures and Bonds	-	-
6 Term Deposits with Banks	-	-
7 Others (to be specified)	-	-
Total	-	-

SCHEDULE 5 (A) INVESTMENTS FROM EARMARKED/ENDOWMENT FUNDS (FUND WISE)

Sl. No.	Funds	"Current Year 2017-18"
1	-	-
2	-	-
3	-	-
4	-	-
5	Endowment Fund Investments	-
	Total	-

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 6 : INVESTMENTS-OTHERS

Amount in Rupees

	"Current Year, 2017-18"	"Previous Year, 2016-17"
1. In Central Government Securities	-	-
2. In State Government Securities	-	-
3. Other approved Securities	-	-
4. Shares	-	-
5. Debentures and Bonds	-	-
6. Others (to be specified)	-	-
Total	-	-

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 7 : CURRENT ASSETS

Amount in Rupees

	"Current Year, 2017-18"	**"Previous Year, 2016-17"**
1, Stock:		
a) Stores and Spares	-	-
b) Loose Tools		
c) Publications	6031162.25	5098778.00
d) Laboratory chemicals, consumables and glass ware	-	-
e) Building Material	-	-
f) Electrical Material	-	-
g) Stationery	-	-
h) Water supply material	-	-
i) Souvenir Item	727190.00	842316.00
2. Sundry Debtors	-	
a) Debts Outstanding for a period exceeding six months (considered goods)	511139.75	447560.75
b) Others	-	42311.50
3. Cash and Bank Balances		
Cash in Hand	173955.00	28630.00
a) With Scheduled Banks:	-	-
- In Current Accounts	-	-
- In term deposit Accounts	220762795.00	207565720.00
-In Savings Accounts	133697424.03	196370307.25
b) With non-Scheduled Banks:	-	-
- In term deposit Accounts	-	-
- In Savings Accounts	-	-
4. Post Office- Saving Accounts	-	0.00
Stock of Postage Stamps	14242.00	0.00
Misc Advance (IC4HD)	2963.00	2963.00
Drafts and IPO in hand	-	-
TOTAL	**361920871.03**	**410398586.50**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 8 : LOANS, ADVANCES & DEPOSITS

Amount in Rupees

	"Current Year, 2017-18"	"Previous Year, 2016-17"
1. Advances to employees: (Non-interest bearing)		
a) Salary	-	-
b) Festival	92250.00	93150.00
c) Medical Advance	-	-
d) Other (to be specified)	-	-
i) WCA	6750.00	27900.00
ii) Bad Climate and Flood Advanced	431.00	431.00
2. Long Term Advances to employees: (Interest bearing)		
a) Vehicle loan	73000.00	63000.00
b) Home loan	-	-
c) Others (to be specified)	2444442.00	2444442.00
Computer Advance	218000.00	477000.00
3. Advances and other amounts recoverable in cash or in kind or for value to be received:		
a) On Capital Account .	-	-
b) to Suppliers	-	-
c) Others (to CPWD)	72443868.00	84963227.00
Recoverable from IUC	-	5873687.00
Recoverable from ASI	7760053.00	-
Recoverable from others	250000.00	-
Recoverable from IC4HD		-
Recoverable from Guest House	7800.00	-
Recoverable from others	106219.00	106219.00
4. Prepaid Expenses		
a) Insurance	-	-
b) Other expenses(Prepaid e-journal subscription)	2191198.00	-
c) Prepaid AMC (IC4HD)	-	-
5. Deposits		
a) Telephone	36200.00	36200.00
b) Lease Rent	-	-
c) Electricity/Security with Jawahar Book Binder	20000.00	20000.00
d) AICTE, if applicable	-	-
e) Guests	2400.00	2400.00
i) Security with Vineet Gas Agency	19000.00	19000.00
ii) Security with Municipal Corporation	980.00	980.00
iii) Deposit for fuel	100000.00	100000.00
iv) Others	4633.00	4633.00
v) Excess Payment of Leave Encashment Recoverable	-	-
TDS recoverable	95237.00	95237.00

Books Under Printing	9986.00	9986.00
Advance Tax	932500.00	500000.00
Income Tax Recoverable	65920.00	65920.00
TDS (Assesment Year 2016-17)	-	-
Recoverable from mess	-	-
6. Income Accrued:	-	-
a) On Investments from Earmarked/ Endowment Funds	-	-
b) On Investments-Others	-	-
c) On Loans and Advances	-	-
d) Others (includes income due unrealized)	-	-
7. Other - Current assets receivable from UGC/sponsored projects	-	-
a) Debit balances in Sponsored Projects	-	-
b) Debit balances in Sponsored Fellowships & Scholarships	-	-
c) Grants Receivable from GOI	-	4000000.00
d) Other receivables from UGC	-	-
8. Claims Receivable (from NDL Grant)	59114.00	-
TOTAL	**86939981.00**	**98903412.00**

Note: If revolving funds have been created for House Building, Computer and Vehicle advances to employees, the advances will appear as part of Earmarked/endowment Funds. The balance against these interest-bearing advances will not appear in this schedule.

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 9 : ACADEMIC RECEIPTS

Amount in Rupees

	"Current Year, 2017-18"	"Previous Year, 2016-17"
FEES FROM STUDENTS		
Academic		
1. Tuition fee	-	-
2. Admission fee	-	-
3. Enrolment fee	-	-
4. Library Admission fee	-	-
5. Laboratory fee	-	-
6. Art & Craft fee	-	-
7. Registration fee	-	-
8. Syllabus fee	-	-
Total (A)	-	-
Examinations		
1. Admission test fee	-	-
2. Annual Examination fee	-	-
3. Mark sheet, certificate fee	-	-
4. Entrance examination fee	-	-
Total (B)	-	-
Other Fees		
1. Identity card fee	-	-
2. Fine/ Miscellaneous fee	-	-
3. Medical fee	-	-
4. Transportation fee	-	-
5. Hostel fee	-	-
Total (C)	-	-
Sale of Publications		
1. Sale of Admission forms	-	-
2. Sale of syllabus and Question Paper, etc.	-	-
3. Sale of prospectus including admission forms	-	-
Total (D)	-	-
Other Academic Receipts		
1. Registration fee for workshops, programmes	-	-
2, Registration fees (Academic Staff College)	-	-
Total (E)	-	-
GRAND TOTAL (A+B+C+D+E)	-	-

Note:
In case fees like entrance fee, subscriptions etc are material and are in the nature of capital receipts, such amount should be recognized to the Capital Fund. Otherwise such fees will be appropriately incorporated in this schedule.

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 10 : GRANTS / SUBSIDIES (IRREVOCABLE GRANTS RECEIVED)

Amount in Rs. Ps.

Particulars	General		Non Salary/ Salary/Pension	" Current Year 2017-18 "	" Previous Year 2016-17 "
	Govt. of India	Specific Schemes IC4HD	GOI		
				Total	Total
Balance B/F	200904521.00	156246279.00	26243041.43	383393841.43	235025832.86
Add: Receipts during the year	90450000.00	-	-	90450000.00	304558000.00
Interest Earned	2494154.00	12656918.00	-	15151072.00	20069623.00
GIA Entry rectified	13964030.00	1561820.00	-	15525850.00	-
Transfer from Non Salary	26243041.43	-	-	26243041.43	-
Transfer from Plan to IC4HD	-	-	-	-	-
Total	**334055746.43**	**170465017.00**	**26243041.43**	**530763804.86**	**559653455.86**
Less: Refund to UGC /GOI (Trf to General fund)			26243041.43	26243041.43	-
Balance	**334055746.43**	**170465017.00**	**-**	**504520763.43**	**559653455.86**
Less: Utilised for Capital expenditure (A)	13675849.00	-	-	13675849.00	28285869.00
Balance	**320379897.43**	**170465017.00**	**-**	**490844914.43**	**531367586.86**
Less: Utilized for Revenue Expenditure (B)	174579742.75	-	-	174579742.75	147973745.43
Balance C/F (C)	**145800154.68**	**170465017.00**	**-**	**316265171.68**	**383393841.43**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY

RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 11: INCOME FROM INVESTMENTS

Particulars	Earmarked / Endowment Funds		Other Investments	
	Current Year, 2017-18	Previous Year, 2016-17	Current Year, 2017-18	Previous Year, 2016-17
1. Interest	-	-	-	-
a. On Government Securities	-	-	-	-
b. Other Bonds/Debentures	-	-	-	-
2. Interest on Term Deposits	-	-	-	-
3. Income accrued but not due on Term Deposits/Interest bearing advances to employees -	-	-	-	-
4. Interest on Savings Bank Accounts	-	-	-	-
5. Others (Specify)	-	-	-	-
Total	-	-	-	-
Transferred to Earmarked/Endowment Funds	-	-	-	-
Balance	-	-	-	-
	-	-	-	-

Note: Interest accrued but not due on Term Deposits from HBA fund, conveyance advance fund and Computer Advance fund and on interest bearing advances to employees will be included here (Item 3), only where Revolving funds (EMF) for such advances have been set up.

SCHEDULE 12: INTEREST EARNED

Amount in Rupees

Particulars	Current Year, 2017-18	Previous Year, 2016-17
1. On Savings Accounts with scheduled banks	–	–
2 On Loans	–	–
a. Employees/Staff	–	–
b. Others(FDR)	–	–
3. On Debtors and Other Receivables	–	–
Total	–	–
Note: Please refer to schedule-10 .		

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 13: OTHER INCOME

Items of material amounts included in Miscellaneous Income should be separately disclosed.

A. Income from Land & Buildings	**"Current Year 2017-18"**	**"Previous Year 2016-17"**
1. Hostel Room Rent	-	-
2, License fee	-	-
3. Hire Charges of Auditorium/Play ground/Convention Centre, etc	-	-
4. Electricity charges recovered	-	-
5. Water charges recovered .	-	-
Total	-	-
B. Sale of Institute's publications	957555.82	592550.45
C. Income from holding events		
1. Gross Receipts from annual function/ sports carnival	-	-
Less: Direct expenditure incurred on the annual function/ sports carnival	-	-
2. Gross Receipts from fetes	-	-
Less: Direct expenditure incurred on the fetes	-	-
3, Gross Receipts for educational tours	-	-
Less: Direct expenditure incurred on the tours	-	-
4. Others (to be specified and separately disclosed)	-	-
Total	-	-
D. Others		
1. Income from consultancy	-	-
2. RTI fees	-	-
3. Income from Royalty	-	-
4. Sale of application form (recruitment)	-	-
5. Misc. receipts (Sale of tender form, waste paper, etc.)	-	34978.00
6. Profit on Sale/disposal of Assets	-	-
a) Owned assets	-	-
b) Assets received free of cost	-	-
7. Grants/Donations from Institutions, Welfare Bodies and International Organizations	-	-
8 Others (specify)		
Rent for other specfic facility extended	7875.00	74518.00
Guest House	457300.00	500512.87
Pvt use of vehicle		-
Sale of plant	13380.00	7990.00
Library membership	27500.00	74140.00
Sale of unusable items	-	-
Sports membership fee	-	-
Misellaneous income	309326.76	-
Net Income of Ticket booth	3768615.70	1354820.05
Total Others (specify)	4583997.46	2011980.92
Total (D)	4583997.46	2046958.92
Grand Total (A+B+C+D)	**5541553.28**	**2639509.37**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 14: PRIOR PERIOD INCOME

Amount in Rupees

Particulars	Current Year, 2017-18	Previous Year, 2016-17
1. Academic Receipts	–	–
2. Income from Investments	–	–
3.Interest earned	–	–
4. Other Income Adjustment	–	–
Total	**–**	**–**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 15 : STAFF PAYMENTS & BENEFITS (ESTABLISHMENT EXPENSES)

These shall be classified separately for teaching and non-teaching staff; adhoc staff, Arrears of DA, Salary arrears due to increment shall be shown separately

Amount in Rs. Ps.

	"Current Year, 2017-18"	" Previous Year, 2016-17 "
	Amounts	**Amounts**
a) Salaries and Wages	58936900.00	44994361.00
b) Allowances and Bonus	-	-
c) Contribution to Provident Fund/NPS	851111.00	1250276.00
d) Contribution to Other Fund (specify) Pension Fund	-	500000.00
e) Staff Welfare Expenses	-	-
f) Retirement and Terminal Benefits	9144379.00	1625728.00
g) LTC facility	207560.00	152066.00
h) Medical facility	530615.00	569410.00
i) Children Education Allowance	718188.00	599934.00
j) Honorarium	187156.00	629365.00
1) Others (specify) Pension	21014091.00	19800185.00
K) Liveries	195000.00	194179.00
L) Hospitality	-	73387.00
TOTAL	**91785000.00**	**70388891.00**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY

RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 15 A : EMPLOYEES RETIREMENT AND TERMINAL BENEFITS

Amount in Rupess

	Pension	**Gratuity**	**Leave Encashment**	**Total**
Opening Balance as on	-	-	-	-
Addition: Capitalized value of Contributions Received from other Organizations	-	-	-	-
Total (a)	-	-	-	-
Less: Actual Payment during the Year (b)	-	-	-	-
Balance Available on 31,03 c (a-b)	-	-	-	-
Provision required on 31.03 as per Actuarial Valuation (d)	-	-	-	-
A. Provision to be made in the Current year (d-c)	-	-	-	-
B. Contribution to New Pension Scheme	-	-	-	-
C. Medical Reimbursement to Retired Employees	-	-	-	-
D. Travel to Hometown on Retirement	-	-	-	-
E. Deposit Linked Insurance Payment	-	-	-	-
Total (A+B+C+D+E)	-	-	-	-

Note:

1. The total (A+B+C+D+E) in this sub schedule will be the figure against Retirement and Terminal Benefits in Schedule 15.

2, Items B,C,D&E will be accounted on accrual basis and will include bills preferred but outstanding for payment on 31/3.

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 16 : ACADEMIC EXPENSES

Amount in Rupees

	"Current Year, 2017-18"	"Previous Year, 2016-17"
a) Laboratory expenses	-	-
b) Field work/Participation in Conferences	-	-
c) Expenses on Seminars/Workshops	6035575.00	7062366.00
d) Payment to visiting faculty	-	-
e) Examination	-	-
f) Student Welfare expenses	-	-
g) Admission expenses	-	-
h) Convocation expenses	-	-
i) Publications	320048.00	171060.12
j) Stipend/means-cum-merit scholarship	-	-
k) Subscription Expenses	-	-
i) Others (specify) fellowship to fellows	24125088.00	22127405.00
ii) National fellowship to fellows	-	3228387.00
TOTAL	**30480711.00**	**32589218.12**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 17 : ADMINISTRATIVE AND GENERAL EXPENSES

Amount in Rupees

	"Current Year, 2017-18"	"Previous Year, 2016-17"
A Infrastructure		
a) Electricity and power	3828820.00	5216574.00
b) Water charges	702844.00	789687.00
c) Insurance	54278.00	95991.00
d) Rent, Rates and Taxes (including property tax)	2286762.00	1410514.00
B Communication	-	-
e) Postage and Stationery	58679.00	163500.00
f) Telephone, Fax and Internet Charges	385633.00	426684.00
C Others	-	-
g) Printing and Stationery (consumption)	953610.00	541199.00
h) Travelling and Conveyance Expenses	3071358.00	2955422.87
i) Hospitality	217247.00	-
j) Auditors Remuneration	165518.00	117216.00
k) Professional Charges	365875.00	569668.00
1) Advertisement and Publicity	682051.00	663606.00
m) Magazines & Journals	341598.00	176239.00
m1) E-resource subscription	521054.00	-
n) Others (specify) / Medicine	273747.00	-
o) Misc Expenditure	141482.00	183752.00
TOTAL	**14050556.00**	**13310052.87**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 18 : TRANSPORTATION EXPENSES

Amount in Rupees

Particulars	"Current Year, 2017-18"	"Previous Year, 2016-17"
1. Vehicles (owned by institution)	-	-
a) Running expenses	385667.00	278694.00
b) Repairs & maintenance	62182.00	109725.00
c) Insurance expenses	-	-
2. Vehicles taken on rent/lease	-	-
a) Rent/lease expenses	-	-
3. Vehicle (Taxi) hiring expenses	-	-
Total	**447849.00**	**388419.00**

SCHEDULE 19 : REPAIRS & MAINTENANCE

Amount in Rupees

Particulars	"Current Year, 2017-18"	"Previous Year, 2016-17"
a) Buildings	35770298.00	30055994.00
b) Furniture & Fixtures	-	-
c) Plant & Machinery	-	-
d) Office Equipment	578470.00	580677.00
e) Computers	-	-
f) Laboratory & Scientific equipment	-	-
g) Audio Visual equipment	-	-
h) Cleaning Material & Services	-	-
i) Book binding charges	-	-
j) Gardening	198931.00	175269.00
k) Estate Maintenance	-	-
1) Others (Specify) Consumable store	1264633.00	652161.00
Fixed assets written off	-	-
Total	**37812332.00**	**31464101.00**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

SCHEDULE 20 : FINANCE COSTS

Amount in Rupees

Particulars	"Current Year, 2017-18"	"Previous Year, 2016-17"
a) Bank charges	3294.75	4123.56
b) Others (specify)	-	-
Total	3294.75	4123.56

SCHEDULE 21 : OTHER EXPENSES

Amount in Rupees

Particulars	"Current Year, 2017-18"	"Previous Year, 2016-17"
a) Provision for Bad and Doubtful Debts/Advances	-	-
b) Irrecoverable Balances Written - off	-	-
c) Grants/Subsidies to other institutions/organizations	-	-
d) Others (specify)	-	-
Total	-	-

SCHEDULE 22 : PRIOR PERIOD EXPENSES

Amount in Rupees

Particulars	"Current Year, 2017-18"	"Previous Year, 2016-17"
1 Establishment expenses	-	-
2 Academic expenses	-	-
3 Administrative expenses	-	-
4 Transportation expenses	-	-
5 Repairs & Maintenance	-	-
6 Other expenses	-	-
Total	-	-

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5

RECEIPT AND PAYMENT ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON (31.03.2018)

(Amount in Rupees)

	RECEIPT	**Current year**			**PAYMENT**	**Current year**	**Previous Year**
1	Opening Balance			1	Expenses		
	a) Cash Balances	28630.00	32505.00		a) Establishment Expenses	120110729.00	80315826
	b) Bank Balances				b) Academic Expenses	11416943.00	4314818
	i) In Current accounts		47638937.94		c) Administrative Expenses	6888877.00	12658084
	ii) Saving accounts	196370307.25	121282694.87		d) Transportation Expenses	633930.00	2096935.87
	iii) Term deposit with bank	207565720.00	72405810.00		e) Repair & maintenance	11567751.00	1616189.00
					f) Prior period expenses/Bank Charges	3294.75	4846.37
						-	
2	Grants Received			2	Payment against Earmarked/ Endowment Funds	-	
	a) From Government of India						
	i) Capital Grant	13510000.00	192805000.00				
	ii) Revenue Grant	80940000.00	107753000.00				
	b) From Ministry of culture (GOI)						
	c) From other sources (Interest on FDR with Bank in respect of IC4HD)	13197075.00	15090958.00				
	c) Grant in Aid recoverable from GOI						
3	Academic Receipts			3	Refund for IC4HD		
4	Receipts against Earmarked/ Endowment Funds			4	Payment against Sponsored Fellowship/Scholarship		
5	Receipts from IC4HD			5	Investment and Deposits made a) Out of Earmarked/ Endowment funds b) Out of own funds (Investments -Others		

6	Receipts against sponsored Fellowship and Scholarships			6	Term Deposits with Scheduled Banks renewed	-	-
7	" Income on Investments from) "			7	Expenses Payable	-	19862368.95
	a) Earmarked/Endowment funds				a) Fixed Assets		
	b) Other investments				i) Out of Grant in aid	13675849.00	12424251.00
					ii) From own sources	38350.00	125550.00
					b) Capital Works-in-progress		
8	Interest received on			8	Other payments including statutory payments	-	-
	a) Bank Deposit						
	b) Loan and advances	-	-				
	c) Saving Bank Accounts	2231997.00	4978665.00				
9	Investment encashed	-	-	9	Refund of Grants		
10	Terms deposits with scheduled Banks matured	-	-	10	Advances and Withdrawals		
					a) Staff	280300.00	943500.00
					b) Others	2545822.24	40430967.00
11	Other Income (including Prior Period Income	7952290.77	13903749.63	11	Other payments including statutory payments		
12	Deposits and Advances	-	2866673.00	12	Closing balances		
					a) Cash in Hand	173955.00	28630.00
					b) Bank Balances		
					In Current Accounts		
					In Saving Accounts	133697424.03	196370307.25
					Term deposit with bank	220762795.00	207565720.00
13	Miscellaneous Receipts (including Prior Period income)						
14	Any Other Receipts						
	Total	**521796020.02**	**578757993.44**		**Total**	**521796020.02**	**578757993.44**

sd/-
(Avinash Solanki)
Accounts Officer

sd/-
(Prem Chand)
Secretary

sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA -171 005

ACCOUNTING POLICIES AND NOTES TO ACCOUNTS FOR THE YEAR ENDING 31.03.2018

ACCOUNTING POLICIES

(a) Accounting Concepts

The financial statements have been prepared under the Historical Cost convention in accordance with the Generally Accepted Accounting Principles as applicable in India.

The Society generally follows Accrual System of Accounting and recognizes

Significant items of Income and Expenditure on Accrual Basis.

(b) Fixed Assets

The Fixed Assets of the Society are stated at Historical Cost and includes all incidental expenses.

(c) Depreciation

i) No Depreciation on old balances of fixed assets have been provided by the Institute upto the Financial Year 2013-14. Thereafter, Depreciation on addition in fixed assets has been provided in accordance with Income Tax Rules, 1962. However, Depreciation for the year 2017-18 has been provided as per rates prescribed in Formats of Financial Statements for Central Higher Educational Institutions.

ii) Had, the Depreciation provided on old pattern as per Income Tax Rules, 1962, the depreciation on fixed assets would have been Rs. 81,90,328.00 as compared to Rs. 35,75,291.00 as per rates prescribed in Formats of Financial Statements for Central Higher Educational Institutions.

iii) Depreciation has been transferred to capital Grant-in-Aid, in case of fixed assets acquired out of Grant-in- Aid.

(d) Method of Valuation/Inventory

Valuation of Publication (Books) Inventory is on the basis of Cost or Net Reliable Value, whichever is less.

NOTES TO ACCOUNTS

1. The accounts have been prepared as per the new format supplied by the Ministry of Human Resource Development (Government of India) in compliance with Uniform Accounting Standard.

2. Separate Balance Sheet has been prepared for General Provident Fund Account.

3. Provision of Gratuity and Leave encashment is Rs. 2,84,99,578.00 and Rs. 1,95,51,261.00 as on 31.03.2018 while it was Rs. 3,15,90,383.00 and Rs. 1,60,56,876.00 as on 31.03.2017 respectively.

4. Institute Publication amounting to Rs. 60,31,162.25 (as on 31.03.2017 Rs. 50,98,778.00) as shown in the balance sheet under "Current Assets" is based on the information supplied by the Sales and Public Relation Officer (SPRO).

5. In the opinion of the Institute the Current Assets, Loans and Advances are approximately of the value stated, if realised in the ordinary course of business. The provision of all the known liabilities is adequate and not excess of the amount considered reasonably necessary.

6. Debit and Credit balances in the accounts of Creditors, Debtors and others are subject to confirmation and reconciliation.

7. Sundry debtors Rs. 5,11,139.75 are considered good for Recovery.

8. Miscellaneous advance Rs. 24,44,442.00 is outstanding for recovery for more than five years, however these are considered good for recovery.

9. Previous year figure have been re-worked, re-grouped and re-arranged, wherever considered necessary to make these comparable with those of current year

10. Schedule 1 to 24 is integral part of Balance Sheet and has been duly authenticated.

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Avinash Solanki)	(Prem Chand)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

DOGER & Co.
CHARTERED ACCOUNTANTS
(O) 0177-2656809, 2656162, (M) 98170-73000

AUDITORS' REPORT

We have audited the "Balance Sheet "of Inter University Centre for Humanities and Social Sciences (UGC), Shimla as at 31st March, 2018 and also their 'Receipt and Payment Account "and Income and Expenditure Account" for the year ended on that date, annexed hereto and report that: -

These financial statements are the responsibility of the Inter-University Centre Management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

We conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. Those standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free of material misstatement. An audit includes examining, on a test check basis, evidence supporting the amounts and disclosures in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by the management, as well as evaluating the overall financial statements presentation. We believe that out audit provides a reasonable basis for our opinion.

Subject to foregoing remark we report that: -

1. We have obtained all the information and explanation which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of audit.
2. In our opinion and to the best of our information and according to explanation given to us the said accounts read with the Accounting Policies& Annexure to Audit Report in Schedule 2, give a true and fair view:-
   (a) In the case of the Balance Sheet, of the state of affairs of the Centre as at 31st March, 2018.
   (b) In the Case of Income and Expenditure Account, of the amount utilized form Grant-in-Aid for the year ended on that date.
   (c) In case of Receipt and Payment Account, of the amount received and payments made during the year ended on the date.

For Doger& Co.,
Chartered Accountants
ICAI FRN 019516N

Shimla
Dated: 21.06.2018

CA. MunishKaundal
Partner M.No. 508733

Office: First Floor, Opp. Panchayat Bhawan Main Gate, Bus Stand, Shimla (H.P.)171001
Email ID: dogersachin@gmail.com

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA

INTER UNIVERSITY CENTER FOR HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES(UGC)

Balance Sheet as on 31st March.2018

Liabilities		**Amount (Rs)**	**Assets**		**Amount (Rs)**
Capital Reserve		7236129.00	Fixed Assets		7236129.00
			(As per Schedule-I)		
Current Liabilities		3344131.01			
Grant In Aid	3256573.01		Current Assets, Loans & Advances		3344131.01
Payable for IIAS (Mess)	13165.00		State Bank of India SB A/c 10116686391	340292.01	
Salary/Wages payable	64670.00		GIA Receivbale from UGC	2694048.00	
Audit Fee payable	9723.00				
			Loans and Advances (Asset)	309791.00	
Total		**10580260.01**	**Total**		**10580260.01**

Sd/-

(Avinash Solanki)
Accounts Officer

Sd/-

(Prem Chand)
Secretary

Sd/-

(Makarand R. Paranjape)
Director

As per our report of even date
for Doger & Co.,
Chartered Accountants
ICAI FRN 019516N

(CA Munsih Kaundal)
ICAI M.No. 508733

Place : Shimla]
Dated: 21.06.2018

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA

INTER UNIVERSITY CENTER FOR HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES(UGC)

Income & Expenditure Account for the year ending 31st March 2018

EXPENDITURE	AMOUNT (Rs.)	INCOME	AMOUNT(Rs.)
Maintance Allowances	788809.00	Grant in Aid Utilized	3045542.50
T.A to Associates	762807.00	Interest earned	117105.00
Research Seminar /Studyweek/workshop	13165.00	Misc Income	24470.00
Admim.and Secretal Support of Postage ,Medical,	8482.00		
Misc.Expenses	9592.00		
Admin. Unit Wages OTA,TA/Da /Honororium	1437947.00		
Maintance/Running Expenses of Vehicle	140442.00		
Insurance of Vehicle	15638.00		
Interest and Bank Charges	265.50		
Audit Fee	9970.00		
Total	**3187117.50**	**Total**	**3187117.50**

Sd/-

(Avinash Solanki)
Accounts Officer

Sd/-

(Prem Chand)
Secretary

Sd/-

(Makarand R. Paranjape)
Director

As per our report of even date
for Doger & Co.,
Chartered Accountants
ICAI FRN 019516N

(CA Munsih Kaundal)
ICAI M.No. 508733

Place : Shimla]
Dated: 21.06.2018

Schedule-1

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA

INTER UNIVERSITY CENTER FOR HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES(UGC)

Schedule fo Fixed Assets for the Financial Year 2017-18

S.No	Item	Opening Balance as on 1.4.2017	Addition during the year	Deletion during the year	Closing Balance as on 31.03.2018
1	Computer	1764725.00	0.00	0.00	1764725.00
2	Electrical Equipment	876816.00	0.00	0.00	876816.00
3	Furniture & Fixtures	1192092.00	0.00	0.00	1192092.00
4	Library Books	2809649.00	0.00	0.00	2809649.00
5	New Vehicle	592847.00	0.00	0.00	592847.00
	Grand Total	**7236129.00**	**0.00**	**0.00**	**7236129.00**

Sd/-
(Avinash Solanki)
Accounts Officer

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA

INTER UNIVERSITY CENTER FOR HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES(UGC)

Receipts and Payment (1st April 2017 to 31 March 2018)

Receipts	**Amount (Rs)**	**Payments**	**Amount (Rs)**
Opening Balance		**Revenue Expenditure**	
State Bank of India Saving A/c 86391	2765242.51	Maintencces Allowances	788809.00
		T.A to Associates	762807.00
Revenue Receipts		Admin. Unit Wages OTA,TA/Da /Honororium	1438711.00
Interest Received	117105.00	Misc. Expenses	9592.00
Misc Income	26068.00	Maintence/ Running expense of Vehicle	137592.00
		Insurance of Vehicle	15638.00
Other Receipts		Interest and Bank Charges	265.50
Tax Deduct at Sources	825.00	Professional fee	247.00
Mess Charges Collected	499755.00		
Misc. Advances	150.00	**Other Payment**	
Grant-in -Aid	6479063.00	Misc Advances	10500.00
		TDS Deposited	825.00
		Mess Charges deposite with IIAS mess	499755.00
		Audit Fee Payable	9488.00
		IIAS	5873687.00
		Closing Balance	
		State Bank of India Saving A/c 86391	340292.01
Total Rs	**9888208.51**	**Total Rs**	**9888208.51**

Sd/-

(Avinash Solanki)
Accounts Officer

Sd/-

(Prem Chand)
Secretary

Sd/-

(Makarand R. Paranjape)
Director

As per our report of even date
for Doger & Co.,
Chartered Accountants
ICAI FRN 019516N

(CA Munsih Kaundal)
ICAI M.No. 508733

Place : Shimla]
Dated: 21.06.2018

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005

SOCIETY

1. Professor (Retd.) Kapil Kapoor — President
   President Society
   Indian Institute of Advanced Study,
   Rashtrapati Nivas, Shimla – 171005.
   Mob. (0) 9810202146
   E-mail ID: kkapoor40@yahoo.com

2. Professor Chaman Lal Gupta
   Vice-President, Society
   Indian Institute of Advanced Study
   Rashtrapati Nivas, Shimla-171005
   Mobile : 9418141898
   Phone: 0177-2830637
   E-mail: guptcl@gmail.com

3. Professor Makarand R. Paranajape
   Director
   Indian Institute of Advanced Study
   Rashtrapati Nivas, Shimla-171005
   Telephone: 0177-2830006(O), Fax: 2831389, 2830995
   E-mail: director@iias.ac.in

Rule 3(a) Institutional Members (Ex-Officio)

1. Shri R. Subrahmanyam, IAS
   Secretary
   Department of Higher Education
   Ministry of Human Resource Development
   Room No. 127-C-Wing
   Shastri Bhavan, New Delhi - 110 015
   Tel: 011-23386451, 23382698 (O) 26979585,
   Fax: 011-23385807, 23381355;
   E-mail: secy.dhe@nic.in

2. Shri Ajay Narayan Jha, IAS
   Secretary Expenditure
   Government of India
   Department of Expenditure
   Ministry of Finance
   North Block, Central Secretariat
   New Delhi -110 001
   E-mail: secyexp@nic.in

3. Mrs Ishita Roy
   Joint Secretary (Higher Education & ICR Division)
   Union Ministry of Human Resource Development
   Room No. 109-C
   Shastri Bhavan
   New Delhi – 110 015
   +91-11-23385915(O), +91-11-23074410(Fax)
   E-mail: ishita.edu@gov.in

4. Professor D.P. Singh
   Chairman
   University Grants Commission
   Bahadurshah Zafar Marg
   New Delhi – 110 002
   Tel: (011) 23239628 (O) Fax: 011-23231797,
   E-mail: cm.ugc@nic.in

5. Dr. Shekhar C. Mande
   Director-General,
   Council of Scientific & Industrial Research,
   Anusandhan Bhawan,
   2; Rafi Ahmed Kidwai Marg,
   New Delhi – 110 001.
   Tel: 011- 23710472, 23717053 (O),
   Fax: 011- 23710618 (O),
   E-mail: dgcsir@csir.res.in ; dg@csir.res.in

6. Dr. Braj Bihari Kumar
   Chairman
   Indian Council of Social Science Research
   Post Box No.10528
   Aruna Asaf Ali Marg
   New Delhi – 110 067
   Tel: Phone: 011-26179679 (O), 011-26742398 (R)
   Fax: 011-26162516/26179836,
   E-mail : chairman@icssr.org

7. Professor Arvind P. Jamkhedkar
   Chairman
   Indian Council of Historical Research
   35, Ferozeshah Road
   New Delhi – 110 001
   Tel: 011-23386033, 23384869, Fax: 23383421, 23387829,
   Mobile 9415243954
   Email: chairman@ichr.ac.in

8. Professor Ramesh Chandra Sinha
   Chairman
   Indian Council of Philosophical Research
   36, Tughlakabad Institutional Area
   Mehrauli Badarpur Road
   New Delhi – 110 062
   Tele fax: 011-29901503/, 29901501; Mobile: 9599955780
   Fax: 011-29964755;
   E-mail: chairman@icpr.in

9. Shri Baldeo Bhai Sharma
   Chairman
   National Book Trust,
   5, Nehru Bhavan
   Institutional Area, Phase – II
   Vasant Kunj,
   New Delhi – 110 070
   Phone: 011-26121880 (office), Mobile: 09910052933
   E-mail: chairman@nbtindia.org.in

10. Dr. Chandrashekhar Kambar
(President, Sahitya Akademi)
“Siri Sampige”
No. 44, Ist Main, Banashankari 3rd Stage,
4th Block, Bengaluru-560 085
Mobile : 09980559000
Email: cbkambara@gmail.com

11. Shri Shekhar Sen
Chairman,
Sangeet Natak Akademi,
Rabindra Bhavan
Ferozeshah Road, New Delhi – 110 001
Phone: 011-24116375/76 Fax: 011-23381621;
E-mail: chairman@sangeetnatak.gov.in

12. Shri C.S. Krishna Setty, IAS
Administrator
Lalit Kala Akademi
Rabindra Bhavan,
35, Ferozeshah Road, New Delhi – 110 001
Phone: 011- 23387241 - 43
E-mail: chairman@lalitkala.gov.in ; secretary@lalitkala.gov.in

13. Shri Ajay Kumar Sood
Chairman
Indian National Science Academy,
Bahadur Shah Zafar Marg
New Delhi 110002
Phone : 22932340 (O)
E-mail : president@insa.nic.in

14. Professor Sunaina Singh
Vice-President,
Indian Council for Culture Relations,
N-38, Panchsheel Park, New Delhi –110 017.
Phone: 011-23379309, 23379310
E-mail : president.iccr@nic.in

15. Professor P.B.Sharma
President
Association of Indian Universities
AIU House,
16 Comrade Indrajit Gupta Marg (Kotla Marg),
Landmark: Opposite National Bal Bhawan, Near I.T.O.,
New Delhi -110002
&
Vice Chancellor
Amity University Haryana, Amity Education Valley,
Gurgaon (Manesar), Haryana 122413
Mobile : 09810146096
Email: pbsharma@ggn.amity.edu & vcauh@ggn.amity.edu

16. Shri Shravan Kumar
Director General (Addl. Charge)
National Library
Belvedere, Alipore
Kolkata – 700 027
Tel: 033-24792968/ 24791462(O); Fax: 033- 24791462
E-mail: nldirector@rediffmail.com

17. Shri Shravan Kumar
Director-General of Archives (Addl. Charge)
National Archives of India
Janpath
New Delhi – 110 001
Tel: 011-23381396,
E-mail: archives@nic.in

18. Shri B.K. Aggarwal
Chief Secretary,
Government of Himachal Pradesh,
H.P. Secretariat,
Shimla - 171 002 (H.P.)
Tel: 0177-2621022 (O), 2880714 (R) Fax: 2621813
E-mail: cs-hp@nic.in

These Institutional members may, if necessary, be represented, at the meetings, by their nominees.

Rule 3(b) Nominated Member
Rule 3(b)(i) Six Vice-Chancellors of Indian Universities nominated by Central Government.

1. Professor Kuldip Chand Agnihotri,
   Vice Chancellor,
   Central University,
   Himachal Pradesh- 176206
   Phone No. 229330; Fax: 229331
   E- mail: vc.cuhimachal@gmail.com

2. Vacant

3. Prof. S.K. Srivastava
   Vice-Chancelor
   North-Eastern Hill University,
   Shillong 793 022
   Phone: (0364) 2721003/2721004/2550101/ 2550074 (R)
   Fax: (0364) 2550076, Email: vcnehu@nehu.ac.in

4. Professor B. Thimmegowda,
   Vice Chancellor,
   Karnataka State Rural Development and Panchayath Raj University
   Gadag, Raitha Bhavana,
   General Cariyappa Circle,
   Gadag-582101, Karnataka
   Phone No: 08372-230338, Fax-08372-297343
   E-mail: vc.ksrdpru@gmail.com , btgowda@yahoo.co.in

5. Professor Appa Rao Podile
   Vice-Chancellor
   University of Hyderabad
   Prof.C.R. Rao Road, Gachibowli
   Hyderabad - 500046, Telangana
   Phone : 040-23132000/23010121 (O), Mobile : 9100655777
   Email: podilerao@gmail.com ; vc@uohyd.ac.in

6. Professor Vasant Shinde
Vice-Chancellor
Deccan College,
Post-Graduate and Research Institute,
Deemed to be University, Pune - 411 006
Phone: 020-26513203 (O)
Mobile: 9923693795, 9158988893
E-mail: vshinde.dc@gmail.com ; vasant.shinde@dcpune.ac.in

Rule 3(b)(ii) Educationists and those eminent in the fields of learning, culture and science, nominated by the Central Government.

1. Professor Kapil Kapoor — President
B-2/332, Ekta Garden,
9-I.P. Extension,
Mother Dairy Marg,
Delhi – 110092.
Tel. 011-22723406; Mob. (0) 9810202146
E-mail ID: kkapoor40@yahoo.com

2. Professor Chaman Lal Gupta — Vice-President
Vivek Kutir, Summer Hill,
Shimla – 171005 H.P.
Mobile: 9418141898
Phone: 0177-2830637
E-mail: guptcl@gmail.com

3 Professor G.K. Karanth
Professor Sociology,
Centre for Study of Social Change and Development,
Institute for Social and Economic Change,
Bangalore – 560072
Mobile : 7899837275; 9845731403
E-mail : gk.karanth@gmail.com

4 Professor Sanjeev Kumar Sharma
Professor and former Head,
Department of Political Science,
Chaudhary Charan Singh University,
Meerut – 250005, Uttar Pradesh
Phone: +911212764455
Mobile: 9412205348, 9458609921
Email: sanjeevaji@gmail.com

5 Professor Pawan Kumar Sharma
Department of Political Science,
Chaudhary Charan Singh University Meerut
Main Road, Meerut
Uttar Pradesh - 200005
Contact No: 8989120208
Email: pawansharmaccs67@gmail.com

6. Professor B.K. Kuthiala
Chairman,
Haryana State Higher Education Council
Haryana

7. Professor (Dr.) Jagbir Singh
WZ- 707/C, Street No. 18,
Shiv Nagar, Jail Road,
New Delhi – 110058.
Mobile: 09871598125. Phone: 011-25559404.
Email: jagbir707@yahoo.com

8 Professor Rakesh Kumar Mishra
202, Sai Apartments,
C-40, J Park-II,
Mahanagar Extension
Lucknow-226 006
Mobile : 08953809188
Email: rkm.lu007@gmail.com ; rkm200080@yahoo.com

9. Professor Himanshu Prabha Ray
603 Ivory Towers,
The Retreat Complex
Sector 30, South City I
Gurgaon 122007, Haryana
Phone : 91 (0124) 2381947 (Res) 91 9811119084 (M)
E-mail: hprayjnu@vsnl.com ; rayhimanshuprabha@gmail.com

10. Professor D. Murali Manohar
Department of English,
University of Hyderabad,
P.O. Central University,
Hyderabad - 500 046,
Telangana State
Phone: 040-231334069, Mobile : 09908569272
E-mail id : dmmpsh@gmail.com

11. Professor Sharad Deshpande
13 Khagol Vaigyanik
Cooperative Housing Society
38/1 Panchwati Pasan
Pune – 411008
Mobile : 094223-47778
E-mail: sharad.unipune@gmail.com

12. Vacant

13. Professor D.N. Tripathi
Leela Nilayam
99-A, Indira Nagar,
P O Sheopuri,
New Colony, Gorakhpur -273 016
Uttar Pradesh.
Mobile: 09415282388, 9415243954
Email: dayatripathi136@gmail.com ; dntripathi@gmail.com

14. Professor Prema Nanda Kumar
Sri Aurobindo Scholar
Swami Vivekananda Chair,
Mahatma Gandhi University
Kerala –686560.
Email: premnand@tr.net.in

15. Professor S.K. Chakraborty
P-69, Diamond Park
Diamond Harbour Road
Joka, Kolkata 700 104
Phone: 033- 65353677
Mobile: 9007116459
Email: drdebangshu.chakraborty@gmail.com

16 Shri Rajiv Malhotra
Founder
The Infinity Foundation
174 Nassau St.
PMB 400
Princeton, NJ 08542
Email: rajivmalhotra2007@gmail.com

17. Dr. K.S.Kannan,
107, Vybhavi,
17th Main, 4th Cross (New 2B Cross),
Muneshwara Block, Bangalore - 560 026
Contact No: 99002 75255
Email: ks.kannan.2000@gmail.com

18. Professor Shantishree Dhulipudi Pandit
Department of Politics & Public Administration
University of Pune,
Maharashtra- 411007
Phone: 91 20 -25410519 / 65203772
Email: santishreepandit@gmail.com

19. Professor G. Nageswara Rao
    Vice-Chancellor
    Andhra University
    Visakhapatnam 530 003
    Andhra Pradesh
    Phone: 0891-2844333/4222
    Fax: 0891-2525611
    Mobile: 9849701527
    Email : (Official) vicechancellor@andhrauniversity.edu.in
    (Personal) gollapallinr@yahoo.com
    Residence: D.No.2-64-1, Vice-Chancellor's Lodge,

20. Professor Gururaj Karajagi
    Founder and Chairman,
    Academy for Creative Teaching (ACT),
    Bangaluru – 560032
    Phone: 080 41697855
    Mobile : 9663611221
    E-mail: gururaj.karajagi@actedu.in

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

GOVERNING BODY

1 Professor (Retd.) Kapil Kapoor
Chairman, Governing Body
Indian Institute of Advanced Study,
Rashtrapati Nivas, Shimla - 171005
Mob. (0) 9810202146
E-mail ID: kkapoor40@yahoo.com

2. Professor Chaman Lal Gupta
Vice-Chairman, Governing Body
Indian Institute of Advanced Study
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005
Mobile : 9418141898
Phone: 0177-2830637
E-mail: guptcl@gmail.com

3. Professor Makarand R. Paranjape
Director
Indian Institute of Advanced Study
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005
Telephone: 0177-2830006(O) Fax: 2831389, 2830995
E-mail: director@iias.ac.in

3. **A representative each of the Ministry of Human Resource Development and the Ministry of Finance.**

1. Shri R. Subrahmanyam, IAS
Secretary,
Department of Higher Education,
Ministry of Human Resource Development,
Room No. 127-C- Wing
Shastri Bhavan, New Delhi -110 015.
Tel: 011-23386451, 23382698(O) 26979585, Fax: 23385807, 23381355
E-mail: secy.dhe@nic.in

2. Smt. Darshana M Dabral
Joint Secretary & Financial Adviser
Department of Secondary & Higher Education
Ministry of Human Resource Development
120-C, Shastri Bhavan,
New Delhi - 110 015.
Tel: 011-23382696, Fax- 011-23070668,
E-mail: jsfa.edu@gov.in

4. **Five Institutional Members**

1. Professor D.P. Singh
Chairman
University Grants Commission,
Bahadurshah Zafar Marg,
New Delhi – 110 002.
Tel: (011) 23239628 (O) Fax: 011-23231797, E-mail: cm@ugc.nic.in

2. Dr. Braj Bihari Kumar
Chairman
Indian Council of Social Science Research,
Post Box No.10528,
Aruna Asaf Ali Marg,
New Delhi – 110 067
Phone: 011-26741679 (O), 011-26742398 (R)
Fax: 011-26162516/26179836, E-mail : chairman@icssr.org

3. Professor Ramesh Chandra Sinha
Chairman,
Indian Council of Philosophical Research,
36, Tughlakabad Institutional Area,
Mehrauli Badarpur Road,
New Delhi – 110 062.
Tel: 9599955780, Fax: + 91-11-29964755
E-mail:srbhatt39@gmail.com

4. Shri Shekhar C. Mande
   Director-General,
   Council of Scientific & Industrial Research and Secretary
   DSIR Anusandhan Bhavan,
   2 , Rafi Marg,
   New Delhi – 110 001.
   Tel: + 91-11-23710472,23717053 Fax: + 91-11-23710618
   Email : dgcsir@ csir.res.in ; dg @csir.res.in

5. Professor Arvind P. Jamakhedar
   Chairman
   Indian Council of Historical Research
   35, Ferozeshah Road
   New Delhi – 110 001
   Tel: 011-23386033, 23384869, Fax: 23383421, 23387829,
   Mobile 9415243954
   E-mail: chairman@ichr.ac.in

These Institutional members may, if necessary, be represented, at the meetings, by their nominees.

5. **Two Vice-Chancellors from category 3(b)(i) of the Members of Society nominated by the Central Government.**

1. Vacant

2. Prof. S.K. Srivastava
   Vice-Chancelor
   North-Eastern Hill University,
   Shillong 793 022
   Phone: (0364) 2721003/2721004/2550101/ 2550074 (R)
   Fax: (0364) 2550076
   Email: vcnehu@nehu.ac.in

6. **Four persons from Category 3(b)(ii) of the Members of the Society nominated by the Central Government:**

1. Professor Chaman Lal Gupta
   Vice-Chairman, Governing Body
   Indian Institute of Advanced Study,
   Rashtrapati Nivas, Shimla – 171005.
   &
   Address: Vivek Kutir, Summer Hill,
   Shimla – 171005 H.P.
   Mobile: 9418141898
   Phone: 0177-2830637
   E-mail: guptcl@gmail.com

2. Professor G.K. Karanth
   Professor Sociology,
   Centre for Study of Social Change and Development,
   Institute for Social and Economic Change,
   Bangalore – 560072
   Mobile : 7899837275; 9845731403
   E-mail : gk.karanth@gmail.com

3. Professor Sanjeev Kumar Sharma
   Professor and former Head,
   Department of Political Science,
   Chaudhary Charan Singh University,
   Meerut - 250005, Uttar Pradesh
   Phone: +911212764455
   Mobile: 9412205348, 9458609921
   Email: sanjeevaji@gmail.com

4. Professor Gururaj Karajagi
   Founder and Chairman,
   Academy for Creative Teaching (ACT),
   Bangaluru – 560032
   Phone: 080 41697855, 080 41697866, 080 23439822 (O) 080 23331748 (R)
   Mobile : 9663611221
   E-mail: gururaj.karajagi@actedu.in

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005

FINANCE COMMITTEE

1. Professor Makarand R. Paranjape — Chairman
   Director
   Indian Institute of Advanced Study
   Rashtrapati Nivas
   Shimla – 171 005
   director@iias.ac.in

2. Smt. Darshana M Dabral — Member
   Joint Secretary & Financial Adviser
   Department of Secondary & Higher Education
   Ministry of Human Resource Development
   120-C, Shastri Bhavan
   New Delhi – 110 015
   jsfa.edu@gov.in
   (ex-officio)

3. Professor Arvind P. Jamkhedkar — Member
   Chairman
   Indian Council of Historical Research
   35, Ferozeshah Road
   New Delhi – 110 001
   chairman@ichr.ac.in

4. Professor (Dr.) Jagbir Singh — Member
   WZ- 707/C, Street No. 18,
   Shiv Nagar, Jail Road,
   New Delhi – 110058
   jagbir707@yahoo.com

5. Professor Sharad Deshpande — Member
   13 Khagol Vaigyanik
   Cooperative Housing Society
   38/1 Panchwati Pasan
   Pune – 411008
   sharad.unipune@gmail.com